निश्चयबुद्धि विजयन्ति

The One With Faith Attains Victory

Book written by: SpARC wing, Brahma Kumaris

Published by: **Shiv Baba Services Initiative**

Main Website: www.shivbabas.org | **BK Google**: www.bkgoogle.org

Get more PDF books: shivbabas.org/books

निश्चयबुद्धि विजयन्ति

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'**एक है।

विषय सूची

निश्चय अर्थात् संशय समाप्त 9
रिफ्रेश तो हो ही - अगर निश्चय है तो 9
निश्चय में कभी परसन्टेज नहीं होती 9
बाप, टीचर और सतगुरु में निश्चय अर्थात् फरमान, पढ़ाई और श्रीमत पर भी सम्पूर्ण निश्चयबुद्‌ि 10
भविष्य पद में निश्चय बुद्धि कौन? 10
आत्मिक निश्चय बुद्धि से बाप की याद भी अलग नहीं हो सकती 11
निश्चय बुद्धि अर्थात् बाप में, बाप के नॉलेज में, बाप के परिवार में संशय नहीं उठना चाहिए 11
निश्चय बुद्धि बन सर्विस करो 12
निश्चय और उमंग रखो कि हम सम्पूर्ण बनें और सर्व को बनायेंगे 12
स्वयं में निश्चय बुद्धि बनो 13
यही निश्चय रखना है कि हम राज्य पद लेकर ही छोड़ेंगे 13
दृढ़ निश्चय के आगे कोई रूकावट नहीं आ सकती 14
ब्राह्मण परिवार में निश्चय 14
निश्चय से विजय हो जाती है। संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है। 14
जो कोई को प्राप्त नहीं हो सकता वह हमें प्राप्त हुआ है - इसी नशे और निश्चय में रहना है। 15
कल्प पहले भी हम ही थे अब भी हम ही हैं - यह निश्चय रखना है। 15
ज्ञान के निश्चय का पक्का बीज़ डालो 15
'विजय हमारी ही है' ऐसा एक बल एक भरोसा हो 16
फेथफुल का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि 17
बाप और स्वयं में निश्चयबुद्धि हैं तो विजय कहाँ जावेगी? 17
बन कर ही छोडूंगा जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे तब विजयी बनेंगे 17
फेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि 18
निश्चयबुद्धि हो करें तो फेल नहीं होंगे 18
निश्चय बुद्धि के बोल कैसे होंगे? 18
निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों की निशानी 18
निश्चयबुद्धि बन अपने उमंग को तीव्र बनाओ 19
निश्चय में कभी परसेन्टेज नहीं होती है 19
कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है 20
निश्चय की विजय है और हिम्मत रखने वालों का बापदादा और परिवार मददगार है 20
जैसे बाप में निश्चय, पढ़ाई में निश्चय है वैसे ही अपने में भी हर समय और हर संकल्प निश्चयबुद्धि बनकर करो 21
निश्चय बुद्धि हो कल्याण की भावना रखने से दृष्टि और वृत्ति दोनों ही बदल जाते हैं 21
अपने में 100 प्रतिशत निश्चय-बुद्धि हैं तो उनकी कभी हार नहीं हो सकती 22
अमृतवेले निश्चय का तिलक लगाओ 22
अपने में सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि की निशानीयाँ 23
100परसेन्ट निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चित विजयी और निश्चिन्त 24
100परसेन्ट निश्चय है कि हम विजयी हैं ही 25

ऑलमाईटी अर्थार्टी वालों की तीन निशानी - एक निश्चय, दूसरा नशा और तीसरा निर्भयता 25
जहां सदा निश्चय और निर्भयता है वहां सदैव श्रेष्ठ संकल्प की विजय है 27
स्व का निश्चय 27
मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपने कल्प पहले के यादगार को सामने रख फिर से सिर्फ रिपीट करो 28
सेन्सीबल के लक्षण 28
पूरा निश्चय-बुद्धि बनना है - बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है 28
अब अपने निश्चय को साकार रुप में लाओ 29
अपने निश्चय के आधार पर बाप की प्रत्यक्षता 29
सभी में कल्याण भरा हुआ है - ऐसे निश्चयबुद्धि होकर चलो 30
अब स्वयं को शक्ति स्वरुप बनाओ 30
ध्रुव समान दृढ़ निश्चयबुद्धि बनो 30
निश्चय की निशानी निश्चिंत 31
निश्चयबुद्धि की निशानी 32
निश्चयबुद्धि आत्माओं को परमात्मा और प्रकृति की मदद 32
अलबेलापन का कारण - समय की समाप्ति का बुद्धि में निश्चय नहीं है 33
निश्चयबुद्धि विजयन्ति की चार बातें - बाप में, नॉलेज में, स्वयं में और संगमयुग में पूर्ण निश्चय 33
निश्चयबुद्धि की पहली निशानी है - विजय 34
निश्चय के आधार पर क्वालिटी की परख 35
संकल्प रूपी बीज़ को दृढ़ निश्चय का जल दो कि - यह तो हुआ ही पड़ा है, होना ही है 36
निश्चयबुद्धि अर्थात् क्वेश्चन समाप्त 36
रॉयल रूप का संशय क्या है? 36
निश्चयबुद्धि की निशानी यह है कि वह हर बात व हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त होगा 37
निश्चयबुद्धि आत्माओं को परमात्म इशारा 37
दृढ़ निश्चयबुद्धि के संकल्प 38
निश्चय बुद्धि की निशानी है सदा निश्चिन्त 39
निश्चय बुद्धि बच्चों के ऊपर बाप-दादा भी अपने सर्व सम्पत्ति सहित कुर्बान है 39
निश्चय का रिटर्न है– बाप को सदा का साथी बनाकर रखना 39
बाप के निश्चय के साथ-साथ सेवा में भी फेथफुल बनो 40
तीव्र पुरुषार्थ का उमंग, उत्साह कम क्यों हो जाता? 40
हार का कारण - निश्चय में कमी 41
निश्चय बुद्धि होगा वह निश्चिंत होगा 41
ऑनेस्ट अर्थात् किसी भी बातों के आधार पर फाउन्डेशन न हो। 41
एक सेकण्ड का निश्चय 42
छोटा सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है? 42
एक बात निश्चय और नशे में रहे - 'वाह रे मैं' 43
जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है 43
निश्चयबुद्धि की पहली निशानी - सदा निश्चिंत 44
सम्पूर्ण निश्चय की रूपरेखा 44
अंगद समान स्थिति बनाने के लिए निश्चय का फाउन्डेशन मज़बूत करो 45

अमृतवेले निश्चय के स्मृति की स्वीच यथार्थ रीति से सेट करो 46
जैसे बाप को निश्चय है कि फल निकलना ही है वैसे स्वयं भी निश्चयबुद्धि रहो 46
अंगद के समान अचल अर्थात् सदा निश्चय बुद्धि विजयन्ती 46
निश्चयबुद्धि की नाव कितना भी कोई हिलावे लेकिन कभी भी कोई बात का असर नहीं हो सकता 46
नालेज का रिगार्ड - अर्थात् बाप के हर महावाक्य में अटल निश्चय हो 47
पेपर निश्चय का फाउण्डेशन मजबूत करने का साधन है 47
महारथी, घोडेसवार और प्यादे - तीनों के निश्चय में अंतर 47
निश्चय बुद्धि के मन की खुशी की आवाज़ - पाना था जो पा लिया 48
निश्चय बुद्धि बने और बाप की मदद से असम्भव सम्भव हो गया 48
मन्सा सेवा का सहज साधन अटूट निश्चय 48
बात बदल जाए लेकिन आप न बदलो - यह है निश्चय 48
आज पुरुषार्थी हैं कल फ़रिश्ता - ऐसा पक्का निश्चय हो 49
'बाबा मेरा मैं बाबा का', इसी आधार से निश्चय का फाउन्डेशन को और ही पक्का करो 49
निश्चय रहे - जो कुछ होता है-उसमें कल्याण भरा हुआ है 50
निश्चयबुद्धि बन स्वयं का नम्बर सेट करो 50
'संशय का रायल रुप' 50
समीप आत्माओं की निशानी-सदा बाप के समान 51
सहज योग में क्वेश्चन नहीं होता हैं 51
निश्चय और नशा रखो - कौन कहता है -श्रेष्ठ आत्मायें 52
बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो 53
निश्चयबुद्धि बन व्यर्थ के बजाए समर्थ संकल्प चलाओ 54
बापदादा के सिर के ताज, श्रेष्ठ आत्मायें हैं - ऐसा निश्चय हो तो सदा मायाजीत स्वतः हो जायेंगे 55
सदा यही नशा अनुभव करो कि मैं हूँ ही बाप का 55
निश्चय रहे 'वाह रे मेरा भाग्य!' 55
सदा निश्चय हो - जहाँ बाप है, वहाँ कितने भी चाहे तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे 55
निश्चय में एक बल और एक भरोसा, तो जो कुछ होगा वह अच्छा ही होगा 56
सेवा के हर कदम में कल्याण भरा हुआ है - इसी निश्चय के आधार पर सेवा करते चलो 56
निश्चयबुद्धि हो, मेरेपन के सम्बन्ध से न्यारे हो चलते चलो 56
निश्चय में जब क्यों, क्या आता तो विजय अर्थात् प्राप्ति में भी कुछ न कुछ कमी पड़ जाती है 56
सदा निश्चयबुद्धि सभी बातों में निश्चिन्त रहते हैं 57
निश्चयबुद्धि विजयी विश्व के मालिकों को विश्व का राज्य निश्चित ही प्राप्त हुआ पड़ा है 57
निश्चयबुद्धि विजयी, इसी को दूसरे शब्दों में कहा जाता है - 'एक बल, एक भरोसा' 58
निश्चय का फाउण्डेशन अचल है तो कर्म रूपी बिल्डिंग भी अचल होगी 58
निश्चयबुद्धि शक्तिशाली आत्मा सदा अपने को सर्वशक्तिवान बाप के साथ, कम्बाइन्ड अनुभव करेगी 58
ब्राह्मण आत्मायें फलक से, निश्चय से, नशे से, खुशी से, दिल से कहती - 'हमारा बाप अब मिल गया 59
जहाँ ईश्वरीय निश्चय और नशा होगा वहाँ माया से परे रहेंगे 59
'निमित्त भाव सफलता की चाबी है' 59
श्रीमत की दुआ कहो, दवा कहो, परहेज कहो, वह करो तो फिर शक्तिशाली हो जायेंगे 59
योगी जीवन का फाउण्डेशन तो 'निश्चय' है और परिवार का फाउण्डेशन स्नेह है 60

अपना मन निश्चयबुद्धि हो कि - मैं विजयी हूँ। निश्चयबुद्धि नष्टोमोहा की सीढ़ी है 60
निश्चयबुद्धि अर्थात् नशे का जीवन। निश्चय का प्रमाण नशा और नशे का प्रमाण है 'खुशी' 62
निश्चयबुद्धि आत्मा को 'हुआ ही पड़ा है' यह महसूसता सदा रहेगी 63
अगर जरा भी कोई चिंता है तो निश्चय की कमी है........ 63
किसी भी कार्य में सफलता का आधार - 'निश्चय अटल और नशा सम्पन्न' 63
परमात्म कार्य सफल हुआ ही पड़ा है ऐसे निश्चय बुद्धि, निश्चित भविष्य को जानने वाले निश्चिन्त आत्मायें हो .. 63
'प्रभु-प्रीत बुद्धि विजयन्ति' 64
नशा हो - हम निश्चयबुद्धि पावन आत्मायें हैं 64
हर संकल्प में दृढ़ता माना - 'तपस्या' 65
'ड्रामा के ऊपर निश्चयबुद्धि' 65
निश्चय और नशे के आधार से उड़ती कला में उड़ो 65
निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है 65
श्वाँसो श्वाँस याद और श्वाँसों श्वाँस सेवा हो - इसको कहते हैं वैलेन्स 66
सदा निश्चय से आगे बढ़ते रहो........ 66
निश्चय हो - मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ........ 67
'निश्चय की निशानी है नशा और नशे की निशानी है खुशी' 67
निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है 67
निश्चय की विशेष निशानियाँ - निश्चय की परख तूफान के समय होती है........ 69
ब्रह्मा बाप और निश्चय का पेपर 70
अपने में निश्चय रख उड़ते चलो........ 71
निश्चय बुद्धि हैं उनकी बुद्धि में यह निश्चित रहता है कि मैं विजयी बना था और सदा ही बनेंगे........ 71
'बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ' - यह स्मृति रहे तो बेफिकर वा निश्चिंत जीवन अनुभव करेंगे........ 72
'निश्चय और विजय' - यह एक-दो के पक्के साथी हैं 72
तीनों निश्चय साथ-साथ रहें........ 73
काम बाप का, नाम बच्चों का 73
असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रूप में अनुभव करेंगे 73
विघ्न को विघ्न न समझ खेल समझेंगे तो पास हो जायेंगे 74
बाप को सामने रखने से हर आत्मा से भी आत्मिक अटूट प्यार हो जाता है........ 75
अपनी विशेषता को और कार्य में लगाओ तो विशेषता बढ़ती जायेगी........ 76
प्रैक्टिकल अनुभवी आत्मा बन 'निश्चय और नशे में रहो'........ 76
जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! 77
शरीर भी चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये 77
ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो 78
ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय........ 78
अकल्याण की सीन में भी कल्याण दिखाई दे........ 81
सम्पन्न बनना अर्थात् कमजोरी को खत्म करना। 82
कोई भी बड़ी बात को छोटा बनाना या छोटी बात को बड़ी बनाना अपने हाथ में है 83
योग भी सहज हो जाये, उसकी सबसे सहज विधि है - 'मेरा बाबा' 83
भगवान् की मत पर चले अर्थात् फालो किया तो विजय हुई........ 83

यह निश्चय पक्का हो कि हम ही कल्प-कल्प के विजयी हैं और हम ही बार-बार बनेंगे 84
यथार्थ निर्णय का आधार-निश्चयबुद्धि और निश्चिंत स्थिति 84
निश्चय हो कि मैं कल्प-कल्प का विजयी हूँ 85
'निश्चय है और निश्चित है' - इस अधिकार की भावी को कोई टाल नहीं सकता 85
अपोजिशन को श्रेष्ठ पोजिशन से समाप्त करो 85
अगर नाव और खिवैया मजबूत हैं तो कोई भी तूफान आगे बढ़ाने का साधन बन जाता है 86
त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चिंत रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है 86
एक बाप पर निश्चय रखने से बुद्धि एकाग्र हो जाती है 87
प्रतिज्ञा का अर्थ ही है कि जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाये 87
निश्चय रखकर चलो कि यह हुआ पड़ा है, सिर्फ प्रैक्टिकल में लाना है 88
संगम का हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा है - इस निश्चय से सहजयोगी बनो 88
सेल्फ पर राज्य करने वाले बेफिक्र बादशाह बनो 88
हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे - ये निश्चय हो 89
अपनी सर्व जिम्मेवारियां बाप को देकर बेफिक्र बादशाह बनो 89
सदा स्मृति रखो कि-कल्याणकारी बाप मिला तो सदा कल्याण ही कल्याण है 89
आप सबके हर संकल्प में परमात्म चिन्तन है इसलिये बेफ़िक्र हैं 90
त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर तीनों कालों को देखो तो सदा खुशी रहेगी 90
ब्राह्मण जीवन का आधार - याद और सेवा 90
मास्टर सर्वशक्तिमान् की निशानी है कि संकल्प और कर्म दोनों समान होगा 91
ब्राह्मण जीवन अर्थात् सदा खुश जीवन 92
सदा इसी स्वमान में रहो कि मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ, कल्याण करना मेरा कर्तव्य है 92
चिंताओं से फ्री सदा निश्चिंत वा बेफ़िक्र बादशाह रहने के लिए निश्चयबुद्धि बनो 93
उमंग-उत्साह ये उड़ने के पंख हैं। अगर पंख मज़बूत होते हैं तो तीव्र गति से उड़ सकते हैं 94
'स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करो' 95
जब भाग्य विधाता अपना बन गया तो भाग्य कहाँ जायेगा? 95
निश्चय है कि अनेक बार बने हैं, अब भी हैं और आगे भी बनते रहेंगे 96
उमंग-उत्साह आप ब्राह्मणों के लिये बड़े से बड़ी शक्ति है 96
सर्व ख़ज़ानों को सफल करते जाओ तो सफलता आपेही आपके आगे आयेगी 97
विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है-इस निश्चय और नशे से निर्विघ्न स्थिति का अनुभव करो 97
सदा यह स्मृति रखो कि अनेक बार की अधिकारी आत्मायें हैं 98
एक बाप में भरोसा अर्थात् निश्चय होने से साइलेन्स का बल, योग का बल स्वत: ही अनुभव होता है 98
पुरुषार्थ और योग के प्रयोग से सबकी वृत्तियों को परिवर्तन करो 99
प्योरिटी की रॉयल्टी ही ब्राह्मण जीवन की विशेषता है 99
परमात्म अधिकारी - इससे बड़ा अधिकार और है ही क्या! 100
पुरुष(आत्मा) बन रथ द्वारा कराना - इसको कहा जाता है पुरुषार्थ 101
दृढ़ निश्चय भाग्य को निश्चित कर देता है 101
हमारा तो अधिकार है। वर्से पर भी, पढ़ाई पर भी और वरदान पर भी 102
निश्चयबुद्धि की निशानियाँ - निश्चित विजयी और सदा निश्चिन्त स्थिति का अनुभव 103
सदा यह याद रखो कि मैं ब्राह्मण आत्मा राज्य सत्ता और धर्म सत्ता की अधिकारी आत्मा हूँ 106

संकल्प किया-मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी 107
आप निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा पालनहार परम आत्मा है 107
'यथार्थ निश्चय के फाउण्डेशन द्वारा सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करो' 108
हम पूर्वज हैं – उसी निश्चय और नशे में रहो 111
आप छोड़ो तो छूटेगा 111
मदद उसको मिलती है जो हिम्मत रखते हैं........ 111
श्रीमत को मानना यह भी एक सफलता है 112
सक्सेसफुल क्यों नहीं होते, उसका कारण क्या है? 113
हर समय यह चेक करो कि हिम्मत के पांव मजबूत हैं? 113
दृढ़ता का ठप्पा लगाते रहना........ 113
ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार कौन से हैं? 114
अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो, नहीं तो धोखा खा लेंगे। 114
घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं, निश्चयबुद्धि बनो 115
कल्प पहले भी बने हैं और अब भी बनना ही है 116
ब्राह्मणों की जन्मपत्री में है - 'सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है' 116
दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा 117
रूहानी नशा - मैं कौन! यह नशा इमर्ज रूप में होगा तो हर सेकण्ड जमा होता जायेगा 117
बापदादा का बच्चों में निश्चय........ 117
निश्चय और नशा - चहरे और चलन से दिखाई दे 118
ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है, सिर्फ रिपीट करना है 118
किससे भी मिलते हो, तो सदा आत्मा को देख करके बात करो 118
मैं बालक सो मालिक हूँ, इस स्मृति में सदा रहो 119
दृढ़ता वाला निश्चयबुद्धि, निश्चिंत और निश्चित अनुभव करेगा 120
चाहे कैसा भी कड़ा संस्कार हो, हिम्मत कभी नहीं हारो। कारण? सर्वशक्तिवान बाप मददगार है 120
बापदादा को निश्चय है कि आप ही अनेक कल्प बाप समान बने हैं और अभी भी आप ही बनने वाले हो 121
दृढ़ता का फल है सफलता 121
'अपने श्रेष्ठ स्वमान के फखुर में रह असम्भव को सम्भव करते बेफिक्र बादशाह बनो' 122
यह नशा रखो हम ही बने हैं, हम ही हैं और हम ही बार-बार बनते रहेंगे 122
निश्चयबुद्धि, निश्चिंत रहते हैं 122
निश्चय है कि यह ईश्वरीय खजाने इस जन्म में तो क्या लेकिन अनेक जन्म साथ हैं, साथ रहेंगे 123
हर चेहरे पर सर्व प्राप्तियों की मुस्कुराहट हो, हर चलन में निश्चय का नशा हो 123
मैं बदलूंगा, और भी बदलेगा, अवश्य बदलेगा - इस निश्चय और शुभ भावना से चलो 124
ब्रह्मा बाप ने स्वयं स्वमान की सीट और दृढ़ निश्चय के शस्त्रों द्वारा आपोजीशन को समाप्त किया........ 124
दृढ़ता ही सफलता की चाबी है और सफलता बाप के समान बनने का सहज साधन है 125
बाप, स्व, ड्रामा और परिवार चारों में निश्चयबुद्धि बन विजयी बनना है 125
हिम्मत कभी भी नहीं हारना 127
ज्ञान का फाउण्डेशन है निश्चय........ 128
निश्चय का नशा आपके चेहरे और चलन से दिखाई दे........ 128

निश्चय अर्थात् संशय समाप्त

सभी अव्यक्त मूर्त हो बैठे हो? व्यक्त रूप में रहते अव्यक्त स्थिति में रहना है। जब अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जायेंगे तो उस अव्यक्त स्थिति में कोई उलझन नहीं रहेगी। वर्तमान समय चल रहे सभी पार्ट आप बच्चों को अति शीघ्र अव्यक्त बनाने के साधन हैं। डगमग होने की जरूरत नहीं। शुरू में यज्ञ की स्थापना भी अनायास ही हुई थी। जब आप शुरू में यज्ञ की स्थापना में आये थे तो आप सभी से निश्चय के पत्र लिखाये थे। यही निश्चय लिखाते थे कि- अगर ब्रह्मा चला जाए, तब भी हमारी अवस्था, हमारा निश्चय अटल रहेगा। वह निश्चय पत्र याद है? निश्चय उसको कहा जाता है जिसमें किसी भी प्रकार का, किसी भी स्थिति अनुसार, विघ्न के समय संशय नहीं आता। परिस्थितियां तो बदलनी ही हैं, बदलती ही रहेंगी। लेकिन आप जैसे गीत गाते हो ना-बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम..। तो ऐसे ही आप सभी निश्चय बुद्धि आज के संगठन में बैठे हुए हो। आपकी मम्मा आप सबको कहा करती थी कि निश्चय के जो भी आधार अब तक खड़े हैं वह सब आधार निकलने ही हैं और निकलते हुए भी उसकी नींव मजबूत है। अगर नींव मजबूत नहीं तो आधार की आवश्यकता है। आधार कौनसा? बाबा का आधार, संगठन का आधार, परिवार के नियमों का आधार नहीं छोड़ना। परन्तु परीक्षा के समय जो सीन सामने आती है उसमें निश्चय तो नहीं टूटा। निश्चय अटूट होता है, वह तोड़ने से टूटता नहीं। ऐसे ही निश्चय बुद्धि गले के हार हैं।

दूसरी बात-कई लोग आपके निश्चय को डगमग करने के लिए बातें बोलेंगे, आवाज फैलयेंगे कि अब देखें यह संस्था कैसे चलती है। लेकिन उन लोगों को यह मालूम नहीं कि इन्हों का आधार अविनाशी है। दूसरा-यह भी ध्यान में रखना कि कोई भी हिलाने की कोशिश करे, तो जैसे आप बच्चों का कल्प पहले का गायन है, अंगद के समान पांव को नहीं हिलाना है। ऐसे निश्चय बुद्धि, अडोल, एकरस ही, जो आने वाले लास्ट पेपर हैं, उसमें पास होंगे। और ही ब्रह्मा द्वारा जो इतने ब्राह्मण रचे हैं, तो क्या बाप के जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो बाप रिटायर नहीं होता? अब ऐसे समझो कि बाप रिटायर अवस्था में भी आपके साथ हैं। आप बच्चों को कार्य देकर देखते रहेंगे। शरीर छूटा परन्तु हाथ-साथ नहीं छूटा। बुद्धि का साथ-हाथ नहीं छूटा। वह तो अविनाशी कायम रहेगा। यह दो बातें जो सुनाई-(1)डगमग न होने का दान देना है, (2) अवगुण न देखने का दान देना है। अब सभी बच्चे यह दान दें जबकि संकल्प कर चुके आर्थात् दे चुके। संकल्प की हुई चीज कभी वापस नहीं ली जाती। अगर माया वापस लेने की कोशिश कराये भी, तो यदि अपने ऊपर जांच होगी तो पास हो जायेंगे।

(21.01.1969)

रिफ्रेश तो हो ही - अगर निश्चय है तो

आज किसके स्वागत का दिन है? (बाप और बच्चों का) परन्तु कई बच्चे अपने को भी भूले हुए हैं तो बाप को भी भुला दिया है। आज कि दिन वह स्वागत है जैसे पहले होती थी? कितनी तारें आती थी! तो भूला ना। बाप जब है ही तो फिर भुलाना कहाँ तक! यह है निश्चय, यह है पढ़ाई। जब पढ़ाई कामय है तो वह कार्य भी जैसा का वैसा चलता रहेगा। वह निश्चय नहीं तो कार्य में भी जरा...। बच्चे अपने मर्तबे को समझते हैं कि-मैं किसका बच्चा हूँ! बाप सदा है तो बच्चे भी सदा हैं। परन्तु देह अभिमान अपने स्वधर्म को भुला देता है। भूलने से कार्य कैसे चलेगा। आगे कैसे बढ़ेंगे? जबकि बाप ने अपना परिचय दिया है, बच्चों को भी अपना परिचय मिला हुआ है। कितना समय से इसी लक्ष्य को पक्का कराने के लिए मेहनत की गई है! उस मेहनत का फल कहाँ तक? सिर्फ याद कराने के लिए यह कह रहा हूँ। मुरली तो चलानी नहीं है, सिर्फ बच्चों से मिलने आया हूँ। बच्ची ने कहा- 'बहुत याद कर रहे हैं। बाबा, आप चलेंगे तो रिफ्रेश करेंगे।' रिफ्रेश तो हो ही - अगर निश्चय है तो। फिर भी बच्चों से मिलने के लिए आना पड़ा, थोड़े समय के लिए। स्वमान की स्मृति दिलाने के लिए आये हैं- बच्चे! सदैव अपने को सौभाग्यशाली समझें। सदा सौभाग्यशाली उनको कहा जाता है जिनका बाप, टीचर और सतगुरू से पूरा कनेक्शन, पूरी लगन है।

(15.02.1969)

निश्चय में कभी परसन्टेज नहीं होती

आज बाप खास एक विशेष कार्य के लिये आये हैं। यहाँ जो भी सभी बैठे हैं वह सभी अपने को निश्चय बुद्धि समझते हैं?

(नम्बरवार हैं) भले नम्बरवार हैं लेकिन निश्चयबुद्धि हैं? निश्चय बुद्धि का टाइटिल दे सकते हैं? निश्चय में नम्बर होते हैं वा पुरुषार्थ में नम्बर होते हैं? निश्चय में कब भी परसेन्टेज नहीं होती है, न निश्चय में नम्बरवार होते हैं। पुरुषार्थ की स्टेज में नम्बर हो सकते हैं। निश्चय बुद्धि में नम्बर नहीं होते। वा तो है निश्चय वा संशय। निश्चय में अगर जरा भी संशय है-चाहे मन्सा में, चाहे वाचा में अथवा कर्मणा में; लेकिन मन्सा का एक भी संकल्प संशय का है तो संशय बुद्धि कहेंगे। ऐसे निश्चय बुद्धि सभी हैं? निश्चय बुद्धि की मुख्य परख कौन-सी है? परखने की कोई मुख्य बात है? आपके सामने कोई नया आये, उनकी हिस्ट्री आदि आप ने सुनी नही है, उनको कैसे परख सकेंगे? (वायब्रेशन आयेगा) कौन-सा वायब्रेशन आवेगा जिससे परख होगी? अभी यह प्रैक्टिस करनी है। क्योंकि वर्तमान समय बहुत प्रजा बढ़ती रहेगी। तो प्रजा और नजदीक वाले को परखने के लिए बहुत प्रैक्टिस चाहिए। परखने की।

मुख्य बात यह है कि उनके नयनों से ऐसा महसूस होगा - जैसे कोई निशाने तरफ किसका खास अटेन्शन होता है तो उनके नयन कैसे होते हैं? तीर लगाने वाले वा निशाना लगाने वाले जो मिलेट्री के होते हैं, वो पूरा निशाना रखते हैं। उनके नयन, उनकी वृत्ति उस समय एक ही तरफ होगी। तो जो ऐसा निश्चय बुद्धि पक्का होगा उनके चेहरे से ऐसे महसूस होगा जैसेकि कोई निशान-बाज है। आप लोगों का मुख्य शिक्षा मिलती है एक निशान को देखो अर्थात् बिन्दी को देखो। तो बिन्दी को देखना भी निशान को देखना है। तो निश्चय बुद्धि की निशानी क्या होगी? पूरा निशाना होगा। निशान जरा भी हिल जाता है तो फिर हार हो जाती है। निश्चय बुद्धि के नयनों से ऐसे महसूस होगा जैसे देखते हुए भी कुछ और देखते हैं। उनके बोल भी वही निकलेंगे। यह है निश्चय बुद्धि की निशानी। निशान-बाज की स्थिति नशे वाली होती है। तो निश्चय बुद्धि की परख है- 'निशाना' और उनकी स्थिति नशे वाली होगी। यह प्रैक्टिस अभी करो। फिर जज करो हमारी परख ठीक है वा नहीं। फिर प्रैक्टिस करते-करते परख यथार्थ हो जावेगी। दृष्टि में सृष्टि कहा जाता है ना। तो आप उनकी दृष्टि से पूरी सृष्टि को जान सकते हो।

(08.05.1969)

बाप, टीचर और सतगुरु में निश्चय अर्थात् फरमान, पढ़ाई और श्रीमत पर भी सम्पूर्ण निश्चयबुदि्

सभी किस स्थिति में बैठे हो? लगन में बैठे या मगन अवस्था में? किस अवस्था में हो? ज्यादा समय लगन लगाने में जाता है या मगन रूप में हो? अपनी चैकिंग तो करते होंगे। अच्छा! सभी की यही इच्छा है कि हमारे पेपर की रिजल्ट का मालूम पड़े। विशेष सभी के दिलों में यही संकल्प चलता रहता है। तो आज रिजल्ट सभी सुना देते हैं। सभी ने जो भी लिखा है यथायोग्य, यथाशक्ति-टोटल रिजल्ट यही कहेंगे कि बाप में निश्चय बुद्धि तो हैं; लेकिन जितना ही बाप में निश्चय है उतना ही बाप के महावाक्यों में, फरमान में निश्चय बुद्धि होकर चलना-वह अभी पुरुषार्थ में 50 देखने में आता है। बाप में निश्चय तो 100 है; लेकिन बाप के फरमान और आज्ञाओं में निश्चय बुद्धि होकर के जो फरमान मिला और किया- ऐसे फरमान में निश्चय बुद्धि मैजारिटी 50 की रिजल्ट में हैं। ऐसे ही टीचर में निश्चय है; लेकिन उनकी पूरी पढ़ाई जो है उसमें पूर्ण रीति से चलना - वह भी अपनी-अपनी परसेन्टेज की रिजल्ट है। ऐसे ही गुरु रूप में भी 'सतगुरु' है-यह पूरा निश्चय है; लेकिन उनके श्रीमत पर चलना - उसकी टोटल रिजल्ट 50 तक है। सिर्फ बाप, टीचर, सतगुरु में निश्चय नहीं लेकिन इस निश्चय के साथ-साथ उनके फरमान, उनकी पढ़ाई और उनके श्रीमत पर भी सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि होकर चलना है। इसमें कमी है जिसको अभी भरना है?

(26.05.1969)

भविष्य पद में निश्चय बुद्धि कौन?

सतयुग में चलना है और खेल-पाल करना है-यह तो निश्चित है ही। आज जो भी सभी बैठे हैं उनमें से कौन समझता है कि - हम श्रीकृष्ण के साथ पहले जन्म में आयेंगे, उनके फैमिली में आयेंगे वा सखी - सखा बनेंगे वा तो स्कूल के साथी बनेंगे? जो समझते हैं- तीनों में से कोई न कोई जरूर बनेंगे; ऐसे निश्चय बुद्धि कौन है? (सभी ने हाथ उठाया) नजदीक आने वालों की संगमयुग में निशानी क्या होगी? यहाँ कौन अपने को नजदीक समझते हैं? यज्ञ - सर्विस वा जो बापदादा का कार्य है उसमें जो नज़दीक होगा वही वहाँ खेल-पाल आदि में नजदीक होंगे। यज्ञ की जिम्मेवारी वा बापदादा के कार्य की जिम्मेवारी के नजदीक

जितना-जितना होंगे उतना वहाँ भी नजदीक होंगे। नजदीक होने की परख कैसे होगी? हरेक को अपने आप से पूछना चाहिए- जितनी बुद्धि, जितना तन-मन-धन और जितना समय लौकिक जिम्मेवारियों में देते हो उतना ही इस तरफ देते हो? इस तरफ ज्यादा देना चाहिए। अगर ज्यादा नहीं तो उसका वज़न एक जैसा है? अगर दोनों तरफ का एक जितना है, तो भी नजदीक गिना जायेगा। इस हिसाब से अपने को परखना है। अभी तक रिजल्ट में लौकिक जिम्मेवारियों का बोझ ज्यादा देखने में आता है। खास मुख्य गोपों को यह बातें जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि आज का दिन जो बीता -कितना समय लौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया और कितना समय अलौकिक वा पारलौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया, कितने मददगार बने? यह चेकिंग करते रहेंगे तो पता पड़ेगा कि कौन सा तरफ खाली है। सभी प्रकार की परिस्थितियों में रहते हुए भी कम से कम दोनों तरफ एक जितना ज़रूर होना चाहिए, कम नहीं। उस तरफ कम हुआ तो हर्जा नहीं। इस तरफ कम नहीं होना चाहिए। तो फिर लौकिक ज़िम्मेवारी के कमी को भी ठीक कर सकेंगे। परमार्थ से व्यवहार भी सिद्ध हो जाता है। कोई-कोई कहते हैं -पहले व्यवहार को ठीक कर परमार्थ में लगें। यह ठीक नहीं है। तो यह खास ध्यान रखना है।

(09.06.1969)

आत्मिक निश्चय बुद्धि से बाप की याद भी अलग नहीं हो सकती

वास्तव में बिन्दु-रूप में स्थित होना कोई मुश्किल बात नहीं है। बिन्दु रूप तो है ही न्यारा। निराकार भी है। तो न्यारा भी है आप भी निराकारी और न्यारी स्थिति में होंगे तो बिन्दु रूप का अनुभव करेंगे। चलते-फिरते अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर सकते हो। प्रैक्टिस ऐसी सहज हो जायेगी कि जो जब भी चाहो तभी अव्यक्ति स्थिति में ठहर जाओगे। एक सेकेण्ड के अनुभव से कितनी शक्ति अपने में भर सकते हो-वह भी अनुभव करेंगे और ब्रेक देने, मोड़ने की शक्ति भी अनुभव में आ जायेगी। तो बिन्दु रूप का अनुभव कोई मुश्किल नहीं है। संकल्प ही नीचे लाता है; संकल्प को ब्रेक देने की पावर होगी तो ज्यादा समय अव्यक्त स्थिति में स्थित रह सकेंगे। अपने को आत्मा समझ उस स्वरूप में स्थित होना है। जब स्व-स्थिति में स्थित होगे, तो भी अपने जो गुण हैं। वह तो अनुभव होंगे ही। जिस स्थान पर पहुंचा जाता है उसके गुण ना चाहते हुए भी अनुभव होते हैं। आप किसी शीतल स्थान पर जायेंगे, तो ना चाहते हुए भी शीतलता का अनुभव होगा। यह भी ऐसा ही है। आत्म-अभिमानी अर्थात् बाप की याद। आत्मिक-स्वरूप में बाबा की याद नहीं रहे- यह तो हो नहीं सकता है। जैसे बाप-दादा-दोनों अलग-अलग नहीं हैं, वैसे आत्मिक निश्चय बुद्धि से बाप की याद भी अलग नहीं हो सकती है।

(23.07.1969)

निश्चय बुद्धि अर्थात् बाप में, बाप के नॉलेज में, बाप के परिवार में संशय नहीं उठना चाहिए

जब नाम सर्विसएबुल हैं तो कर्म भी ऐसा ही होना चाहिए। इसलिए जो कहना है वो करना भी है। यह याद रखने से पुरुषार्थ में सहज सफलता पायेंगे। कई बहुत खुश होते हैं कि-हमने इतने जिज्ञासु समझाये, इतने भाषण किये, बहुत सर्विस की। लेकिन वो भी हद की सर्विस है। अब तो बेहद की सर्विस करनी है। मन्सा, वाचा, कर्मणा-तीनों रूपों से बेहद की सर्विस हो। उसको कहा जाता है सर्विसएबुल। अब अपने को देखो कि हम सर्विसएबुल बने हैं? ऐसा सर्विसएबुल फिर स्नेही भी बहुत होगा। अब ऐसा सभी ने ठप्पा लगाया है वा कोई साहस भी रख रहे हैं। 'जब करना ही है' तो गोया ठप्पा लग ही गया। अपने में शक क्यूं रखते हो? कि - ना मालूम, परीक्षा में पास हों वा फेल हो। होशियार स्टूडेन्टस् सदैव निश्चय से कहते हैं कि हम तो नम्बरवन आयेंगे। अगर पहले से ही अपने में संशय रखेंगे तो संशय की रिजल्ट क्या होती है? फिर विजयी बन ना सकें। अगर जरा भी संशय रखा, तो विजयी नहीं बनेंगे, जब तक निश्चय नहीं है। आप लोगों ने शुरू से ही दाँव लगाया है कि वर्सा लेके ही छोड़ेंगे। या सोचा था कि देखेंगे? दाँव लगाया गोया बन ही गये।

जब अपने को निश्चय बुद्धि कहते हैं तो कोई भी बात में - ना बाप में, ना बाप की नालेज में, ना बाप के परिवार में संशय वा विकल्प उठना चाहिए। हम शिवबाबा के बच्चे हैं। तो फिर सर्वशक्तिमान के बच्चे निश्चय बुद्धि हैं। यह कौन बोलता है? सर्वशक्तिवान के बच्चे बोलते हैं। निश्चय रखने से ही विजय हो जायेगी। भल करके अन्दर समझो कि ना मालूम क्या होगा!

परन्तु फिर भी निश्चय में विजय हो जायेगी। अगर निश्चय नहीं है तो आपका कर्म भी वैसा ही चलेगा। निश्चय रखेंगे 'कि हमको करना ही है'; तो कर्म भी वैसा ही होगा। अगर ख्याल करेंगे 'कि अच्छा, देखेंगे, करेंगे', तो कर्म भी ढीला ही चलेगा। कभी भी अपने में कमज़ोरी की, संशय की फीलिंग नहीं आनी चाहिए। कमज़ोरी के संकल्प ही संशय है। अब कहाँ तक यह पुराने संस्कार और संकल्प रहे! पुराने संस्कार भी नहीं। संस्कार तो मोटी चीज़ है। लेकिन पुराने संकल्प खत्म होने चाहिए, तब कहेंगे भट्ठी से पककर निकल रहे हैं। भट्ठी का अर्थ ही क्या है? भट्ठी में सारा जलकर खत्म हो जाते हैं। रुप ही बदल जाता है। कोई भी चीज़ भट्ठी में डालेंगे तो उनका रूप, गुण आदि सब बदल जायेगा। आप भी भट्ठी करते हैं तो रूप, गुण बदलना चाहिए। ईट जब पकती है तो पहले मिट्टी होती है फिर पकने से उनका रूप, गुण बदल जाता है। और कर्तव्य भी बदल जाता है। इसी रीति अपना रूप, गुण और कर्तव्य तीनों ही बदलते जाना है। यह है भट्ठी की रिजल्ट। अब बताओ कि बदल लिया है? वा बदलेंगे? आपके उमंगों के साथ बापदादा की भी मदद है। जितना आप अपने में निश्चय रखेंगे उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं। स्नेही को अवश्य सहयोग मिलता है। किससे भी सहयोग लेना है, तो स्नेही बनना है। स्नेही को सहयोग की मांगनी नहीं करनी पड़ती है। बापदादा के स्नेही बनेंगे, परिवार के भी स्नेही बनेंगें, तो सभी का सहयोग स्वत: ही प्राप्त होगा। मुख्य यही दो बातें है-निश्चयबुद्धि और नष्टोमोहा; यह तो तिलक माथे पर लगा ही दिया है। सलोगन भी याद रखना है-जो कहेंगे वो करेंगे। संगम पर सोने से भी ज्यादा हीरा बनना है। जितना-जितना अपने को रत्नों से सजायेंगे उतना ही ना चाहते हुए भी दुनिया की नज़र आपके तरफ जायेगी। दुनिया को कहने की दरकार नहीं होगी कि हमारी तरफ देखो। यह ज्ञान रत्नों का श्रृंगार दूर वालों का भी ध्यान खिचवायेंगा। इसलिए इन रत्नों के श्रृंगार को सदा के लिए कायम रखेंगे-ऐसा निश्चय करना है।

(28.09.1969)

निश्चय बुद्धि बन सर्विस करो

अभी विशेष कमाल की सर्विस करनी है। जो अपने संग से सबको ऐसा रंग लगाओ जो कि कभी उतर नहीं सके। म्यूज़ियम में तो सिर्फ संदेश लेकर चले जाते हैं। लेकिन अब यह ध्यान रखना है कि हमारे संग का रंग इतना तो अविनाशी रहे जो कि कभी भी वह उतर नहीं सके। अभी जम्प देकर आगे जाना है। पहले था सिर्फ चलने का समय, फिर दौड़ने का समय भी आया। अभी तो है जम्प का समय। अगर दौड़ कर पहुँचने की कोशिश करेंगे तो टू -लेट हो जायेंगे। जम्प देने में तो समय नहीं लगता। एकरस अवस्था में रहने लिए एक ही शुद्ध संकल्प रखना है। वो कौनसा एक? एक तो स्नेही बनना, दूसरा सर्विसएबुल हूँ। बस, इनके बिना और कोई संकल्प नहीं। सर्विसएबुल को सर्विस का ही संकल्प चलेगा। भट्ठी का जो लक्ष्य है कि खुद बदलकर औरों को बदलना है- यह लक्ष्य सदैव याद रखना है। यह है निश्चय की छाप। आप पर कौन सा छाप लगा है? निश्चयबुद्धि, नष्टोमोहा और सर्विसएबुल का। यह त्रिमूर्ति छाप की निशानी लगी हुई है। यह अपनी निशानी कायम रखनी है। आप समान औरों को अपने से भी ऊंच बनाना है, कम नहीं। हम से ऊंचा कोई बने-यह भी तो अपनी ऊंचाई है ना।

(28.09.1969)

निश्चय और उमंग रखो कि हम सम्पूर्ण बनें और सर्व को बनायेंगे

आप समान भी बनाना है। प्रजा भी बनानी है। नहीं तो प्रजा बिगर राज्य किस पर करेंगे? तो ऐसे समझे कि इतने सभी सितारे सम्पूर्ण बन करके ही जायेंगे। यही उमंग और निश्चय हरेक में होना आवश्यक है कि हम सम्पूर्ण बनें और सर्व को बनायेंगे। यही उमंग-उत्साह सदा कायम रहे तो अवश्य ही लक्ष्य की प्राप्ति हो जायेगी। और बाप-दादा को निश्चय है ऐसे सम्पूर्ण ही इस यज्ञ-कुण्ड से निकलेंगे। कुण्ड का यादगार देखा है? यज्ञ के जो भी स्थान है सभी यज्ञ ही हैं लेकिन फिर भी यज्ञ-कुण्ड का महत्व होता है।

(20.10.1969)

स्वयं में निश्चय बुद्धि बनो

बाप-दादा कौन सा परिवर्तन देखने चाहते हैं? उसको भी जानते हो ना। बाप-दादा परिवर्तन के साथ परिपक्वता भी देखने चाहते हैं। परिवर्तन तो देखा, लेकिन परिवर्तन के साथ अपने में परिपक्वता भी लाई? बाप को 'अविनाशी सत्य' बोलते हो ना। तो ऐसे ही बाप के साथ अविनाशी परिवर्तन लाया है? जो खजाना मिलता है वह भी अविनाशी है, जो प्रालब्ध मिलती है वह भी अविनाशी है। तो परिवर्तन भी अविनाशी लाया है? वा सोचते हो कि - जाने के बाद मालूम पड़ेगा, न मालूम कौन सी परिस्थितियां आयें, न मालूम परिपक्व रह सकें वा नहीं। वायदा तो करके जाते हैं लेकिन कहाँ तक निभा सकते हैं, वह देखेंगे। एक तो यह सोचते हैं। फिर दूसरे है निश्चय बुद्धि, जिन्हों का बाप के साथ अपने में भी पूरा निश्चय है कि जो परिवर्तन लाया है वह सदा कायम रखेंगे और जो वायदा करके जाते हैं वह करके दिखायेंगे। वह हैं सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि। और कोई तो बिचारे हिम्मत धारण करने की कोशिश करते हैं। लेकिन अब तक अगर ऐसे ही करते चलेंगे तो अन्त तक भी क्या कोशिश करते रहेंगे? ऐसे पुरुषार्थी को झाटकू कहेंगे? देवियों पर बलि चढ़ते हैं तो शक्तियॉ वा देवियाँ ही बिना झाटकू स्वीकार नहीं करती हैं तो क्या बाप-दादा ऐसे को स्वीकार कर सकता है? अगर यहाँ स्वीकार न किया तो स्वर्ग में ऊंच पद की स्वीकृति नहीं मिलेगी। इसलिये सुनाया था कि जो सोचना है वही कहना है, जो कहना है वही करना है। सोचना, कहना, करना - तीनों ही एक होना चाहिये। लेकिन वर्तमान समय कई ऐसे बच्चे हैं जो सोचते बहुत हैं, कहते भी बहुत हैं लेकिन करने के समय कम रह जाते हैं। इसलिये कहा था इस भट्टी में पका कर जाना अर्थात् पक्का वायदा करके जाना है। पहले तो, वायदा करने लिये हिम्मत है कि हिम्मत धारण करेंगे? जो हिम्मतवान बच्चे हैं उनकी निशानी क्या है? वह कभी हार नहीं खाते। अगर आप सभी हिम्मतवान हैं तो जरुर आज से कभी हारेंगे नहीं। बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय-माला के मणके बनते हैं। अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा। परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं। बहुत सहज है।

दो शब्द याद रखना है। एक तो आकर्षण मूर्ति बनना है और दूसरा हर्षित मुख। आकर्षण करने वाला है रूह। रूहानी स्थिति में ही एक दो को आकर्षण कर सकेंगे। अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर ली तो सम्पूर्ण विजयी हैं ही। मैजारटी बच्चों में मुख्य कौनसी बात है, वह भी आज सुना रहे हैं। निश्चय बुद्धि तो, हो तब तो यहाँ आये हो। बाप में निश्चय है, ज्ञान में भी निश्चय है लेकिन अपने में निश्चय कहाँ-कहाँ डगमगा देता है। मुख्य कमी यह है जो कंट्रोलिंग-पावर नहीं है। यह न होने कारण समझते हुए, सोचते हुए, अपने को महसूस करते हुए भी फिर वही बात कर लेते हैं। इसका कारण यह है। कंट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है। मन्सा में, वाचा में और कर्मणा में भी और साथ-साथ लौकिक सम्बन्धियों अथवा दैवी परिवार के सम्बन्ध में आने में भी कहाँ तक क्या करना है, क्या कहना है, क्या नहीं कहना है और जो नहीं करना है उसको कंट्रोल करना - यह पूरी पावर न होने कारण सफल नहीं होते हो। तो कंट्रोलिंग पावर की कमी कैसे मिटावेंगे? कई बार आप गोपों ने देखा होगा - कोई भी चीज को कहाँ बहुत जोर से कंट्रोल करना होता है तो कंट्रोल करने लिये भी कई चीजों को हल्का छोड़ना पड़ता है। पतंग कब उड़ाया है? पतंग को कंट्रोल करने और ऊंचा उड़ाने लिये क्या किया जाता है? यह भी ऐसे हैं। अपनी बुद्धि को कंट्रोल करने के लिये कई बातों को हल्का करना पड़ता है। सभी से हल्की क्या चीज होती है? आत्मा (बिन्दी)। तो जब अपने को कंट्रोल करना हो तो अपने को बिल्कुल हल्का बिन्दु रूप में स्थित करना है। कंट्रोल करने लिये फुलस्टाप करना होता है। तो आप भी बिन्दी लगा दो। जो बीत चुका उसको बिल्कुल भूल जाओ। देखा, किया लेकिन फिर एकदम उसको समाप्त कर दो। समाप्त करना अर्थात् बिन्दी, फुलस्टाप करना।

(25.10.1969)

यही निश्चय रखना है कि हम राज्य पद लेकर ही छोड़ेंगे

अव्यक्त मुलाकात भी मिलन ही है। इसलिए सभी को यही निश्चय रखना है कि हम राज्य पद लेकर ही छोड़ेंगे। हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे। कोटों में कोई कौन-सी आत्मायें गिनी जाती है? ऐसे कोटों में से कोई हम आत्मायें ड्रामा के अन्दर हैं। यह अपना निश्चय नहीं भूलना। बापदादा सभी बच्चों का भविष्य देख हर्षित होते हैं। एक एक से मिलना, मन की बात तो यह है। लेकिन आप सब के समान इस व्यक्त दुनिया में.....बापदादा को अभी यह व्यक्त दुनिया नहीं है। तो आप के दुनिया के प्रमाण

समय को भी देखना पड़ता है। वतन में समय नहीं होता। घड़ी नहीं होती। लेकिन इस व्यक्त दुनिया में यह सभी बातें देखनी पड़ती हैं। वहाँ तो जब सूर्य, चाँद ही नहीं तो रात दिन किस हिसाब से हो। इसलिए समय का बन्धन नहीं है।

(22.01.1970)

दृढ़ निश्चय के आगे कोई रूकावट नहीं आ सकती

ऐसे ही समझो कि सर्विस के लिये यह स्थूल सर्विस कर रहे हैं। तो फिर मन भी उसमें लगेगा और कमाई भी होगी। लौकिक को भी अलौकिक समझ करो। फिर कोई और वातावरण में नहीं आयेंगे। जैसे-जैसे अव्यक्त स्थिति होती जायेगी वैसे बोलना भी कम होता जायेगा। कम बोलने से ज्यादा लाभ होगा। फिर इस योग की शक्ति से सर्विस करेंगे। योगबल और ज्ञान-बल दोनों इकट्ठा होता है। अभी ज्ञान बल से सर्विस हो रही है। योगबल गुप्त है। लेकिन जितना योगबल और ज्ञानबल दोनों समानता में लायेंगे उतनी-उतनी सफलता होगी। सारे दिन में चेक करो कि योगबल कितना रहा, ज्ञानबल कितना रहा? फिर मालूम पड़ जायेगा कि अन्तर कितना है। सर्विस में बिज़ी हो जायेंगे तो फिर विघ्न आदि भी टल जायेंगे। दृढ़ निश्चय के आगे कोई रूकावट नहीं आ सकती। ठीक चल रहे हैं। अथक और एकरस दोनों ही गुण हैं। सदैव फालो फादर करना है। जैसे साकार रूप में भी अथक और एकरस, एग्जाम्पुल बनकर दिखाया। वैसे ही औरों के प्रति एग्जाम्पुल बनना है। यही सर्विस है। समय भल न भी मिले सर्विस का, लेकिन चरित्र भी सर्विस दिखला सकता है। चरित्र से भी सर्विस होती है। सिर्फ वाणी से नहीं होती। आप के चरित्र उस विचित्र बाप की याद दिलायें। यह तो सहज सर्विस है ना। जैसे कई लोग अपने गुरू का वा स्त्री अपने पति का फोटो लाकेट में लगा देती है ना। यह एक स्नेह की निशानी है। तो तुम्हारा यह मस्तक जो है यह भी उस विचित्र का चरित्र दिखलाये। यह नयन उस विचित्र का चित्र दिखायें। ऐसा अविनाशी लाकेट पहन लेना है। अपनी स्मृति भी रहेगी और सर्विस भी होगी।

(23.01.1970)

ब्राह्मण परिवार में निश्चय

यह ब्राह्मण परिवार देखा। इतना बड़ा परिवार कब मिलता है? सिर्फ इस संगम पर ही इतना बड़ा परिवार मिलता है। हम इतने बड़े परिवार के हैं-यह नशा रहता है? जितना कोई बड़े परिवार का होता है उतनी उसको खुशी रहती है। सारी दुनिया में हम थोडों को इतना बड़ा परिवार मिलता है। तो यह निश्चय और नशा होना चाहिए। हरेक को यह नशा होना चाहिए कि कोटों में से कोई हम गायन में आने वाली आत्माएं हैं। कभी सोचा था क्या कि ऐसा सौभाग्य प्राप्त हो सकता है? अचानक लॉटरी मिली है।

(23.01.1970)

निश्चय से विजय हो जाती है। संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है।

निश्चय की निशानी क्या है? विजय। जितना निश्चयबुद्धि होंगे उतना ही सभी बातों में विजयी होंगे। निश्चयबुद्धि की कभी हार नहीं होती। हार होती है तो समझना चाहिए कि निश्चय की कमी है। निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों में से हम एक रत्न हैं ऐसे अपने को समझना है। विघ्न तो आयेंगे, उन्हों को खत्म करने की युक्ति है - सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है। कोई भी विघ्न आए तो उनको पेपर समझ पास करना है। बात को नहीं देखना है लेकिन पेपर समझना है। पेपर में भी भिन्न-भिन्न क्वेश्चन होते हैं- कभी मन्सा का, कभी लोक-लाज का, कभी सम्बन्ध का, कभी देशवासियों का क्वेश्चन आयेगा। परन्तु इसमें घबराना नहीं है। गहराई में जाना है। वातावरण ऐसा बनाना चाहिए जो न चाहते भी कोई खींच आये। जितना खुद अव्यक्त वायुमण्डल बनाने में बिज़ी रहेंगे। उतना स्वत: सभी होता रहेगा। जैसे रास्ते जाते कोई खुशबू आती हैं तो दिल होती हैं कि जाकर देखें क्या है। वैसे यह अव्यक्त खुशबू भी न चाहते हुए खीचेंगी।

जो लक्ष्य रखा जाता है उसको पूर्ण करने के लिए ऐसे लक्षण भी अपने में भरने हैं। ढीले कोशिश वाले कहाँ तक पहुँचेंगे? कोशिश शब्द ही कहते रहेंगे तो कोशिश में ही रह जायेंगे। एम तो रखना है कि करना ही है। कोशिश अक्षर कहना कमज़ोरी

है। कमजोरी को मिटाने के लिये कोशिश शब्द को मिटाना है। निश्चय से विजय हो जाती है। संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है। निश्चयबुद्धि बनेंगे तो सभी का सहयोग भी मिलेगा। कोई भी कार्य करना होता है तो सदैव यही सोचा जाता है कि मेरे बिना कोई कर नहीं सकता तब वही सफलता होती है। आज से कोशिश अक्षर खत्म करो। मैं शिवशक्ति हूँ। शिवशक्ति सभी कार्य कर सकती है। शक्तियों की शेर पर सवारी दिखाते हैं। किस भी प्रकार माया शेर रूप में आये डरना नहीं है। शिवशक्ति कभी हार नहीं खा सकती। अभी समय ही कहाँ है। समय के पहले अपने को बदलने से एक का लाख गुणा मिलेगा। बदलना ही है, तो ऐसे बदलना चाहिए। याद आता है कि अगले कल्प भी वर्सा लिया था। अपने को पुराना समझने से वह कल्प पहले की स्मृति आने से पुरुषार्थ सहज हो जाता है। क्योंकि निश्चय रहता है कल्प पहले भी मैंने लिया था, अब भी लेकर छोड़ेंगे। कल्प पहले की स्मृति शक्ति दिलाने वाली होती है। अपने को नये समझेंगे तो कमज़ोरी के संकल्प आयेंगे। पा सकेंगे वा नहीं। लेकिन मैं हूँ ही कल्प पहले वाला इस स्मृति से शक्ति आयेगी। सदैव अपने को हिम्मतवान बनाना चाहिए। हिम्मत हारना नहीं चाहिए। हिम्मत से मदद भी मिलेगी। हम सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, बाप को याद किया, यही हिम्मत है। बाप को याद करना सहज है वा मुश्किल? सहज करने में सहज हो जाता है। यह तो मेरा कर्तव्य ही है, फ़र्ज है। क्या करूँ यह संकल्प आने से मुश्किल हो जाता है। कभी भी अपने अन्दर कमज़ोर संकल्प को नहीं रहने देना। अगर मन में कमजोर संकल्प उत्पन्न भी हो जायें तो उनको वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनाना है। अब तक भी अगर कोशिश करते रहेंगे तो अव्यक्त कशिश का अनुभव कब करेंगे? जब तक कोशिश है तब तक अव्यक्ति कशिश अपने में नहीं आ सकती है। यह भाषा ही कमज़ोरी की है। सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे यह नहीं कह सकते। उनके संकल्प, वाणी सभी निश्चय के होंगें। ऐसी स्थिति बनानी है। सदैव चैक करो कि संकल्प रूपी फाउन्डेशन मजबूत है। तीव्र पुरुषार्थी की चलन में यह विशेषता होगी जो उनके संकल्प, वाणी, कर्म तीनों ही एक समान होंगे। संकल्प ऊंच हों और कर्म कमजोर हों तो उनको तीव्र पुरुषार्थी नहीं कहेंगे। तीनों की समानता चाहिए। सदैव यह समझना चाहिए जो कि माया कभी-कभी अपना रूप दिखाती है यह सदैव के लिये विदाई लेने आती है। विदाई के बदले निमंत्रण दे देते हो। सदैव शिवबाबा के साथ हूँ, उनसे अलग होंगे ही नहीं तो फिर कोई क्या करेंगे। कोई बिज़ी रहता है तो फिर तीसरा डिस्टर्ब नहीं करता है। समझते हैं तंग करने वाला कोई नहीं आये। तो एक बोर्ड लगा देते हैं। आप भी ऐसा बोर्ड लगाओ। तो माया लौट जायेगी।

(24.01.1970)

जो कोई को प्राप्त नहीं हो सकता वह हमें प्राप्त हुआ है - इसी नशे और निश्चय में रहना है।

कोई भी चीज देखते हुए देखने में न आये। अगर देखना है तो भी एक को, बोलना भी उनसे। ऐसी स्थिति रहने से ही माया जीत बनेंगे। जो माया जीत बनते हैं वह जगतजीत बन जाते हैं। यह शुद्ध स्नेह सारे कल्प में एक ही बार मिलता है। ऐसे स्नेह को हम पाते हैं यह सदैव याद रखना है। जो कोई को प्राप्त नहीं हो सकता वह हमें प्राप्त हुआ है। इसी नशे और निश्चय में रहना है।

(24.01.1970)

कल्प पहले भी हम ही थे अब भी हम ही हैं - यह निश्चय रखना है।

अपना यादगार है - हम कल्प पहले वाले पाण्डव हैं। कितने बार पाण्डव बने हो जो अनगिनत बार होती है वह पक्की याद रहती है ना। यह स्मृति रहेगी तो फिर कभी भी विस्मृति नहीं होगी। कल्प पहले भी हम ही थे अब भी हम ही हैं यह नशा और निश्चय रखना है। हम ही हकदार हैं, किसके? ऊंच ते ऊंच बाप के। यह याद रहने से फिर सदैव एकरस अवस्था रहेगी। एक की याद में रहने से ही एकरस अवस्था होगी।

(24.01.1970)

ज्ञान के निश्चय का पक्का बीज़ डालो

स्थूल में भी जब कोई गाड़ी पकड़नी होती है तो समय को देखना पड़ता है। नहीं तो रह जाते हैं। समय तो चल ही रहा है। कोई के लिए समय को रूकना नहीं है। अब ढीले चलने के दिन गये। दौड़ी के भी दिन गये। अब है जम्प लगाने के दिन। कोई

भी बात की कमी फील होती है तो उसको एक सेकेण्ड में परिवर्तन में लाना इसको कहा जाता है जम्प। देखने में ऊंचा आता हैं लेकिन है बहुत सहज। सिर्फ निश्चय और हिम्मत चाहिए। निश्चय वालों की विजय तो कल्प पहले भी हुई थी वह अभी भी हुई पड़ी है। इतना पक्का अपने को बनाना है। सेकेण्ड सेकेण्ड मन, वाणी और कर्म को देखना है। बापदादा को यह देखना कोई मुश्किल नहीं। देखने के लिए अब कोई आधार लेने की अवश्यकता नहीं है। कहाँ से भी देख सकते हैं। पुरानों से नये में और ही उमंग होता है कि हम कर के दिखायेंगे। ऐसे तीव्र स्टुडेन्ट्स भी हैं। नये ही कमाल कर सकते हैं क्योंकि उन्हों को समय भी स्पष्ट देखने में आ रहा है। समय का भी सहयोग है, परिस्थितियों का भी सहयोग है। परिस्थितियां भी अब दिखला रही हैं कि पुरुषार्थ कैसा करना है। जब परीक्षायें शुरू हो गयी तो फिर पुरुषार्थ नहीं कर सकेंगे। फिर फाइनल पेपर शुरू हो जायेगा। पेपर के पहले पहुँच गये हो, यह भी अपना सौभाग्य समझना जो ठीक समय पर पहुँच गये हो। पेपर देने के लिए दाखिल हो सके हो। पेपर शुरू हो जाता है फिर गेट बन्द हो जाता है। शुरू में जो आये उन्हों को वैराग्य दिलाया जाता था। आजकल की परिस्थितियां ही वैराग्य दिलाती हैं। आप लोग की धरनी बनने में देरी नहीं है। सिर्फ ज्ञान के निश्चय का पक्का बीज डालेंगे और फल तैयार हो जायेगा। यह ऐसा बीज है जो बहुत जल्दी फल दे सकता है। बीज पावरफुल है। बाकी पालना करना, देखभाल करना आप का काम है। बाप सर्वशक्तिमान और बच्चों को संकल्पों को रोकने की भी शक्ति नहीं! बाप सृष्टि को बदलते हैं, बच्चे अपने को भी नहीं बदल सकते! यही सोचो कि बाप क्या है और हम क्या है? तो अपने ऊपर खुद ही शर्म आयेगा। अपनी चलन को परिवर्तन में लाना है। वाणी से इतना नहीं समझेंगे। परिवर्तन देख खुद ही पूछेंगे कि आप को ऐसा बनाने वाला कौन? कोई बदलकर दिखाता है तो न चाहते हुए भी उनसे पूछते हैं क्या हुआ, कैसे किया, तो आप की भी चलन को देख खुद खींचेंगे।

(25.01.1970)

'विजय हमारी ही है' ऐसा एक बल एक भरोसा हो

तुम सफलता के सितारे हो वा पुरुषार्थ के सितारे हो? क्या समझते हो? सफलता के सितारे हो? जैसा लक्ष्य होता है वैसा ही लक्षण होता है। अगर अब तक यही सोचते रहेंगे कि हम पुरुषार्थी हैं तो ऐसा समझने से कई छोटी-छोटी गलतियाँ अपने को माफ कर देते हो। समझते हो हम तो पुरुषार्थी है। इसलिए अब पुरुषार्थी नहीं लेकिन सफलता का स्वरूप बनना है। कहाँ तक पुरुषार्थ में रहेंगे। जब स्वयं सफलता स्वरुप बनेंगे तब दूसरी आत्माओं को भी सफलता का मार्ग बता सकेंगे। अगर खुद ही अन्त तक पुरुषार्थी चलते रहेंगे तो संगम के प्रालब्ध का अनुभव कब करेंगे? क्या यह जीवन पुरुषार्थी ही रहेंगी? इस संगमयुग की प्रालब्ध प्रत्यक्ष रूप में नहीं प्राप्त करेंगे? संगम के पुरुषार्थ का फल क्या? (सफलता) तो सफलता स्वरूप भी निश्चय करने से सफलता होती रहेगी। जब यह समझेंगे कि मैं हूँ ही सफलता का सितारा तो असफलता कैसे आ सकती है। सर्वशक्तिवान की सन्तान कोई कार्य में असफल नहीं हो सकती। अपने मस्तक में विजय का सितारा देखते हो या देखेंगे? विजय तो निश्चित है ही ना। विजय अर्थात् सफलता। अभी समय बदल रहा है। जब समय बदल गया तो अपने पुरुषार्थ को भी बदलेंगे ना। अब बाप ने सफलता का रूप दिखला दिया तो बच्चे भी रूप में व्यक्त देह में होते सफलता का रूप नहीं दिखायेंगे। अपने को सदैव सफलता का मूर्त ही समझो। निश्चय को विजय कहा जाता है। जैसा विश्वास रखा जाता है वैसा ही कर्म होता है। निश्चय में कमी होगी तो कर्म में भी कमी हो जायेगी। स्मृति शक्तिवान है तो स्थिति और कर्म भी शक्तिवान होंगें। इसलिए कभी भी अपनी स्मृति को कमजोर नहीं रखना। शक्तिदल वा पाण्डव कब असफल हो सकते हैं क्या? अपनी कल्प पहले वाली बात याद है कि पाण्डवों ने क्या किया था? विजयी बने थे। तो अब अपने स्मृति को श्रेष्ठ बनाओ। अब संगम पर है विजय का तिलक फिर इस विजय के तिलक से राज तिलक मिलेगा। इस विजय के तिलक को कोई मिटा नहीं सकते। ऐसा निश्चय है? जो विजयी रत्न हैं उनकी हर बात में विजय ही विजय है। उनकी हार हो नहीं सकती। हार तो बहुत जन्म खाते रहे। अब आकर विजयी बनने बाद फिर हार क्यों? 'विजय हमारी ही है' ऐसा एक बल एक भरोसा हो।

(26.01.1970)

फेथफुल का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि

एक होता करके ही दिखायेंगे, एक होता है हां करेंगे, सोचेंगे। हिम्मत है, लेकिन फेथ नहीं। फेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते। फेथफुल का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि। मन, वचन, कर्म हर बात में निश्चयबुद्धि। सिर्फ ज्ञान और बाप का परिचय, इतने तक निश्चयबुद्धि नहीं। लेकिन उनका संकल्प भी निश्चयबुद्धि, वाणी में भी निश्चय, कभी भी कोई बोल हिम्मतहीन का नहीं। उसको कहा जाता है महारथी। महारथी का अर्थ ही है महान्।

(26.03.1970)

बाप और स्वयं में निश्चयबुद्धि हैं तो विजय कहाँ जावेगी?

अब ऐसा समय जल्दी आयेगा जो यह शब्द नहीं बोलेंगे कि आप जानो। नहीं। हम सभी जानते हैं। क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिमान हैं ना। सभी शक्तियां समान रूप में ही जायेंगी। फिर मास्टर सर्वशक्तिमान हो जायेंगे। बाप का इतना निश्चय है। निश्चय बुद्धि है, वह विजयी है ही। बाप और स्वयं में निश्चयबुद्धि हैं तो विजय कहाँ जावेगी। निश्चयबुद्धि के पीछे-पीछे विजय आती है। वह विजय के पीछे नहीं दौड़ते, विजय उनके पीछे दौड़ती है। हम विजयी बनें इस संकल्प का भी वह त्याग कर लेते। ऐसे सर्वस्व त्यागी हो? सर्वस्व त्यागी और सर्व संकल्पों के त्यागी। सिर्फ सर्व सम्बन्धों का त्याग नहीं। सर्व संकल्पों से भी त्यागी। यही सम्पूर्ण स्थिति है। बापदादा क्या देखते हैं? विजय का सितारा। तो बापदादा की लिस्ट में विजयी सितारे हो। जैसे और कार्य में एक दो के सहयोगी हो वैसे ही भविष्य में भी एक दो के सहयोगी देखने में आ रहे हो। बनना नहीं है देखने में आ रहे हो। इतना ही समीप आना है, जितना अब आवाज कर रहे हैं और पहुँच रहा है। अब आप लोगों को सर्व बातों में थोड़े समय में पूरा फालो करना है। कर रहे हो और करते ही रहेंगे।

(02.04.1970)

बन कर ही छोडूंगा जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे तब विजयी बनेंगे

जितना जो सेन्सीबुल होते हैं वह ऐसे कार्य यथार्थ रीति से कर सकते हैं। सभी से सेन्सीबुल हैं ब्राह्मण। देवताओं से भी सेन्सीबुल ब्राह्मण हैं। तो कितना सेन्सीबुल बने हैं, उसकी परख होगी। सेन्स के साथ इसेन्स भी निकालना सीखना है। इसेन्स बहुत थोड़ा होता है। और जिसकी इसेन्स निकालते हैं वह बहुत विस्तार होता है। तो सेन्स भी अच्छा चाहिए और इसेन्स निकालने भी आना चाहिए। कोई कोई में सेन्स बहुत है, लेकिन इसेन्स में टिकना नहीं आता है। तो दोनों ही अभ्यास चाहिए। सुनाया था ना कि आप लोग भी नेचर क्योर करने वाले हो। नेचर अर्थात् संस्कार। जब पुरुषार्थ नहीं कर पाते हो तो दोष रखते हो नेचर पर। हमारी नेचर ऐसी है। नेचर पर दोष रख अपने को हल्का कर देते हो। लेकिन नहीं। आप लोगों का कर्तव्य ही है नेचर क्योर करना। वह नेचर क्योर वाले फास्ट रखाते हैं। तो आप लोगों को अब क्या करना है? फास्ट जाना है। लास्ट नहीं रहना है। फास्ट जाने के लिए फास्ट रखो। कौन सी फास्ट? टाइम टेबुल बनाओ। आज इस बात की फास्ट रखेंगे। प्रतिज्ञा करो। जैसे वह लोग कब कोई चीज की फास्ट रखते हैं, वैसे आप लोग भी हर रोज कोई न कोई कमी की बात नोट करो। वह लोग भी जो चीज नुकसानकारक है उसके लिए फास्ट रखते हैं। तो पुरुषार्थ में जो भी नुकसानकारक बाते हैं उनकी फास्ट रखो फिर उसको चेक भी करो। कई व्रत रखते हैं, उपवास रखते हैं। लेकिन कर नहीं पाते तो बीच में खा भी लेते हैं। यहाँ भी ऐसे करते हैं। जैसे भक्ति मार्ग की आदत पड़ी हुई है। सुबह को प्रतिज्ञा करते हैं कि यह नहीं करेंगे फिर दिन आरम्भ हुआ तो वह प्रतिज्ञा खत्म। यहाँ भी ऐसे सुबह को प्रतिज्ञा करते हैं फिर कह देते समस्या ऐसी आ गई है। समस्या समाप्त होगी तो फिर करूँगा। अब वह संस्कार खत्म करो। समेटना और समाना सीखो। पुराने संस्कार समाना हैं। उसकी प्रतिज्ञा करो वा फास्ट रखो, बड़े आदमियों के पहले से ही प्रोग्राम फिक्स होते हैं ना। आप लोग तो सभी से बड़े हो। तो अपना प्रोग्राम भी 6 मास का फिक्स करो। यह कार्य करके ही छोडूंगा। बन कर ही छोडूंगा जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे तब विजयी बनेंगे। बाप में तो निश्चय है लेकिन अपने में भी निश्चयबुद्धि होकर कार्य करो तो फिर विजय ही विजय है। विजय के आगे समस्या कोई चीज नहीं है। फिर वह समस्या नहीं फील होगी लेकिन खेल फील होगा। खेल खुशी से किया जाता है।

(18.06.1970)

फेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि

आज सभी की क्वालिटीज देख रहे हैं। देखा जाता है ना कि किन-किन क्वालिटीज में क्वालीफाइड हैं। तो यहाँ मुख्य क्वालिटीज में एक तो देख रहे हैं कि कहाँ तक नालेजफुल बने हैं। नालेजफुल के साथ फेथफुल, सक्सेसफुल, पावरफुल और सर्विसएबुल कहाँ तक बने हैं। इतनी क्वालिटीज़ अगर सभी में आ जायें तो फिर डिग्री मिल जायेगी। तो हरेक को यह देखना है कि इन क्वालिटीज में कौन-कौन सी क्वालिटीज धारण हुई हैं। नालेज फुल अर्थात बुद्धि में फुल नालेज की धारणा। जितना नालेजफुल होगा उतना ही वह सक्सेसफुल होगा। अगर सक्सेसफुल कम हैं तो समझेंगे नालेज की कमी है। सक्सेसफुल न होने के कारण क्या है? फेथफुल कम। फेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि। एक तो अपने में फेथ दूसरा बाप-दादा में और तीसरा सर्व परिवार की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है। जितना फेथफुल बनकर निश्चयबुद्धि होकर कोई कर्तव्य करेंगे तो निश्चयबुद्धि की विजय अर्थात् फेथफुल होने से सक्सेसफुल हो ही जाता है। उसका हर कर्तव्य, हर संकल्प, हर बोल पावरफुल होगा। ऐसे क्वालीफाइड को ही यह डिग्री प्राप्त हो सकती है। अगर डिग्री को प्राप्त नहीं करते तो क्या होता है मालूम है? कोर्ट द्वारा क्या निकलता है? डिक्री (नोटिस)। या तो डिग्री मिलेगी या तो डिक्री निकलेगी। धर्मराजपुरी में बन्द होने की डिक्री निकलेगी।

(11.07.1970)

निश्चयबुद्धि हो करें तो फेल नहीं होंगे

जो ज्यादा सेफ में रहते हैं, वह मस्तकमणी हैं। योगयुक्त और निश्चयबुद्धि बनकर के कर्तव्य करने से सफलता प्राप्त हो ही जाती है। पहले से ही अगर यह संकल्प बुद्धि में होता है कि करते हैं परन्तु मिलता मुश्किल है। तो यह संकल्प भी निश्चय की परसेन्ट को कम कर देता है। निश्चयबुद्धि हो करें तो फेल नहीं होंगे। समस्याओं का सामना करने से सफलता मिलती है। विघ्न तो आयेंगे लेकिन लगन की अग्नि से विघ्न भस्म हो जायेंगे। अच्छा !

(11.07.1970)

निश्चय बुद्धि के बोल कैसे होंगे?

भट्ठी से मुख्य कौन सी शक्तियों को धारण कर के जाना है, वह बताते हैं। हैं तो बहुत लेकिन मुख्य एक तो सहन शक्ति चाहिए, परखने की शक्ति चाहिए और विस्तार को छोटा करने की और फिर छोटे को बड़ा करने की भी शक्ति चाहिए। कहाँ विस्तार को कम करना पड़ता है और कहाँ विस्तार भी करना पड़ता है। समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सामना करने की शक्ति और निर्णय करने की भी शक्ति चाहिए। इन सबके साथ-साथ सर्व को स्नेह और सहयोगी बनाने की अर्थात् सर्व को मिलाने की भी शक्ति चाहिए। तो यह सभी शक्तियाँ धारण करनी पड़े। तब ही सभी लक्षण पूरे हो सकते हैं। हो सकते भी नहीं लेकिन होना ही है। करके ही जाना है। यह निश्चय बुद्धि के बोल हैं। इसके लिए एक बात विशेष है। रुहानियत भी धारण करनी है और साथ-साथ ईश्वरीय रुहाब भी हो।

(27.07.1970)

निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों की निशानी

सदैव बुद्धि में बापदादा की स्मृति व निशाना और आने वाले राज्य के नज़ारे, नयनों में और मुख में सदैव बापदादा का नाम हो। इसको कहते हैं बापदादा के अति स्नेही और समीप रत्न। सभी ने श्रेष्ठ और समीप रत्न बनने का दॉव लगाया है या जो भी मिले वह अच्छा? अगर इस बात में सन्तुष्ट रहे तो सम्पूर्ण नहीं बन सकेंगे। इसलिये सदैव यह दॉव लगाओ कि हम विजयी और सम्पूर्ण बनकर ही दिखायेंगे। कमजोरी के शब्द समाप्त। करेंगे, हो ही जायेगा, पुरुषार्थ कर रहे हैं, यह शब्द भी न निकले। करके ही दिखायेंगे, बनकर ही दिखायेंगे। यह है निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों के बोल। और वह है कमानधारी बच्चों का बोल। बनना है स्वदर्शनचक्रधारी लेकिन बन जाते हैं कमानधारी। कई सोचते हैं कोई तो वह भी बनेंगे ना। इस बात में दयालू न बनो।

कोई तो बनेंगे इसलिये हम ही बन जाएं। ऐसे बनने वाले बहुत हैं।

(29.10.1970)

निश्चयबुद्धि बन अपने उमंग को तीव्र बनाओ

हरेक को अपने में कोई न कोई विशेषता भरनी है। कोई भी एक सब्जेक्ट में नम्बरवन ज़रूर बनना चाहिए। बनना तो सभी में चाहिए। अगर नहीं बन सकती हो तो कोई न कोई सब्जेक्ट में विशेष नम्बर वन अपने को ज़रूर बनाना है। यहाँ से निकल कर और सर्विस में मददगार बनने के लिए जो कहा था वह प्लैन बनाया है? जो प्लैन बनाया है उस प्रमाण फिर तैयार भी जरूर रहना है। विघ्न तो आयेंगे लेकिन जब आवश्यक बात समझी जाती है तो उसका प्रबन्ध भी किया जाता है। जैसे आपकी प्रवृत्ति में कई आवश्यक बातें सामने आती हैं तो प्रबन्ध करते हो ना। इस रीति अपने को स्वतन्त्र बनाने के लिए भी कोई न कोई प्रबन्ध रखो। कोई साथी बनाओ। आपस में भी एक-दो दैवी परिवार वाले सहयोगी बन सकते हैं। लेकिन तब बनेंगे जब इतना एक-दो को स्नेह देकर सहयोगी बनायेंगे। प्लैन रचना चाहिए कैसे अपने बन्धन को हल्का कर सकती हैं। कई चतुर होते हैं तो अपने बन्धनों को मुक्त करने के लिए युक्ति रचते हैं। ऐसे नहीं कि प्रबन्ध मिले तो निकल सकती हूँ। प्रबन्ध अपने आप करना है। अपने आप को स्वतन्त्र करना है। दूसरा नहीं करेगा। योगयुक्त होकर ऐसा प्लैन सोचने से इच्छा पूर्ति के लिए प्रबन्ध भी मिल जायेंगे। सिर्फ निश्चय-बुद्धि होकर अपने उमंग को तीव्र बनाओ। उमंग ढीला होता है तो प्रबन्ध भी नहीं मिलता। मददगार कोई नहीं मिलता। इसलिए हिम्मतवान बनो तो मददगार भी कोई न कोई बन जायेंगे। अब देखेंगे कि अपने को स्वतन्त्र बनाने की कितनी शक्ति हरेक ने अपने में भरी है। माया जीत तो हो। लेकिन अपने को स्वतन्त्र बनाने की शक्ति भी बहुत ज़रूरी है। यह पेपर होगा कि शक्ति कहाँ तक भरी है। जो प्रवृत्ति में रहते स्वतन्त्र बन मददगार बनेंगी उनको इनाम भी भेजेंगे। अच्छा।

छोटे बाप समान होते हैं। हैं तो सभी एक। किन्तु पहचान के लिए गुजराती, पंजाबी आदि कहते हैं। गुज़रात नम्बरवन बनकर दिखायेंगे ना। देखेंगे इनाम लायक कौन बनता है। एक-एक रत्न की आपनी विशेषता है। किसमें स्नेह की, किसमें सहयोग की। किसमें शक्ति की, किसमें दिव्यगुणों की मूर्त बनने की, किसमें ज्ञान की विशेषता है। अभी सर्व शक्तियां अपने में भरनी हैं। सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनना है। सर्वगुण सम्पन्न नहीं बनेंगे तो 16 कला से 14 कला हो जायेंगे। चन्द्रमा से जरा भी कला कम होती है तो अच्छा नहीं लगता है। सम्पूर्णता से सुन्दरता होती है। तीव्र पुरुषार्थी का तीर सदा निशाने पर लगता है। कभी भी माया से हार नहीं खाना। लाइट का गोला बनकर जाना। लाइट नालेज को भी कहते हैं और 'लाइट-माइट' भी है। 'कोशिश' शब्द कमज़ोरी का है। जहाँ कमज़ोरी होती है वहाँ पहले माया तैयार होती है। जैसे कमज़ोर शरीर पर बीमारी जल्दी आ जाती है वैसे 'कोशिश' शब्द कहना भी आत्मा की कमज़ोरी है। माया समझती है कि यह हमारा ग्राहक है तो आ जाती है। निश्चय की विजय है। जैसे सारे दिन की जो स्मृति रहती है वैसे ही स्वप्न आते हैं। यदि सारे दिन में शक्तिरूप की स्मृति रहेगी तो कमज़ोरी स्वप्न में भी नहीं आयेगी।

(05.03.1971)

निश्चय में कभी परसेन्टेज नहीं होती है

जो वरदान के अधिकारी बन जाते हैं वह किसके अधीन नहीं होते। समझा। तो अब अधीनता समाप्त, अधिकार शुरू। कब कोई अधीनता का संकल्प भी न आये। ऐसा पक्का निश्यच है। निश्चय में कभी परसेन्टेज नहीं होती है। शक्तिसेना ने अपने में क्या धारणा की? जब स्नेह और शक्ति समान होंगे फिर तो सम्पूर्ण हो ही गये। अपने शूरवीर रूप का साक्षात्कार किया है? शूरवीर कभी किससे घबराते नहीं। लेकिन शूरवीर के सामने आने वाले घबराते हैं। तो अभी जो शूरवीरता का साक्षात्कार किया, सदैव वही सामने रखना। और आज जो दो शब्द सुनाये वह सदैव याद रखना।

(13.03.1971)

कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है

सदैव यह नशा रखो कि असली स्वरूप, असली धर्म, असली कर्म हमारा कौन-सा है? असली नालेज के हम मास्टर नालेजफुल हैं यह नशा कम है? यह नशा सदैव रहे तो क्या बन जायेंगे? जो बन जायेंगे उसका यादगार देखा है? दिलवाला मन्दिर है तपस्वी कुमार और तपस्वी कुमारियों का यादगार। और सदैव नशे में स्थित रहने का यादगार कौन-सा है? अचलघर। सदैव उस नशे में रहने से अचल, अड़ोल बन जायेंगे। फिर माया संकल्प रूप में भी हिला नहीं सकती। ऐसे अचल बन जायेंगे। यादगार है ना कि रावण सम्प्रदाय ने पांव हिलाने की कोशिश की लेकिन जरा भी हिला न सके। ऐसा नशा रहता है कि यह हमारा यादगार है या समझते हो कि यह बड़े-बड़े महारथियों का यादगार है? यह मेरा यादगार हैं-ऐसा निश्चय बुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त हो जाती है। यह कभी भी नहीं सोचो कि यह कोई और महारथियों का है, हम तो पुरुषार्थी हैं। अगर निश्चय में, स्वरूप की स्मृति में ही कमज़ोरी होगी तो कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी। तो सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना बनाया....। बना हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर 'बना बनाया' जो कहावत है उसको पूरा करना है। जब निश्चय हो जाता है कि मैं यह हूँ वा यह मुझे करना ही है, मैं कर सकता हूँ तब वह नशा चढ़ता है। निश्चय नहीं तो नशा भी नहीं चढ़ता और निश्चय है तो नशे की स्थिति के सागर में लहराते रहेंगे। ऐसे स्थिति का अनुभवी मूर्त्त जब बन जायेंगे तो आपकी मूर्त्त से सिखलाने वाले की सूरत दिखाई देगी। तो ऐसे अनुभवीमूर्त्त हो जो बाप और शिक्षक की सूरत आपकी मूर्त्त से प्रत्यक्ष हो। ऐसे बने हो वा बन रहे हो? सफलता के सितारे हो वा उम्मीदवार सितारे हो। सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार है। क्योंकि जब सर्वशक्तिवान कहते हो; तो असफलता का कारण है शक्तिहीनता। शक्ति की कमी के कारण माया से हार खाते हैं। जब सर्वशक्तिवान बाप की स्मृति में रहते हैं तो सर्वशक्तिवान के बच्चे होने के कारण सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार हो गया। हर सेकेण्ड में सफलता समाई हुई होनी चाहिए। असफलता के दिन समाप्त। अब सफलता हमारा नारा है - यह स्मृति में रखो।

बहुत सहज सरल रास्ता है। जो सेकेण्ड में अपने को नकली से असली बना सकते हो? इतना सरल मार्ग कब मिलेगा? कभी भी नहीं? माया के अधीन क्यों बनते हो? क्योंकि आलमाइटी अथॉर्टी के बच्चे हैं यह भूल जाते हो। आजकल छोटी-मोटी अथॉर्टी रखने वाले कितनी खुमारी में रहते हैं! तो आलमाइटी अथॉर्टी वाले कितनी खुमारी में रहने चाहिए? शास्त्रवादी जो अपने को शास्त्रों की अथॉर्टी मानते हैं वह भी कितनी खुमारी में, कितना उल्टी नालेज के निश्चय में रहते हैं। किसने सुनाया, किसने देखा, कुछ भी पता नहीं। फिर भी शास्त्रों की अथॉर्टी मानने के कारण अपनी हार कभी नहीं मानेंगे। तो आप लोगों की सर्व से श्रेष्ठ अथॉर्टी है। ऐसे अथॉर्टी से किसके भी सामने जाओ तो सभी सिर झुकायेंगे। आप लोग नहीं झुक सकते। तो अपनी अथॉर्टी को कायम रखो। आप विश्व को झुकाने वाले हो। जो विश्व को झुकाने वाले हैं वह किसके आगे झुक नहीं सकते। उस अथॉर्टी की खुमारी से किसी भी आत्मा का कल्याण कर सकते हो। ऐसी खुमारी को कभी भी भूलना नहीं। बहुत समय से अभुल बनने से भविष्य बहुत समय के लिए राज्य-भाग्य प्राप्त करेंगे।

(24.05.1971)

निश्चय की विजय है और हिम्मत रखने वालों का बापदादा और परिवार मददगार है

यह भी पक्का कर दो कि कहाँ भी जायेंगे लेकिन जो अपने आप से अथवा मधुबन के संगठन बीच, ईश्वरीय दरबार के बीच जो प्रतिज्ञा की है वह सदा कायम रहेगी। ऐसी अविनाशी छाप हरेक ने अपने आपको लगाई है? निश्चय की विजय अवश्य है और हिम्मत रखने वालों की बापदादा और सर्व ईश्वरीय परिवार की आत्मायें मददगार रहती हैं। कितना भी कोई आपकी हिम्मत को हिलाने की कोशिश करे लेकिन प्रतिज्ञा जो की है उस प्रतिज्ञा की शक्ति से, जरा भी पांव हिलाना नहीं। पाँव कौन से? जिस द्वारा याद की यात्रा करते हो। चाहे सृष्टि क्यों न हिलावे लेकिन आप सारे सृष्टि की आत्माओं से शक्तिशाली हैं। एक तरफ सारी सृष्टि हो, दूसरे तरफ आप एक भी हो- तो भी आपकी शक्ति श्रेष्ठ है। क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप आपके साथी हैं।

इसलिए गायन है शिव शक्तियाँ। जब शिव और शक्तियाँ दोनों ही साथी हैं तो सृष्टि की आत्मायें उसके आगे क्या हैं? अनेक होते भी एक समान नहीं हैं। इतना निश्चय बुद्धि वा प्रतिज्ञा को पालन करने की हिम्मत रखने वाली बनकर जा रही हो ना। प्रैक्टिकल पेपर होगा। थ्योरी का पेपर तो सहज होता है। किसको सप्ताह कोर्स कराना वा म्युज़ियम या प्रदर्शनी समझाना है थ्योरी का पेपर। लेकिन प्रैक्टिकल पेपर में जो पास होते हैं वही 'पास विद आनर' होते हैं। जो ऐसे पास होते हैं वही बापदादा के पास रहने वाले रत्न बनते हैं। तो पास में रहना पसन्द करती हो वा दूर से देखना पसन्द आता है? 'पास विथ आनर' बनेंगे। यह भी हिम्मत रखनी है ना। इस हिम्मत को अविनाशी बनाने के लिए एक बात सदैव ध्यान में रखनी है।

(11.06.1971)

जैसे बाप में निश्चय, पढ़ाई में निश्चय है वैसे ही अपने में भी हर समय और हर संकल्प निश्चयबुद्धि बनकर करो

जो श्रीमत के आधार पर डायरेक्शन प्रमाण चल रहे हैं, अपने को ट्रस्टी समझ कर चल रहे हैं, उनको तो सपूत कहेंगे ना। कहाँ-कहाँ बहुत सोच भी रिजल्ट बदल देती है। जैसे पेपर के टाइम पेपर करने के बजाए क्वेश्चन के सोच में चले जाते हैं तो पेपर रह जाता है। तो ज्यादा सोच में नहीं जाना है। बाप समझते हैं—सपूत बच्चे हैं तब तो श्रीमत पर चल रहे हैं। बाकी रही सबूत दिखाने की बात, वह भी हरेक यथाशक्ति दिखा रहे हैं और दिखाते रहेंगे। जितना बाप बच्चों में निश्चयबुद्धि है, बच्चे अपने में निश्चयबुद्धि कम हैं। इसलिए हर कार्य में विजय हो, यह रिज़ल्ट कभी-कभी दिखाई देती है। जैसे बाप में निश्चय, पढ़ाई में निश्चय है वैसे ही अपने में भी हर समय और हर संकल्प निश्चयबुद्धि बनकर करना, उसकी कमी है। इस कमी को भी कब तक भरेंगे? दो-तीन वर्ष तक? दो-तीन वर्ष तो स्वप्न में भी कभी सोच में न लाना। क्या कहना चाहिए ? अभी। जो तीव्र पुरुषार्थी हैं उनके मुख से 'कभी' शब्द नहीं निकलेगा। वह सदैव 'अभी', सिर्फ कहेंगे भी नहीं, लेकिन अभी-अभी करके दिखायेंगे। यह है तीव्र पुरुषार्थ।

(22.06.1971)

निश्चय बुद्धि हो कल्याण की भावना रखने से दृष्टि और वृत्ति दोनों ही बदल जाते हैं

अगर निमित्त बनने वालों में कोई कमी है तो वह छिप नहीं सकते। इसलिए तुम निमित्त बनी हुई आत्माओं को इतना ही विशेष अपने संकल्प, वाणी और कर्म के ऊपर अटेन्शन रखना पड़े। अगर अटेन्शन नहीं होता है तो आप लोगों के चेहरे में ही रेखाएं टेन्शन की दिखाई पड़ती हैं। जैसे रेखाओं से लोग जान लेते हैं कि यह क्या-क्या अपना भाग्य बना सकते हैं। तो अगर अटेन्शन कम रहता है तो चेहर पर टेन्शन की रेखाएं दिखाई पड़ती हैं। उसे माया के नालेजफुल जान लेते हैं, वह भी कम नहीं। आप लोग अपने आपको भी कभी अलबेले होने कारण परख न सको लेकिन वह लोग इस बात में आप लोगों से तेज हैं। क्योंकि उन्हों का कर्त्तव्य ही यही है। इसलिए निमित्त बने हुए को इतनी ज़िम्मेदारी लेनी पड़े। कोई भी बात मुश्किल लगती है तो कोई कमी है ज़रूर। अपने आप में निश्चय बुद्धि बनने में कब कुछ कमी कर लेते हैं। जैसे बाप में 100 प्रतिशत हैं, चाहे एक तरफ आप एक निश्चय बुद्धि हो, दूसरे तरफ सारे विश्व की आत्माएं क्यों न हो, लेकिन इसमें डगमग नहीं हो सकेंगे। ऐसे ही चाहे दैवी वा ईश्वरीय आत्माओं द्वारा वा संसारी आत्माओं द्वारा भल कोई भी डगमग कराने के कारण बनें लेकिन अपने आप में भी निश्चय बुद्धि की कमी नहीं होनी चाहिए। इसलिए रुहाब के साथ रहम भी रखना है। अकेला रुहाब नहीं। रहम भी हो।

निश्चय बुद्धि हो कल्याण की भावना रखने से दृष्टि और वृत्ति दोनों ही बदल जाते हैं। कैसा भी कोई क्रोधी आदमी सामना करने वाला वा कोई इनसल्ट करने वाला, गाली देने वाला हो, लेकिन जब कल्याण की भावना हर आत्मा प्रति रहती है तो रोब बदलकर रहम हो जायेगा। फिर रिजल्ट क्या होगी? उसको हिला सकेंगे? वह शुभ कल्याण की भावना उसके संस्कारों को परिवर्तन करने का फल दिखायेगी। यह ज़रूर होता है - कोई बीज़ से प्रत्यक्ष फल निकलता है कोई फौरन प्रत्यक्ष फल नहीं देते। कुछ समय लगता है। इसमें अधीर्य नहीं होना है कि फल तो निकलता ही नहीं है। सभी फल फौरन नहीं मिलते। कोई कोई बीज फल तब देता है जब नेचुरल वर्षा होती है। पानी देने से नहीं निकलता। यह भी ड्रामा की नूँध है। अब अविनाशी बीज़ जो डाल

रहे हो कोई तो प्रत्यक्षफल दिखाई देंगे। कोई फिर नेचुरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचुरल वायुमण्डल, वातावरण उस बीज़ का फल निकालेगा। विनाश तो होगा - यह तो गैरन्टी है। जब बीज़ ही अविनाशी है तो फल न निकल-यह तो हो नहीं सकता। लेकिन कोई नज़दीक आते हैं, कोई पीछे आने वाले हैं तो अभी आयेंगे कैसे? वह फल भी पीछे देंगे। इसलिए कभी भी सर्विस करते, यह नहीं देखना वा यह नहीं सोचना कि जो किया वह कोई व्यर्थ गया। नम्बरवार समय प्रमाण फल दिखाई देते जायेंगे।

(11.07.1971)

अपने में 100 प्रतिशत निश्चय-बुद्धि हैं तो उनकी कभी हार नहीं हो सकती

सदाचारी कौन बन सकता है? जो सदा योगी स्थिति में स्थित रहते हैं वही सदाचारी होते हैं। तो हम सदाचारी हैं इसलिए कभी, कैसे भी डगमग नहीं हो सकते। सदैव अचल-अडोल हो ऐसे ही अपनी भट्ठी में प्रतिज्ञा रूपी स्विच को सेट किया है? अगर प्रतिज्ञा रूपी स्विच को सेट कर दिया तो प्रैक्टिकल में प्रतिज्ञा प्रमाण ही चलेगा ना। तो सदाचारी वा निरन्तर योगी व सहज योगी नहीं हो जायेंगे? गायन है ना कि पाण्डव पहाड़ों पर जाकर गल गये। पहाड़ का अर्थ क्या है? पहाड़ ऊंचा होता है ना - धरती से? तो पाण्डव, धरती अर्थात् नीचे की स्टेज को छोड़कर जब ऊंची स्टेज पर जाते हैं तो अपने पास्ट के वा ईश्वरीय मर्यादाओं के विपरीत जो संस्कार, स्वभाव, संकल्प, कर्म वा शब्द जो भी हैं उसमें अपने को मरजीवा बनाया अर्थात् गल गये। तो आप भी धरती से ऊंचे चले गये थे ना? पूरे गल कर आये हो वा कुछ रखकर आये हो? अपने में 100 प्रतिशत निश्चय-बुद्धि हैं तो उनकी कभी हार नहीं हो सकती। एक चाहिए हिम्मत; दूसरा, फिर हिम्मत के साथ-साथ हुल्लास भी चाहिए। अगर हिम्मत और हुल्लास नहीं, तो भी प्रैक्टिकल में शो नहीं हो सकता। इसलिए दोनों साथ-साथ चाहिए। एक अन्तर्मुखता और दूसरी बाहर से शो करने वाली हर्षितमुखता, वह अवस्था है? दोनों साथ-साथ चाहिए। इस रीति हिम्मत के साथ हुल्लास भी चाहिए, जिससे दूर से ही मालूम हो कि इन्हों के पास कोई विशेष प्राप्ति है। जो प्राप्ति वाले होते हैं उनके हर चलन, नैन-चैन से वह उमंग उत्साह दिखाई देता है। भक्ति -मार्ग में सिर्फ उत्साह दिलाने के लिए उत्सव मनाने का साधन बनाया है। खुशी में नाचते हैं ना। कोई की भी उदासी या उलझन आदि होती है, वह किनारे हो जाती है ना। तो हिम्मत के साथ हुल्लास भी जरूर चाहिए और अविनाशी स्टैम्प लगाई है? अगर अविनाशी की स्टैम्प न लगाई तो क्या होगा? दण्ड पड़ जायेगा। इसलिए यह स्टैम्प जरूर लगाना। तो यह सदाकाल के लिए समर्पण समारोह है ना? फिर बार-बार तो यह समारोह नहीं मनाना पड़ेगा ना? हाँ, याद की निशानी का मनाना और बात है। जैसे बर्थ-डे-याद निशानी के लिए मनाते हैं ना। तो यह समर्पण प्रतिज्ञा दिवस है।

(01.08.1971)

अमृतवेले निश्चय का तिलक लगाओ

डबल तिलकधारी भी बनना है। डबल तिलक कौन सा है? रोज अपना तिलक देखते हो? अमृतवेले जब ज्ञान-स्नान करते हो तो तिलक भी लगाते हो? आत्मिक स्मृति वा स्वरूप का तिलक तो हो गया। दूसरा है निश्चय का तिलक। एक तो आत्मिक स्थिति का तिलक है और दूसरा हम विजयी रत्न हैं। हर संकल्प, हर कदम में विजय, सफलता भरी हुई हो। यह विजय का तिलक विक्टरी है। तो आप लोगों का तिलक है विजय का और विजयी रूप का। यह डबल तिलक सदैव स्मृति में रहे। स्मृति अर्थात् तिलक धारी बनना है। तो डबल तिलक को भी कभी भूलना नहीं है। मैं विजयी हूँ-इस स्मृति में रहने से कभी भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियां हिला नहीं सकती। विजय हुई पड़ी है वर्तमान समय अपनी स्थिति डगमग होने कारण विजय अर्थात् सफलता में डगमग दिखाई देते हैं। लेकिन विजय हर कर्त्तव्य में हुई पड़ी है। जैसे कोई सीजन की खराबी होती है तो सीजन की खराबी के कारण टेलीवीज़न में भी स्पष्ट दिखाई नहीं देता है, इस रीति से अपनी स्थिति की हलचल होने कारण विजय का अथवा सफलता का स्पष्ट अनुभव नहीं कर पाते हो। कारण क्या है? अपनी स्थिति की हलचल, स्पष्ट को भी अस्पष्ट बना देती है। उलझनों के कारण उज्जवल नहीं बन सकते हो। इसलिए अपनी स्थिति की हलचल नहीं होगी तो स्मृति क्लीयर होगी। वह होती है सीजन क्लीयर, यह है स्मृति क्लीयर। अगर स्मृति क्लीयर है तो सफलता भी क्लीयर रूप में दिखाई देगी। अगर स्मृति

क्लीयर नहीं वा अपने ऊपर पूरी केयर नहीं, केयरफुल कम होने कारण रिजल्ट भी फुल नहीं दिखाई देती। जितना अपने ऊपर केयर रखते हो उतना क्लीयर होते हो और इतना ही सफलता अपने पुरुषार्थ में वा सर्विस में स्पष्ट और समीप दिखाई देगी। नहीं तो न स्पष्ट दिखाई देती है, न समीप दिखाई देती है। टेलीवीज़न में दूर का दृश्य समीप और स्पष्ट भी होता है ना। इस रीति से एकरस स्थिति होने कारण, केयरफुल और क्लीयर होने कारण सफलता समीप और स्पष्ट दिखाई देगी। समझा? अगर दोनों से एक की भी कमी होगी तो सफलता अनुभव नहीं करेंगे, फिर उलझेंगे। फिर कमजोरी की भाषा होती है कि 'क्या करें, यह कैसे होगा' - यह भाषा हो जाती है। इसलिए दोनों ही बातें धारण करके जायेंगे तो सफलतामूर्त बन जायेंगे सफलता इतनी समीप आयेगी, जैसे गले में माला कितनी समीप आ जाती है। तो सफलता भी गले की माला बन जायेगी। अच्छा।

(20.08.1971)

अपने में सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि की निशानीयाँ

जैसे बाप के लिए कहा हुआ है-कि वह जो है, जैसा है, वैसा ही उनको जानने वाला सर्व प्राप्तियां कर सकता है। वैसे ही स्वयं को जानने के लिए भी जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा ही जान कर और मान कर सारा दिन चलते-फिरते हो? क्योंकि जैसे बाप को सर्व स्वरुपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी ऐसा जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ-ऐसे मानकर चलेंगे तो क्या स्थिति होगी? देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत। क्योंकि जब स्वयं को अच्छी तरह से जान और मान लेते हैं; तो जो स्वयं को जानता है उस द्वारा कोई भी संयम में चलना। स्वयं को मान करके चलने वाले से स्वत: ही संयम साथ-साथ रहता है। उनको सोचना नहीं पड़ता कि यह संयम है वा नहीं, लेकिन स्वयं की स्थिति में स्थित होने वाला जो कर्म करता है, जो बोल बोलता है, जो संकल्प करता है वही संयम बन जाता है। जैसे साकार में स्वयं की स्मृति में रहने से जो कर्म किया वही ब्राह्मण परिवार का संयम हो गया ना। यह संयम कैसे बने? ब्रह्मा द्वारा जो कुछ चला वही ब्राह्मण परिवार के लिए संयम बना। तो स्वयं की स्मृति में रहने से हर कर्म संयम बन ही जाता है और साथ-साथ समय की पहचान भी उनके सामने सदैव स्पष्ट रहती है। जैसे बड़े आफीसर्स के सामने सारा प्लैन होता है, जिसको देखते हुए वह अपनी-अपनी कारोबार चलाते हैं। जैसे एरोप्लैन वा स्टीमर चलाने वालों के पास अपने-अपने प्लैन्स होते हैं जिससे वह रास्ते को स्पष्ट समझ जाते हैं। इसी प्रकार जो स्वयं को जानता है उससे संयम आटोमेटिकली चलते रहते हैं और समय की पहचान भी ऐसे स्पष्ट होती है। सारा दिन स्वयं जो है, जैसा है वैसी स्मृति रहती है। इसलिए गाया हुआ भी है -जो कर्म मैं करुंगा मुझे देख सभी करेंगे। तो ऐसे स्वयं को जानने वाला जो कर्म करेगा वही संयम बन जायेगा। उनको देख सभी फालो करेंगे। ऐसी स्मृति सदा रहे। पहली स्टेज जो होती है उसमें पुरुषार्थ करना पड़ता है, हर कदम में सोचना पड़ता है कि यह राइट है वा रांग है, यह हमारा संयम है वा नहीं? जब स्वयं की स्मृति में सदा रहते हैं तो नैचुरल हो जाता है। फिर यह सोचने की आवश्यकता नहीं रहती। कब भी कोई कर्म बिना संयम के हो नहीं सकता। जैसे साकार में स्वयं के नशे में रहने के कारण अथार्टी से कह सकते थे कि अगर साकार द्वारा उल्टा भी कोई कर्म हो गया तो उसको भी सुल्टा कर देंगे। यह अथार्टी है ना। उतनी अथार्टी कैसे रही? स्वयं के नशे से। स्वयं के स्वरुप की स्मृति में रहने से यह नशा रहता है कि कोइ भी कर्म उल्टा हो ही नहीं सकता। ऐसा नशा नम्बरवार सभी में रहना चाहिए। जब फालो फादर है तो फालो करने वालों की यह स्टेज नहीं आयेगी? इसको भी फालो करेंगे ना। साकार रुप फिर भी पहली आत्मा है ना। जो फर्स्ट आत्मा ने निमित बनकर के दिखाया तो उनको सेकेण्ड, थर्ड जो नम्बरवार आत्माएं है वह सभी बात में फालो कर सकती हैं। निराकार स्वरुप की बात अलग है। साकार में निमित बनकर के जो कुछ करके दिखाया वह सभी फालो कर सकते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। इसी को कहा जाता है अपने में सम्पूर्ण निश्चय- बुद्धि। जैसे बाप में 100परसेन्ट निश्चय बुद्धि बनते हैं, तो बाप के साथ-साथ स्वयं में भी इतना निश्चय बुद्धि जरुर बनें। स्वयं की स्मृति का नशा कितना रहता है? जैसे साकार रुप में निमित्त बन हर कर्म संयम के रुप में करके दिखाया, ऐसे प्रैक्टिकल में आप लोगों को फालो करना है। ऐसी स्टेज है? जैसे गाड़ी अगर ठीक पट्टे पर चलती है तो निश्चय रहता है एक्सीडेंट हो नहीं सकता। बेफिक्र हो चलाते रहेंगे। वैसे ही अगर स्वयं की स्मृति का नशा है, फाउन्डेशन ठीक है तो कर्म और वचन संयम के बिना हो नहीं सकता। ऐसी स्टेज समीप आ रही है। इसको ही कहा जाता है सम्पूर्ण स्टेज के समीप। इस स्वमान में स्थित होने से अभिमान नहीं आता। जितना स्वमान उतनी निर्माणता। इसलिए उनको अभिमान नहीं रहेगा। जैसे

निश्चय की विजय अवश्य है, इसी प्रकार ऐसे निश्चयबुद्धि के हर कर्म में विजय है; अर्थात् हर कर्म संयम के प्रमाण है तो विजय है ही है। ऐसे अपने को चेक करो -कहाँ तक इस स्टेज के नजदीक हैं? जब आप लोग नजदीक आयेंगे तब फिर दूसरों के भी नम्बर नजदीक आयेंगे। दिन-प्रतिदिन ऐसे परिवर्तन का अनुभव तो होता होगा। वेरीफाय कराना, एक दो को रिगार्ड देना वह दूसरी बात है लेकिन अपने में निश्चय रख कोई से पूछना वह दूसरी बात है। वह जो कर्म करेगा निश्चयबुद्धि होगा। बाप भी बच्चों को रिगार्ड देकर के राय-सलाह देते हैं ना। ऐसी स्टेज को देखना है कितना नजदीक आये हैं? फिर यह संकल्प नहीं आयेगा पता नहीं यह राइट है वा रांग है; यह संकल्प मिट जायेगा क्योंकि मास्टर नालेजफुल हो। स्वयं के नशे में कमी नहीं होनी चाहिए। कारोबार के संयम के प्रमाण एक दो को रिगार्ड देना - यह भी एक संयम है। ऐसी स्टेज है, जैसे एक सैम्पल रुप में देखा ना! तो साकार द्वारा देखी हुई बातों को फालो करना तो सहज है ना। तो ऐसी स्टेज समानता की आ रही है ना। अभी ऐसे महान् और गुह्य गति वाला पुरुषार्थ चलना है। साधारण पुरुषार्थ नहीं। साधारण पुरुषार्थ तो बचपन का हुआ। लेकिन अब विशेष आत्माओं के लिए विशेष ही है।

(03.02.1972)

100परसेन्ट निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चित विजयी और निश्चिन्त

अपनी स्थिति का वर्णन अन्य आत्माओं द्वारा गायन के रुप में सुनते हो ना। अपने चैतन्य रुहानी रुप का, चरित्रों का यादगार भी देख रहे हो। यह सभी देखते हुए, सुनते हुए क्या अनुभव करते हो? क्या यह समझते हो कि यह मैं ही तो हूँ? ऐसे अनुभव करते हों वा यह समझते हो कि यह यादगार किन विशेष आत्माओं का है? जैसे साकार रुप में यह निश्चय हर कर्म में देखा कि अपने भविष्य यादगार को देखते हुए सदा यह खुमारी और खुशी थी कि यह मैं ही तो हूँ, ऐसे ही आप सभी को यादगार चित्र देखते हुए वा चरित्र सुनते हुए वा गुणों का गायन सुनते हुए यह खुमारी और खुशी रहती है कि यह मैं ही तो हूँ? यह सदा स्मृति में रहना चाहिए कि अभी-अभी हम प्रत्यक्ष रुप में पार्ट बजा रहे हैं और अभी-अभी अपने पार्ट का यादगार भी देख रहे हैं। सारे कल्प के अन्दर ऐसी कोई आत्माएं हैं जो अपना यादगार भी देख रहे हैं। सारे कल्प के अन्दर ऐसी कोई आत्माएं हैं जो अपना यादगार अपनी स्मृति में देखें? यूं तो देखते सभी है लेकिन स्मृति तो नहीं रहती है ना। सिर्फ आप आत्माओं का ही पार्ट है जो इस स्मृति से अपनी यादगार को देखते हो। तो स्मृति से अपनी यादगार को देखते हुए क्या होना चाहिए? (कोई-कोई ने बताया) विजयी तो हो ही। विजय का तिलक लगा हुआ है। जैसे गुरुओं पास वा पण्डितों के पास जाते हैं तो वह तिलक लगाते हैं, यहाँ भी आने से ही, बच्चे बनने से ही पहले-पहले स्व-स्मृति द्वारा सदा विजयी बनने का तिलक बापदादा द्वारा लग ही जाता है। इसलिए पण्डित भी तिलक लगा देते हैं। सभी रसम ब्राह्मणों द्वारा ही अब चलती है। ब्राह्मणों का पिता रचयिता तो साथ है ही। बच्चे शब्द ही बाप को सिद्ध कर देता है। बलिहार जाने वाले की हार नहीं होती है। स्मृति समर्थी को लाती है और समर्थी में आने से ही कार्य सफल होते हैं अथवा जो सुनाया-खुशी, मस्ती, नशा वा निशाना सभी हो जाता है। यह सभी बातें गायब होने के कारण निर्बलता है। विस्मृति के कारण असमर्थी। तो स्मृति से समर्थी आने से सभी सिद्धि प्राप्त हो जाती हैं अर्थात् सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। स्व स्मृति में रहने वाला सदैव जो भी कार्य करेगा वा जो भी संकल्प करेगा उसमें उसको सदा निश्चय रहता है कि यह कार्य वा यह संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है अर्थात् ऐसा निश्चय बुद्धि अपनी विजय वा सफलता निश्चित समझ कर चलता। निश्चय ही है, जो ऐसे निश्चित सफलता समझकर चलने वाले हैं उनकी स्थिति कैसी रहेगी? उनके चेहरे में क्या विशेष झलक दिखाई देगी? निश्चय तो सुनाया कि निश्चय होगा-विजय हमारी निश्चित है; लेकिन उनके चेहरे पर क्या दिखाई देगा? जब विजय निश्चित है तो निश्चिन्त रहेगा ना। कोई भी बात में चिन्ता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिन्त रहने वाले हो? अगर नहीं तो निश्चय बुद्धि 100परसेन्ट कैसे कहेंगे? 100परसेन्ट निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चित विजयी और निश्चिन्त। अब इससे अपने आपको देखो कि 100परसेन्ट सभी बातों में निश्चय बुद्धि हैं? सिर्फ बाप में निश्चय को भी निश्चय बुद्धि नहीं कहा जाता। बाप में निश्चय बुद्धि, साथ-साथ अपने आप में भी निश्चय बुद्धि होने चाहिएं और साथ-साथ जो भी ड्रामा के हर सेकेण्ड की एक्ट रिपीट हो रही है-उसमें भी 100परसेन्ट निश्चय बुद्धि चाहिए -इसको कहा जाता है निश्चय बुद्धि। जैसे बाप में 100परसेन्ट निश्चय बुद्धि हो ना-उसमें संशय की बात नहीं। सिर्फ एक में पास नहीं होना है। अपने आप में भी इतना ही निश्चय होना चाहिए कि मैं भी वही कल्प पहले वाली, बाप के साथ पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ और साथ-साथ ड्रामा के हर पार्ट को

भी इसी स्थिति से देखें कि हर पार्ट मुझ श्रेष्ठ आत्मा के लिए कल्याणकारी है। जब यह तीनों प्रकार के निश्चय में सदा पास रहते हैं। ऐसे निश्चय बुद्धि ही मुक्ति और जीवन-मुक्ति में बाप के पास रहते हैं। ऐसे निश्चय बुद्धि को कब क्वेश्चन नहीं उठता। 'क्यों, क्या' की भाषा निश्चय बुद्धि की नहीं होती। क्यों के पीछे क्यू लगती है ;तो क्यू में भक्त ठहरते, ज्ञानी नहीं। आपके आगे तो क्यू लगनी है ना। क्यू में इन्तजार करना होता है। इन्तजार की घड़ियां अब समाप्त हुई। इन्तजार की घड़ियां हैं भक्तों की। ज्ञान अर्थात् प्राप्ति की घड़ियां,मिलन की घड़ियां। ऐसे निश्चय बुद्धि हो ना। ऐसे निश्चय बुद्धि आत्माओं की यादगार यहां ही दिखाई हुई है। अपनी यादगार देखी है? अचल घर देखा है? जो सदा सर्व संकल्पों सहित बापदादा के ऊपर बलिहार हैं उन्हों के आगे माया कब वार नहीं कर सकती। ऐसे माया के वार से बचे हुए रहते हैं। बच्चे बन गये तो बच गये। बच्चे नहीं तो माया से भी बच नहीं सकते। माया से बचने की युक्ति बहुत सहज है। बच्चे बन जाओ, गोदी में बैठ जाओ तो बच जायेंगे। पहले बचने की युक्ति बताते हैं फिर भेजते हैं। बहादुर बनाने लिए ही भेजते हैं, हार खाने लिए नहीं, खेल खेलने लिए,जब अलौकिक जीवन में हो,अलौकिक कर्म करने वाले हो,तो इस अलौकिक जीवन में खिलौने सभी अलौकिक हैं जो सिर्फ इस अलौकिक युग में ही अनुभव करते हो।

(27.02.1972)

100परसेन्ट निश्चय है कि हम विजयी हैं ही

लक्ष्य यही रखना है कि सर्व समर्पण बनकर सर्व गुण सम्पन्न बन सम्पूर्ण स्टेज को प्राप्त करेंगे ही। ऐसे पुरुषार्थियों को बाप भी वरदान देते हैं कि 'सदा विजयी भव'। हर संकल्प में कमाल दिखाओ यही विशेषता दिखाओ-जीवन का फैसला कर आई हो ना? अपने आप से फैसला करके आई हो। कोई भी संस्कार के वश नहीं होना। जो हैं ही जगतजीत, विश्व के विजयी वह किसके भी वश हो नहीं सकते। जो स्वयं सर्व आत्माओं को नजर से निहाल करने वाली हैं, उनकी नजर और कहां भी नहीं जा सकती। ऐसे दृढ़ निश्चयबुद्धि हो? अपनी सभी कमजोरियों को भट्ठी में स्वाहा किया वा करना है? फिर ऐसे तो नहीं कहेंगी कि बाकी यह थोड़ी रह गई है? अपनी मंसा की जेब को अच्छी तरह से जांच करना-कहां कोई कोने में कुछ रहा तो नहीं? वा जान बूझकर जेब खर्च रखा है? यह अच्छी तरह से देखना। उम्मीदवार ग्रुप हो वा इससे भी ऊपर? इससे ऊपर क्या होता है? उम्मीदवार भी है और विजयी भी है। तो यह अनेक बार का विजयी ग्रुप हैं। विजयी है ही। उम्मीद की बात नहीं। ऐसे विजयी ही विजय-माला के मणके बनते हैं। उम्मीद नहीं लेकिन 100परसेन्ट निश्चय है कि हम विजयी हैं ही। देखना, माया कम नहीं हैं। माया की छम-छम, रिमझिम कम नहीं। माया भी बड़ी रौनकदार है। सभी तरफ से,सभी रुप से माया की नालेज को भी समझ गये हो कि माया क्या चीज होती है और किस रुप से, किस रीति से आती है? इसकी भी पूरी नालेज ली है? ऐसे तो नहीं कहेंगे कि इस बात की तो हमें नालेज नहीं थी? ऐसे अनजान बनकर अपने को छुड़ाना नहीं। कई कहते हैं हमको तो पता नहीं था कि ऐसे भी कोई होता है, क्या-क्या करते रहते हैं! अनजान होने के कारण भी धोखे में आ जाते। लेकिन जब मास्टर नालेजफुल हो तो अनजानपना नहीं रह सकता। यह जो शब्द निकलता है कि मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था; यह भी कमजोरी है। ज्ञानी अर्थात् ज्ञानी। कोई भी बात का अज्ञान रहा तो ज्ञानी कहेंगे क्या? ज्ञान-स्वरुप को कोई भी बात का अज्ञान न रहेगा। जो योगयुक्त होंगे उनको न अनुभव होते भी ऐसा ही अनुभव होगा जैसे कि पहले से सभी-कुछ जानते हैं। त्रिकालदर्शी फिर अनजान कैसे हो सकते हैं! तो मास्टर नालेजफुल भी बने और विजयी भी बने; तो हार असम्भव ही अनुभव होगी ना।

(04.03.1972)

ऑलमाईटी अर्थार्टी वालों की तीन निशानी - एक निश्चय, दूसरा नशा और तीसरा निर्भयता

अपने को आलमाइटी अथार्टी समझकर के फिर हर कदम उठाते हो? अपने को आलमाइटी अथार्टी समझना अर्थात् आलमाइटी बापको सदा साथ रखना है। जैसे देखो, आजकल के भक्ति-मार्ग के लोगों को कौनसी अथार्टी है? शास्त्रों की। उन्हों की बुद्धि में सदा शास्त्र ही रहेंगे ना। कोई भी काम करेंगे तो सामने शास्त्र ही लायेंगे, कहेंगे-यह जो कर्म कर रहे हैं वह शास्त्र प्रमाण हैं। तो जैसे शास्त्रों की अथार्टी वालों को सदा बुद्धि में शास्त्रों का आधार रहता है अर्थात् शास्त्र ही बुद्धि में रहते हैं।

उनके सम्मुख शास्त्र हैं, आप लोगों के सामने क्या है? आलमाइटी बाप। तो जैसे वह कोई भी कार्य करते हैं तो शास्त्रों का आधार होने कारण अथार्टी से वही कर्म सत्य मानकर करते हैं? कितना भी आप मिटाने की कोशिश करो लेकिन अपने आधार को छोड़ते नहीं हैं। कोई भी बात में बार-बार कहेंगे कि शास्त्रों की अथार्टी से हम बोलते हैं, शास्त्र कब झूठे हो ना सकें, जो शास्त्रों में है वही सत्य है। इतना अटल निश्चय रहता है। ऐसे ही जो आलमाइटी बाप की अथार्टी है उसकी अथार्टी से सर्व कार्य हम करने वाले हैं-यह इतना अटल निश्चय हो जो कोई टाल ना सके। ऐसा अटल निश्चय है? सदैव अपनी अथार्टी भी याद रहे। कि दूसरे की अथार्टी को देखते हुए अपनी अथार्टी भूल जाती है? सभी से श्रेष्ठ अथार्टी के आधार पर चलने वाले हो ना। अगर सदैव यह अथार्टी याद रखो तो पुरुषार्थ मे कब भी मुश्किल मार्ग का अनुभव नहीं करेंगे। कितना भी कोई बड़ा कार्य हो लेकिन आलमाइटी अथार्टी के आधार से अति सहज अनुभव करेंगे। कोई भी कर्म करने के पहले अथार्टी को सामने रखने से बहुत सहज जज कर सकते हो कि यह कर्म करें वा ना करें। सामने अथार्टी का आधार होने कारण सिर्फ उनको कापी करना है। कापी करना तो सहज होता है वा मुश्किल होता है? हां वा ना-उसका जवाब अथार्टी को सामने रखने से ऑटोमेटिकली आपको आ जाएगा। जैसे आजकल साईंस ने भी ऐसी मशीनरी तैयार की है जो कोई भी क्वेश्चन डालो तो उसका उत्तर सहज ही मिल आता है। मशीनरी द्वारा प्रश्न का उत्तर निकल जाता है तो दिमाग चलाने से छूट जाते हैं। तो ऐसे ही ऑलमाइटी अथार्टी को सामने रखने से जो भी प्रश्न करेंगे उनका उत्तर प्रैक्टिकल में आपको सहज ही मिल जाएगा। सहज मार्ग अनुभव होगा। ऐसे सहज और श्रेष्ठ आधार मिलते हुए भी अगर कोई उस आधार का लाभ नहीं उठाते तो उसको क्या कहेंगे? अपनी कमजोरी। तो कमजोर आत्मा बनने के बजाए शक्तिशाली आत्मा बनो और बनाओ। अपने को ऑलमाइटी अथार्टी समझने से 3 मुख्य बातें ऑटोमेटिकली अपने में धारण हो जाएंगी। वह तीन बातें कौन सी?

बुद्धि की ड्रिल करने से सुना हुआ ज्ञान दुहराते हो। यह भी अच्छा है, इससे भी शक्ति बढ़ती है। कोई भी अथार्टी वाले होते हैं, साधारण अथार्टी वालों में भी 3 बातें होती हैं-एक निश्चय, दूसरा नशा और तीसरा निर्भयता। यह तीन बातें अथार्टी वाले रांग होते भी, अयथार्थ होते भी कितना दृढ़ निश्चय बुद्धि होकर बोलते वा चलते है! जितना ही निश्चय होगा उतना निर्भय होकर नशे में बोलते हैं। ऐसे ही देखो, जब आप सभी ऑलमाइटी अथार्टी हो, सभी से श्रेष्ठ अथार्टी वाले हो; तो कितना नशा रहना चाहिए और कितना निश्चय से बोलना चाहिए! और फिर निर्भयता भी चाहिए। कोई भी किसी भी रीति से हार खिलाने की कोशिश करे लेकिन निर्भयता, निश्चय और नशे के आधार पर कब हार खा सकेंगे? नहीं, सदा विजयी होंगे। विजयी ना होने का कारण इन तीन बातों में से कोई बात की कमी है, इसलिए विजयी नहीं बन पाते हो। तो यह तीनों ही बातें अपने आप में देखो कि कहां तक हर कदम उठाने में यह बातें प्रैक्टिकल में हैं? एक होता है टोटल नॉलेज में, बाप में निश्चय। लेकिन कोई भी कर्म करते, बोल बोलते यह तीनों ही क्वॉलिफिकेशन रहें। वह प्रैक्टिकल की बात दूसरी होती है और जब यह तीनों बातें हर कर्म, हर बोल में आ जाएंगी तब ही आपके हर बोल और हर कर्म ऑलमाइटी अथार्टी को प्रत्यक्ष करेंगे। अभी तो साधारण समझते हैं। इन्हों की अथार्टी स्वयं ऑलमाइटी बाप है - यह नहीं अनुभव करते है। यह अनुभव तब करेंगे जब एक सेकेण्ड भी अथार्टी को छोड़ करके कोई भी कर्म नहीं करेंगे वा बोल नहीं बोलेंगे। अथार्टी को भूलने से साधारण कर्म हो जाता है। तो अन्य लोगों को भी साधारण, जैसे अन्य लोग थोड़ा - बहुत कर रहे हैं, वैसे ही अनुभव होता है। जो आते भी हैं तो रिजल्ट में क्या कहते हैं? आप लोगों की विशेषता को वर्णन करते हुए साथ में विशेषता के साथ साधारणता भी जरुर वर्णन करते रहते हैं। और संस्थाओं में भी ऐसे हैं, जैसे वह कर रहे हैं, वैसे यह भी कर रहे हैं। तो साधारणता हुई ना। एक -दो बात विशेष लगती है लेकिन हर कर्म, हर बोल विशेष लगे जो और कोई से तुलना ना कर सकें वह स्टेज तो नहीं आई है ना। ऑलमाइटी की कोई भी एक्टिविटी साधारण कैसे हो सकती? परमात्मा के अथार्टी और आत्माओं के अथार्टी में तो रात-दिन का फर्क होना चाहिए! ऐसा अपने आप मे अर्थात् अपने बोल और कर्म में अन्य आत्माओं से रात-दिन का अन्तर महसूस करते हो? रात-दिन का अन्तर इतना होता है जो कोई को समझाने की आवश्यकता नहीं होती कि यह अन्तर है, ऑटोमेटिकली समझ जाएंगे-यह रात, यह दिन है। तो आप भी जबकि ऑलमाइटी अथार्टी के आधार से हर कर्म करने वाले हो, हर डायरेक्शन प्रमाण चलने वाले हो; तो अन्तर रात-दिन का दिखाई देना चाहिए। ऐसे अन्तर हो जो आने से ही समझ लें कि कोई साधारण स्थान नहीं, इन्हों की नालेज साधारण नहीं। ऐसा जब प्रभाव पड़े तब समझो अपनी अथार्टी को प्रत्यक्ष कर रहे हैं। जैसे शास्त्रवादियों के बोल दिखाई देते हैं कि इन्हों को शास्त्रों की अथार्टी है, वैसे आपके हर बोल से अथार्टी प्रसिद्ध होनी चाहिए। फाईनल स्टेज तो यही है ना।

बोल से, चेहरे से, चलन से, सभी से अथार्टी का मालूम पड़ना चाहिए। आजकल के जमाने में अगर छोटी-मोटी अथार्टी वाले ऑफीसर अपने कर्तव्य में जब होते हैं तो कितना अथार्टी का कर्म दिखाई देता है। नशा रहता है ना। उसी नशे से हर कर्म करते हैं। वे हद के शास्त्रों की अथार्टी हैं। यह है अलौकिक अविनाशी अथार्टी।

(27.05.1972)

जहां सदा निश्चय और निर्भयता है वहां सदैव श्रेष्ठ संकल्प की विजय है

निराकार और साकार बाप दोनों का साथ वा सामने रखते हुए हर कर्म वा हर संकल्प करों तो यह चारों बातें आटोमेटिकली आ जाएंगी। सिर्फ निराकार को वा सिर्फ साकार को याद करने से चारों बातें नहीं आवेंगी। लेकिन निराकार और साकार दोनों ही सदा साथ रहें तो साथ होने से जो संकल्प करेंगे वह पहले जरुर उनसे वेरीफाय करावेंगे, वेरीफाय कराने के बाद कोई भी कर्म करने से निश्चय बुद्धि होकर करेंगे। जैसे देखो साकार में अगर कोई निमित्त श्रेष्ठ आत्मा साथ में है तो उनसे कोई भी बात वेरीफाय कराए फिर करेंगे तो निश्चय-बुद्धि होकर करेंगे ना। निर्भयता और निश्चय दोनों गुणों को सामने रख करेंगे। तो जहां सदा निश्चय और निर्भयता है वहां सदैव श्रेष्ठ संकल्प की विजय है। जो भी संकल्प करते हो, अगर सदा निराकार और साकार साथ वा सम्मुख हैं, तो वेरीफाय कराने के बाद निश्चय और निर्भयता से वह करेंगे। समय भी वेस्ट नहीं करेंगे। यह काम करें वा ना करें, सफल होगा वा नहीं होगा? यह व्यर्थ संकल्प सभी खत्म हो जायेगे। वर्तमान समय आत्मा में जो कमजोरी की व्याधि है वह कौन-सी है? व्यर्थ संकल्पों में व्यर्थ समय गंवाने की, यही वर्तमान समय आत्मा की कमजोरी है। इस बीमारी के कारण सदा हैल्दी नहीं रहते। कब रहते हैं, कब कमजोर बन जाते हैं। सदा हैल्दी रहने का साधन यह है। समय भी बच जायेगा। आप प्रैक्टिकल में ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में कोई साकार रुप में वेरीफाय कराते। है कॉमन बात, लेकिन इसी कॉमन बात को प्रैक्टिकल में कम लाते हो। सुना बहुत समय है, लेकिन अनुभवी नहीं बने हो। बापदादा सदा साथ है यह अनुभव करो तो हैल्दी, वैल्दी नहीं रहेंगे? बापदादा निराकार और साकार दोनों के साथ होने से हैल्थ और वैल्थ दोनो आ जाती हैं और हैपी तो आटोमेटिकली होंगे। तो सहज पुरुषार्थ कौन-सा हुआ? निराकार और साकार दोनों को सदा साथ में रखो। सदा साथ न रखने के कारण यह रिजल्ट है। क्या साथ रखना मुश्किल लगता है? जब जान लिया और पहचान लिया, मान लिया कि सभी सम्बन्ध एक साथ हैं, दूसरा ना कोई तो उसमें चलने में क्या मुश्किल है? साथ क्यों छोड़ते हो?

(14.06.1972)

स्व का निश्चय

कोई भी कर्म-इन्द्रियों की चंचलता को सहनशील-सरलचित नहीं बना सकते हो? इतनी शक्ति अपने में अनुभव करते हो? शक्तिशाली आत्मायें हो ना। जो भाग्यशाली आत्मायें हैं वह शक्तिशाली भी बनी हैं वा सिर्फ ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बनने के भाग्य के कारण भाग्यशाली बने हो? सिर्फ भाग्यशाली बनने से भी मायाजीत नहीं बन सकेंगे। भाग्यशाली के साथ-साथ शक्तिशाली भी बनना है। दोनों अनुभव होता है? जैसे भाग्यशालीपन का नशा तो अविनाशी है ना? इसको कोई नाश नहीं कर सकता। वैसे शक्तिशाली का वरदान वरदाता से ले लिया है वा अभी लेना है? क्या समझते हो? ब्रह्माकुमार-कुमारी तो हो ही। वह तो अविनाशी छाप लगी हुई है। अब शक्तिशाली का वरदान ले लिया है कि लेना है? जब शक्तिशाली बन गए तो माया की शक्ति वार कर सकती है? यह है रचयिता की शक्ति, वह है रचना की शक्ति। तो कमजोर शूरवीर के ऊपर वार करने की हिम्मत रख सकता है क्या? रखे भी तो उसका परिणाम क्या होगा? विजयी कौन बनेगा? शूरवीर। तो रचयिता की शक्ति महान है, फिर माया का वार कैसे हो सकता वा माया से हार कैसे हो सकती? जब अपने को शक्तिशाली नहीं समझते हो वा सदाकाल शक्तिशाली स्थिति में, स्मृति में स्थित नहीं होते तब हार होती है। जहां स्मृति है वहां विस्मृति का आना असम्भव है। जैसे दिन के समय रात का होना असम्भव है। ऐसा अपने को बनाया है वा अब तक सम्भव है? कब भी माया का कोई वार नहीं होगा- ऐसा अविनाशी निश्चयबुद्धि हो गये हो? संकल्प में भी कब यह न आये कि माया कब हार खिला भी सकती है। ऐसे बन गये हो वा अभी माया आयेगी तो युद्ध करके विजय प्राप्त करेंगे? अब इसको भी समाप्त करना है। जबकि दुनिया वालों को सन्देश देते

हो कि अब बहुत थोड़ा समय रह गया है, तो क्या यह थोड़ा-सा समय युद्ध करने की स्टेज वा युद्ध करने वाली चन्द्रवंशी स्टेज समाप्त कर सूर्यवंशी स्टेज नहीं बना सकते हो? सूर्यवंशी अर्थात् ज्ञान सूर्य की स्टेज। सूर्य का कर्तव्य क्या होता है? सूर्य तो सभी को भस्म कर देता है। सूर्यवंशी स्टेज अर्थात् सर्व विकारों को भस्म कर सदा विजयी बनने की स्टेज। तो अब अपनी कौन-सी स्टेज समझते हो? सूर्यवंशी हो वा चन्द्रवंशी हो? अगर युद्ध करने में समय देना पड़ता है तो चन्द्रवंशी स्टेज कहेंगे। अब तक अपने आप प्रति ही समय देते रहेंगे तो बाप के मददगार बन प्रैक्टिकल में मास्टर विश्व कल्याणकारी बनकर विश्व के कल्याण प्रति सारा समय कब देंगे? लास्ट स्टेज कौन-सी है? विश्व-कल्याणकारी की है ना। अब यह प्रयत्न करो - दिन-रात, संकल्प, सेकेण्ड विश्व के कर्तव्य में वा सेवा में जाये।

(21.06.1972)

मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपने कल्प पहले के यादगार को सामने रख फिर से सिर्फ रिपीट करो

तुम्हारे यह अभी के हर कर्म वा हर बोल विश्व के आगे यादगार के रुप में आने वाले हैं। ऐसा अटेन्शन रखते हुये व ऐसी स्मृति रखते हुये हर कर्म वा बोल बोलो जो कि यादगार बनने के योग्य हो। अगर यादगार बनने के योग्य नहीं है तो वह कर्म नहीं करो-यह स्मृति सदा रखो। जो व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ बोल वा साधारण कर्म होते हैं, उनका यादगार बनेगा क्या? यादगार बनने के लिये याद में रह कर कर्म करो। जैसे बाप को देखो कि याद में रहते हुये कर्म करने से ही कर्म आज आप सभी के दिल में यादगार बन गया है ना। ऐसे ही अपने कर्मो को भी विश्व के सामने यादगार रुप बनाओ। यह तो सहज है ना। जबकि निश्चय है कि यह सभी अनेक प्रकार के यादगार हमारे ही हैं ; तो किये हुये अनेक बार के श्रेष्ठ कर्म वा यादगार स्वरुप अब फिर से रिपीट करने में मुश्किल होती है क्या? कल्प-कल्प के किये हुये को सिर्फ रिपीट करना है। तो मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपने कल्प पहले के यादगार को सामने रख फिर से सिर्फ रिपीट करो।

(18.07.1972)

सेन्सीवल के लक्षण

सेन्सीबल के लक्षण क्या होंगे? (हरेक ने सुनाया) इतने लक्षण सुनाये हैं जो अभी ही लक्ष्य में स्थित हो सकते हो। सेन्सीबल अर्थात् समझदार। लौकिक रीति जो समझदार होते हैं वह आगे-पीछे को सोच-समझ कर फिर कदम उठाते हैं। लेकिन यहाँ तो है बेहद की समझ। तो समझदार जो होगा उसका मुख्य लक्षण त्रिकालदर्शी बन तीनों कालों को पहले से ही जानते हुए फिर कर्म करेगा। कल्प पहले की स्मृति भी स्पष्ट रुप में होंगी कि कल्प पहले भी मैं ही विजयी बना हूँ, अभी भी विजयी हूँ, अनेक बार के विजयी बनते रहेंगे। यह विजयीपन के निश्चय के आधार पर वा त्रिकालदर्शीपन के आधार पर जो भी कार्य करेंगे वह कब व्यर्थ वा असफल नहीं होंगे। तो समझ त्रिकालदर्शीपन की होनी चाहिए। सिर्फ वर्तमान समय को समझना, इसको भी सम्पूर्ण नहीं कहेंगे। जो कोई भी कार्य में असफलता होती वा व्यर्थ हो जाता, इसका कारण ही यह है कि तीनों कालों को सामने रखते हुए कार्य नहीं करते, इतनी बेहद की समझ धारण कर नहीं सकते। इस कारण वर्तमान समस्याओं को देखते हुये घबरा जाते हैं और घबराने कारण सफलता पा नहीं सकते। सेन्सीबल जो होगा वह बेहद को समझ कर वा त्रिकालदर्शी बन हर कर्म करेंगे वा हर बोल बोलेंगे, जिसको ही अलौकिक वा असाधारण कहा जाता है। सेन्सीबल कब भी समय वा संकल्प वा बोल को व्यर्थ नहीं गंवायेंगे। जैसे लौकिक रीति भी अगर कोई धन को वा समय को व्यर्थ गंवाते हैं तो कहने में आता है - इनको समझ नहीं है। इस रीति से जो सेन्सीबुल होगा, वह हर सेकेण्ड को समर्थ बना कर कार्य में लगावेंगे, व्यर्थ कार्य में नहीं लगावेंगे। सेन्सीबुल कभी भी व्यर्थ संग के रंग में नहीं आवेंगे, कब भी कोई वातावरण के वश नहीं होंगे। यह सभी लक्षण सेन्सीबुल के हैं।

(04.08.1972)

पूरा निश्चय-बुद्धि वनना है - बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है

ऐसा प्रैक्टिकल पेपर देना है जो सभी महसूस करें कि इनमें तो बहुत परिवर्तन है। हिम्मत रखने से मदद स्वत: ही मिलती

है। हिम्मत में कुछ जरा-सा भी कमी होती है तब मदद में भी कमी पड़ती है। कई समझते हैं मदद मिलेगी तो करके दिखावेंगे। लेकिन मदद मिलेगी ही हिम्मत रखने वालो को। पहले हिम्मते बच्चे, फिर मददे बाप है। हिम्मत धारण करो तो आपकी एक गुणा हिम्मत बाप की सौ गुणा मदद।अगर एक भी कदम ना उठावें तो बाप भी 100 कदम ना उठावेंगे। जो करेगा वो पावेगा। हिम्मत रखना अर्थात् करना। सिर्फ बाप के ऊपर रखना कि बाबा मदद करेगा तो होगा - यह भी पुरुषार्थहीन के लक्षण हैं। बापदादा को मालूम नहीं है कि हमको मदद करनी है? क्या आपके कहने से करेंगे? जो कहने से करता है उसको क्या कहा जाता है? जो स्वयं दाता बन कर रहे हैं उनको कह करके कराना, यह इनसल्ट नहीं है? देने वाला दाता के आगे 5 पैसे क्या देते हो? तो बापदादा को भी शिक्षा स्मृति में दिलाते हो कि आपको मदद करनी चाहिए? यह संकल्प कब ना रखो। यह तो स्वत: ही प्राप्त होंगे। जब अपने को वारिस समझते हो तो वारिस वर्से के अधिकारी स्वत: ही होते हैं, मांगना नहीं पड़ता है। लौकिक में तो उन्हों को स्वार्थ रहता है तब मांगते हैं। यहाँ अपना स्वार्थ ही नहीं तो बाकी रख कर क्या करेंगे। इसलिये यह संकल्प रखना भी कमजोरी है। पूरा निश्चय-बुद्धि बनना है - बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। ऐसा सदा स्मृति में रखते हुये, हर कदम उठाओ तो देखो विजय आपके गले का हार बन जावेगी। जिन्हों के गले में विजय की माला पड़ती वही विजय माला के मणके बनते हैं। अगर अभी विजयी नहीं बनते तो विजय माला में नहीं आते। तो यह सदा स्मृति में रख कदम उठाओ तो फिर सदा सिद्धि-स्वरुप हो जावेंगी। कोई संकल्प वा बोल वा कर्म सिद्ध ना हो - यह हो ही नहीं सकता, अगर पुरुषार्थ की विधि यथार्थ है तो। कोई भी कर्म विधिपूर्वक करने से ही सिद्धि होती है। विधिपूर्वक नहीं करते हो तो सिद्धि भी नहीं होती। विधिपूर्वक का प्रत्यक्ष फल 'सिद्धि' मिलेगी ही। अच्छा!

(06.08.1972)

अब अपने निश्चय को साकार रुप में लाओ

अगर संगठन में व माला में एक भी मणका भिन्न प्रकार का होता है तो माला की शोभा नहीं होती। तो ऐसे संगठन की शक्ति ही उस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है। उत्तम ज्ञान और परमात्म-ज्ञान में अन्तर यह है। वहाँ संगठन की शक्ति नहीं होती लेकिन यहाँ संगठन की शक्ति है। तो जो इस परमात्म-ज्ञान की विशेषता है इससे ही विश्व में सारे कल्प के अन्दर वह समय गया हुआ है। 'एक धर्म', 'एक राज्य', 'एक मत' - यह स्थापना कहाँ से होगी? इस ब्राह्मण संगठन की विशेषता-देवता रूप में प्रैक्टिकल चलते हैं। इसलिये पूछ रहे हैं कि यह विशेषता, जिससे कमाल होनी है, नाम बाला होना है, प्रत्यक्षता होनी है, साधारण रुप, अलौकिक रुप प्रत्यक्ष होना है, अब प्रत्यक्ष में हैं? इस विशेषता में एवर-रेडी हो? संगठन के रुप में एवर-रेडी? कल्प पहले का रिजल्ट तो निश्चित है ही लेकिन अब घूंघट को हटाओ सभी सजनियाँ घूंघट में हैं। अब अपने निश्चय को साकार रुप में लाओ। कहीं-कहीं साकार रुप, आकार में हो जाता है। इसको साकार रुप में लाना अर्थात् सम्पूर्ण स्टेज को प्रत्यक्ष करना है। उस दिन सुनाया था न कि परिवर्तन सभी में आया है लेकिन अब सम्पूर्ण परिवर्तन को प्रत्यक्ष करो। जब अपना भी वर्णन करते हो तो यही कहते हो परिवर्तन-तो बहुत हो गया है। 'फिर भी'... यह फिर भी शब्द क्यों आता है? यह शब्द भी समाप्त हो जाये। हरेक में जो मूल संस्कार हैं, जिसको आप लोग नेचर कहती हो, वह मूल संस्कार अंश-मात्र में भी न रहे। अभी तो अपन को छुड़ाते हो। कोई भी बात होती है तो कहते हैं , मेरा यह भाव नहीं था। मेरी नेचर ऐसी है, मेरा संस्कार ऐसा है और ऐसी बात नहीं थी। तो क्या यह सम्पूर्ण नेचर है?

(14.04.1973)

अपने निश्चय के आधार पर बाप की प्रत्यक्षता

यह विशेषता है बाप को प्रत्यक्ष करना, बाप के सम्बन्ध में समीप लाना, बाप के वारिस बनाना। यह आप पहली रचना का कर्तव्य है। बाप बच्चों द्वारा ही प्रत्यक्ष होते हैं। निराकार बाप और साकार ब्रह्मा बाप दोनों को , अपने निश्चय, अपने ब्राह्मण जीवन के आधार से, अपने अनुभव के आधार से, विश्व के आगे प्रख्यात किया तब विशेष मानते हैं। तो बाप को प्रख्यात करने की विशेषता बच्चों की है, इसलिए बाप रिटर्न में विश्व में आगे हम स्वयं गुप्त रूप में रह, शक्ति सेना व पाण्डव सेना को प्रख्यात करते

हैं। तो यह विशेषता बच्चों की है इसलिए बाप से भी ज्यादा पूज्य बने हो। ऐसी अपनी विशेषता स्मृति में रहती है या भूल जाते हो? संगमयुगी ब्राह्मणों की विशेषता सदा स्मृति स्वरूप की है। तो ब्राह्मणपन की विशेषता अनुभव करते हो? शूद्रपन अर्थात् विस्मृत स्वरूप।

(18.06.1973)

सभी में कल्याण भरा हुआ है - ऐसे निश्चयबुद्धि होकर चलो

वरदान भूमि से वरदाता द्वारा सर्व वरदानों को प्राप्त करके क्या तीव्र पुरूषार्थी बनते जा रहे हो? पुरूषार्थ की चाल में जो परिवर्तन किया है, वह अविनाशी किया है या अल्पकाल के लिए? कैसी भी कोई परिस्थिति आये, कैसे भी विघ्न हिलाने के लिए आ जाएँ लेकिन जिसके साथ स्वयं बाप सर्वशक्तिवान् है उनके सामने वह विघ्न क्या हैं? उनके आगे विघ्न, परिवर्तन हो कर क्या बन जायेंगे? 'विघ्न लगन का साधन बन जायेंगे।' हर्षित होंगे ना? यदि कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनता है तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले। अगर यह दृष्टि रखो तो आप सभी की श्रेष्ठ दृष्टि हो जावेगी। कोई कैसा भी हो, लेकिन अपनी दृष्टि और वृत्ति सदैव शुभचिन्तक की हो और कल्याण की भावना हो। हर बात में कल्याण दिखाई दे। कल्याणकारी बाप की सन्तान कल्याणकारी हो ना? कल्याणकारी बनने के बाद कोई भी अकल्याण की बात हो नहीं सकती। यह निश्चय और स्मृति-स्वरूप हो जाओ तो आप कभी डगमगा नहीं सकेंगे।

जैसे कोई हरा या लाल चश्मा पहनता है तो उसको सभी हरा अथवा लाल ही दिखाई पड़ता है। वैसे आप लोगों के तीसरे नेत्र पर कल्याणकारी का चश्मा पड़ा है। तीसरा नेत्र है ही कल्याणकारी। उसमें अकल्याण दिखाई पड़े, यह हो ही नहीं सकता। जिसको अज्ञानी लोग अकल्याण समझते हैं लेकिन आपका उस अकल्याण में ही कल्याण समाया हुआ है। जैसे लोग विनाश को अकल्याण समझते हैं लेकिन आप समझते हो कि इससे ही गति-सद्गति के गेट्स खुलेंगे। तो कोई भी बात सामने आती है, 'सभी में कल्याण भरा हुआ है' - ऐसे निश्चय-बुद्धि होकर चलो तो क्या प्राप्ति होगी?-एक-रस अवस्था हो जावेगी। किसी भी बात में रूकना नहीं चाहिए। जो रूकते हैं वे कमजोर होते है। महावीर कभी नहीं रूकते। ऐसे नहीं विघ्न आयें और रूक जावें।

(20.06.1973)

अव स्वयं को शक्ति स्वरुप वनाओ

जैसे दु:खी आत्माओं के मन से यह आवाज शुरु हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन से यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी, समझा? पालना तो की, अब कल्याणकारी बनो और सबको मुक्त कराओ। विनाशकारियों की कल्याणकारी आत्माओं का सहयोग चाहिए। उनके संकल्प का इशारा चाहिये। जब तक आप ज्वालारुप न बने, तब तक इशारा नहीं कर सकते। इसलिये अब स्वयं की तैयारी के साथ-साथ विश्व के परिवर्तन की भी तैयारी करो। यह है आपका लास्ट कर्त्तव्य क्योंकि यही शक्ति स्वरुप का कर्तव्य है। स्वयं तो नहीं घबराते हो न? विनाश होगा कि नहीं होगा, क्या होगा और कैसे होगा? यह समझने के बजाए अब ऐसा समझो कि यह हमारे द्वारा होना है। यह जानकर अब स्वयं को शक्ति स्वरुप बनाओ, स्वयं को लाइट हाउस और पॉवर हाउस बनाओ। अच्छा, क्या हर बात में आप निश्चय बुद्धि हो?

(03.02.1974)

ध्रुव समान दृढ़ निश्चयबुद्धि बनो

एक ही सितारा है, जो अपनी जगह बदली नहीं करता, क्या ऐसे सितारे हो? वह है दृढ़ संकल्प वाला सितारा, जिसको अपनी इस दुनिया में 'ध्रुव' सितारा कहा जाता है। तो ऐसे दृढ़ निश्चय बुद्धि, और एक-रस स्थिति में सदा स्थित पदमापदम

भाग्यशाली बने हो, या बन रहे हो? क्या अपनी खुशनसीबी का विस्तार अपनी स्मृति में लाते हो? खुशनसीबी की निशानियाँ व सर्व-प्राप्तियाँ क्या हैं, उनको जानते हो? जिसे सर्व प्राप्ति हो, उसको ही खुशनसीब कहा जाता है। सर्व-प्राप्ति में क्या कोई कमी है? **जीवन में मुख्य प्राप्ति श्रेष्ठ सम्बन्ध, श्रेष्ठ सम्पर्क, सच्चा स्नेह और सर्व प्रकार की सम्पत्ति और सफलता इन पांचों ही मुख्य बातों को अपने में देखो।** अब सम्बन्ध किससे जोड़ा है? सारे कल्प में इससे श्रेष्ठ सम्बन्ध कभी प्राप्त हो सकता है क्या? सम्बन्ध में मुख्य बात अविनाशी सम्बन्ध की ही होती है। अविनाशी बाप के सर्व-सम्बन्ध ही अविनाशी है। एक द्वारा सर्व-सम्बन्धों की प्राप्ति हो, क्या ऐसा सम्बन्धी कभी मिला हुआ देखा है? तो क्या सर्व-सम्बन्ध सम्पन्न हो।

(20.05.1974)

निश्चय की निशानी निश्चिंत

नशा है-विश्व का मालिक बनने का, कि ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि स्थूल चोला व वस्त्र तैयार हुआ सामने दिखाई दे रहा है और निश्चय होगा कि वस्त्र तैयार है और थोडे ही समय में उसे धारण करना है। वह सर्वगुण सम्पन्न और सतोप्रधान नया शरीर स्पष्ट दिखाई देगा और चलते-फिरते यह नशा और खुशी होगी कि कल यह पुराना शरीर छोड़ नया शरीर धारण करेंगे। जरा-सा संकल्प भी उत्पन्न नहीं होगा, कि दैवी-पद प्राप्त होगा या नहीं, देवता बनेंगे अथवा नहीं और राजा बनेंगे या प्रजा? ऐसे संशय का संकल्प भी उत्पन्न नहीं होगा क्योंकि सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि आज हम यह हैं और कल यह होंगे। ज्ञान के तीसरे नेत्र द्वारा योग-युक्त अर्थात् सदा योगी होने के कारण बुद्धि की लाइन क्लियर अर्थात् स्पष्ट होने के कारण निश्चय बुद्धि विजयन्ति के आधार से अनुभव होगा कि अनेक बार यह चोला धारण किया है और अब भी करना ही है। ऐसा अटल विश्वास होगा और स्पष्ट साक्षात्कार होगा। यह बनेंगे अथवा नहीं बनेंगे?-यह हलचल जब तक बुद्धि में है, तब तक ही स्थिति में भी हलचल है।

जितना-जितना स्व-स्थिति, श्रेष्ठ-स्थिति, ज्ञानस्वरुप व आत्मा के सर्व-गुणों से सम्पन्न स्थिति, अचल, अडोल, निरन्तर और एक-रस होती जायेगी तो उतने ही संकल्पों की हलचल समाप्त होती जायेगी। जैसे साकार में मात-पिता को देखा कि दोनों के ही नशे में संकल्प की भी हलचल नहीं थी। सम्पूर्ण अचल और अटल निश्चय था कि यह तो बना हुआ ही है अथवा यह तो निश्चित ही है। तो नशे की निशानी अटल निश्चय और निश्चिन्त अनुभव होगी। निशाने की निशानी नशा और नशे की निशानी निश्चय और निश्चिन्त। साथ-साथ माया के किसी भी प्रकार का वार होने से और हार खाने से भी निश्चिन्त। ना मालूम माया हार नहीं खिलावे, विजयी बनेंगे या नहीं - इस कमजोर संकल्प से भी निश्चिन्त, क्योंकि सामने दिखाई दे रहा है, क्या ऐसा अनुभव होता है? कमजोर संकल्पों की चिन्ता में कि माया आ नहीं जावे, कमजोर हो न जाऊ, और मुझे सफलता मिलेगी अथवा नहीं? क्या इस भय के भूत के वश अपना समय और शक्ति या व्यर्थ तो नहीं गँवाते हो? ऐसा कमजोर संकल्प करना अर्थात् स्वयं में संशय का संकल्प रखने से कभी भी सम्पूर्ण नहीं बन सकेंगे। यह संकल्प करना अर्थात् कमजोरियों के रुप में एक भूत के साथ और माया के भूतों का आह्वान करते हो अथवा बुद्धि में स्थान देते हो व एक के साथ अनेकों को निमन्त्रण देते हो। इसलिए इस भय के भूत को भी जब तक बुद्धि से नहीं निकाला, तब तक इस भूत के साथ बाप की याद बुद्धि में कैसे रह सकती है? बाप की याद और भूत यह दोनों इक्ट्ठे निवास नहीं कर सकते; इसलिए कहावत भी है कि 'निश्चय बुद्धि विजयन्ति'।

यह निश्चय व स्मृति रखो और समर्थी रखो कि अनेक बार बापके बने हैं व मायाजीत बने हैं, तो अब बनना क्या मुश्किल है? क्या स्मृति स्पष्ट नहीं है कि मुझ श्रेष्ठ आत्मा ने विजयी बनने का पार्ट अनेक बार बजाया है। अगर स्पष्ट स्मृति नहीं है तो इससे सिद्ध है कि बाप के आगे स्वयं को स्पष्ट नहीं किया है। किसी भी कारण से बाप के आगे कुछ छिपाया है तो यह भय का भूत इस कारण से ही छिपा हुआ है। जो हूँ और जैसा हूँ, वैसा ही बाप का हूँ, इस निश्चय में कमी के कारण यह भी निश्चय नहीं कि मैं अनेक बार बना हूँ। तो पहले यह चैक रो कि स्वयं को बाप के आगे स्पष्ट किया है? अथवा अपने को और बाप को खुश करते हो कि बाप तो जानी जाननहार है वह तो सब-कुछ जानते ही हैं। क्या बाप यह नहीं जानता कि मैं जानता हूँ? विश्व के शिक्षक के भी शिक्षक बनते हो? बाप को विस्मृति हुई है क्या जो बाप को स्मृति दिलाते हो? इसलिए यह एक ईश्वरीय नियम व मर्यादा है कि कोई भी एक मर्यादा का पालन नहीं करते, तो वे मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं बन सकते, इसलिए कारण का निवारण करो। बाप के आगे छिपाने से एक के ऊपर लाख गुणा बोझ चढ़े हुए होने के कारण जब तक स्वयं को हल्का नहीं किया है तो सोचो कि

एक गलती के पीछे अनेक गलतियाँ करने से और एक मर्यादा का उल्लंघन होने से अनेक मर्यादाओं का उल्लंघन हो जाने के कारण व इतना लाख गुणा बोझ चढ़ा हुआ होने से चढ़ती कला में कदम कैसे बढ़ा सकते हो और निशाने के समीप कैसे आ सकते हो? लौकिक दुनिया में भी कोई चीज छिपाने वाले को कौन-सा टाइटल दिया जाता है? छोटी-सी चीज को छिपाने वाले को चोर की लिस्ट में तो गिनेंगे ना? तो जब तक ऐसे संस्कार है, बाप-दादा के आगे झूठ बोलना व किसी प्रकार से बात को चला देना तो मालूम है कि इसका कितना पाप होता है? ऐसे अनेक प्रकार के चरित्र बाप के आगे दिखाते हैं; ऐसे चरित्र दिखाने वाले कभी श्रेष्ठ चरित्रवान नहीं बन सकते। बाप को भोलानाथ समझते हैं ना, इसलिए समझते हैं कि छिप जावेगा और चल जावेगा। लेकिन बाप के रुप में भोलानाथ है, साथ-साथ हिसाब-किताब चुक्तु कराने के समय फिर लॉ-फुल भी तो है, फिर उस समय क्या करेंगे? क्या स्वयं को छिपा सकेंगे व बचा सकेंगे?

(04.07.1974)

निश्चयबुद्धि की निशानी

साक्षात्कार करना तो सब चाहते हो ना? दिव्य-दृष्टि से नहीं, तो नॉलेज के दर्पण द्वारा तो कर सकते हो ना? सफलता के सितारों की निशानी यह है कि उनके हर संकल्प में दृढ़ता होगी की सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। होनी चाहिए, होगी या नहीं होगी यह स्वप्न में भी कभी उनकी स्मृति में नहीं आवेगा। बल्कि उन्हें शत-प्रतिशत निश्चय होगा कि सफलता हमारी हुई ही पड़ी है। उनके हर बोल की यह विशेषता होगी-कि वे हर बात में निश्चय-बुद्धि होंगे और उनके बोल में, ईश्वरीय सन्तान की खुमारी दिखाई देगी अर्थात् उनमें ईश्वरीय नशा दिखाई देगा। उनमें देह-अभिमान का नशा नहीं दिखाई पड़ेगा। उनके बोल द्वारा संशय बुद्धि वाला भी, निश्चय बुद्धि हो आवेगा; क्योंकि उन्हें एक तो ईश्वरीय खुमारी होती है और दूसरा उनका हर बोल शक्तिशाली होता है। उनके बोल साधारण व व्यर्थ नहीं होते और उनका हर कर्म तो श्रेष्ठ होता ही है, लेकिन उनमें विशेषता यह होगी कि उनके हर कर्म द्वारा, अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। जो गायन है कि जैसे कर्म हम करेंगे, हमको देख और सभी करेंगे ऐसे उनके हर कर्म, अनेक आत्माओं को, एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जावेंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरुप होगा। इसको ही कहा जाता है-समर्थ-कर्म। ऐसे संकल्प, बोल और कर्म वाला ही हर बात में सदा स्वयं से संतुष्ट होगा। सन्तुष्ट होने के कारण ही वह हर्षित भी होगा लेकिन उसे हर्षित बनाना नहीं पड़ेगा बल्कि वह स्वतः ही सदा हर्षित होगा।

(14.07.1974)

निश्चयबुद्धि आत्माओं को परमात्मा और प्रकृति की मदद

आगे चल कर, जब प्रकृति के प्रकोप होंगे और आपदायें आवेंगी, तब सबका पेट भरने के लिये कौन-सी चीज काम आवेगी? उस समय सबके अन्दर कौन-सी भूख होगी? अन्न की कमी या धन की? तब तो, शान्ति और सुख की भूख होगी। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी, धन काम में नहीं आवेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। जब सब स्थूल साधनों से व स्थूल धन से प्राप्ति की कोई आशा नहीं रहेगी, तब उस समय सबका संकल्प क्या होगा कि कोई शक्ति देवे, जो कि इन आपदाओं से पार हो सकें और कोई हमें शान्ति देवे। तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं। उस समय पानी की एकादा बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा, तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे? जब ऐसी परीक्षायें आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है? क्या उस समय योग लगेगा या कि प्यास लगेगी। अगर कूएँ भी सूख जावेंगे, फिर क्या करेंगे? जब यह विशेष आत्माओं का ग्रुप है, तो उनका पुरुषार्थ भी विशेष होना चाहिए ना? क्या इतनी सहनशक्ति है? यह क्यों नहीं समझते-जैसा कि गायन है कि चारों ओर आग लगी हुई थी, लेकिन भट्टी में पड़े हुए पूंगरे, ऐसे ही सेफ रहे, जो कि उनको सेक तक नहीं आया। आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योग-युक्त है, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जावेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वह सेफ रह जावेंगे, यदि अपनी गफलत नहीं है तो।

अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण। लेकिन अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले, किसी भी स्थान में रहते हैं, तो वहाँ सूली से काँटा बन जाता है अर्थात् वे सेफ रह जाते हैं। कैसा भी समय हो यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरुर बनावेंगी अर्थात् साधन स्वत: जरुर प्राप्त होंगे।

(13.09.1974)

अलबेलापन का कारण - समय की समाप्ति का बुद्धि में निश्चय नहीं है

करने के कुछ समय के बाद अलबेलापन क्यों होता है? मुख्य बात यही है कि अब तक समय की समाप्ति का बुद्धि में निश्चय नहीं है। निश्चित न होने के कारण निश्चिन्त रहते हो! जैसे सर्विस के प्लैन्स का समय निश्चित करते हो, तब से निश्चिन्त रहना समाप्त हो जाता है, ऐसे ही स्वयं की उन्नति के प्रति भी अगर समय निश्चित करते हो तो उसका भी विशेष रिजल्ट अनुभव करते हो न? जैसे विशेष मास याद की यात्रा के प्रोग्राम का निश्चय किया तो चारों ओर विशेष वायुमण्डल और रिजल्ट, विधि का सिद्धि स्वरूप प्रत्यक्ष फल के रूप में देखा। ऐसे ही अपनी उन्नति के प्रति जब तक समय निश्चित नहीं किया है कि इस समय के अन्दर हर विशेषता का सफ़लता स्वरूप बनना ही है व समय के वातावरण से स्व-चिन्तन के साथ-साथ शुभ-चिन्तक भी बनना ही है, तब तक सफ़लता-स्वरूप कैसे बनेंगे? नहीं तो अवहेलना की समाप्ति, अर्थात् सम्पूर्णता हो न सकेगी। स्वयं का स्वयं ही शिक्षक बनकर जब तक स्वयं को इस बन्धन में नहीं बाँधा है, तब तक अन्य आत्माओं को भी सर्व-बन्धनों से सदा के लिये मुक्त नहीं कर पाओगे। समझा?

(उपरोक्त वत्स ने एक बहन की तबियत का समाचार बताया) हर्षित रूप से यहाँ ही कर्म-भोग को कर्म योग से चुक्तु करना है। ऐसा न समझे कि मैं सर्विस नहीं करती हूँ - जैसे वाणी द्वारा सर्विस करते हैं, जितना एक भाषण का रिजल्ट होता है, उससे हजार गुणा ज्यादा इस प्रैक्टिकल अनुभव की सर्विस का रिजल्ट निकलता है - ऐसे समझ कर साक्षीपन से हिसाब-किताब चुक्तू करे तो सर्विस बहुत है। जो है ही सर्विसेबल उनका शारीरिक रोग निमित कारण बन हिसाब चुक्तू होता है लेकिन उसमें भी सेवा भरी हुई है। यह कोई रेस्ट नहीं है बल्कि यह भी भिन्न प्रकार की सेवा का चान्स है। ऐसे समझकर सेवा में बिजी रहे तो डबल फल मिल जायेगा। मुक्ति भी और सेवा भी।

(02.02.1975)

निश्चयबुद्धि विजयन्ति की चार बातें - बाप में, नॉलेज में, स्वयं में और संगमयुग में पूर्ण निश्चय

सभी अपने को निश्चय रूपी आसन पर स्थित अनुभव करते हो? निश्चय का आसन कभी हिलता तो नहीं है? किसी भी प्रकार की परिस्थिति या प्रकृति या कोई व्यक्ति निश्चय के आसन को कितना भी हिलाने का प्रयत्न करे, लेकिन वह हिला न सके - ऐसे अचल-अडोल आसन है? निश्चय के आसन में सदा अचल रहने वाला निश्चय-बुद्धि विजयन्ति गाया हुआ है। तो अचल रहने की निशानी है - हर संकल्प, बोल और कर्म में सदा विजयी। ऐसे विजयी रत्न स्वयं को अनुभव करते हो? किसी भी बात में हिलने वाले तो नहीं हो? जो समझते हैं कभी कोई बात में हलचल मच सकती है या कोई प्रकार का संकल्प भी उत्पन्न हो सकता है ऐसे पुरुषार्थी हाथ उठाओ? ऐसे कोई हैं जो समझते हों कि हाँ, हो सकता है? अगर हाथ न उठायेंगे तो पेपर बड़ा कड़ा आने वाला है, फिर क्या करेंगे? कोई भी मुश्किल पेपर आये उसमें सभी पास होने वाले हो तो पेपर की डेट अनाउन्स करें। सब ऐसे तैयार हो? फिर उस समय तो नहीं कहेगे कि यह बात तो समझी नहीं थी और सोची नहीं थी, यह तो नई बात आ गई है? निश्चय की परीक्षा है कि जिन बातों को सम्भव समझते हो, वह असम्भव के रूप में पेपर बन के आयेंगी, फिर भी अचल रहोगे?

निश्चय-बुद्धि बनने की मुख्य चार बातें हैं। चारों में परसेन्टेज फुल चाहिए। वह चार बातें जानते भी हो और उन पर चलते भी हो। पहली बात (1) बाप का निश्चय जो है, जैसा है, जिस स्वरूप से पार्ट बजा रहे हैं, उसको वैसा ही जानना और मानना। (2) बाप द्वारा प्राप्त हुई नॉलेज को अनुभव द्वारा स्पष्ट जानना और मानना। (3) स्वयं भी जो है, जैसा है अर्थात् अपने अलौकिक जन्म के श्रेष्ठ जीवन को व ऊंचे ब्राह्मण के जीवन को, अपने श्रेष्ठ पार्ट को, अपनी श्रेष्ठ स्थिति और स्थान का जैसा महत्व है,

वैसा स्वयं का महत्व जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना। (4) वर्तमान श्रेष्ठ, पुरुषोत्तम, कल्याणकारी, चढ़ती कला के समय को जानना और जान करके हर कदम उठाना। इन चारों ही बातों का पूर्ण निश्चय प्रैक्टिकल लाइफ में होना - इसको कहा जाता है - निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

चारों ही बातों में परसेन्टेज भी चाहिए। निश्चय है, सिर्फ इस बात में भी खुश नहीं होना है। लेकिन क्या परसेन्टेज भी ऊंची है? अगर परसेन्टेज एक बात में भी कम है तो निश्चय का आसन कोई भी समय अथवा कोई छोटी परिस्थिति भी डगमग कर सकती है। इसलिए परसेन्टेज को चेक करो क्योंकि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। तो छोटी-सी कमी समय पर बड़ा नुकसान कर सकती है क्योंकि जितना-जितना अति स्वच्छ, सतोप्रधान बन रहे हो, अति स्वच्छ स्टेज पर आज जो छोटी-सी कमी लगती है व साधारण दाग अनुभव होता है, वह बहुत बड़ा दिखाई देगा। इसलिए अभी से ऐसी सूक्ष्म चेकिंग करो और कमी को सम्पन्न करने का तीव्र पुरुषार्थ करो। दिन-प्रतिदिन जितना श्रेष्ठ बनते जा रहे हो उतना विश्व की हर आत्मा की निगाहों में प्रसिद्ध होते जा रहे हो। सबकी नजर आपकी तरफ बढ़ती जा रही हैं। अब सबके अन्दर यह इन्तजार है कि कब स्थापना के निमित्त बने हुए ये लोग सुख-शान्तिमयी नई दुनिया की स्थापना का कार्य सम्पन्न करते हैं, जो यह दु:खदाई दुनिया के स्थापना के आधार पर परिवर्तित हो जायेगी। इन्हों की नजर स्थापना करने वालों में है और स्थापना करने वालों की नजर कहाँ है? अपने कार्यो में मग्न हो वा विनाशकारियों की तरफ नजर रखते हो? विनाश के साधनों के समाचारों को सुनने के आधार पर तो नहीं चल रहे हो? वह ढीले होते तो आप भी ढीले हो जाते हो? क्या स्थापना के आधार पर विनाश होता है या विनाश के आधार पर स्थापना होनी है? स्थापना करने वाले विनाश की ज्वाला प्रज्वलित करने के निमित्त बने हुए हैं न कि विनाश वाले स्थापना करने वालों के पुरुषार्थ की ज्वाला प्रज्वलित करने कि निमित्त हैं।

स्थापना वाले आधारमूर्त हैं। ऐसे आधारमूर्त्त इसी विनाश की बात पर हिलते तो नहीं? हलचल में तो नहीं हो? होगा या नहीं होगा? लोग क्या कहेगे या लोग क्या करेंगे? यह व्यर्थ संकल्प निश्चय के आसन को डगमग तो नहीं करता? सबने निश्चय-बुद्धि में हाथ उठाया ना? निश्चय अर्थात् किसी भी बात में क्यों, क्या और कैसे का संकल्प भी उत्पन्न न हो, क्योंकि संशय का रॉयल रूप संकल्प का रूप होता है। संशय नहीं है लेकिन संकल्प उठता है, तो वह संकल्प किसके वंश का अंश है? यह संशय का आया है या वंश का? जबकि चारों ही बातों में सम्पूर्ण निश्चय-बुद्धि हो तो फिर यह संकल्प उत्पन्न हो सकता है? जबकि है ही कल्याणकारी युग।

कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाय कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समय, वर्तमान का भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा। घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना, अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है न? कोई मुश्किल हुआ है? बाप-दादा नयनों पर बिठाये, दिल तख्त पर बिठाये पार करते ले आ रहे हैं ना? कोई क्या अन्त तक साथ निभाने का या किसी भी परिस्थितियों से पार ले जाने का वायदा व कार्य निभायेंगे। नहीं साथ ले ही जाना है न। सर्वशक्तिमान साथी होते हुए भी यह संकल्प उत्पन्न होना - उसको क्या कहेगे? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो, बाप-दादा के मददगार हो, उस कार्य में मग्न रहो। अपनी लगन की अग्नि को तीव्र करो। जिस लगन की अग्नि से ही विनाश की अग्नि तीव्र गति का स्वरूप धारण करेगी। अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमजोरियों व कमियों की आहुति डालो। तभी सारी पुरानी दुनिया को आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी। अब दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ। तब यह सम्पन्न होगा।

(08.02.1975)

निश्चयबुद्धि की पहली निशानी है - विजय

स्वयं को अशरीरी आत्मा अनुभव करते हो? इस शरीर द्वारा जो चाहे वही कर्म कराने वाली तुम शक्तिशाली आत्मा हो-ऐसा अनुभव करते हो? इस शरीर के मालिक कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाले, इन कर्मेन्द्रियों से जब चाहो तब न्यारे स्वरूप की

स्थिति में स्थित हो सकते हो? अर्थात् राजयोग की सिद्धि - कर्मेन्द्रियों के राजा बनने की शक्ति प्राप्त की है? राजा व मालिक कभी भी कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत नहीं हो सकता। वशीभूत होने वाले को मालिक नहीं कहा जाता। विश्व के मालिक की सन्तान होने के नाते, जब बाप विश्व का मालिक हो और बच्चे अपनी कर्मेन्द्रियों के मालिक न हों, तो क्या कहेगे? मालिक के बालक कहेगे? नाम हो मास्टर सर्वशक्तिवान् और स्वयं को मालिक समझ कर चल नहीं सके तो क्या मास्टर सर्वशक्तिवान् हुए? हम मास्टर सर्व-शक्तिवान् हैं - यह तो पक्का निश्चय है ना, कि यह निश्चय भी अभी हो रहा है? निश्चय में कभी परसेन्टेज होती है क्या? बाप के बच्चे तो हैं ही ना? ऐसे थोड़े ही 90 परसेन्ट है और 10 परसेन्ट नहीं है। ऐसा बच्चा कभी देखा है? निश्चय अर्थात् 100 परसेन्ट निश्चय। ऐसे 100 परसेन्ट निश्चय-बुद्धि बच्चों की पहली निशानी क्या होगी? निश्चय-बुद्धि की पहली निशानी है - विजयी। कहावत भी है - निश्चय बुद्धि विजयन्ति। विजय मिलेगी कैसे? निश्चय से। तो निरन्तर इस निश्चय की स्मृति कि - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ यह स्मृति रहती है? स्मृति के बिना समर्थी थोड़े ही आयेगी? विजयी होने का आधार है - स्मृति। अगर स्मृति कमजोर होगी, निरन्तर नहीं होगी और स्मृति पॉवरफुल नहीं होगी तो विजयी कैसे होंगे? तो पहले इस निश्चय को सदा स्मृति-स्वरूप बनाना पड़ता है।

किसी भी लौकिक अथवा अलौकिक कार्य की डेट फिक्स होने के बाद फिर ऑटोमेटिकली कर्म में भी बल आ जाता है। मालूम है फलानी डेट तक यह कार्य सम्पन्न करना है। डेट को स्मृति में रखने से कर्म की स्पीड भी ऐसे चलती है। कल पूरा करना है तो स्पीड ऐसे रहेगी? इस ज्ञान का मुख्य स्लोगन ही है कि अभी नहीं तो कभी नहीं। इसकी डेट कल या परसों नहीं होती - इसकी डेट होती है अभी। घण्टे के बाद भी नहीं। इसलिये जितना निश्चय रखेंगे कि ये करना ही है - करेंगे नहीं - करना ही है यह है दृढ़ संकल्प। दृढ़ संकल्प के बिना दृढ़ता नहीं आती। और पुरुषार्थ का समय बाकी कितना कम है? जास्ती समय दिखाई देता है क्या? समय का ख्याल तो रखना चाहिए ना। यह भी सोचो कि प्रालब्ध कितने समय की है? दो युग की प्रालब्ध है ना। इस पुरुषार्थ की प्रालब्ध का समय कितना कम रहा? यह सदा स्मृति में होना चाहिए।

निश्चय-बुद्धि विजयन्ति हो। अलौकिक जन्म हुआ, निश्चयबुद्धि हुए कि मैं बाप का बच्चा हूँ, तो बाप का वर्सा ही विजय है। मास्टर सर्व-शक्तिवान् का वर्सा क्या होगा? शक्तियाँ। तो बच्चा बनना अर्थात् विजयी बनना। विजय का तिलक स्वत: ही लग जाता है, लगाना नहीं पड़ता और वह अविनाशी है। अधिकारी हो गये हो ना? स्नेही और सहयोगी बनने की तकदीर अच्छी है। परिवार का परिवार एक मत हो जाये तो यह भी तकदीर की निशानी है। परिवार के सब साथी पुरुषार्थ की रेस में एक-दूसरे से आगे निकलने की लगन में लगे हुए हैं। हिम्मत से मदद स्वत: ही प्राप्त होती है।

(09.02.1975)

निश्चय के आधार पर क्वालिटी की परख

आजकल सर्विस भी बहुत बढ़ेगी। लेकिन बढ़ने के साथ-साथ युक्ति-युक्त भी बहुत चाहिए। आजकल कोई सभी ज्ञानी तू आत्मा बनने नहीं आते हैं। एक क्वालिटी है बाप समान बनने वाली, जो बाप स्वरूप मास्टर बन जाते हैं। तो फर्स्ट क्वॉलिटी है बाप समान बनना, दूसरी क्वालिटी है सिर्फ बाप के सम्बन्ध में रहने वाले और तीसरी क्वालिटी है सिर्फ बाप व सेवा के सम्पर्क में रहने वाले। आजकल सम्बन्ध और सम्पर्क में रहने वाले ज्यादा आयेंगे। स्वरूप बनने वाले कम आयेंगे। सब एक जैसे नहीं निकलेंगे। दिन-प्रतिदिन क्वालिटी भी कमज़ोर आत्माओं अर्थात् प्रजा की संख्या ज्यादा आयेगी उन्हें एक ही बात अच्छी लगेगी, दो नहीं लगेगी। सब बातों में निश्चय नहीं होगा। तो सम्पर्क वालों को भी, उन्हों को जो चाहिए-उसी प्रमाण उन्हों को सम्पर्क में रखते रहना है। समय जैसे नाजुक आता जायेगा वैसे समस्या प्रमाण भी उनके लिये रेग्युलर स्टुडेण्ट बनना मुश्किल होगा। लेकिन सम्पर्क में ढेर के ढेर आयेंगे। क्योंकि लास्ट समय है ना। तो लास्ट पोज कैसा होता है? जैसे पहले उछल, उमंग, उत्साह होता है - वह विरला कोई का होगा। मैजॉरिटी सम्बन्ध और सम्पर्क वाले आयेंगे। तो यह अटेन्शन चाहिए। ऐसे नहीं कि सम्पर्क वाली आत्माओं को न परखते हुए सम्पर्क से भी उन्हें वंचित कर देवें। खाली हाथ कोई भी न जाये, नियमों पर भल नहीं चल पाते हैं, लेकिन वह स्नेह में रहना चाहते हों, तो ऐसी आत्माओं का भी अटेन्शन ज़रूर रखना है। समझ लेना चाहिए कि यह ग्रुप इसी प्रमाण तीसरी स्टेज वाला है, तो उन्हों को भी उसी प्रमाण हैण्डलिंग मिलनी चाहिए। तो समय के प्रमाण वातावरण को पावरफुल

बनाने की आवश्यकता है।

(03.08.1975)

संकल्प रूपी बीज़ को दृढ़ निश्चय का जल दो कि - यह तो हुआ ही पड़ा है, होना ही है

जैसे कल्प पहले पाण्डवों का गायन है कि सेकेण्ड में जहाँ तीर लगाया वहाँ गंगा प्रगट हुई अर्थात् सेकेण्ड में असम्भव भी सम्भव प्रत्यक्ष फल के रूप में दिखाई दिया। इसको ही सिद्धि कहा जाता है। यह नहीं होता, क्योंकि प्रत्यक्ष-फल की प्राप्ति के लिए हर सेकेण्ड अपनी सम्पूर्ण सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरूप की स्मृति प्रत्यक्ष संकल्प रूप में नहीं रहती। मैं पुरुषार्थी हूँ, सम्पन्न हो ही जाऊंगा, होना तो ज़रूर है-नम्बरवार होना ही है। हमारा काम है मेहनत करना, वह तो यथाशक्ति कर ही रहे हैं - यह हर सेकेण्ड का संकल्प रूपी बीज सर्व शक्ति सम्पन्न नहीं होता है। उस समय के संकल्प में हो ही जायेगा अर्थात् भविष्य का संकल्प भरा हुआ होता है। दृढ़ निश्चय व प्रत्यक्ष फल के रस का बल भरा हुआ न होने के कारण सिद्धि भी प्रत्यक्ष नहीं। लेकिन दो घड़ी बाद, घण्टे बाद या कुछ दिनों बाद भविष्य प्राप्ति हो जाती है - तो इसका कारण समझा? आपके संकल्प रूपी बीज के कारण ही प्रत्यक्ष सिद्धि नहीं होती। अनेक प्रकार के साधारण संकल्प होते हैं। जैसे कि समय प्रमाण होना ही है, अभी सारे तैयार कहाँ हुये है? अभी तो आगे के नम्बर ही तैयार नहीं हुए हैं। फाइनल तो आठ ही होने हैं। ऐसे-ऐसे भविष्य नॉलेज के साधारण संकल्प आपके बीज को कमजोर कर देते हैं और यही भविष्य संकल्प जो उस समय यूज नहीं करना चाहिए, लेकिन उस समय न सोचते हुए भी यूज कर लेते हो - जिस कारण प्रत्यक्ष फल भी भविष्य फल के स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है।

तो प्रत्यक्ष-फल पाने के लिए ही संकल्प रूपी बीज को दृढ़ निश्चय रूपी जल से कि यह तो हुआ ही पड़ा है - होना ही है - इस जल से पॉवर फुल बनाओ। तब ही प्रत्यक्ष सिद्धि-स्वरूप हो जायेंगे। जैसे आपके यादगार चित्रों द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वालों की विशेष दो बातों की विधि सुनाई। एकान्तवासी और एकाग्रता। यही विधि कल्प पहले मुआफिक साकार में अपनाओ। एकाग्रता कम होने के कारण ही दृढ़ निश्चय की कमी होती है। एकान्तवासी कम होने के कारण ही साधारण संकल्प बीज को कमजोर बना देता है। इसलिए इस विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बनो, जो सैर पर देखे वही आप हो ना? तो यादगार रूप को अब याद रूप बनाओ। पाण्डवों की यादगार से भी भक्त लोग सिद्धि माँगते हैं।

(01.10.1975)

निश्चयबुद्धि अर्थात् क्वेश्चन समाप्त

अपने आप से पूछो कि ऋषि बना हूँ? ऐसे निश्चय बुद्धि वैराग्य के साथ-साथ अधिकार की खुशी में भी रहेगे तो राज-ऋषि बनने के लिए जितना ही राज्य का नशा उतना ही बेहद के वैराग्य के नजारे, दोनों ही साथ-साथ अनुभव होंगे। जितना कब्रिस्तान अनुभव होगा, उतना ही परिस्तान सामने दिखाई देगा। त्याग के साथ-साथ भाग्य भी स्पष्ट सामने दिखाई देगा। सम्पूर्ण राजऋषि की स्थिति अर्थात् नशा और निशाने दोनों ही स्पष्ट होंगे। निशाना अर्थात् सम्पूर्ण स्टेज। ऐसे नशे में रहने वाले के सामने निशाना इतना समीप होगा जैसे स्थूल नेत्रों के सामने स्थूल वस्तु स्पष्ट दिखाई देती है। जब सामने दिखाई देती है, तो फिर कोई संकल्प नहीं उठेगा कि यह वस्तु है कि नहीं है, क्या है, वा कैसी है? ऐसे ही सम्पूर्ण स्टेज का निशाना सामने दिखाई देने के कारण, मैं बनूँगा या नहीं बनूँगा वा सम्पूर्ण स्टेज किसको कहा जाता है यह क्वेश्चन समाप्त हो जायेगा। अपने सम्पूर्ण स्टैज की निशानियाँ स्वयं में स्पष्ट नजर आयेंगी। वह निशानियाँ क्या होंगी, वह जानते हो व अनुभव करते हो?

(07.10.1975)

रॉयल रूप का संशय क्या है?

तीसरा नेत्र मिलते हुए भी माया को परख नहीं सकते, इसलिये माया को अच्छी तरह से परखने के लिये परख-शक्ति को विशेष रूप से अपने में धारण करो। दो मास हैं या चार मास हैं, यह समय की गिनती नहीं करो लेकिन स्वयं को समर्थ बनाओ।

होगा अथवा नहीं होगा, क्या होगा और कब होगा? इन संकल्पों के बजाए पुरुषोत्तम स्थिति में स्थित हो संगठन को सम्पूर्ण बनाने के संकल्प के आधार से प्रकृति को ऑर्डर देने के अधिकारी बनो। होना तो चाहिए लेकिन पता नहीं क्या होगा, शायद हो, दो चार मास में तो कुछ दिखाई नहीं देता है, संगमयुग चालीस वर्ष का है अथवा पचास वर्ष का है - इसी प्रकार के संकल्प भी सम्पूर्ण निश्चय के आगे बाप के व स्वयं के स्थापना के कार्य में विघ्न डालने वाला अति सूक्ष्म रूप का रॉयल संशय है। जब तक यह संशय है तब तक सम्पूर्ण विजयी नहीं बन सकते। गायन ही है - 'निश्चय बुद्धि विजयन्ति'। तो विजयी आत्मा को संशय के रॉयल रूप का संकल्प हो नहीं सकता।

सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि अपने विश्व-परिवर्तन के कार्य में दिन-रात बिज़ी रहेगे। जैसे कोई विशेष कार्य की ज़िम्मेवारी होती है तो दिन-रात इन्तज़ाम में लग जाते हैं, न कि इन्तज़ार करते हैं कि जब टाइम होगा तब स्टेज सजायेंगे व साधनों को अपनायेंगे। समय के पहले इन्तज़ाम किया जाता है। तो विश्व के परिवर्तन की ज़िम्मेवारी, यह भी परिवर्तन समारोह अभी मनाने का है। सर्व आत्माओं को अपने-अपने अनुसार सतोप्रधान बनाने का व बाप का परिचय देने का विशाल विश्व का सम्मेलन करना है। इसके लिये पहले से ही आप को अपनी स्थिति की स्टेज बनाने का इन्तज़ाम करना है या उस समय करोगे? जैसे स्थूल स्टेज के बिना, भाषण करना व सन्देश देना नहीं हो सकता वैसे अन्तिम समय पर स्वयं के सम्पूर्ण स्थिति की स्टेज बिना विशाल विश्व-सम्मेलन में सन्देश कैसे दे सकेंगे? अर्थात् बाप को प्रसिद्ध व प्रख्यात कैसे कर सकेंगे? तो स्टेज को पहले से तैयार करेंगे अथवा उस समय करेंगे? इसलिए इन्तज़ार को छोड़ इन्तज़ाम में लग जाओ। यह संकल्प भी व्यर्थ संकल्प है, इस व्यर्थ को भी समर्थ में परिवर्तन करो। अधिकारी बनो। प्रकृति को ऑर्डर करने के समर्थ स्टेज को बनाओ। संगठित रूप से सर्व ब्राह्मणों के अन्दर रहम की भावना, विश्व-कल्याण की भावना, सर्व-आत्माओं को दु:खों से छुड़ाने की शुभ कामनाए जब तक दिल से उत्पन्न नहीं होंगी तब तक विश्व-परिवर्तन रुका हुआ है। अभी हलचल में हो - एक ही संकल्प में अचल और अटल नहीं हो। अंगद समान अडोल बनना अर्थात् अन्तिम घड़ी लाना। तो संगठित रूप से ऐसे एक संकल्प को अपनाओ अर्थात् दृढ़ संकल्प की इकठ्ठी अंगुली सभी दो, तो यह कलियुगी पर्वत परिवर्तन करके गोल्डन वर्ल्ड को ला सके। समझा? क्या इन्तज़ाम करना है?

(23.10.1975)

निश्चयबुद्धि की निशानी यह है कि वह हर बात व हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त होगा

जैसे वृक्ष को हिलाते हैं ना। तो निश्चय की नींव अर्थात् फाउन्डेशन को हिलाने के पेपर्स भी आयेंगे। फिर पेपर देने के लिये तैयार हो अथवा कमजोर हो? पाण्डव सेना तैयार है या शक्तियाँ तैयार हैं अथवा दोनों तैयार हैं? होशियार स्टूडेण्ट पेपर का आह्वान करते हैं और कमजोर डरते हैं। तो आप कौन हो? निश्चयबुद्धि की निशानी यह है कि वह हर बात व हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त होगा, 'क्यों, क्या और कैसे' की चिन्ता नहीं होगी। फरिश्तेपन की लास्ट स्टेज की निशानी है - सदा शुभचिन्तक और सदा निश्चिन्त। ऐसे बने हो? रियलाइजेशन कोर्स में स्वयं को रियलाइज करो। और अब अन्तिम थोड़े-से पुरुषार्थ के समय में स्वयं में सर्वशक्तियों को प्रत्यक्ष करो।

(07.02.1976)

निश्चयबुद्धि आत्माओं को परमात्म इशारा

बाकी रहा शादी कराने का वा करने का क्वेश्चन। इसके लिए तो पहले से ही डायरेक्शन है जहाँ तक स्वयं को और अन्य आत्माओं को बचा सकते हो वहाँ तब तक बचाओ। विनाश अगर 1976 में नहीं हुआ तो क्या विनाश के कारण पवित्र रहते थे क्या? पवित्रता तो ब्राह्मण जन्म का स्वधर्म है। पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का लक्ष्य और लक्षण है। जिसका निजी लक्षण ही पवित्रता है उसका विनाश की डेट के साथ कोई कनेक्शन नहीं। यह तो स्वयं की कमज़ोरी छिपाने का बहाना है। क्योंकि ब्राह्मण बहानेबाजी बहुत जानते हैं। अच्छा, बाकी रही दूसरों को शादी कराने की बात। उसके लिए जहाँ तक बचा सको बचाओ। स्वयं कमज़ोर बन उसको उत्साह नहीं दिलाओ। मन में भी यह संकल्प न करो कि अब तो करना ही पड़ेगा। दस वर्ष पहले भी जिन को बचा न सके तो उनका क्या किया! साक्षी होकर संकल्प से वाणी से, भी बचाने का प्रयत्न किया वैसे ही अभी

भी इसी प्रकार दृढ़ रहो। बाकी जिनको गिरना ही है उनको क्या करेंगे! विनाश के कारण स्वयं हलचल में न आओ। आपकी हलचल अज्ञानियों को भी हलचल में लायेगी। आप अचल रहो। फलक से, निर्भयता से बोलो। फिर वो लोग आपे ही चुप हो जायेंगे, कुछ बोल नहीं सकेंगे। आप निश्चय बुद्धि से संकल्प रूप में भी संशय-बुद्धि न बनो। रॉयल रूप का संशय है कि 'ऐसा होना तो चाहिए था', पता नहीं बाबा ने क्यों ऐसा कहा था। पहले से ही बाप-दादा बता देते थे। अब सामने कैसे जायेंगे? यह रॉयल रूप का संशय, दुनिया वालों को भी संशय-बुद्धि बनाने के निमित्त बनेगा। 'हाँ! कहा है, अभी भी कहेंगे' - इसी निश्चय और नशे में रहो तो वो नमस्कार करने आयेंगे कि धन्य है आपका निश्चय। समझा? घबराओ नहीं, क्या जेल में जाने से डरते हो? डरते नहीं, घबराते हैं। सामना करने की शक्ति नहीं है। यही कहो कि जो कुछ कहा था उसमें कल्याण था। अब भी है। हम अभी भी कहते हैं। उनको अगर ईश्वरीय नशे और रमणीकता से सुनाओ तो वो और ही हंसेंगे। लेकिन पहले स्वयं मजबूत हो। समझा?

आज सबके संकल्प पहुँचे, सबको इन्तजार था 18 तारीख को क्या सुनायेंगे। अब सुना? बाप-दादा साथ हैं; कोई कुछ कर नहीं सकता; कह नहीं सकता, जलती हुई भट्टी में भी पूंगरे सलामत रहे, यह तो कुछ भी नहीं है। बाल भी बांका नहीं कर सकता। साधारण साथ नहीं, सर्वशक्तिवान का साथ है। इसलिए 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'।

डेट बताने की जरूरत ही नहीं। कभी भी फ़ाइनल विनाश की डेट फ़िक्स नहीं हो सकती। अगर डेट फ़िक्स हो जाए तो सब सीट्स भी फ़िक्स हो जाएं, फिर तो पास विद् ऑनर्स की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो डेट आ ही जायेगी। जब सभी इस संकल्प से निरसंकल्प होंगे वही डेट विनाश की होगी।

(18.01.1977)

दृढ़ निश्चयबुद्धि के संकल्प

अपने को ब्रह्मा-मुखावंशावली ब्राह्मण समझते हो ना? ब्राह्मणों का धर्म और कर्म क्या है, वह जानते हो? धर्म अर्थात् मुख्य धारणा है - सम्पूर्ण पवित्रता। सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा जानते हो? संकल्प व स्वप्न में भी अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो? ऐसी श्रेष्ठ धारणा करने वाले ही सच्चे ब्राह्मण कहलाते हैं, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएँ पर धर्म न जाएँ'। ऐसी हिम्मत, ऐसा दृढ़ निश्चय करने वाले अपने को समझते हो? किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करेंगे? पीछे हटेंगे नहीं? घबरायेंगे नहीं?

(28.01.1977)

जो आधार विनाशी और परिवर्तनशील है, उसको आधार बनाने कारण, स्वयं भी सर्व प्राप्तियों के अनुभव को विनाशी समय के लिए ही अनुभव करते हैं, और स्थिति भी एकरस नहीं, लेकिन बार-बार परिवर्तन होती रहती। अभी-अभी बहुत खुशी और आनन्द में होंगे, अभी-अभी मुरझाई हुई मूर्त्त, उदास और नीरस मूर्त्त होंगे। कारण? कि आधार ही ऐसा है। कई आत्माएं बहुत अच्छे हुल्लास, उमंग, हिम्मत और बाप के सहयोग से बहुत आगे मंजिल के समीप तक पहऊँच जाती हैं, लेकिन 63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज ही, सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं, उस कर्मो की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं - क्या लास्ट तक यही चलेगा? अब तक भी यह टक्कर क्यों होता? इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन के कारण प्यार नहीं कर पाते। सोचने में ही टाईम वेस्ट कर देते हैं और कोटों में कोई तूफानों को भी ड्रामा का तोफ़ा समझ स्वभाव संस्कारो की टक्कर को आगे बढ़ने का आधार समझ, माया को परखते हुए पार करते, सदा बाप को साथी बनाते हुए, साक्षी हो हर पार्ट देखते, सदा हर्षित हो चलते रहते। सदैव यह निश्चय रहता है कि अब तो पहऊँचे। तो बाप इतने प्रकार की लीला बच्चों की देखते हैं।

(03.05.1977)

निश्चय बुद्धि की निशानी है सदा निश्चिन्त

कमज़ोरियों को दूर करने का सहज साधन कौन सा है? जो कुछ संकल्प में आता है, वह बाप को अर्पण कर दो। जो भी आवे वह बाप को सामने रखते हुए ज़िम्मेवारी बाप को दो, तो स्वयं स्वतंत्र हो जाएंगे। सिर्फ एक दृढ़ संकल्प रखो कि 'मैं बाप का और बाप मेरा'। जब मेरा बाप है, तो मेरे के ऊपर अधि-कार होता है न? अधिकारी स्वरूप में स्थित होंगे तो अधी-नता ऑटोमेटिकली निकल जाएगी। हर सेकेण्ड यह चैक करो कि अधिकारी स्टेज पर हूँ? विश्व के मालिक का मैं बालक हूँ, यह पक्का है? तो 'बालक सो मालिक'। 'बाप समान सर्व शक्तियों का अधिकारी मास्टर सर्व-शक्तिवान हूँ', इस स्मृति को बार-बार रिवाइज़ और रियलाइज करो, फिर 'सदा मास्टर सर्व-शक्तिवान अनुभव करेंगे'। तीव्र पुरुषार्थी कभी भी किसी कारण से थकेंगे नहीं।

'निश्चय बुद्धि की निशानी है सदा निश्चिन्त।' जो निश्चिन्त होगा वही एक रस रहेगा, डगमग नहीं होगा। अचल रहेगा। कुछ भी हुआ, सोचो नहीं। क्यों, क्या में कभी नहीं जाओ, त्रिकालदर्शी बन निश्चिन्त रहो। हर कदम में कल्याण है। जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता उसमें भी कल्याण समाया हुआ है, सिर्फ अन्तर्मुखी हो देखो। ब्राह्मणों का कभी भी अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकड़ा है ना! अकल्याण को भी वह कल्याण में परिवर्तन कर देगा। इसलिए 'सदा निश्चिन्त रहो।'

(05.05.1977)

निश्चय बुद्धि बच्चों के ऊपर बाप-दादा भी अपने सर्व सम्पत्ति सहित कुर्बान है

बापदादा सभी बच्चों के पुरुषार्थ के रफ्तार की रिजल्ट देख रहे थे। नए अथवा पुराने, दोनों की पुरुषार्थ की रफ्तार देखते हुए, बाप को बच्चों पर अति स्नेह भी हुआ और साथ-साथ रहम भी हुआ। स्नेह क्यों हुआ? देखा कि छोटे-बड़े परिचय मिलते, परिचय के साथ अपने यथा शक्ति प्राप्ति के आधार पर पास्ट लाईफ (गत जीवन) और वर्तमान ब्राह्मण लाइफ, दोनों में महान अन्तर अनुभव करते, भटकते हुए का सहारा दिखाई देते हुए, निश्चय बुद्धि बन, एक दो के सहयोग से, एक दो के अनुभव के आधार से मंजिल की ओर चल पड़े हैं। खुशी, शक्ति, शान्ति वा सुख की अनुभूति में कोई लोक-लाज़ की परवाह न करते हुए, अलौकिक जीवन का अनुभव कदम को आगे बढ़ाता जा रहा है। प्राप्ति के आगे कुछ छोड़ रहे हैं वा त्याग कर रहे हैं, कोई सुध-बुध नहीं रहती। बाप मिला सब कुछ मिला, उस खुमारी वा नशे में त्याग भी, त्याग नहीं लगा, याद और सेवा में तन-मन-धन से लग गए। पहला नशा, पहली खुशी, पहला उमंग, उत्साह, 'न्यारा और अति प्यारा' अनुभव किया। यह त्याग और आदिकाल का नशा, त्रिकालदर्शी मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्थिति का पहला जोश जिसमें कुछ होश नहीं, पुरानी दुनिया का सब कुछ तुच्छ अनुभव हुआ, असार अनुभव हुआ। ऐसी हरेक की पहली स्टेज देखते हुए अति स्नेह हुआ कि हरेक ने बाप के प्रति कितना त्याग और लगन से आगे बढ़ने का पुरुषार्थ किया है। ऐसे त्यागमूर्त्त, ज्ञान मूर्त्त, निश्चय बुद्धि बच्चों के ऊपर बाप-दादा भी अपने सर्व सम्पत्ति सहित कुर्बान हुए। जैसे बच्चों ने संकल्प किया, 'बाबा! हम आपके हैं'। वैसे बाप भी रिटर्न में (बदले में) यही कहते कि, 'जो बाप का सो आपका'

(16.05.1977)

निश्चय का रिटर्न है– बाप को सदा का साथी बनाकर रखना

सदैव एक मंत्र याद रखो – बाप को दिल का सच्चा साथी बनाकर रखेंगे तो सदा अनुभव करेंगे खुशियों की खान मेरे साथ है। सदा इस संग का रूहानी रंग लगा रहेगा। क्योंकि बड़े से बड़ा संग 'सर्वशक्तिवान' का है। सत्संग की महिमा है तो सदा बुद्धि द्वारा सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरु का संग करना – यही 'सत्संग' है। इस सत्संग में रहने से सदा हर्षित और हल्के रहेंगे। किसी भी प्रकार का बोझ अनुभव नहीं होगा। निश्चय बुद्धि हो – यह तो ठीक है। लेकिन निश्चय का रिटर्न है– बाप को सदा का साथी बनाकर रखना। पल-पल बाप का साथ हो। सदा साथ के अनुभव से सम्पन्न का अनुभव करेंगे। ऐसे लगेगा जैसे भरपूर हैं। जब बाप को अपना बनाया तो बाप का जो भी हैं, सब अपना हो गया।

(21.05.1977)

बाप के निश्चय के साथ-साथ सेवा में भी फेथफुल बनो

हरेक स्वयं को विश्व कल्याणकारी समझते हुए, हर संकल्प और कर्म द्वारा विश्व का कल्याण हो, ऐसे संकल्प वा कर्म करते हो? जब हर संकल्प श्रेष्ठ होगा तब ही स्वयं का और विश्व का कल्याण होगा। अपनी ड्यूटी सदा स्मृति में रहनी चाहिए कि मैं विश्व कल्याण की इन्चार्ज हूँ। इन्चार्ज अपनी ड्यूटी को नहीं भूलता। लौकिक रीति में भी कोई ड्यूटी वाला अपनी ड्यूटी को अच्छी तरह न सम्भाले तो उसको क्या करते हैं (निकाल देते हैं) यहाँ किसी को भी निकाला नहीं जाता लेकिन स्वतः ही निकल जाता। वहाँ तनख्वाह कट कर देंगे, या वार्निंग देंगे निकाल भी, लेकिन यहाँ अगर अपनी ड्यूटी ठीक नहीं बजाते तो ड्रामानुसार प्राप्ति की तनख्वाह कट ही जाती है, खुशी कम हो जाती, शक्ति कम हो जाती। स्वतः ही अनुभव करते - नामालूम खुशी कम क्यों हो गयी? कारण क्या होता? किसी न किसी प्रकार से अपनी ड्यूटी यथार्थ रीति बजाते नहीं। कुछ मिस जरूर करते। तो ड्यूटी पर अच्छी तरह से लगे हुए हो? विश्व कल्याण के सिवाए और कोई संकल्प चले, यह हो नहीं सकता। अगर चलता है तो ड्यूटी पूरी हुई है क्या? तो अपनी ड्यूटी पर सदा कायम रहते हो? कि हद की जिम्मेवारी निभाते इस अलौकिक जिम्मेवारी को भूल जाते हो? सदा यह निश्चय रहे कि मैं विश्व-कल्याणकारी हूँ, जितना निश्चय उतना नशा। अगर नशा कम तो सेवा भी कम करेंगे। इसलिए सदा ड्यूटी पर एक्यूरेट रहो। जो ड्यूटी पर एक्यूरेट रहता है उसको सभी ईमानदार की नज़र से देखते हैं। फेथफुल की नज़र से देखते हैं ना। बाप भी समझते हैं, जो एक्यूरेट अपनी सेवा में रहते हैं वही बाप के फेथफुल हैं।। एक होता है बाप के निश्चय में पूर्ण, लेकिन बाप के निश्चय के साथ-साथ सेवा में भी फेथफुल। यह भी सब्जेक्ट है ना। जैसे ज्ञान की सब्जेक्ट है वैसे सेवा की भी सब्जेक्ट है। तो इसमे फेथफुल ही नम्बर आगे जा सकता। नम्बर टोटल मार्क्स का होता है। लेकिन दूसरों की सेवा करते स्वयं की भी सेवा करो, ऐसे नहीं कि अपनी सेवा करते दूसरों की भूल जाओ; या दूसरों की करते अपनी भूल जाओ। दोनों का बैलेंस चाहिए; ऐसे को कहा जाता है विश्व-कल्याणकारी। तो आत्मज्ञानी भी हो। लेकिन विश्व-कल्याणकारी, बाप द्वारा निमित्त बच्चे ही हो सकते।

(02.06.1977)

तीव्र पुरुषार्थ का उमंग, उत्साह कम क्यों हो जाता?

अपने आप को चेक करो, चलते-चलते खुशी कम क्यों हो जाती है? वा तीव्र पुरुषार्थ का उमंग, उत्साह कम क्यों हो जाता? वा योगयुक्त की बजाए व्यर्थ संकल्पों तरफ क्यों भटक जाते? वा अपने स्वभाव-संस्कारों का बन्धन क्यों नहीं चुक्तू होता? कारण क्या होता है? कारण जानते हो? विशष कारण है - जैसे शुरू में आते हो तो बाप से प्राप्त हुए पुरुषार्थ की युक्तियों और मेहनत से करने लग जाते हो। दिन-रात थकावट अथवा माया की रुकावट कोई की परवाह नहीं करते। बाप मिला, वर्सा पाना है, अधिकारी बनना है - इसी नशे में कदम को बहुत तीव्र रूप से आगे बढ़ाते चलते हो। लेकिन अब क्या करते? जैसे आजकल के जमाने में मेहनत करना मुश्किल लगता है। तनख्वाह चाहिए लेकिन मेहनत नहीं चाहिए। वैसे ब्राह्मण आत्माएं भी मेहनत से अलबेली हो जाती हैं वा आलस्य में आ जाती हैं। बनना चाहते सभी महावीर, महारथी, लेकिन मेहनत प्यादे की भी नहीं करते। बनी बनाई स्टेज चाहते हैं - मेहनत से स्टेज बनाने नहीं चाहते। सोचेंगे हम कम किसमें भी न होवें, नाम महारथियों के लिस्ट में हो। लेकिन महारथी का वास्तविक अर्थ है 'महारथी की महानता'; उसमें स्थित होना मुश्किल अनुभव करते हैं। सहयोगी नाम का एडवान्टेज ठीक उठाते हैं। इस कारण जो कदम-कदम पर मेहनत और अटेंशन चाहिए; पुरुषार्थी जीवन की स्मृति चाहिए, बाप के साथ की समर्थी चाहिए, वह प्रेक्टिकल में नहीं है। मेहनत नहीं करने चाहते, लेकिन बाप की मदद से पार होना चाहते हैं। बाप का काम ज्यादा याद रखते हैं, अपना काम भूल जाते हैं, इस कारण जो युक्तियाँ बताई जाती हैं वह कार्य में नहीं लगाते, समय पर यूज करने नहीं आती। लेकिन बार-बार बाप से पूछने आते हैं - योग क्यों नहीं लगता, क्या करूँ? बन्धन क्यों नहीं कटता, क्या करूँ? जब रिवाईज कोर्स चल रहा है, रियलाइजेशन कोर्स (अनुभूति) चल रहा है, तो क्या कोर्स में बाप-दादा ने यह बताया नहीं है? कुछ रह गया है क्या जो फिर सुनाना पड़े? यह तो पहले दूसरे क्लास का कोर्स है। इस कारण सुने हुए को मनन करो। मनन न करने से शक्तिशाली न बन कमज़ोर हो गए हो। और कमज़ोर होने के कारण बार-बार रुकते हो। चढ़ती कला का अनुभव नहीं कर पाते हो। इसलिए सदा यह याद रखो कि हम निमित्त बनी हुई आत्माओं की चढ़ती कला

से ही सर्व का भला है।

(07.06.1977)

हार का कारण - निश्चय में कमी

सदा निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हैं - यह स्मृति रहती है? निश्चय का फल है - 'विजय'। कोई भी कार्य करते हैं, अगर कार्य करते हुए स्वयं में, बाप में, ड्रामा में निश्चय है, सब प्रकार से निश्चय है तो कभी भी विजय न हो ऐसा हो नहीं सकता। अगर हार होती तो उसका कारण - निश्चय में कमी। अगर स्वयं में भी संशय है - यह होगा-नहीं होगा; सफ़लता होगी या नहीं, तो भी सम्पूर्ण निश्चय नहीं कहेंगे। निश्चय बुद्धि का संकल्प दृढ़ होगा, कमज़ोरी का नहीं। जो होगा वह कर लेंगे, यह भी संशय का संकल्प है। जो होगा, नहीं, हुआ ही पडा है - ऐसा निश्चय। कर्म करने के पहले भी निश्चय हो कि हुआ ही पड़ा है। ऐसी स्टेज है? कैसी भी माया आवे लेकिन डगमग न हों। निश्चय बुद्धि हर तूफान व माया के विघ्न को ऐसे पार करेगा जैसे कुछ है ही नहीं। जैसे साइंस के साधन हैं तो गर्मी होते भी उसके लिए गर्मी नहीं है। ऐसे जो निश्चयबुद्धि होगा उनके आगे माया के तूफान आएंगे लेकिन उसके लिए बड़ी बात नहीं होगी। सेफ (बचाव) रहने के साधन उसके पास हैं तो मायाजीत बन जाएंगे।

हर कार्य में स्वयं निश्चयबुद्धि। ऐसा निश्चय बुद्धि सदा साक्षी होकर अपना पार्ट भी देखते और दूसरों का भी देखते, विचलित नहीं होते। क्या, क्यों में नहीं जाते।

(07.06.1977)

निश्चय बुद्धि होगा वह निश्चिंत होगा

सदा अपने को निश्चय बुद्धि, निश्चिंत आत्मा अनुभव करते हो? जो निश्चय बुद्धि होगा वह निश्चिंत होगा। किसी प्रकार का चिन्तन वा चिन्ता नहीं होगी। क्या हुआ? क्यों हुआ? ऐसे नहीं होता - यह व्यर्थ चिंतन है। निश्चय बुद्धि निश्चिंत और व्यर्थ चिन्तन नहीं करेगा। सदा स्वचिन्तन में रहने वाले, स्वस्थिति में रहने से परिस्थिति पर विजय प्राप्त करते हैं। दूसरे तरफ से आई हुई परीस्थिति को स्वीकार क्यों करते? परिस्थिति को किनारा करो तो स्वचिन्तन में रहेंगे। और जो स्वचिन्तन में स्थित रहता वह सदा सुख के सागर में समाया हुआ रहता। सुख के सागर में समाए हुए हो? जब बाप सुख का सागर है तो बच्चे मास्टर सुख के सागर हुए। संकल्प में भी दु:ख की लहर आती है, कि सदा सुखी रहते हो? सुख के सागर के मास्टर उसमें दु:ख हो ही नहीं सकता। अगर दु:ख आता तो मास्टर दु:ख के सागर अर्थात् रावण, आँख से भी आता, कान से भी आता, मुख से भी आता। सर्व शक्तिवान के आगे रावण आ नहीं सकता। बाप की याद सबसे बड़ी ते बड़ी सेफ्टी है।

पांडवों की जो विशेषता गाई हुई है वह जानते हो? पांडवों के विजय का मुख्य आधार - 'एक बाप दूसरा न कोई'। पांडवों का संसार बाप था। यह किसका यादगार है? आपका यादगार हर कल्प गाया जाता है। तो ऐसे अनुभव होता है? संसार ही बाप है। जहाँ देखो वहाँ बाप ही नज़र आता है। संसार में सम्बन्ध और सम्पत्ति होती, तो सम्बन्ध भी बाप में है और सम्पत्ति भी बाप में है। और बाकी कुछ रह गया है? पांडव अर्थात् जिसका संसार ही बाप है। ऐसे पांडव हर कार्य में विजयी होंगे ही। होंगे या नहीं यह सवाल नहीं उठ सकता। कर्म करने के पहले संकल्प उठता है, होगा या नहीं होगा, कि हुआ ही पड़ा है यह निश्चय है? पांडवों को पहले ही निश्चय होता, हमारी जीत है, क्योंकि सर्वशक्तिवान साथ है। 'पाण्डव अर्थात् सदा विजयी रत्न। विजयी रत्न ही बाप को प्रिय लगते हैं।'

(16.06.1977)

ऑनेस्ट अर्थात् किसी भी वातों के आधार पर फाउन्डेशन न हो।

ऑनेस्ट अर्थात् किसी भी बातों के आधार पर फाउन्डेशन न हो। हरेक बात के अनुभव के आधार पर, प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन हो। बात बदली और फाउन्डेशन बदला, निश्चय से संशय में आ गया। और क्यों, कैसे के क्वेश्चन में आ गया,

उसको प्राप्ति के आधार पर अनुभव नहीं कहेंगे। ऐसा कमज़ोर फाउन्डेशन छोटी सी बात में हलचल पैदा कर लेता है। जैसे आजकल की एक रमणीक बात बाप के आगे क्या रखते हैं कि 1977 तक पवित्र रहना था, अब तो ज्यादा समय पवित्र रहना मुश्किल है। इसलिए बाप के ऊपर बात रखते हुए खुद को निर्दोष बनाकर खुदा को दोषी बना देते हैं। लेकिन पवित्रता ब्राह्मणों का निजी संस्कार है। हद के संस्कार नहीं है। हद की पवित्रता अर्थात् एक जन्म तक की पवित्रता हद का सन्यास है। बेहद के संन्यासियों को जन्म-जन्मान्तर के लिए अपवित्रता का संन्यास है। बाप-दादा ने पवित्रता के लिए कब समय की सीमा दी थी क्या? सलोगन में भी यह लिखते हो कि बाप से सदा काल के लिए पवित्रता सुख-शान्ति का वर्सा लो। समय के आधार पर पवित्र रहना, इसको कौन-सी पवित्रता की स्टेज कहेंगे? इससे सिद्ध है कि स्वयं का अनुभव और प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन नहीं हैं। तो ऑनेस्ट बच्चों के यह लक्षण नहीं हैं। 'ऑनेस्ट अर्थात् सदा होलीएस्ट'। समझा, ऑनेस्ट किसको कहा जाता है?

(25.06.1977)

एक सेकण्ड का निश्चय

आज बाप बच्चों को देख सदा हर्षित होते हैं। हरेक बच्चा वर्तमान समय में विश्व की सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ है और भविष्य में भी विश्व द्वारा पूज्यनीय हैं। ऐसे सर्व श्रेष्ठ गायन और पूजन योग्य योगी तू आत्माएँ, ज्ञानी तू आत्मायें, दिव्य-गुणधारी, सदा विश्व के सेवाधारी बाप-दादा के सदा स्नेह और सहयोग में रहने वाले - ऐसे बच्चों को देख बाप को कितनी खुशी होती है! नम्बरवार होते हुए भी लास्ट नम्बर का मणका भी विश्व के आगे महान है। ऐसे अपनी महानता को, अपनी महिमा को जानते हुए चलते रहते हो या चलते-चलते अपने को साधारण समझ लेते हो? अलौकिक बाप द्वारा प्राप्त हुई अलौकिक जीवन, अलौकिक कर्म साधारण नहीं हैं। लास्ट नम्बर के मणके को भी आज अन्त तक भक्त आत्मायें आंखों पर रखती हैं। क्योंकि लास्ट नम्बर भी बाप-दादा के नयनों के तारे हैं, नूरे रतन हैं। ऐसे नूरे रतन को अब तक भी नयनों पर रखा जाता है। अपने श्रेष्ठ भाग्य को जानते हुए, वर्णन करते हुए अनजान नहीं बनो। एक बार भी मन से, सच्चे दिल से अपने को बाप का बच्चा निश्चय किया उस एक सेकेण्ड की महिमा और प्राप्ति बहुत बड़ी है। डायरेक्ट बाप का बच्चा बनना- जानते हो कितनी बड़ी लाटरी है। एक सेकेण्ड में नाम संस्कार शूद्र से ब्राह्मण हो जाता है। संसार बदल जाता- संस्कार बदल जाते, दृष्टि, वृत्ति, स्मृति सब बदल जाता एक सेकेण्ड के खेल में। ऐसा श्रेष्ठ सेकेण्ड भूल जाते हो। दुनिया वाले अब तक नहीं भूले हैं। आप आत्माएँ चक्कर लगाते बदल भी गईं लेकिन दुनिया वाले नहीं भूले। अभी आप सबका भाग्य वर्णन करते इतने खुश होते हैं- समझते हैं भगवान ही मिल गया। जब दुनिया वाले नहीं भूले हैं, आप स्वयं अनुभवी मूर्त्त तो सर्व प्राप्ति करने वाली आत्मायें हो, फिर भूल क्यों जाते हो? भूलना चाहिए नहीं लेकिन भूल जाते हो।

(13.01.1978)

छोटा सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है?

सब तीव्र पुरुषार्थी हो ना? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचा और किया। सोचने और करने में अन्तर नहीं। जैसे कई बातों में प्लान बहुत बनाते हैं, प्रैक्टीकल में अन्तर हो जाता है, तो तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वह जो प्लान बनाएगा वही प्रैक्टीकल होगा। तो ऐसे तीव्र पुरुषार्थी हो ना? पराया राज्य होने के कारण परिस्थितियां तो आपके तरफ़ बहुत आती हैं, लेकिन जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति भी स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है। पहाड़ भी राई बन जाता है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कई बार यह सब बातें पार कर चुके हैं। नथिंग न्यू। नई बात में घबराना होता। लेकिन नथिंग-न्यू ऐसा अनुभव करने वाले सदा कमल पुष्प के समान रहते हैं। जैसे पानी नीचे होता है, कमल ऊपर रहता है, इसी प्रकार परिस्थिति नीचे है, हम ऊपर हैं, नीचे की बात नीचे। कभी कोई बात आवे तो सोचो बाप-दादा हमारे साथ है। आलमाइटी अर्थोरिटी हमारे साथ है। आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं- कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं उनका पेट भर जाता है तो आप तो अधिकारी हैं,

आप भूखे कैसे रह सकते। इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ छोटा सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घण्टे का पेपर होता है। अगर बाप-दादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल एक भरोसा है तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। जैसे स्वप्न होता है ना, स्वप्न की जो बातें होती वह उठने के बाद समाप्त हो जाती, तो यह भी दिखाई बड़ा रूप देता लेकिन है कुछ नहीं। तो ऐसे निश्चय बुद्धि हो? हरेक के मस्तक के ऊपर विक्टरी1 का तिलक लगा हुआ है तो ऐसी आत्माएँ जो हैं ही विजय के तिलक वाले, उनकी हार हो नहीं सकती। मेहनत करके आये हो, परिस्थिति पार करके आये हो इसलिए बाप दादा भी मुबारक देते हैं। यह भी ड्रामा में है जैसे स्टीमर टूट जाता है तो कोई कहाँ कोई कहाँ जाकर पड़ते हैं, यह भी द्वापर में सब बिछुड़ गये, कोई विदेश में कोई देश में, अभी बाप बिखरे हुए बच्चों को इकट्ठे कर रहे हैं। अभी बेफिकर रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आयेगा। महावीर हो ना। कहानी सुनी है ना भट्ठी के बीच पूंगरे बच गये। क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ़ माया प्रुफ़ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए। ड्रेस तो सदा साथ रहती है ना माया प्रूफ की। प्लेन में भी देखो एमर्जेन्सी में ड्रेस देते हैं कि कुछ हो तो पहन लेना। तो आपको बहुत सहज साधन मिला है।

(14.02.1978)

एक बात निश्चय और नशे में रहे - 'वाह रे मैं'

भाग्य विधाता बाप को देख हर्षित होते हैं वैसे बाप भी भाग्यवान बच्चों को पाकर बच्चों से भी ज्यादा खुश होते हैं। क्योंकि इतने समय से और इतने सब बच्चे बिछड़े हुए फिर से मिल जाएं तो क्यों नहीं खुशी होगी। हर बच्चे की विशेषता या हर सितारे की चमक, हर रूह की रंगत, रूहानियत की ईश्वरीय झलक जितना बाप जानते हैं उतना बच्चे स्वयं भी कब भूल जाते हैं। सर्व विघ्नों से, सर्व प्रकार की परिस्थितियों से या तमोगुणी प्रकृति की आपदाओं से सैकण्ड में विजयी बनने के लिए सिर्फ एक बात निश्चय और नशे में रहे - वह कौन सी? जो बार-बार जानते भी हो, संकल्प तक स्मृति में रहते हो लेकिन संस्कार रूप में नहीं रहते हो - सोचते भी हो, समझते भी हो, सुनते भी हो, फिर भी कभी-कभी भूल जाते हो। वह क्या? बहुत पुरानी बात है - वाह रे मैं - यह सुनते खुश भी होते हो फिर भी भूल जाते हो। इस मरजीवा जीवन के जन्म के संस्कार - वाह रे मैं - ही हैं। तो अपने जन्म के निजी संस्कार जन्म की पहली स्मृति, जन्म का पहला बोल - मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ इसको भी भूल जाते हैं।

(05.12.1978)

जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है

ड्रामा अनुसार जो विशेषता प्राप्त है उसे सदा कार्य में लगाओ तो औरों की भी विशेषता दिखाई देगी। विशेषता न देख बातों को देखते हो इसलिए हार होती है। हरेक की विशेषता को स्मृति में रखो एक दो में फ़ेथफुल रहो तो उनकी बातों का भाव बदल जावेगा। अगर आपस में दो मित्र होते हैं और उनके बीच तीसरा उनकी कुछ ग्लानि करने आता तो वह उसके भाव को बदल देते हैं। जैसे आपको कोई ब्रह्मा बाप के लिए कहे कि यह क्या, यह तो गाली देते हैं - लेकिन तुम उन्हें निश्चय से समझावेंगे कि यह गाली नहीं है यह तो स्पष्टीकरण है। जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है। हरेक की विशेषता को देखो तो अनेक होते भी एक दिखाई देंगे। एक मत संगठन हो जावेगा। कोई किसकी ग्लानि की बातें सुनावे तो उसे टेका देने के बजाए सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो। अर्थ में भावना परिवर्तन कर दो। यह अभ्यास चाहिए नहीं तो एक की बात दूसरे से सुनी, दूसरे की तीसरे से सुनी और फिर वह व्यर्थ बातें वातावरण में फैलती रहतीं, जिस कारण पावरफुल वातावरण नहीं बन पाता। साक्षात्कार मूर्त्त भी नहीं बन सकते। इसलिए सदैव सबके प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना हो। एक-दो की ग्लानि की बातें सुनना टाइम वेस्ट करना है। कमाई से वंचित होना है। अगर परिवर्तन कर सकते हो तो सुनो - नहीं तो सुनते हुए भी न सुनो।

(10.12.1978)

निश्चयबुद्धि की पहली निशानी - सदा निश्चिंत

अपने ही व्यर्थ संकल्पों का तूफान स्वयं ही रचते और उसी तूफान में स्वयं ही हिल जाते। अपने निश्चय के फाउण्डेशन वा अनेक प्रकार की प्राप्तियों के आधार में स्वयं ही हिल जाते हैं। नामालूम विनाश होगा या नहीं होगा, भगवानुवाच ठीक है वा नहीं है, दुनिया के आगे निश्चय से कहें वा नहीं कहें, गुप्त रहें वा प्रत्यक्ष होवें-जमा करें वा सेवा में लगायें...प्रवृत्ति को सम्भालें वा सेवा में लगें। आखिर भी क्या होना है। बाप तो निराकार और आकारी हो गये-साकार में सामना करने वाले तो हम हैं। ऐसे व्यर्थ संकल्पों का तूफान रच स्वयं को ही डगमग करते हैं। अपने निश्चय के फाउण्डेशन को हिला देते हैं। जैसे तुफान कहाँ पहुँचा देता है-वैसे यह व्यर्थ संकल्पों का तूफ़ान तीव्र पुरुषार्थ से पुरुषार्थ तरफ़ ले आता है। ऐसे तूफानों में मत आओ-बाप-दादा ऐसे बच्चों से पूछते हैं कि क्या अब तक भी ट्रस्टी हो वा गृहस्थी हो? जब ट्रस्टी हो तो ज़िम्मेवार कौन, आप वा बाप? जब बाप ज़िम्मेवार है तो होगा वा नहीं होगा, क्या होगा यह बाप की ज़िम्मेवारी है वा आपकी है? निश्चयबुद्धि की पहली निशानी क्या है? निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा निश्चिंत। जब बाप ने आपकी सब चिंतायें अपने ऊपर ले लीं फिर आप क्यों चिंता करते। विनाश हो न हो वा कब होगा यह चिंता ब्राह्मण जीवन में क्यों? क्या ब्राह्मण जीवन हीरे तुल्य जीवन, बाप से मिलन मनाने की जीवन, चढ़ती कला की जीवन, सर्व खजानों से सम्पन्न होने वाली जीवन, सर्व अनुभूति सम्पन्न जीवन अच्छी नहीं लगती है? जल्दी समाप्त करने चाहते हो? कोई कष्ट वा तकलीफ है क्या? भक्तिमार्ग में यही पुकारा कि यह अतीन्द्रिय सुख की जीवन के दिन एक से चौगुने हो जायें-और अब थक गये हो। ऐसा संकल्प करने वालों के ऊपर बाप-दादा को हंसी आती है। अप्राप्ति क्या है जो ऐसे संकल्प उठाते हो-जब कल्याणकारी बाप कहते हो, कल्याणकारी जीवन कहते हो तो जो भी भगवानुवाच है उसमें अनेक प्रकार के कल्याण समाये हुए हैं। क्यों और कैसे कहा, इस संकल्प से निश्चयबुद्धि का फाउण्डेशन हिलाते क्यों हो? अगर ऐसे छोटे-छोटे तूफ़ानों में फाउण्डेशन हिल जाता है तो महाविनाश के महान तूफान में कैसे ठहर सकेंगे। यह तो सिर्फ एक अपने व्यर्थ संकल्पों का तूफान है लेकिन महाविनाश में अनेक प्रकार के चारों ओर के तूफान होंगे फिर क्या करेंगे? इतनी छोटी सी बात में जिसमें और ही आगे के लिए समय मिला है, साथ मिला है, अनेक प्रकार के खजाने मिल रहे हैं, प्राप्ति होते हुए समाप्ति की उत्कण्ठा क्यों करते हो? सुख के दिनों में धीरज धरो। कब और क्यों के अधीर्य में मत आओ। अपने ही व्यर्थ संकल्पों के तूफान समाप्त करो, सम्पत्तिवान बनो, समर्थीवान बनो। सदा निश्चयबुद्धि। कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी समय का हर सेकेण्ड लाभ उठाओ। सारे कल्प में ऐसे सम्पतिवान, भाग्यवान दिन, भाग्य विधाता के संग के दिन फिर नहीं आने वाले हैं। विनाश के समय भी यह प्राप्ति का समय याद करेंगे इसलिए ड्रामा अनुसार कल्याण अर्थ जो ड्रामा का दृश्य चल रहा है उसको त्रिकालदर्शी बन हिम्मत और उल्लास वाली समर्थ आत्मायें बन स्वयं भी समर्थ रहो और विश्व को भी समर्थ बनाओ। पत्थर तोड़ने में थको मत, स्वयं के तूफान में हिलो मत, अचल बनो। समझा। करते क्या हो और करना क्या है? यही रूह-रूहान बाप-दादा की हुई कि बच्चे क्या खेल करते हैं। अब समर्थी का खेल खेलो। जिससे यह सब खेल समाप्त हो जाएं। दिलशिकस्त के बजाए दिल सदा खुश हो जाए। अभी ऐसे संकल्प इस महान यज्ञ में आहुति डालकर जाना-साथ नहीं लेकर जाना-सदा के लिए स्वाहा। जब स्वयं ही स्वाहा हो तो यह संकल्प कैसे आ सकते। इसलिए स्वाहा का भोग लगाकर जाना। समर्थ संकल्पों रूपी फलों का भोग लगाना-समझा कौन सा भोग लगाना है। अच्छा।

(14.12.1978)

सम्पूर्ण निश्चय की रूपरेखा

आज बाप-दादा अमृतवेले बच्चों से मधुर मिलन मनाते, चारों ओर के बच्चों को देखते हुए आपस में एक विशेष बात पर रुह-रुहान कर रहे थे। किस बात पर? हर बच्चे के दिव्य जन्म की रूप-रेखा वा जन्म की घड़ी अर्थात् वेला को देख रहे थे। हरेक की वेला और रूप रेखाओं के आधार पर वर्तमान संगमयुगी जीवन और भविष्य जीवन का आधार है। रूप में क्या देखा? जन्मते ही शक्ति रूप की झलक रही वा वियोग से योग की रेखा रही अर्थात् तड़प वा प्यास-रूप रहा वा सेवाधारी स्वरूप रहा वा सदा आते ही अतिइन्द्रिय सुख में सुख रूप रहा! उसके साथ रेखायें क्या रही, आते ही सम्पूर्ण परवाने की रेखा रही वा पुरुषार्थी की रेखा रही? वरदानी की रेखा रही, हिम्मत और हुल्लास की रेखा रही वा जन्मते ही सहयोग के आधार पर चलने

की रेखा रही। ऐसे ही वेला को भी देख रहे थे, सेकेण्ड में निश्चय बुद्धि रहे, सप्ताह कोर्स के बाद रहे वा और भी अधिक समय के बाद निश्चय बुद्धि बने वा संशय निश्चय की युद्ध चलते-चलते निश्चय बुद्धि बने। वा अब भी युद्ध में ही चल रहे हैं। सेकेण्ड का निश्चय अर्थात् नज़र से निहाल। सेकेण्ड नम्बर श्रेष्ठ बोल से निहाल, तीसरा नम्बर सौदागर से सौदे के मुआफिक मूल्य को बार-बार जानने के बाद मरजीवे बने, चौथा नम्बर जरा सा प्राप्ति के, स्नेह के, सम्पर्क के, परिवर्तन के आधार पर अभी संशय अभी निश्चय। तो बाप-दादा आज हर बच्चे की इन बातों को देखते हुए रुह-रुहान कर रहे थे। इस मरजीवे जीवन का सदा निर्विघ्न वा सदा तीव्र पुरुषार्थी, सदा प्राप्ति द्वारा अनुभवी मूर्त्त वा पुरुषार्थी जीवन वा चढ़ती कला वा उतरती कला, इसी रफ्तार में चलने वाली जीवन - इन तीनों प्रकार की जीवन का आधार रूप, रेखा और वेला पर है।

जो हर कल्प की अति समीप आत्मायें वा पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मायें हैं उनकी रूप, रेखा और वेला क्या होती है, वह जानते हो? ऐसी आत्मायें सेकेण्ड में पहुँची और बाप की बनी। कल्प पहले के भाग्य की टचिंग के आधार पर जन्मते ही ऐसे अनुभव करेंगे 'ब्राह्मण बनना है, नहीं लेकिन ब्राह्मण थे, पहले भी थे और अब भी हैं', सेकेण्ड में अपना-पन अनुभव होगा। देखा और जाना। ऐसी वेला वाले की रूप-रेखा क्या होती है? पहले नम्बर की वेला जो अभी सुनाई उनका रूप क्या होगा? जन्मते ही सिर्फ एक रूप - शक्ति वा शान्ति वा सुख का नहीं, लेकिन जैसे जन्मते ही सर्व प्रापर्टी के अधिकारी होते हैं, ऐसे हर स्वरूप के अनुभूति का अधिकार अनुभव करेंगे। जैसे बीज में सारे वृक्ष का सार समाया हुआ है ऐसे नम्बर वन अर्थात् बाप समान समीप आत्मायें वा नम्बर वन वेला वाली आत्मायें सर्व स्वरूप की प्राप्ति के खज़ाने के आते ही अनुभवी होंगे। ऐसे अनुभव करते हैं कि यही स्वरूप निजी स्वरूप है। सुख का अनुभव होता, शान्ति का नहीं वा शान्ति का होता सुख का नहीं शक्ति का नहीं, यह फर्स्ट नम्बर की वेला का अनुभव नहीं। सेकेण्ड में वर्से के अधिकारी यह है वेला और स्वरूप।

अब रेखा क्या होगी? निश्चय बुद्धि बनना वा निश्चय करना है, यह संकल्प मात्र भी नहीं होगा। जन्मते ही नेचुरल निश्चय बुद्धि की रेखा होगी कैसे वा ऐसे के विस्तार में नहीं जायेंगे, हैं ही इसमें ऐसे और वैसे का प्रश्न नहीं उठता। ऐसे पूरे जीवन के अटूट निश्चय की रेखा अन्य आत्माओं को भी स्पष्ट दिखाई देगी। निश्चय की रेखा की लाइन अखण्ड होगी, बीच-बीच में खण्डित नहीं होगी। ऐसी रेखा वाले के मस्तक में अर्थात् स्मृति में सदा विजय का तिलक नज़र आयेगा। ऐसी रेखा वाले, जैसे ब्राह्मणों का भविष्य श्रीकृष्ण रूप में जन्म से ही ताजधारी दिखाया है, ऐसे जन्मते ही सेवा की जिम्मेवारी के ताजधारी होंगे, सदा ज्ञान रतनों से खेलने वाले होंगे। सदा याद और खुशी के झूले में झूलते हुए जीवन बिताने वाले होंगे। सदा हर कर्म में वरदान का हाथ अपने ऊपर अनुभव करेंगे। हर दिनचर्या में अपने साथ सर्व सम्बन्धों से समीप और साकार रूप में साथ का अनुभव करेंगे। स्वत: योगी और सहज योगी होंगे। यह है नम्बर वन रूप, रेखा और बेला वालों की निशानी। अब अपने आपको चैक करो - पहले नम्बर की रूप, रेखा और वेला वाले कितने होंगे? 8 वा 108? आप सब कहाँ हो? अभी भी चेन्ज कर सकते हो। लास्ट सो फास्ट जा सकता है। अभी भी परिवर्तन की मार्जिन है। अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। गुप्त पुरुषार्थी दिन रात एक दृढ़ संकल्प के पुरुषार्थी हाई जम्प लगा सकते हैं। इसलिए फिर भी अपने भाग्य को नम्बरवन बनाने के पुरुषार्थ की लाटरी डालो तो नम्बर निकल आयेगा। समझा क्या करना है। लास्ट चान्स है इसलिए बीती सो बीती करो, भविष्य को श्रेष्ठ बनाओ। इसलिए बाप-दादा फिर भी सबको चान्स दे रहे हैं, फिर उल्हना नहीं देना - हम कर सकते थे लेकिन किया नहीं। समय नहीं मिला, सरकमस्टानसिज़ नहीं थे, अभी भी रहमदिल बाप के रहम का हाथ सबके ऊपर है इसलिए अपने ऊपर भी रहमदिल बनो। अच्छा।

(21.12.1978)

अंगद समान स्थिति बनाने के लिए निश्चय का फाउन्डेशन मज़बूत करो

सभी अंगद के समान अचल हो? माया के किसी भी प्रकार की हलचल में भी अचल। माया का कोई भी वार स्थिति को हिला न सके। हिलने का कारण क्या होता है? निश्चय का फाउन्डेशन मज़बूत न होने के कारण ही हिलते हैं। अगर निश्चय हो कि कल्याणकारी समय है, हर बात में कल्याण है, तो कितने भी तुफान क्यों न आयें लेकिन हिला नहीं सकते। अब निश्चय के फाउन्डेशन को तीव्र पुरुषार्थ का पानी देकर मज़बूत करो तो सदा अंगद के समान रहेंगे। माया के वार को वार नहीं समझेंगे। अभी हिलने का समय गया, यदि अभी भी हिलते रहे तो लास्ट पेपर में भी हिल जायेंगे तो फिर जन्म-जन्म के लिए फेल हो

जायेंगे। इसलिए स्मृति के संस्करण मज़बूत करो। सदा याद रखो कि यह अंगद का यादगार हमारा ही यादगार है तो शक्ति आयेगी।

(21.12.1978)

अमृतवेले निश्चय के स्मृति की स्वीच यथार्थ रीति से सेट करो

कोने-कोने में बाप के छिपे हुए बच्चों ने बाप को पहचान निश्चय से बहुत अच्छा जम्प लगाया है। भिन्न–भिन्न धर्म के पर्दे के अन्दर होते हुए भी सेकेण्ड में पर्दे को हटाए बाप के साथ सहयोगी आत्माएं बन गए, लगन में आए हुए विघ्नों को भी सहज ही पार कर रहे हैं। इसलिए बाप-दादा विशेष शाबास देते हैं। ऐसे हिम्मत रखने वाले बच्चों के साथ बाप-दादा का सदा सहयोग है – हर बच्चे के साथ-साथ हर कर्म में बाप का साथ हैं – सभी बच्चों को बाप-दादा द्वारा बुद्धि रूपी लिफ्ट की गिफ्ट मिली हुई है। गिफ्ट तो सबको मिली हुई है लेकिन उसको कार्य में लाना हरेक के ऊपर है। बहुत पावरफुल और बहुत सहज लिफ्ट की गिफ्ट है। सेकेण्ड में जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। यह वन्डरफुल लिफ्ट तीनों लोकों तक जाने वाली है। जैसे ही स्मृति का स्वीच आन किया तो एक सेकेण्ड में वहाँ पहुँच जावेंगे। लिफ्ट द्वारा जितना समय जिस लोक का अनुभव करना चाहो उतना समय वहाँ स्थित रह सकते हो – इस लिफ्ट को विशेष यूज करने की विधि है अमृतबेले केयरफुल बन स्मृति के स्वीच को यथार्थ रीति से सेट करो तो सारा दिन आटोमेटिकली चलती रहेगी। सेट करना तो आता हे ना। अच्छी तरह से अभ्यासी हो ना।

(08.01.1979)

जैसे बाप को निश्चय है कि फल निकलना ही है वैसे स्वयं भी निश्चयबुद्धि रहो

जनरल प्रोग्राम के साथ-साथ विशेष आत्माओं की सेवा करो – उसके लिए मेहनत जरूर लगेगी लेकिन सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है, यह नहीं सोचो बहुत किया है फल नहीं दिखाई देता। फल तैयार हो रहे हैं। कोई भी कर्म का फल निष्फल हो ही नहीं सकता, क्योंकि बाप की याद में करते हो ना। याद में किये हुए का फल सदा श्रेष्ठ रहता है। इसलिए कभी भी दिलशिकस्त नहीं बनना। जैसे बाप को निश्चय है कि फल निकलना ही है वैसे स्वयं भी निश्चयबुद्धि रहो। कोई फल जल्दी निकलना कोई थोड़ा देरी से इसलिए इसका भी सोचो नहीं – करते चलो, अभी जल्दी ही ऐसा समय आयेगा जो स्वत: आपके पास इनक्वायरी करने आयेंगे कि यह सन्देश वा सूचना कहाँ से मिली थी। थोड़ा सा विनाश का ठका होने दो सिर्फ – तो फिर देखो कितनी लम्बी क्यू लग जाती है फिर आप लोग कहेंगे हमको समय नहीं है, अभी वह लोग कहते हैं हमें टाइम नहीं, फिर आप कहेंगे टू लेट।

(14.01.1979)

अंगद के समान अचल अर्थात् सदा निश्चय बुद्धि विजयन्ती

सदा कल्प पहले माफिक अपने को अंगद के समान अचल समझते हो? अंगद के समान अचल अर्थात् सदा निश्चय बुद्धि विजयन्ती। जरा भी हलचल में आये तो विजयी बन नहीं सकेंगे। माया के विघ्न यह तो ड्रामा में महावीर बनाने के लिए पेपर के रूप में आते हैं। बिना पेपर के कभी क्लास चेन्ज नहीं होता। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। तो पेपर आने से खुश होना चाहिए न कि हलचल में आना है। माया से भी लेसन सीखो, वह कभी भी हलचल में नहीं आती - अटल रहती, यही लेसन माया से सीख मायाजीत बन जाओ।

(18.01.1979)

निश्चयबुद्धि की नाव कितना भी कोई हिलावे लेकिन कभी भी कोई बात का असर नहीं हो सकता

अनेक मतों का विनाश प्रारम्भ करो तो विजय का झण्डा लहरा जाए :- अनेक मत वाले सिर्फ एक बात को मान जाएं कि

हम सबका बाप एक है और वही अब कार्य कर रहे हैं, कम से कम यह आवाज सब तरफ पहुँचे कि हम सब एक की सन्तान एक हैं और एक ही यथार्थ है। चाहे धारण करे न करे लेकिन मान लें, चलना तो पीछे की बात है। जैसे कई आत्मायें सम्पर्क में आती तो समझती हैं यह अच्छा काम कर रहे हैं, इतना सब मान लें तो विजय का झण्डा लहरा जायेगा। इसी संकल्प से मुक्तिधाम में चली जायें तो भी ठीक है। इसी संकल्प से मुक्तिधाम जायेंगे तो जब अपना-अपना पार्ट बजाने आयेंगे तो पहले यही संस्कार होंगे कि गाड इज वन। यह गोल्डन एज की स्मृति है। अनेकों में फँसना यह आइरन एज है। अथार्टी से और सत्यता से बोलो, संकोच से नहीं। सत्यता प्रत्यक्षता का आधार है। प्रत्यक्षता करने के लिए पहले स्वयं को प्रत्यक्ष करो, निर्भय बनो।

एक बल एक भरोसे पर अचल और अटल रहने वाले - यह अनुभव अनेकों को निश्चयबुद्धि बनाने वाला होता। निश्चयबुद्धि की नाव कितना भी कोई हिलावे लेकिन कभी भी कोई बात का असर नहीं हो सकता।

(23.01.1979)

नालेज का रिगार्ड - अर्थात् बाप के हर महावाक्य में अटल निश्चय हो

नालेज का रिगार्ड - अर्थात् आदि से अभी तक जो भी महावाक्य उच्चारण हुए उन हर महावाक्य में अटल निश्चय हो - कैसे होगा, कब होगा, होना तो चाहिए, है तो सत्य...इस प्रकार के क्वेश्चन उठाना भी अर्थात् सूक्ष्म संकल्प के रूप में संशय उठाना है। यह भी नालेज का डिसरिगार्ड है।

(25.01.1979)

पेपर निश्चय का फाउण्डेशन मजबूत करने का साधन है

सदा अचल-अडोल रहते हो? कल्प पहले भी रावण सेना ने हिलाने की कोशिश की लेकिन अंगद अचल रहे। परिस्थितियाँ आयेंगी और चली जायेंगी, स्वस्थिति सदा आगे बढ़ायेगी। परिस्थिति के पीछे भागने से स्वस्थिति चली जायेगी। कोई भी परिस्थिति आये तो आप हाई जम्प दो, इससे पार हो जायेंगे। परिस्थिति आना भी गुड-लक है। यह पेपर फाउन्डेशन को मज़बूत करने का साधन है। यह निश्चय को हिलाकर देखने के लिए आते है। एक बारी अंगद समान मज़बूत हो जायेंगे तो यह नमस्कार करेंगे। पहले विकराल रूप से आयेंगे और फिर दासी रूप से आयेंगे। चैलेन्ज करो हम महावीर हैं। पानी के ऊपर लकीर ठहरती है क्या? आप मास्टर ज्ञान सागर के उपर कोई परिस्थिति वार कर नहीं सकती। लकीर डाल नहीं सकती।

(26.11.1979)

महारथी, घोडेसवार और प्यादे - तीनों के निश्चय में अंतर

आज बाप-दादा अपनी रूहानी सेना को देख रहे थे। सेना में सब प्रकार की नम्बरवार स्थिति अनुसार महारथी, घोड़े-सवार और प्यादे देखे। महारथियों के मस्तक में अर्थात स्मृति में सदा विजय का झण्डा लहरा रहा था। घोड़ेसवार अर्थात सेकेण्ड नम्बर - उनके मस्तक अर्थात स्मृति में विजय का झण्डा तो था ही लेकिन सदा नहीं लहरा रहा था। कभी खुशी की झलक से व निश्चय की फलक से झण्डा लहराता था और कभी झलक और फलक की वायु कम होने के कारण झण्डा लहराने की बजाए एक ही जगह खड़ा हो जाता था। तीसरे, प्यादे बहुत प्रयत्न से निश्चय की रस्सी से, खुशी की झलक से झण्डे को लहराने के प्रयत्न में खूब लगे हुए थे। लेकिन कहीं-कहीं कमज़ोरी की गाँठ होने के कारण अटक जाता था, लहराता नहीं था। फिर भी खूब पुरूषार्थ में लगे हुए थे। किसी-किसी का पुरूषार्थ के बाद लहराता भी था लेकिन कुछ समय के बाद, कुछ मेहनत के बाद। इसलिए वह झलक और फलक नहीं थी। बाप-दादा बच्चों की मेहनत देख दूर से सकाश भी दे रहे थे अर्थात इशारा दे रहे थे कि ऐसे करो। कोई-कोई बच्चे इशारे को देख सफल भी हो रहे थे लेकिन कोई-कोई इतना मेहनत में बिज़ी थे जो इशारे को कैच करने की फुर्सत ही नहीं थी। ऐसी सेना में तीनों प्रकार के योद्धा देखे। जब मेहनत से या सहज ही सबका झण्डा अच्छी तरह से लहराने लगा तो झण्डे के लहराने से ही विजय के पुष्पों की अर्थात् बाप और बच्चों के प्रत्यक्षता के पुष्पों की वर्षा-

समान रौनक हो गई। बच्चे जो मेहनत कर रहे हैं उनको बाप-दादा सहज साधन सुनाते हैं।

(05.12.1979)

निश्चय बुद्धि के मन की खुशी की आवाज़ - पाना था जो पा लिया

सदा सर्व खजानों से सम्पन्न अर्थात् अपने को मालामाल समझते हो? जैसे बाप सदा सम्पन्न है, ऐसे बाप-समान खज़ानों से सम्पन्न हो? कोई खज़ाने की कमी नहीं। ऐसे मन से खुशी का आवाज़ निकलता है कि पाना था वो पा लिया? मुख का आवाज़ निरन्तर का नहीं हो सकता, लेकिन मन का आवाज़ निरन्तर अविनाशी है। तो यह मन से आवज़ा निकलता है कि पा लिया है? अन्दर से आता है या अभी समझते हो कि पायेंगे, पा तो रहे हैं। अटल निश्चयबुद्धि बच्चे बन गये हो? बच्चा बनना अर्थात अधिकारी बनना। कभी भी अपने में भी संशय न हो। सम्पूर्ण बनेंगे या नहीं? सूर्यवंशी बनेंगे या चन्द्रवंशी? सदा निश्चयबुद्धि! जैसे बाप में निश्चय है वैसे स्वयं में भी निश्चय। स्वयं में अगर कमज़ोरी का संकल्प उत्पन्न होता है तो कमज़ोरी के संस्कार बन जायेंगे। जैसे कोई एक बार भी शरीर से कमज़ोर हो जाता है, थोड़े समय में तन्दुरूस्त नहीं बन सका तो कमज़ोरी के जर्म्स पक्के हो जाते हैं। ऐसे व्यर्थ संकल्प रूपी कमज़ोरी के जर्म्स अपने अन्दर प्रवेश नहीं होने देना। नहीं तो उनको खत्म करना मुश्किल हो जायेगा।

जो भी ड्रामा की सीन देखते हो, चाहे वह हलचल की सीन हो या अचल की, लेकिन दोनों में निश्चय। हलचल की सीन में भी कल्याण का अनुभव हो। ऐसा निश्चयबुद्धि। वातावरण हिलाने वाला हो, समस्या विक्राल हो लेकिन सदा निश्चयबुद्धि। इसको कहते हैं - विजयी। तो निश्चय के आधार से विक्राल समस्या भी शीतल हो जायेगी।

(05.12.1979)

निश्चय बुद्धि बने और बाप की मदद से असम्भव सम्भव हो गया

दृढ़ निश्चय का फल मिला है ना। निश्चय बुद्धि बने और बाप की मदद से असम्भव सम्भव हो गया। छोटी-सी झोपड़ी से महल मिल गया। (बाप-दादा, आपने महल (सेन्टर) देखा हैं) बाप-दादा तो अपना काम नहीं छोड़ते हैं। बाप सदा बच्चों की सम्भाल करते हैं। लौकिक में भी देखो माँ बच्चे के आसपास चक्र ज़रूर लगायेगी, क्योंकि स्नेह है। तो बाप-दादा व माता-पिता बच्चों के यहाँ चक्र कैसे नहीं लगायेंगे। इसलिए रोज़ चक्र लगाते हैं। बाप-दादा दोनों साकार शरीर से अशरीरी हैं। वह अव्यक्त शरीरधारी, वह निराकार। दोनों को नींद की आवश्यकता नहीं हैं, इसलिए जहाँ भी चाहें वहाँ पहुँच सकते हैं।

(15.12.1979)

मन्सा सेवा का सहज साधन अटूट निश्चय

जो भी सदा निश्चय बुद्धि होकर विजयी रहते हैं, उन निश्चय बुद्धियों द्वारा वायुमण्डल शुद्ध होता जाता है। वह मन्सा सेवा करते हैं क्योंकि चारों ओर के व्यक्ति निश्चय बुद्धि आत्माओं को देख समझते हैं कि इनको कुछ मिला है। चाहे कितना भी घमण्डी हों, ज्ञान को न भी सुनते हों लेकिन अन्दर में यह समझते जरूर हैं कि इनका जीवन कुछ बना है। तो जो शुरू से अटल निश्चय बुद्धि रहे हैं। उनकी यह सेवा चलती रहती है। यह भी मन्सा सेवा है।

(17.12.1979)

वात वदल जाए लेकिन आप न वदलो - यह है निश्चय

जो कुछ भी ड्रामा में होता है उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है। क्यों, क्या का क्वेशचन समझदार के अन्दर उठ नहीं सकता। अगर स्मृति रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी। चाहे

बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो। जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता। अभी पेपर बहुत आयेंगे, उसमें क्या, क्यों का क्वेशचन न उठे। कुछ भी होता है होने दो। बाप हमारा, हम बाप के तो कोई कुछ नहीं सकता, इसको कहा जाता है 'निश्चय बुद्धि'। बात बदल जाए लेकिन आप न बदलो - यह है निश्चय। कभी भी माया से परेशान तो नहीं होते हो? कभी वातावरण से, कभी घर वालों से, कभी ब्राह्मणों से परेशान होते हो? अगर अपने शान से परे होते तो परेशान होते हो। 'शान की सीट पर रहो'। साक्षीपन की सीट शान की सीट है इससे परे न हो तो परेशानी खत्म हो जायेगी। प्रतिज्ञा करो कि 'कभी भी कोई बात में न परेशान होंगे, न करेंगे'। जब नालेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये, तो परेशान कैसे हो सकते? संकल्प में भी परेशानी न हो। 'क्यों' शब्द को समाप्त करो। 'क्यों' शब्द के पीछे बड़ी क्यू है।

(07.03.1981)

आज पुरुषार्थी हैं कल फ़रिश्ता - ऐसा पक्का निश्चय हो

आज बाप-दादा सर्व शुभ चिन्तक संगठन को देख रहे हैं। शुभ चिन्तक अर्थात् सदा शुभ चिन्तन में रहने वाले, स्व-चिन्तन में रहने वाले - ऐसे स्व चिन्तक वा शुभ चिन्तक, सदा बाप द्वारा मिली हुई सर्व प्राप्तियाँ, सर्व खजाने वा शक्तियाँ, इन प्राप्तियों के नशे में, साथ-साथ सम्पूर्ण फ़रिश्ते वा सम्पूर्ण देवता बनने के निशाने के स्मृति स्वरूप रहते है? जितना नशा उतना निशाना स्पष्ट होगा। समीप होने कारण ही स्पष्ट होता है। जैसे अपने पुरुषार्थ का रूप स्पष्ट है वैसे सम्पूर्ण फ़रिश्ता रूप भी इतना ही स्पष्ट अनुभव होगा। बनूंगा या नहीं बनूंगा यह संकल्प भी उत्पन्न नहीं होगा। अगर ऐसा कोई संकल्प आता है कि बनना तो चाहिए, वा जरूर बनेंगे ही। इससे सिद्ध होता है अपना फ़रिश्ता स्वरूप इतना समीप वा स्पष्ट नहीं। जैसे अपना ब्रह्माकुमार ब्रहमाकुमारी का स्वरूप स्पष्ट है और निश्चयबुद्धि होकर कहेंगे कि हाँ हम ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, ऐसे नहीं कहेंगे कि हम भी ब्रह्माकुमार कुमारी होने तो चाहिए। हूँ तो मैं ही। यह 'तो' शब्द नहीं निकलेगा। कहेंगे हाँ हम ही हैं। क्वेशचन नहीं उठेगा कि मैं हूँ या नहीं हूँ। कोई कितना भी क्रास एग्जामिन करे कि आप ब्रह्माकुमार कुमारी नही हो, भारत के ही ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, बड़े-बड़े महारथी ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, आप तो विदेशी क्रिश्चियन हो, ब्रह्मा तो भारत का है, आप कैसे ब्रह्मा कुमार कुमारी बनेंगे! गलती से क्रिश्चियन कुमार-कुमारी के बदले ब्रह्माकुमार कुमारी कहते हो। ऐसा कोई कहे तो मानेंगे? नहीं मानेंगे ना। निश्चय बुद्धि हो उत्तर देंगे कि ब्रह्माकुमार-कुमारी हम अभी के नहीं हैं लेकिन अनेक कल्पों के हैं। ऐसा निश्चय से बोलेंगे ना। वा कोई पूछेगा तो सोच में पड़े जायेंगे? क्या करेंगे? सोचेंगे वा निश्चय से कहेंगे कि हम ही हैं जैसे यह ब्रह्माकुमार-कुमारी का पक्का निश्चय है, स्पष्ट है, अनुभव है, ऐसे ही सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्टेज भी इतनी क्लियर और अनुभव में आती है? आज पुरुषार्थी हैं कल फ़रिश्ता। ऐसा पक्का निश्चय हो जो कोई भी इस निश्चय से टाल न सके। ऐसे निश्चयबुद्धि हो? फरिश्ते स्वरूप की तस्वीर स्पष्ट सामने है! फ़रिश्ते स्वरूप की स्मृति, वृत्ति, दृष्टि, कृति वा फ़रिश्ते स्वरूप की सेवा क्या होती है उसकी अनुभूति है? क्योंकि ब्रह्माकुमार वा कुमारी स्वरूप की सेवा का रूप तो हरेक यथा शक्ति अनुभव कर रहे हैं। इस सेवा का परिणाम आदि से अब तक देख लिया। इस रूप की सेवा की भी आवश्यकता थी जो हुई और हो भी रही है, होती भी रहेगी।

(13.03.1981)

'बाबा मेरा मैं बाबा का', इसी आधार से निश्चय का फाउन्डेशन को और ही पक्का करो

माया कनेक्शन को ही ढ़ीला करती है उसकी सिर्फ सम्भाल करो। यह समझ लो कि कनेक्शन कहाँ लूज हुआ है। तब निर्बलता आई है। क्यों हुआ, क्या हुआ यह नहीं सोचो। कयों क्या के बजाए कनेक्शन को ही ठीक कर दो तो खत्म। सहयोग के लिए समय भल लो। योग का वायुमण्डल वायब्रेशन बनाने के लिए सहयोग भल लो, बाकी और व्यर्थ बातें करना वा विस्तार में जाना इसके लिए कोई का साथ न लो। वह हो जायेगा शुभचिन्तक। और वह हो जायेगा परचिन्तन। सब समस्याओं का मूल कारण कनेक्शन लूज होना है। है ही यह एक बात। मेरा पार्ट ड्रामा में नहीं है, मेरे को सहयोग नहीं मिला, मेरे को स्थान नहीं मिला। यह सब फालतू बातें हैं। सब मिल जावेगा सिर्फ कनेक्शन को ठीक करो तो सर्व शक्तियाँ आपके आगे घूमेंगी। कहाँ

जाने की फुर्सत ही नहीं होगी। बापदादा के सामने जाकर बैठ जाओ तो कनेक्शन जोड़ने के लिए बापदादा आपके सहयोगी बन जायेंगे। अगर एक दो सेकेण्ड अनुभव न भी हो तो कनफ्यूज न हो जाओ। थोड़ा सा जो टूटा हुआ कनेक्शन है उसको जोड़ने में एक सेकेण्ड वा मिनट लग भी जाता है तो हिम्मत नहीं हारो। निश्चय के फाउन्डेशन को हिलाओ नहीं। और ही निश्चय को परिपक्व करो। 'बाबा मेरा मैं बाबा का', इसी आधार से निश्चय की फाउन्डेशन को और ही पक्का करो। बाप को भी अपने निश्चय के बन्धन में बाँध सकते हो। बाप भी जा नहीं सकते। इतनी अथार्टी इस समय बच्चों को मिली हुई है। अथार्टी को, नालेज को यूज करो। परिवार के सहयोग को यूज करो। कम्पलेन्ट लेकर नहीं जाओ सहयोग की भी माँग नहीं करो। प्रोग्राम सेट करो, कमजोर होकर नहीं जाओ, क्या करूँ, कैसे करूँ, घबरा के नहीं जाओ। लेकिन सम्बन्ध के आधार से सहयोग के आधार से जाओ। समझा सेकेण्ड में सीढ़ी नीचे, सेकेण्ड में ऊपर यह संस्कार चेन्ज करो। बापदादा ने देखा है डबल विदेशी नीचे भी जल्दी उतरते, ऊपर भी जल्दी जाते। नाचते भी बहुत हैं लेकिन घबराने की डान्स भी अच्छी करते हैं। अभी यह भी परिवर्तन करो। मास्टर नालेजफुल हो फिर यह डान्स क्यों करते हो।

(29.03.1981)

निश्चय रहे - जो कुछ होता है-उसमें कल्याण भरा हुआ है

सभी निश्चयबुद्धि विजयन्ती हो ना! निश्चय में कभी डगमग तो नहीं होते हो? अचल, अडोल, महावीर हो ना? महावीर की विशेषता क्या है? सदा अचल अडोल, संकल्प वा स्वप्न में भी व्यर्थ संकल्प न आए इसको कहा जाता है अचल, अडोल महावीर। तो ऐसे हो ना? जो कुछ होता है-उसमें कल्याण भरा हुआ है। जिसको अभी नहीं जानते लेकिन आगे चल करके जानते जायेंगे। कोई भी बात एक काल की दृष्टि से नहीं देखो, त्रिकालदर्शी हो करके देखो। अब यह क्यों? अब यह क्या? ऐसे नहीं, त्रिकालदर्शी होकर देखने से सदा यही संकल्प रहेगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण है। ऐसे ही त्रिकालदर्शी होकर चलते हो ना? सेवा के आधारमूर्त जितने मज़बूत होंगे उतनी सेवा की बिल्डिग भी मज़बूत होगी। जो बाबा बोले वह करते चलो, फिर बाबा जाने बाबा का काम जाने। जैसे बाबा वैसे चलो तो उसमें कल्याण भरा हुआ है। बाबा कहे ऐसे चलो, ऐसे रहो-जी हाज़िर, ऐसे क्यों? नहीं। जी हाज़िर। समझा-जी हजूर वा जी हाज़िर। तो सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे। रूकेंगे नहीं, उड़ते रहेंगे क्योंकि हल्के हो जायेंगे ना।

(12.10.1981)

निश्चयबुद्धि बन स्वयं का नम्बर सेट करो

अपने नम्बर को स्वयं ही जानते हो वा यह कहेंगे कि बापदादा सुनावें? बापदादा तो जानते ही हैं, लेकिन अपने आप को जानते जरुर हो। बाहर से वर्णन करो न करो लेकिन अन्दर तो जानते हो ना? हाँ कहेंगे, वा न कहेंगे? अभी अगर बापदादा माला निकलवायें तो क्या अपना नम्बर नहीं दे सकते? संकोच वश न सुनाओ वह दूसरी बात है। अगर नहीं जानते तो क्या कहेंगे? औरों को चैलेन्ज करते हो, निश्चय और फखुर से कहते हो कि हम अपने 84 जन्मों की जीवन कहानी जानते हैं, यह कहते हो ना सभी? तो 84 जन्म में यह वर्तमान का जन्म तो सबसे श्रेष्ठ है ना! इसको नहीं जान सकते हो? मैं कौन? इस पहेली को अच्छी तरह से जाना है ना? तो यह भी क्या हुआ? मैं कौन की पहेली। जानने का हिसाब बहुत सहज है। एक है-याद की माला-जो जितना स्नेह और जितना समय आप बाप को याद करते उतना और उसी स्नेह से बाप भी याद करते हैं।

(16.11.1981)

'संशय का रायल रुप'

कई बच्चों को अभी सम्पूर्णता स्पष्ट और समीप नहीं अनुभव होती, उनकी निशानी क्या होगी? जो स्पष्ट चीज होती है और समीप चीज होती है उसको अनुभव करना सहज होता है। और दूर की चीज को अनुभव करना, उसमें विशेष बुद्धि लगानी पड़ती है। ऐसे ही जैसी आत्माएं भी नालेज के आधार से बुद्धियोग द्वारा सम्पूर्ण स्टेज को खींचकर मेहनत से उसमें स्थित रह

सकती हैं।

ऐसी आत्माओं को स्पष्ट और समीप ने होने के कारण कभी कभी यह भी संकल्प उत्पन्न होता है कि बनना तो चाहिए लेकिन बन सकूंगी? स्वयं के प्रति ज़रा सा व्यर्थ संकल्प के रुप में शक पैदा होगा-जिसको कहा जाता है 'संशय का रायल रुप'। शक जरा सा लहर के माफिक भी आया तो गया। लेकिन निश्चय बुद्धि विजयन्ति। उसमें यह स्वप्न मात्र संकल्प, लहर मात्र संकल्प भी फाइनल नम्बर में दूर कर देता है। उसका विशेष संस्कार वा स्वभाव अभी अभी बहुत उमंग उत्साह में उड़ने वाले और अभी अभी स्वयं से दिलशिकस्त। बार-बार जीवन में यह सीढ़ी उतरते और चढ़ते रहेंगे। दिलखुश और दिलशिकस्त की सीढ़ी-कारण? अपनी सम्पूर्ण स्टेज स्पष्ट और समीप नहीं। तो अभी क्या करना है? अभी सम्पूर्ण स्टेज को समीप लाओ।

(18.11.1981)

समीप आत्माओं की निशानी-सदा बाप के समान

सदा अपने को बाप के समीप आत्मा समझते हो? समीप आत्माओं की निशानी क्या होती है? सदा बाप के समान। जो बाप के गुण वह बच्चों के गुण। जो बाप का कर्तव्य वह सदा बच्चों का कर्तव्य। हर संकल्प और कर्म में बाप समान, इसको कहते हैं समीप आत्मा। जो समीप स्थिति वाले हैं वे सदा विघ्न विनाशक होंगे। किसी भी प्रकार के विघ्न के वशीभूत नहीं होंगे। अगर विघ्न के वशीभूत हो गये तो विघ्न-विनाशक नहीं कह सकते। किसी भी प्रकार के विघ्न को पार करने वाला इसको कहा जाता है विघ्न विनाशक। तो कभी किसी भी प्रकार के विघ्न को देखकर घबराते तो नहीं हो? क्या और कैसे का क्वेश्चन तो नहीं उठता है? अनेक बार के विजयी हैं...यह स्मृति रहे तो विघ्न विनाशक हो जायेंगे। अनेक बार की हुई बात रिपीट कर रहे हो, ऐसे सहजयोगी। इस निश्चय में रहने वाली विघ्न विनाशक आत्मां स्वत: और सहजयोगी होंगी।

(21.11.1981)

सहज योग में क्वेश्चन नहीं होता हैं

इस वरदान को सदा कायम रखने की विधि जानते हो? सबसे सहज विधि कौन-सी है? जानते हो ना? सदा सर्व के और सेवा में सहयोगी बनो। तो सहयोगी ही सहज योगी हैं। कई ब्राह्मण आत्मायें सहज योग का अनुभव सदा नहीं कर पाती। योग कैसे लगायें? कहाँ लगायें? इसी क्वेश्चन में अब तक भी हैं। सहज योग में क्वेश्चन नहीं होता हैं। साथ-साथ वरदान है, वरदान में मेहनत नहीं होती है। और सहज, सदा स्वत: ही रहता है अर्थात् सहज योगी वरदानी आत्मा स्वत: निरन्तर योगी होती है। नहीं रहते इनका कारण? प्राप्त हुए वरदान को वा ब्राह्मण जन्म के इस अलौकिक गिफ्ट को सम्भालना नहीं आता। स्मृति द्वारा समर्थी रखने में अलबेले बन जाते हो। नहीं तो ब्राह्मण और सहज योगी न हों तो ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही क्या रही। वरदानी होते भी सहज योगी नहीं तो और कब बनेंगे? यह नशा और निश्चय सदा याद रखो-यह हमारा जन्म का वरदान है। इसी वरदान को सर्व आत्माओं के प्रति सेवा में लगाओ। सेवा में सहयोगी बनना ये ही विधी है सहजयोगी की।

(26.11.1981)

प्रश्न:- कई निश्चयबुद्धि वच्चे 4-5 साल चलने के वाद चले गये, यह लहर क्यों? इस लहर को कैसे समाप्त करें?

उत्तर:- जाने का विशेष कारण - सेवा में बहुत बिजी रहते है लेकिन सेवा और स्व का बैलेन्स खो देते हैं। तो जो अच्छे-अच्छे बच्चे रुक जाते हैं उन्हों का एक तो यह कारण होता और दूसरा उन्हों का कोई विशेष संस्कार ऐसा होता है जो शुरू से ही उसमें कमज़ोर होते हैं लेकिन उसे छिपाते हैं, युद्ध करते रहते हैं अपने आप से। बापदादा को वा निमित्त बनी हुई आत्माओं को अपनी कमज़ोरी स्पष्ट सुनाकर उसे खत्म नहीं करते। छिपाने के कारण वह बीमारी अन्दर ही अन्दर विकराल रूप लेती जाती है और आगे बढ़ने का अनुभव नहीं होता, फिर दिलशिकस्त हो छोड़ देते हैं। तीसरा कारण यह भी होता - कि आपस में संस्कार नहीं मिलते हैं। संस्कारों का टक्कर हो जाता है।

अब इस लहर को समाप्त करने के लिए एक तो सेवा के साथ-साथ स्व का फुल अटेन्शन चाहिए। दूसरा जो भी आते हैं

उन्हों को बापदादा वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे बिल्कुल क्लीयर होना चाहिए। अगर सर्विस में थोड़ा भी अनुभव करो 'टू मच' है तो अपनी उन्नति का साधन पहले सोचना चाहिए और निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी अपनी राय दे देनी चाहिए। जो नये आते हैं उन्हों को पहले इन बातों का अटेन्शन दिलाना चाहिए। अपने संस्कारों की चेकिंग पहले से ही करनी चाहिए। अगर किसी से अपना संस्कार टक्कर खाता है तो उससे किनारा कर लेना अच्छा है। जिस सरकमस्टांस में संस्कारों का टक्कर होता है, उनमें अलग हो जाना ही अच्छा है।

(14.03.1982)

निश्चय और नशा रखो - कौन कहता है -श्रेष्ठ आत्मायें

आप संगमयुगी पाण्डव सेना के पाण्डव और शक्तियों की महिमा सारा कल्प ही कायम रहती है क्योंकि अविनाशी बाप के मुख द्वारा जो महिमा गाई जाती वह अविनाशी बन जाती है। तो कितना नशा रहना चाहिए! जैसे आजकल की दुनिया में कोई नामीग्रामी श्रेष्ठ आत्मा गुरु के रूप में मानते हैं जैसे जिनको लौकिक गुरु भी अगर कोई बात किसको कह देते हैं तो समझते हैं गुरु ने कहा है तो वह सत्य ही होगा। और उसी फलक में रहते हैं। निश्चय के आधार पर नशा रहता है। ऐसे ही सोचो आपकी महिमा कौन करता है? कौन कहता है - श्रेष्ठ आत्मायें! तो आप लोगों को कितना नशा होना चाहिए!

(17.03.1982)

जैसे भक्तों को वा आत्मज्ञानियों का व कोई-कोई परमात्म-ज्ञानियों को दिव्य दृष्टि द्वारा ज्योति बिन्दु आत्मा का साक्षात्कार होता है, तो साक्षात्कार अल्पकाल की चीज़ है, साक्षात्कार कोई अपने अभ्यास का फल नहीं है। यह तो ड्रामा में पार्ट वा वरदान है। लेकिन एवररेडी अर्थात् साथ चलने के लिए समान बनी हुई आत्मा साक्षात्कार द्वारा आत्मा को नहीं देखेंगी लेकिन बुद्धियोग द्वारा सदा स्वयं को साक्षात् 'ज्योति बिन्दु आत्मा' अनुभव करेगी। साक्षात् स्वरूप बनना सदाकाल है और साक्षात्कार अल्पकाल का है। साक्षात स्वरूप आत्मा कभी भी यह नहीं कह सकती कि मैंने आत्मा का साक्षात्कार नहीं किया है। मैंने देखा नहीं है। लेकिन वह अनुभव द्वारा साक्षात् रूप की स्थिति में स्थित रहेंगी। जहाँ साक्षात स्वरूप होगा वहाँ साक्षात्कार की आवश्यकता नहीं। ऐसे साक्षात आत्मा स्वरूप की अनुभूति करने वाले अथार्टी से, निश्चय से कहेंगे कि मैंने आत्मा को देखा तो क्या लेकिन अनुभव किया है। क्योंकि देखने के बाद भी अनुभव नहीं किया तो फिर देखना कोई काम का नहीं। तो ऐसे साक्षात् आत्म-अनुभवी चलते-फिरते अपने ज्योति स्वरूप का अनुभव करते रहेंगे।

(27.03.1982)

घृणा का बीज है स्वार्थ का रॉयल स्वरूप — 'चाहिए'। इसको यह करना चाहिए, यह न करना चाहिए, यह होना चाहिए। तो 'चाहिए' की चाह उस आत्मा से व्यर्थ सम्बन्ध जोड़ देती है। घृणा वाली आत्मा के प्रति सदा व्यर्थ चिन्तन होने के कारण परदर्शन चक्रधारी बन जाते। लेकिन यह व्यर्थ सम्बन्ध भी 'नष्टोमोहा' होने नहीं देंगे। मुहब्बत से मोह नहीं होगा लेकिन मजबूरी से। फिर क्या कहते हैं — मैं तो तंग हो गई हूँ। तो जो तंग करता है उसमें बुद्धि तो जायेगी ना। समय भी जायेगा, बुद्धि भी जायेगी और शक्तियाँ भी जायेंगी। तो एक है यह सम्बन्ध। दूसरा है विनाशी स्नेह और प्राप्ति के आधार पर वा अल्प-काल के लिए सहारा बनने के कारण लगाव वा झुकाव। यह भी लौकिक, अलौकिक दोनों सम्बन्ध में बुद्धि को अपनी तरफ खींचता है। जैसे लौकिक में देह के सम्बन्धियों द्वारा स्नेह मिलता है, सहारा मिलता है, प्राप्ति होती है तो उस तरफ विशेष मोह जाता है ना। उस मोह को काटने के लिए पुरुषार्थ करते हो, लक्ष्य रखते हो कि किसी भी तरफ बुद्धि न जाए। लौकिक को छोड़ने के बाद अलौकिक सम्बन्ध में भी यही सब बातें बुद्धि को आकर्षित करती हैं। अर्थात् बुद्धि का झुकाव अपनी तरफ सहज कर लेती हैं। यह भी देहधारी के ही सम्बन्ध हैं। जब कोई समस्या जीवन में आयेगी, दिल में कोई उलझन की बात होगी तो न चाहते भी अल्पकाल के सहारे देने वाले वा अल्पकाल की प्राप्ति कराने वाले, लगाव वाली आत्मा ही याद आयेगी। बाप याद नहीं आयेगा। फिर से ऐसे लगाव लगाने वाली आत्मायें अपने आपको

बचाने के लिए वा अपने को राइट सिद्ध करने के लिए क्या सोचती और बोलती हैं कि बाप तो निराकार और आकार है ना! साकार में कुछ चाहिए ज़रूर। लेकिन यह भूल जाती हैं अगर एक बाप से सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध, सर्व सम्बन्धों का अनुभव और सदा सहारे दाता का अटल विश्वास है, निश्चय है तो बापदादा निराकार या आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं। साकार रूप की भासना देते हैं। अनुभव न होने का कारण? नॉलेज द्वारा यह समझा है कि सर्व सम्बन्ध एक बाप से रखने हैं लेकिन जीवन में सर्व सम्बन्धों को नहीं लाया है। इसलिए साक्षात् सर्व सम्बन्ध की अनुभूति नहीं कर पाते हैं। जब भक्ति मार्ग में भक्त माला की शिरोमणी मीरा को भी साक्षात्कार नहीं लेकिन साक्षात् अनुभव हुआ तो क्या ज्ञान सागर के डायरेक्ट ज्ञान स्वरूप बच्चों को साकार रूप में सर्व प्राप्ति के आधार मूर्त, सदा सहारे दाता बाप का अनुभव नहीं हो सकता! तो फिर सर्वशक्तिवान को छोड़ यथा शक्ति आत्माओं को सहारा क्यों बनाते हो! यह भी एक गुह्य कर्मों का हिसाब बुद्धि में रखो। कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है – इसको जानो। किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल का सहारा लेते हो वा प्राप्ति का आधार बनाते हो, उसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव होने के कारण कर्मातीत बनने के बजाए कर्मों का बन्धन बंध जाता है। एक ने दिया दूसरे ने लिया – तो आत्मा का आत्मा से लेन-देन हुआ। तो लेन-देन का हिसाब बना वा समाप्त हुआ? उस समय अनुभव ऐसे करेंगे जैसे कि हम आगे बढ़ रहे हैं लेकिन वह आगे बढ़ना, बढ़ना नहीं, लेकिन कर्म बन्धन के हिसाब का खाता जमा किया। रिजल्ट क्या होगी! कर्म-बन्धनी आत्मा, बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेगी। कर्मबन्धन के बोझ वाली आत्मा याद की यात्रा में सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कर नहीं सकेगी, वह याद के सबजेक्ट में सदा कमजोर होगी। नॉलेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सीबुल होगी लेकिन इसेन्सफुल नहीं होगी। सर्विसएबुल होगी लेकिन विघ्न विनाशक नहीं होगी। सेवा की वृद्धि कर लेंगे लेकिन विधिपूर्वक वृद्धि नहीं होगी। इसलिए ऐसी आत्मायें कर्म बन्धन के बोझ कारण स्पीकर बन सकती हैं लेकिन स्पीड में नहीं चल सकती अर्थात् उड़ती कला की स्पीड का अनुभव नहीं कर सकती। तो यह भी दोनों प्रकार के देह के सम्बन्ध हैं जो 'महात्यागी' नहीं बनने देंगे। तो सिर्फ पहले इस देह के सम्बन्ध को चेक करो – किसी भी आत्मा से चाहे घृणा के सम्बन्ध में, चाहे प्राप्ति वा सहारे के सम्बन्ध से लगाव तो नहीं है? अर्थात् बुद्धि का झुकाव तो नहीं है? बार-बार बुद्धि का जाना वा झुकाव सिद्ध करता है कि बोझ है। बोझ वाली चीज़ झुकती है। तो यह भी कर्मों का बोझ बनता है इसलिए बुद्धि का झुकाव न चाहते भी वहाँ ही होता है। समझा – अभी तो एक देह के सम्बन्ध की बात सुनाई।

(08.04.1982)

प्रश्नः– एक बल और एक भरोसे पर चलने वाले किस बात पर निश्चय रखकर चलते रहते हैं?

उत्तरः- एक बल एक भरोसा अर्थात् सदा निश्चय हो कि जो साकार की मुरली है, वही मुरली है, जो मधुबन से श्रीमत मिलती है वही श्रीमत है, बाप सिवाय मधुबन के और कहीं मिल नहीं सकता। सदा एक बाप की पढ़ाई में निश्चय हो। मधुबन से जो पढ़ाई का पाठ पढ़ाया जाता, वही पढ़ाई है, दूसरी कोई पढ़ाई नहीं। अगर कहाँ भोग आदि के समय सन्देशी द्वारा बाबा का पार्ट चलता है तो यह बिल्कुल रांग है, यह भी माया है, इसको 'एक बल एक भरोसा नहीं कहेंगे'। मधुबन से जो मुरली आती है उस पर ध्यान दो, नहीं तो और रास्ते पर चले जायेंगे। मधुबन में ही बाबा की मुरली चलती है, मधुबन में ही बाबा आते हैं इसलिए हरेक बच्चा यह सावधानी रखे, नहीं तो माया धोखा दे देगी।

(11.04.1982)

बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो

'सदा निश्चयबुद्धि विजयी रत्न हैं।' - इसी नशे में रहो। निश्चय का फाउन्डेशन सदा पक्का है! अपने आप में निश्चय, बाप में निश्चय और ड्रामा की हर सीन को देखते हुए उसमें भी पूरा निश्चय। सदा इसी निश्चय के आधार पर आगे बढ़ते चलो। अपनी जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना तो फिर खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। बाप का हाथ लिया तो बाप का हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो। जब बाप सर्वशक्तिवान है तो उसका हाथ पकड़ने वाले पार पहुँचे कि पहुँचे। चाहे खुद भले कमजोर भी हो लेकिन साथी

तो मजबूत है ना। इसलिए पार हो ही जायेंगे। सदा निश्चयबुद्धि विजयी रत्न, इसी स्मृति में रहो। बीती सो बीती, बिन्दी लगाकर आगे बढ़ो।

(28.12.1982)

निश्चयबुद्धि बन व्यर्थ के बजाए समर्थ संकल्प चलाओ

थोड़ा भी किसको कोई संकल्प तो नहीं है। कोई तन की वा मन की प्राब्लम है? शरीर बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो। सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनो एक्सरसाइज हो जायेगी। खुशी है 'दुआ' और एक्सरसाइज है 'दवाई'। तो दुआ और दवा दोनों होने से सहज हो जायेगा। (एक बच्चे ने कहा रात्रि को नींद नहीं आती है।) सोने के पहले योग में बैठो तो फिर नींद आ जायेगी। योग में बैठने समय बापदादा के गुणों के गीत गाओ। तो खुशी से दर्द भी भूल जायेगा। खुशी के बिना सिर्फ यह प्रयत्न करते हो कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, तो इस मेहनत के कारण दर्द भी फील होता है। खुशी में रहो तो दर्द भी भूल जायेगा।

कोई भी बात में किसको भी कोई क्वेश्चन हो या छोटी सी बात में कब कनफ्यूज़ भी जल्दी हो जाते, तो वह छोटी-छोटी बातें फौरन स्पष्ट करके आगे चलते चलो। ज़्यादा सोचने के अभ्यासी नहीं बनो। जो भी सोच आये उसको वहाँ ही खत्म करो। एक सोच के पीछे अनेक सोच चलने से फिर स्थिति और शरीर दोनों पर असर आता है। इसलिए डबल विदेशी बच्चों को सोचने की बात पर डबल अटेन्शन देना चाहिए। क्योंकि अकेले रहकर सोचने के नैचरल अभ्यासी हो। तो वह अभ्यास जो पड़ा हुआ है, इसलिए यहाँ भी छोटी-छोटी बात पर ज़्यादा सोचते। तो सोचने में टाइम वेस्ट जाता और खुशी भी गायब हो जाती। और शरीर पर भी असर आता है, उसके कारण फिर सोच चलता है। इसलिए तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए - सोचो कम। अगर सोचना ही है तो ज्ञान रत्नों को सोचो। व्यर्थ संकल्प की भेंट में समर्थ संकल्प हर बात का होता है। मानों अपनी स्थिति वा योग के लिये व्यर्थ संकल्प चलता है कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं। अशरीरी होते नहीं। यह है - व्यर्थ संकल्प। उनकी भेंट में समर्थ संकल्प करो - याद तो मेरा स्वधर्म है। बच्चे का धर्म ही है बाप को याद करना। क्यों नहीं होगा, ज़रूर होगा। मैं योगी नहीं तो और कौन बनेगा! मैं ही कल्प-कल्प का सहजयोगी हूँ। तो व्यर्थ के बजाए इस प्रकार के समर्थ संकल्प चलाओ। मेरा शरीर चल नहीं सकता, यह व्यर्थ संकल्प नहीं चलाओ। इसके बजाए समर्थ संकल्प यह है कि - इसी अन्तिम जन्म में बाप ने हमको अपना बनाया है। कमाल है, बलिहारी इस अन्तिम शरीर की। जो इस पुराने शरीर द्वारा जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया। दिलशिकस्त के संकल्प नहीं करो। लेकिन खुशी के संकल्प करो। वाह मेरा पुराना शरीर! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया! वाह वाह कर चलाओ। जैसे घोड़े को प्यार से, हाथ से चलाते हैं तो घोड़ा बहुत अच्छा चलता है अगर घोड़े को बार-बार चाबुक लगायेंगे तो और ही तंग करेगा। यह शरीर भी आपका है। इनको बार-बार ऐसे नहीं कहो कि यह पुराना, बेकार शरीर है। यह कहना जैसे चाबुक लगाते हो। खुशी-खुशी से इसकी बलिहारी गाते आगे चलाते रहो। फिर यह पुराना शरीर कब डिस्टर्ब नहीं करेगा। बहुत सहयोग देगा। (कोई ने कहा - प्रामिस भी करके जाते हैं, फिर भी माया आ जाती है।)

माया से घबराते क्यों हो? माया आती है आपको पाठ पढ़ाने लिए। घबराओ नहीं। पाठ पढ़ लो। कभी सहनशीलता का पाठ कभी एकरस स्थिति में रहने का पाठ पढ़ाती। कभी शान्त स्वरूप बनने का पाठ पक्का कराने आती। तो माया को उस रूप में नहीं देखो। माया आ गई, घबरा जाते हो। लेकिन समझो कि माया भी हमारी सहयोगी बन, बाप से पढ़ा हुआ पाठ पक्का कराने के लिए आई है। माया को सहयोगी के रूप में समझो। दुश्मन नहीं। पाठ पक्का कराने के लिए सहयोगी है तो आपका अटेन्शन सारा उस बात में चला जायेगा। फिर घबराहट कम होगी और हार नहीं खायेंगे। पाठ पक्का करके 'अंगद' के समान बन जायेंगे। तो माया से घबराओ नहीं। जैसे छोटे बच्चों को माँ बाप डराने के लिए कहते हैं, हव्वा आ जायेगा। आप सबने भी माया को हव्वा बना दिया है। वैसे माया खुद आप लोगों के पास आने में घबराती है। लेकिन आप स्वयं कमज़ोर हो, माया का आह्वान करते हो। नहीं तो वह आयेगी नहीं। वह तो विदाई के लिए ठहरी हुई है। वह भी इन्तज़ार कर रही है कि हमारी लास्ट डेट कौन सी है? अब माया को विदाई देंगे या घबरायेंगे!

(09.01.1983)

बापदादा के सिर के ताज, श्रेष्ठ आत्मायें हैं - ऐसा निश्चय हो तो सदा मायाजीत स्वत: हो जायेंगे

आप सब बापदादा के सिर के ताज, श्रेष्ठ आत्मायें हो ना! श्रेष्ठ आत्माओं का हर संकल्प, हर बोल श्रेष्ठ होगा। कभी कभी नहीं - सदा। क्योंकि सदा का वर्सा पा रहे हो ना! तो जब सदा का वर्सा पाने के अधिकारी हो तो स्थिति भी सदाकाल की। 'सदा' शब्द को सदा याद रखना। यही वरदान सभी बच्चो को बापदादा देते हैं। सदा खुश रहेंगे, सदा उड़ती कला में रहेंगे, सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न रहेंगे। ऐसे वरदान लेने वाली आत्मायें सहजयोगी स्वत: हो जाती हैं। आज खुशी का दिन है! सबसे अधिक खुशी किसको है, बाप को है या बच्चों को है? (बच्चों को है) बापदादा को यह खुशी है कि ऐसा कोई बाप सारे वर्ल्ड में नहीं होगा जिसका हरेक बच्चा श्रेष्ठ हो। बापदादा एक-एक बच्चे की अगर विशेषता का वर्णन करें तो कई वर्ष बीत जाएँ। हरेक बच्चे की महिमा के बड़े-बड़े शास्त्र बन जाएँ। विशेष आत्मा हो - ऐसा निश्चय हो तो सदा मायाजीत स्वत: हो जायेंगे।

(09.01.1983)

सदा यही नशा अनुभव करो कि मैं हूँ ही बाप का

सहजयोगी, समीप सम्बन्ध और सर्व प्राप्ति के कारण सहज योग का सदा स्वत: अनुभव करता है। सदा समर्थ स्वरूप होने के कारण इसी नशे में सदा अनुभव करता कि मैं हूँ ही बाप का। याद दिलाना नहीं पड़ता स्वयं को मैं आत्मा हूँ, मैं बाप का बच्चा हूँ। 'मैं हूँ ही' सदा अपने को इस अनुभव के नशे में प्राप्ति स्वरूप नैचुरल निश्चय करता है। सहयोगी को सर्व सिद्धियाँ स्वत: ही अनुभव होती हैं। इसलिए सहजयोगी सदा ही श्रेष्ठ उमंग उत्साह खुशी में एकरस रहता है। सहजयोगी सर्व प्राप्तियों के अधिकारी स्वरूप में सदा शक्तिशाली स्थिति में स्थित रहते हैं।

(15.01.1983)

निश्चय रहे 'वाह रे मेरा भाग्य!'

बापदादा भी सदा एक गीत गाते रहते हैं, कौन सा गीत गाते हैं, जानते हो ना? यही गीत गाते- वाह मेरे बच्चे, वाह! वाह मीठे बच्चे, वाह! वाह प्यारे ते प्यारे बच्चे, वाह! वाह श्रेष्ठ आत्मायें वाह! ऐसा ही निश्चय और नशा सदा रहता है ना। सारे कल्प में ऐसा भाग्य प्राप्त नहीं हो सकता जो भगवान बच्चों के गीत गाये। भक्त, भगवान के गीत बहुत गाते हैं। आप सब ने भी बहुत गीत गाये हैं। लेकिन ऐसे कब सोचा कि कब भगवान भी हमारे गीत गायेंगे! जो सोचा नहीं था वह साकार रूप में देख रहे हो।

(15.02.1983)

सदा निश्चय हो - जहाँ बाप है, वहाँ कितने भी चाहे तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे

सेवा में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पार्टधारी आत्मा हो। जैसे मन में यह श्रेष्ठ संकल्प रखा कि जिस कार्य के लिए निमित्त बने हो वह करके ही दिखायेंगे। यह संकल्प बाप दादा और सारे ब्राह्मण परिवार के सहयोग से साकार में आता ही रहेगा। संकल्प बहुत अच्छा है। प्लैन भी बहुत अच्छे-अच्छे सोचते हो। अभी इसी प्लैन के बीच में जब यह स्प्रिचुअल पावर एड हो जायेगी तो यह प्लैन साकार रूप लेते रहेंगे। बाप दादा के पास बच्चों के सभी उमंग पहुँचते रहते हैं। सदा अटल रहना। हिम्मतवान बनकर आगे बढ़ते जाना। वह दिन भी इन आँखों से दिखाई देगा कि विश्व शान्ति का झण्डा विश्व के चारों ओर लहरायेगा। इसलिए आगे बढ़ते चलो। दुनिया वाले दिलशिकस्त बनायेंगे। आप मत बनना। एक बल एक भरोसा, इसी निश्चय से चलते रहना। जिस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लेना। तो ऐसा अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ विशेष शक्ति है। स्वप्न पूरा हो जायेगा। जहाँ बाप है, वहाँ कितने भी चाहे तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे। 'निश्चय बुद्धि विजयन्ति' - यह टाइटल याद रखना कि मैं निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हूँ।

(15.02.1983)

निश्चय में एक बल और एक भरोसा, तो जो कुछ होगा वह अच्छा ही होगा

सदा दिल से बाबा ही निकलता है ना! मन की खुशी, याद के अनुभव द्वारा अनुभव की! अभी एकाग्र हो जो सोचेंगे वह सब आगे बढ़ने का साधन हो जायेगा। सिर्फ एक बल एक भरोसे से एकाग्र हो कर के सोचो। निश्चय में एक बल और एक भरोसा, तो जो कुछ होगा वह अच्छा ही होगा। बापदादा सदा साथ हैं और सदा रहेंगे। बहादुर हो ना! बाप दादा बच्चे की हिम्मत और निश्चय को देख के निश्चय और हिम्मत पर बधाई दे रहे हैं। बेफिकर बादशाह के बच्चे बादशाह हो ना! ड्रामा की भावी ने समीप रत्न तो बना ही दिया है।

(18.02.1983)

सेवा के हर कदम में कल्याण भरा हुआ है - इसी निश्चय के आधार पर सेवा करते चलो

जब भी किसी नये स्थान पर सेवा शुरू करते हो तो एक ही समय पर सर्व प्रकार की सेवा करो। मंसा में शुभ भावना, वाणी में बाप से सम्बन्ध जुड़वाने और शुभ कामना के श्रेष्ठ बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में आने से स्नेह और शान्ति के स्वरूप से आकर्षित करो। ऐसे सर्व प्रकार की सेवा से सफलता को पायेंगे। सिर्फ वाणी से नहीं लेकिन एक ही समय साथ-साथ सेवा हो। ऐसा प्लैन बनाओ। क्योंकि किसी भी सर्विस करने के लिए विशेष स्वयं को स्टेज पर स्थित करना पड़ता है। सेवा में रिजल्ट कुछ भी हो लेकिन सेवा के हर कदम में कल्याण भरा हुआ है, एक भी यहाँ तक पहुँच जाए यह भी सफलता है। इसी निश्चय के आधार पर सेवा करते चलो। सफलता तो समाई हुई है ही। अनेक आत्माओं के भाग्य की लकीर खींचने के निमित्त हैं। ऐसी विशेष आत्मा सम-झ-कर सेवा करते चलो।

(27.02.1983)

निश्चयबुद्धि हो, मेरेपन के सम्बन्ध से न्यारे हो चलते चलो

एक सदा लौकिक में अलौकिक स्मृति, सदा सेवाधारी की स्मृति। सदा ट्रस्टीपन की स्मृति। सर्व प्रति आत्मिक भाव से शुभ कल्याण की भावना, श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना। जैसे अन्य आत्माओं को सेवा की भावना से देखते हो, बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो। हद में नहीं आओ। मेरा बच्चा, मेरा पति इसका कल्याण हो, सर्व का कल्याण हो। अगर मेरापन है तो आत्मिक दृष्टि, कल्याण की दृष्टि दे नहीं सकेंगे। मैजारटी बापदादा के आगे यही अपनी आश रखते हैं - बच्चा बदल जाए, पति साथ दे, घर वाले साथी बनें। लेकिन सिर्फ उन आत्माओं को अपना समझ यह आश क्यों रखते हो! इस हद की दीवार के कारण आपकी शुभ भावना वा कल्याण की शुभ इच्छा उन आत्माओं तक पहुँचती नहीं। इसलिए संकल्प भल अच्छा है लेकिन साधन यथार्थ नहीं तो रिज़ल्ट कैसे निकले? इसलिए यह कम्पलेन्ट चलती रहती है। तो सदा बेहद की आत्मिक दृष्टि, भाई भाई के सम्बन्ध की वृत्ति से किसी भी आत्मा के प्रति शुभ भावना रखने का फल जरूर प्राप्त होता है। इसलिए पुरूषार्थ से थको नहीं। बहुत मेहनत की है वा यह तो कभी बदलना ही नहीं है - ऐसे दिलशिकस्त भी नहीं बनो। निश्चयबुद्धि हो, मेरेपन के सम्बन्ध से न्यारे हो चलते चलो। कोई-कोई आत्माओं का ईश्वरीय वर्सा लेने के लिए भक्ति का हिसाब चुक्तु होने में थोड़ा समय लगता है। इसलिए धीरज धर, साक्षीपन की स्थिति में स्थित हो, निराश न हो। शान्ति और शक्ति का सहयोग आत्माओं को देते रहो। ऐसी स्थिति में स्थित रहकर लौकिक में अलौकिक भावना रखने वाले, डबल सेवाधारी, ट्रस्टी बच्चों का महत्व बहुत बड़ा है। अपने महत्व को जानो।

(07.04.1983)

निश्चय में जब क्यों, क्या आता तो विजय अर्थात् प्राप्ति में भी कुछ न कुछ कमी पड़ जाती है

रावण को खत्म करने का दशहरा अभी है। इसमें सदा विजय का उमंग उत्साह रहे। नाउम्मीदी के संस्कार नहीं। कोई भी मुश्किल कार्य इतना सहज अनुभव हो जैसे कोई बड़ी बात ही नहीं है क्योंकि अनेक बार कार्य कर चुके हैं। कोई नई बात नहीं

कर रहे हैं। कई बार की हुई को रिपीट कर रहे हैं। तो सदा उम्मीदवार। नाउम्मीद का नाम निशान भी न रहे। कभी कोई स्वभाव संस्कार में संकल्प न आये कि पता नहीं यह परिवर्तन होगा या नहीं होगा। सदा के विजयी, कभी-कभी के नहीं। अगर कोई स्वप्न में भी कमी हो तो उसको सदा के लिए समाप्त कर देना। नाउम्मीद को सदा के लिए उम्मीद में बदल देना। निश्चय अटूट है तो विजय भी सदा है। निश्चय में जब क्यों, क्या आता तो विजय अर्थात् प्राप्ति में भी कुछ न कुछ कमी पड़ जाती है तो सदा उम्मीदवार, सदा विजयी। नाउम्मीदों को सदाकाल के लिए उम्मीदों में बदलने वाले।

(17.04.1983)

सदा निश्चयबुद्धि सभी बातों में निश्चिन्त रहते हैं

सदा अपने को विश्व के अन्दर कोटो में से कोई हम हैं - ऐसे अनुभव करते हो? जब भी यह बात सुनते हो - कोटों से कोई, कोई में भी कोई तो वह स्वयं को समझते हो? जब हूबहू पार्ट रिपीट होता है तो उस रिपीट हुए पार्ट में हर कल्प आप लोग ही विशेष होंगे ना! ऐसे अटल विश्वास रहे। सदा निश्चयबुद्धि सभी बातों में निश्चिन्त रहते हैं। निश्चय की निशानी है निश्चिन्त। चिन्तायें सारी मिट गई। बाप ने चिंताओं की चिता से बचा लिया ना! चिंताओं की चिता से उठाकर दिलतख्त पर बिठा दिया। बाप से लगन लगी और लगन के आधार पर लगन की अग्नि में चिन्तायें सब ऐसे समाप्त हो गई जैसे थी ही नहीं। एक सेकण्ड में समाप्त हो गई ना! ऐसे अपने को शुभचिन्तक आत्मायें अनुभव करते हो! कभी चिंता तो नहीं रहती! न तन की चिंता, न मन में कोई व्यर्थ चिंता और न धन की चिंता। क्योंकि दाल रोटी तो खाना है और बाप के गुण गाना है। दाल रोटी तो मिलनी ही है। तो न धन की चिंता, न मन की परेशानी और न तन के कर्मभोग की भी चिंता। क्योंकि जानते हैं यह अन्तिम जन्म और अन्त का समय है इसमें सब चुक्तु होना है इसलिए सदा - 'शुभचिन्तक'। क्या होगा! कोई चिंता नहीं। ज्ञान की शक्ति से सब जान गये। जब सब कुछ जान गये तो क्या होगा, यह क्वेश्चन खत्म। क्योंकि ज्ञान है जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। तो सदा शुभचिन्तक, सदा चिन्ताओं से परे निश्चय बुद्धि, निश्चिन्त आत्मायें, यही तो जीवन है। अगर जीवन में निश्चिन्त नहीं तो वह जीवन ही क्या है! ऐसी श्रेष्ठ जीवन अनुभव कर रहे हो? परिवार की भी चिन्ता तो नहीं है? हरेक आत्मा अपना हिसाब किताब चुक्तु भी कर रही है और बना भी रही है इसमें हम क्या चिंता करें! कोई चिंता नहीं। पहले चिता पर जल रहे थे अभी बाप ने अमृत डाल जलती चिता से मरजीवा बना दिया। जिंदा कर दिया। जैसे कहते हैं मरे हुए को जिंदा कर दिया। तो बाप ने अमृत पिलाया और अमर बना दिया। मरे हुए मुर्दे के समान थे और अब देखो क्या बन गये। मुर्दे से महान बन गये। पहले कोई जान नहीं थी तो मुर्दे समान ही कहेंगे ना। भाषा भी क्या बोलते थे, अज्ञानी लोग भाषा में बोलते हैं - मर जाओ ना। या कहेंगे हम मर जाए तो बहुत अच्छा। अब तो मरजीवा हो गये, विशेष आत्मायें बन गये। यही खुशी है ना। जलती हुई चिता से अमर हो गये, यह कोई कम बात है! पहले सुनते थे भगवान मुर्दे को भी जिंदा करता है, लेकिन कैसे करता यह नहीं समझते थे। अभी समझते हो हम ही जिंदा हो गये तो सदा नशे और खुशी में रहो।

(19.04.1983)

निश्चयबुद्धि विजयी विश्व के मालिकों को विश्व का राज्य निश्चित ही प्राप्त हुआ पड़ा है

इतना बड़ा संगठन क्या नहीं कर सकता है! एक तो श्रेष्ठ आत्मायें, पवित्र आत्मायें हो तो पवित्रता की शक्ति है, दूसरा मास्टर सर्वशक्तिवान होने के कारण सर्वशक्तियाँ साथ हैं। संगठन की शक्ति है, साथ-साथ त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हो कि अनेक बार हम विश्व-परिवर्तक बने हैं। इसलिए कल्प-कल्प के विजयी होने के कारण अब भी विश्व-परिवर्तन के कार्य में विजय निश्चित है। होंगे या नहीं होंगे यह क्वेश्चन ही नहीं है। निश्चयबुद्धि विजयी - ऐसे अनुभव करते हो ना कि सुख का संसार अभी आया कि आया। विश्व के मालिकों को विश्व का राज्य निश्चित ही प्राप्त हुआ पड़ा है।

(11.05.1983)

निश्चयबुद्धि विजयी, इसी को दूसरे शब्दों में कहा जाता है - 'एक बल, एक भरोसा'

'सदा एक बल और एक भरोसा' - इसी स्थिति में रहते हो? एक में भरोसा अर्थात् बल की प्राप्ति। ऐसे अनुभव करते हो? निश्चयबुद्धि विजयी, इसी को दूसरे शब्दों में कहा जाता है - 'एक बल, एक भरोसा'। निश्चय बुद्धि की विजय न हो यह हो नहीं सकता। अपने में ही जरा-सा संकल्प मात्र भी संशय आता कि यह होगा या नहीं होगा, तो विजय नहीं। अपने में बाप में और ड्रामा में पूरा-पूरा निश्चय हो तो कभी विजय न मिले, यह हो नहीं सकता। अगर विजय नहीं होती तो ज़रूर कोई न कोई पाईन्ट में निश्चय की कमी है। जब बाप में निश्चय है तो स्वयं में भी निश्चय है। मास्टर है ना। जब मास्टर सर्वशक्तिवान हैं तो ड्रामा की हर बात को भी निश्चयबुद्धि होकर देखेंगे! ऐसे निश्चय बुद्धि बच्चों के अन्दर सदा यही उमंग होगा कि मेरी विजय तो हुई पड़ी है। ऐसे विजयी ही — विजय माला के मणके बनते हैं। विजय उनका वर्सा है। जन्म-सिद्ध अधिकार में यह वर्सा प्राप्त हो जाता है।

(12.12.1983)

निश्चय का फाउण्डेशन अचल है तो कर्म रूपी बिल्डिंग भी अचल होगी

सदा अपने को निश्चय बुद्धि विजयी रत्न समझते हो? सदा के निश्चय बुद्धि अर्थात् सदा के विजयी। जहाँ निश्चय है वहाँ विजय स्वत: है। अगर विजय नहीं तो निश्चय में कहाँ न कहाँ कमी है। चाहे स्वयं के निश्चय में, चाहे बाप के निश्चय में, चाहे नॉलेज के निश्चय में, किसी भी निश्चय में कमी माना विजय नहीं। निश्चय की निशानी है - 'विजय'। अनुभवी हो ना। निश्चय बुद्धि को माया कभी भी हिला नहीं सकती। वह माया को हिलाने वाले होंगे, स्वयं हिलने वाले नहीं। निश्चय का फाउण्डेशन अचल है तो स्वयं भी अचल होंगे। जैसा फाउण्डेशन वैसी मज़बूत बिल्डिंग बनती है। निश्चय का फाउण्डेशन अचल है तो कर्म रूपी बिल्डिंग भी अचल होगी। माया को अच्छी तरह से जान गये हो ना। माया क्यों और कब आती है, यह ज्ञान है ना। जिसको पता है कि इस रीति से माया आती है। तो वह सदा सेफ रहेंगे ना। अगर मालूम है कि यहाँ से इस रीति से दुश्मन आयेगा तो सेफ्टी करेंगे ना। आप भी समझदार हो तो माया वार क्यों करे। माया की हार होनी चाहिए। सदा विजयी रत्न हैं, कल्प-कल्प के विजयी हैं, इस स्मृति से समर्थ बन आगे बढ़ते चलो। कच्चे पत्तों को चिड़ियायें खा जाती है इसलिए पक्के बनो। पक्के बन जायेंगे तो माया रूपी चिड़िया खायेगी नहीं। सेफ़ रहेंगे।

(31.12.1983)

निश्चयबुद्धि शक्तिशाली आत्मा सदा अपने को सर्वशक्तिवान बाप के साथ, कम्बाइन्ड अनुभव करेगी

शक्तिशाली आत्मा सदा अपने को सर्वशक्तिवान बाप के साथ, कम्बाइन्ड अनुभव करेगी। और सदा श्रीमत का हाथ छत्रछाया के रुप में अनुभव होगा। शक्तिशाली आत्मा, सदा दृढ़ता की चाबी के अधिकारी होने कारण सफलता के खज़ाने के मालिक अनुभव करते हैं। सदा सर्व प्राप्तियों के झूलों में झूलते रहते हैं। सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य के मन में गीत गाते रहते हैं। सदा रुहानी नशे में होने कारण पुरानी दुनिया के आकर्षण से सहज परे रहते हैं। मेहनत नहीं करनी पड़ती है। शक्तिशाली आत्मा का हर कर्म, बोल स्वत: और सहज सेवा कराता रहता है। स्व परिवर्तन वा विश्व-परिवर्तन शक्तिशाली होने के कारण सफलता हुई पड़ी है, यह अनुभव सदा ही रहता है। किसी भी कार्य में क्या करें, क्या होगा यह संकल्प मात्र भी नहीं होगा। सफलता की माला सदा जीवन में पड़ी हुई है। विजयी हूँ, विजय माला का हूँ। विजय जन्म सिद्ध अधिकार है, यह अटल निश्चय स्वत: और सदा रहता ही है।

(15.04.1984)

ब्राह्मण आत्मायें फलक से, निश्चय से, नशे से, खुशी से, दिल से कहती - 'हमारा बाप अब मिल गया

ब्राह्मण ही कहते हैं - हमने भगवान को बाप के रुप में देखा। माता, सखा, बन्धु, साजन के स्वरुप में देखा। जो ऋषि, मुनि, तपस्वी, विद्वान आचार्य, शास्त्री सिर्फ महिमा गाते ही रह गये। दर्शन के अभिलाषी रह गये। कब आयेगा, कब मिल ही जायेगा। इसी इन्तजार में जन्म-जन्म के चक्र में चलते रहे लेकिन ब्राह्मण आत्मायें फलक से, निश्चय से कहती, नशे से कहती, खुशी-खुशी से कहती, दिल से कहती - 'हमारा बाप अब मिल गया।'

(03.05.1984)

जहाँ ईश्वरीय निश्चय और नशा होगा वहाँ माया से परे रहेंगे

कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है, कुमार जीवन में बाप के बन गये ऐसी अपनी श्रेष्ठ तकदीर देख सदा हर्षित रहो और औरों को भी हर्षित रहने की विधि सुनाते रहो। सबसे निर्बन्धन कुमार और कुमारियाँ हैं। कुमार जो चाहें वह अपना भाग्य बना सकते हैं। हिम्मत वाले कुमार हो ना! कमजोर कुमार तो नहीं। कितना भी कोई अपने तरफ आकर्षित करे लेकिन महावीर आत्मायें एक बाप के सिवाए कहाँ भी आकर्षित नहीं हो सकती। ऐसे बहादुर हो। कई रूप से माया अपना बनाने का प्रयत्न तो करेगी लेकिन निश्चय बुद्धि विजयी। घबराने वाले नहीं। अच्छा है। 'वाह मेरी श्रेष्ठ तकदीर' - बस यही सदा स्मृति रखना। हमारे जैसा कोई हो नहीं सकता-यह नशा रखो। जहाँ ईश्वरीय नशा होगा वहाँ माया से परे रहेंगे। सेवा में तो सदा बिजी रहते हो ना! यह भी जरूरी है। जितना सेवा में बिजी रहेंगे उतना सहजयोगी रहेंगे लेकिन याद सहित सेवा हो तो सेफ्टी है। याद नहीं तो सेफ्टी नहीं।

(03.12.1984)

'निमित्त भाव सफलता की चाबी है'

जहाँ निमित्त हैं वहाँ सफलता है ही। वहाँ मेरा-पन आ नहीं सकता। जहाँ मेरा-पन है वहाँ सफलता नहीं। 'निमित्त भाव सफलता की चाबी है'। जब हद का लौकिक मेरा-पन छोड़ दिया तो फिर और मेरा कहाँ से आया। मेरा के बजाए 'बाबा- बाबा' कहने से सदा सेफ हो जाते। मेरा सेन्टर नहीं बाबा का सेन्टर। मेरा जिज्ञासु नहीं - बाबा का। मेरा खत्म होकर तेरा बन जाता। तेरा कहना अर्थात् उड़ना। तो निमित्त शिक्षक अर्थात् उड़ती कला के एक्जैम्पल। जैसे आप उड़ती कला के एक्जैम्पुल बनते वैसे दूसरे भी बनते हैं। न चाहते भी जिसके निमित्त बनते हो उनमें वह वायब्रेशन स्वतः आ जाते है। तो निमित्त शिक्षक, सेवाधारी सदा न्यारे हैं, सदा प्यारे हैं। कभी भी कोई पेपर आवे तो उसमें पास होने वाले हैं। निश्चयबुद्धि विजयी हैं।

(19.12.1984)

श्रीमत की दुआ कहो, दवा कहो, परहेज कहो, वह करो तो फिर शक्तिशाली हो जायेंगे

जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, अपना भविष्य चोला श्रीकृष्ण स्वरूप सदा सामने स्पष्ट रहा। ऐसे आप सभी को भी शक्तिशाली नेत्र से स्पष्ट और सामने दिखाई देता है? अभी-अभी फ़रिश्ता सो देवता। नशा भी है और साक्षात् देवता बनने का दिव्य नेत्र द्वारा साक्षात्कार भी है। तो ऐसा शक्तिशाली नेत्र है? वा कुछ देखने की शक्ति कम हो गई है? जैसे स्थूल नेत्र की शक्ति कम हो जाती है तो स्पष्ट चीज़ भी जैसे पर्दे के अन्दर वा बादलों के बीच दिखाई देती है। ऐसे आपको भी देवता बनना तो है, बना तो था लेकिन क्या था, कैसा था इस 'था' के पर्दे के अन्दर तो नहीं दिखाई देता? स्पष्ट है? निश्चय का पर्दा और स्मृति का मणका दोनों शक्तिशाली हैं ना। वा मणका ठीक है और पर्दा कमज़ोर है! एक भी कमज़ोर रहा तो स्पष्ट नहीं होगा। तो चेक करो वा चेक कराओ कि कहाँ नेत्र की शक्ति कम तो नहीं हुई है? अगर जन्म से श्रीमत रूपी परहेज करते आये हो तो नेत्र सदा शक्तिशाली है। श्रीमत की परहेज में कमी है तब शक्ति भी कम है। फिर से श्रीमत की दुआ कहो, दवा कहो, परहेज कहो, वह करो तो फिर शक्तिशाली हो जायेंगे। तो यह नेत्र है दिव्य दूरबीन।

(23.01.1985)

योगी जीवन का फाउण्डेशन तो 'निश्चय' है और परिवार का फाउण्डेशन स्नेह है

आज मुरबी बच्चों के स्नेह का रिटर्न देने आये हैं। मधुबन वालों को अथक सेवा का विशेष फल देने के लिए सिर्फ़ मिलन मनाने आये हैं। ये है स्नेह का प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरूप। ब्राह्मण परिवार का विशेष फाउण्डेशन है ही यह विशेष स्नेह। वर्तमान समय स्नेह हर सेवा के कार्य में सफ़लता का सहज साधन है। योगी जीवन का फाउण्डेशन तो 'निश्चय' है लेकिन परिवार का फाउण्डेशन स्नेह है। जो स्नेह ही किसी के भी दिल को समीप ले आता है। वर्तमान समय याद और सेवा के बैलेन्स के साथ 'स्नेह और सेवा' का बैलेन्स सफ़लता का साधन है।

(02.09.1985)

अपना मन निश्चयबुद्धि हो कि - मैं विजयी हूँ। निश्चयबुद्धि नष्टोमोहा की सीढ़ी है

आज बापदादा अपने निश्चय बुद्धि विजयी रत्नों की माला को देख रहे थे। सभी बच्चे अपने को समझते हैं कि मैं निश्चय में पक्का हूँ? ऐसा कोई विरला होगा जो अपने को निश्चयबुद्धि नहीं मानता हो। किसी से भी पूछेंगे, निश्चय है? तो यही कहेंगे कि निश्चय न होता तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कैसे बनते। निश्चय के प्रश्न पर सब 'हाँ' कहते हैं। सभी निश्चयबुद्धि बैठे हैं, ऐसे कहेंगे ना? नहीं तो जो समझते हैं कि निश्चय हो रहा है वह हाथ उठावें। सब निश्चयबुद्धि हैं। अच्छा जब सभी को पक्का निश्चय है फ़िर विजय माला में नम्बर क्यों हैं? निश्चय में सभी का एक ही उत्तर है ना! फ़िर नम्बर क्यों? कहाँ अष्ट रत्न, कहाँ 100 रत्न और कहाँ 16 हज़ार! इसका कारण क्या? अष्ट देव का पूजन गायन और 16 हज़ार की माला का गायन और पूजन में कितना अन्तर है? बाप एक है और एक के ही हैं यह निश्चय है फ़िर अन्तर क्यों? निश्चयबुद्धि में परसेन्टेज होती है क्या? निश्चय में अगर परसेन्टेज हो तो उसको निश्चय कहेंगे? 8 रत्न भी निश्चय बुद्धि, 16 हज़ार वाले भी निश्चयबुद्धि कहेंगे ना!

निश्चयबुद्धि की निशानी 'विजय' है। इसलिए गायन है - 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'। तो निश्चय अर्थात् विजयी हैं ही हैं। कभी विजय हो, कभी न हो। यह हो नहीं सकता। सरकमस्टांस भले कैसे भी हों लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे सरकमस्टांस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति द्वारा सदा विजय अनुभव करेंगे। जो विजयी रत्न अर्थात् विजय माला का मणका बन गया, गले का हार बन गया उसकी माया से हार कभी हो नहीं सकती। चाहे दुनिया वाले लोग वा ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क में दूसरा समझे वा कहें कि यह हार गया - लेकिन वह हार नहीं है, जीत है। क्योंकि कहाँ-कहाँ देखने वा करने वालों कि मिस-अण्डरस्टैन्डिंग भी हो जाती है। नम्रचित्त, निर्मान वा 'हाँ जी' का पाठ पढ़ने वाली आत्माओं के प्रति कभी मिस-अण्डरस्टैन्डिंग से उसकी हार समझते हैं, दूसरों को रूप हार का दिखाई देता है लेकिन वास्तविक विजय है। सिर्फ़ उस समय दूसरों के कहने वा वायुमण्डल में स्वयं निश्चयबुद्धि से बदल 'शक' का रूप न बने। पता नहीं हार है या जीत है। यह 'शक' न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो जिसको आज दूसरे लोग हार कहते हैं, कल 'वाह-वाह' के पुष्प चढ़ायेंगे।

विजयी आत्मा को अपने मन में, अपने कर्म प्रति कभी दुविधा नहीं होगी। राइट हूँ वा रांग हूँ? दूसरे का कहना अलग चीज़ है। दूसरे कोई राइट कहेंगे कोई रांग कहेंगे लेकिन अपना मन निश्चयबुद्धि हो कि - मैं विजयी हूँ। बाप में निश्चय के साथ-साथ स्वयं का भी निश्चय चाहिए। निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी का मन अर्थात् संकल्प शक्ति सदा स्वच्छ होने के कारण हाँ और ना का स्वयं प्रति वा दूसरों के प्रति निर्णय सहज और सत्य, स्पष्ट होगा। इसलिए 'पता नहीं', की दुविधा नहीं होगी। निश्चयबुद्धि विजयी रत्न की निशानी - सत्य निर्णय होने के कारण मन में ज़रा भी मूँझ नहीं होगी। सदैव मौज होगी। खुशी की लहर होगी। चाहे सरकमस्टांस आग के समान हो लेकिन उसके लिए वह अग्नि-परीक्षा विजय की खुशी अनुभव करायेगी। क्योंकि परीक्षा में विजयी हो जायेंगें ना। अब भी लौकिक रीति किसी भी बात में विजय होती है तो खुशी मनाने के लिए हँसते नाचते ताली बजाते हैं। यह खुशी की निशानी है। निश्चयबुद्धि कभी भी किसी भी कार्य में अपने को अकेला अनुभव नहीं करेंगे। सभी एक तरफ हैं मैं अकेला दूसरी तरफ हूँ, चाहे मैजारिटी दूसरे तरफ हों और विजयी रत्न सिर्फ़ एक हो फ़िर भी वह अपने को एक नहीं लेकिन बाप मेरे साथ है इसलिए बाप के आगे अक्षोणी भी कुछ नहीं है। जहाँ बाप है वहाँ सारा संसार बाप में है। बीज है तो झाड़ उसमें है ही। विजयी निश्चयबुद्धि आत्मा सदा अपने को सहारे के नीचे समझेंगे। सहारा देने वाला दाता मेरे साथ है - यह नैचरल अनुभव करता है। ऐसे नहीं कि जब समस्या आवे उस समय बाप के आगे भी कहेंगे - बाबा आप तो मेरे साथ हो ना। आप ही मददगार

हो ना। बस अब आप ही हो। मतलब का सहारा नहीं लेंगे। आप हो ना, यह हो ना का अर्थ क्या हुआ? निश्चय हुआ? बाप को भी याद दिलाते हैं कि आप सहारा हो। निश्चयबुद्धि कभी भी ऐसा संकल्प नहीं कर सकते। उनके मन में ज़रा भी बेसहारे वा अकेलेपन का संकल्प मात्र भी अनुभव नहीं होगा। निश्चयबुद्धि विजयी होने के कारण सदा खुशी में नाचता रहेगा। कभी उदासी वा अल्पकाल का हद का वैराग, इसी लहर में भी नहीं आयेंगे। कई बार जब माया का तेज़ वार होता है, अल्पकाल का वैराग भी आता है लेकिन वह हद का अल्पकाल का वैराग होता है। बेहद का सदा का नहीं होता। मजबूरी से वैराग वृत्ति उत्पन्न होता है। इसलिए उस समय कह देते हैं कि इससे तो इसको छोड़ दें। मुझे वैराग आ गया है। सेवा भी छोड़ दें यह भी छोड़ दें, वैराग आता है लेकिन वह बेहद का नहीं होता। विजयी रत्न सदा हार में भी जीत, जीत में भी जीत अनुभव करेंगे। हद के वैराग को कहते हैं - किनारा करना। नाम वैराग कहते लेकिन होता किनारा है। तो विजयी रत्न किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। लेकिन सब कर्म करते हए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैरागवृत्ति में होंगे। जो सदाकाल का है। निश्चयबुद्धि विजयी कभी अपने विजय का वर्णन नहीं करेंगे। दूसरे को उल्हना नहीं देंगे। देखा मैं राइट था ना। यह उल्हना देना या वर्णन करना यह खालीपन की निशानी है। खाली चीज़ ज़्यादा उछलती है ना। जितना भरपूर होंगे उतना उछलेंगे नहीं। वियजी सदा दूसरे की भी हिम्मत बढ़ायेगा। नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेगा। क्योंकि विजयी रत्न बाप समान 'मास्टर सहारे दाता' है। नीचे से ऊँचा उठाने वाला है। निश्चयबुद्धि व्यर्थ से सदा दूर रहता है। चाहे व्यर्थ संकल्प हो, बोल हो वा कर्म हो। व्यर्थ से किनारा अर्थात् विजयी है। व्यर्थ के कारण ही कभी हार कभी जीत होती है। व्यर्थ समाप्त हो तो हार समाप्त। व्यर्थ समाप्त होना यह विजयी रत्न की निशानी है। अब यह चैक करो कि निश्चयबुद्धि विजयी रत्न की निशानियाँ अनुभव होती हैं? सुनाया ना - निश्चयबुद्धि तो हैं, सच बोलते हैं। लेकिन निश्चयबुद्धि एक हैं जानने तक, मानने तक और एक हैं चलने तक। मानते तो सभी हो कि हाँ, भगवान मिल गया। भगवान के बन गये। मानना वा जानना एक ही बात है। लेकिन चलने में नम्बरवार हो जाते। तो जानते भी हैं, मानते भी इसमें ठीक हैं लेकिन तीसरी स्टेज है - मान कर, जानकर चलना। हर कदम में निश्चय की वा विजय की प्रत्यक्ष निशानियाँ दिखाई दें। इसमें अन्तर है। इसलिए नम्बरवार बन गये। समझा। नम्बर क्यों बनें हैं।

इसी को ही कहा जाता है - 'नष्टोमोहा'। नष्टोमोहा की परिभाषा बड़ी गुह्य है। वह फ़िर कब सुनायेंगे। निश्चयबुद्धि नष्टोमोहा की सीढ़ी है। अच्छा- आज दूसरा ग्रुप आया है। घर के बालक ही मालिक हैं तो घर के मालिक अपने घर में आये हैं ऐसे कहेंगे ना। घर में आये हो या घर से आये हो? अगर उसको घर समझेंगे तो ममत्व जायेगा। लेकिन वह टैम्प्रेरी सेवा स्थान है। घर तो सभी का 'मधुबन' है ना। आत्मा के नाते परमधाम है। ब्राह्मण के नाते मधुबन है। जब कहते ही हो कि हेड आफ़िस माउण्ट आबू है तो जहाँ रहते हो वह क्या हुई? आफ़िस हुई ना! तब तो हेड आफ़िस कहते। तो घर से आये नहीं हो लेकिन घर में आये हो। आफ़िस से कभी भी किसको चेन्ज कर सकते हैं। घर से निकाल नहीं सकते। आफ़िस तो बदली कर सकते। घर समझेंगे तो मेरा-पन रहेगा। सेन्टर को भी घर बना देते। तब मेरा-पन आता है। सेन्टर समझें तो मेरा-पन नहीं रहे। घर बन जाता, आराम का स्थान बन जाता तब मेरा-पन रहता है। तो अपने घर से आये हो। यह जो कहावत है - 'अपना घर दाता का दर'। यह कौन से स्थान के लिए है? वास्तविक दाता का दर अपना घर तो 'मधुबन' है ना। अपने घर में अर्थात् दाता के घर में आये हो। घर अथवा दर कहो बात एक ही है। आने घर में अपने से आराम मिलता है ना। मन का आराम। तन का भी आराम, धन का भी आराम। कमाने के लिए जाना थोड़े ही पड़ता। खाना बनाओ तब खाओ इससे भी आराम मिल जाता, थाली में बना बनाया भोजन मिलता है। यहाँ तो ठाकुर बन जाते हो। जैसे ठाकुरों के मंदिर में घण्टी बजाते है ना। ठाकुर को उठाना होगा, सुलाना होगा तो घण्टी बजाते। भोग लगायेंगे तो भी घण्टी बजायेंगे। आपकी भी घण्टी बजती है ना। आजकल फैशनेबल हैं तो रिकार्ड बजता है। रिकार्ड से सोते हो, फ़िर रिकार्ड से उठते हो तो ठाकुर हो गये ना। यहाँ का ही फ़िर भक्तिमार्ग में कापी करते हैं। यहाँ भी 3, 4 बार भोग लगता है। चैतन्य ठाकुरों को 4 बजे से भोग लगाना शुरू हो जाता है। अमृतवेले से भोग शुरू होता। चैतन्य स्वरूप में भगवान सेवा कर रहा है बच्चों की। भगवान की सेवा तो सब करते हैं, यहाँ भगवान सेवा करता। किसकी? चैतन्य ठाकुरों की। यह निश्चय सदा ही खुशी में झुलाता रहेगा। समझा।

(25.11.1985)

निश्चयबुद्धि अर्थात् नशे का जीवन। निश्चय का प्रमाण नशा और नशे का प्रमाण है 'खुशी'

बापदादा सभी निश्चयबुद्धि बच्चों के निश्चय का प्रत्यक्ष जीवन का स्वरूप देख रहे हैं। निश्चयबुद्धि की विशेषतायें सभी ने सुनी। ऐसा विशेषताओं सम्पन्न निश्चयबुद्धि विजयी रत्न इस ब्राह्मण जीवन वा पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन में सदा निश्चय का प्रमाण, रूहानी नशे में होगा। रूहानी नशा निश्चय का दर्पण स्वरूप है। निश्चय सिर्फ़ बुद्धि में स्मृति तक नहीं लेकिन हर कदम में रूहानी नशे के रूप में, कर्म द्वारा प्रत्यक्ष स्वरूप में स्वयं को भी अनुभव होता, औरों को भी अनुभव होता क्योंकि यह ज्ञान और योगी जीवन है। सिर्फ़ सुनने सुनाने तक नहीं है, जीवन बनाने का है। जीवन में स्मृति अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म सम्बन्ध सब आ जाता है। निश्चयबुद्धि अर्थात् नशे का जीवन। ऐसे रूहानी नशे वाली आत्मा का हर संकल्प सदा नशे से सम्पन्न होगा। संकल्प, बोल, कर्म तीनों से निश्चय का नशा अनुभव होगा। जैसा नशा वैसे खुशी की झलक चेहरे से, चलन से प्रत्यक्ष होगी। निश्चय का प्रमाण नशा और नशे का प्रमाण है 'खुशी'। नशे कितने प्रकार के हैं इसका विस्तार बहुत बड़ा है। लेकिन सार रूप में एक नशा है - अशरीरी आत्मिक स्वरूप का। इसका विस्तार जानते हो? आत्मा तो सभी हैं लेकिन रूहानी नशा तब अनुभव होता जब यह स्मृति में रखते कि - 'मैं कौन-सी आत्मा हूँ?' इसका और विस्तार आपस में निकालना वा स्वयं मनन करना।

दूसरा नशे का विशेष रूप संगमयुग का अलौकिक जीवन है। इस जीवन में भी कौन-सी जीवन है इसका भी विस्तार सोचो। तो एक है - आत्मिक स्वरूप का नशा। दूसरा है - अलौकिक जीवन का नशा। तीसरा है - फ़रिश्तेपन का नशा। फ़रिश्ता किसको कहा जाता है इसका भी विस्तार करो। चौथा है भविष्य का नशा। इन चार ही प्रकार के अलौकिक नशे में से कोई भी नशा जीवन में होगा तो स्वत: ही खुशी में नाचते रहेंगे। निश्चय भी है लेकिन खुशी नहीं है इसका कारण? नशा नहीं है। नशा सहज ही पुराना संसार और पुराना संस्कार भुला देता है। इस पुरुषार्थी जीवन में विशेष विघ्न रूप यह दो बातें हैं। चाहे पुराना संसार वा पुराना संस्कार। संसार में देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थ दोनों आ जाता है। साथ-साथ संसार से भी पुराने संस्कार ज़्यादा विघ्न रूप बनते हैं। संसार भूल जाते हैं लेकिन संस्कार नहीं भूलते। तो संस्कार परिवर्तन करने का साधन है - इन चार के नशे में से कोई भी नशा साकार स्वरूप में हो। सिर्फ संकल्प स्वरूप में नहीं। साकार स्वरुप में होने से कभी भी विघ्न रूप नहीं बनेंगे। अभी तक संस्कार परिवर्तन न होने का कारण यह है। इन नशों को संकल्प रूप में अर्थात् नालेज के रूप में बुद्धि तक धारण किया है। इसलिए कभी भी किसी का पुराना संस्कार इमर्ज होता है तब यह भाषा बोलते हैं, मैं सब समझती हूँ, बदलना है यह भी समझते हैं लेकिन समझ तक नहीं, कर्म अर्थात् जीवन तक चाहिए। जीवन द्वारा परिवर्तन अनुभव में आवे। इसको कहा जाता है - साकार स्वरूप में आना। अभी बुद्धि तक पाइंट्स के रूप में सोचने और वर्णन करने तक है। लेकिन हर कर्म में, सम्पर्क में परिवर्तन दिखाई दे इसको कहा जाता है - साकार रूप में अलौकिक नशा। अभी हर एक नशे को जीवन में लाओ। कोई भी आपके मस्तक तरफ देखे तो मस्तक द्वारा रूहानी नशे की वृत्ति अनुभव हो। चाहे कोई वर्णन करे न करे लेकिन वृत्ति, वायुमण्डल और वायब्रेशन फैलाती है। आपकी वृत्ति दूसरे को भी खुशी के वायुमण्डल में खुशी के वायब्रेशन अनुभव करावे। इसको कहा जाता है नशे में स्थित होना। ऐसे ही दृष्टि से, मुख की मुस्कान से, मुख के बोल से, रूहानी नशे का साकार रूप अनुभव हो। तब कहेंगे नशे में रहने वाले निश्चयबुद्धि विजयी रत्न। इसमें गुप्त नहीं रहना है। कई ऐसी भी चतुराई करते हैं कि हम गुप्त हैं। जैसे कहावत है - 'सूर्य को कभी कोई छिपा नहीं सकता'। कितने भी गहरे बादल हों फ़िर भी सूर्य अपना प्रकाश छोड़ नहीं सकता। सूर्य हटता है वा बादल हटते हैं? बादल आते भी हैं और हट भी जाते हैं लेकिन सूर्य अपने प्रकाश स्वरूप में स्थित रहता है। तो रूहानी नशे वाला भी रूहानी झलक से छिप नहीं सकता। उसके रूहानी नशे की झलक प्रत्यक्ष रूप में अनुभव अवश्य होती है। उनके वायब्रेशन स्वत: ही औरों को आकर्षित करते हैं। रूहानी नशे में रहने वाले के वायब्रेशन स्वयं के प्रति वा औरों के प्रति छत्रछाया का कार्य करते हैं। तो अभी क्या करना है? साकार में आओ। नालेज के हिसाब से नालेजफुल हो गये हो। लेकिन नालेज को साकार जीवन में लाने से नालेजफुल के साथ-साथ सक्सेसफुल, ब्लिसफुल अनुभव करेंगे। अच्छा, फ़िर सुनायेंगे सक्सेसफुल और ब्लिसफुल का स्वरूप क्या होता है ?

(27.11.1985)

निश्चयबुद्धि आत्मा को 'हुआ ही पड़ा है' यह महसूसता सदा रहेगी

जो अनेक बार विजयी आत्मायें हैं, उन्हों की निशानी क्या होगी? उन्हें हर बात बहुत सहज और हल्की अनुभव होगी। जो कल्प-कल्प की विजयी आत्मायें नहीं उन्हें छोटा-सा कार्य भी मुश्किल अनुभव होगा। सहज नहीं लगेगा। हर कार्य करने के पहले स्वयं को ऐसे अनुभव करेंगे जैसे यह कार्य हुआ ही पड़ा है। होगा या नहीं होगा यह क्वेश्चन नहीं उठेगा। हुआ ही पड़ा है यह महसूसता सदा रहेगी। पता है सदा सफलता है ही, विजय है ही - ऐसे निश्चयबुद्धि होंगे। कोई भी बात नई नहीं लगेगी, बहुत पुरानी बात है। इसी स्मृति से स्वयं को आगें बढ़ाते रहेंगे।

(06.01.1986)

अगर जरा भी कोई चिंता है तो निश्चय की कमी है

प्रवृत्ति में रहते सदा न्यारे और बाप के प्यारे हो ना! कभी भी प्रवृत्ति से लगाव तो नहीं लग जाता? अगर कहाँ भी किसी से अटैचमेन्ट है तो वह सदा के लिए अपने जीवन का विघ्न बन जाता है। इसलिए सदा निर्विघ्न बन आगे बढ़ते चलो। कल्प पहले मिसल 'अंगद' बन अचल अडोल रहो। अगंद की विशेषता क्या दिखाई है? ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके। माया निश्चय रूपी पाँव को हिलाने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार से आती है। लेकिन माया हिल जाए आपका निश्चय रूपी पाँव न हिले। माया स्वयं सरेण्डर होती है। आप तो सरेण्डर नहीं होंगे ना! बाप के आगे सरेण्डर होना, माया के आगे नहीं, ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिंता है तो निश्चय की कमी है। कभी किसी बात की थोड़ी सी भी चिंता हो जाती है - उसका कारण क्या होता, ज़रूर किसी न किसी बात के निश्चय में कमी है। चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी हो, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी हो, चाहे बाप में निश्चय की कमी हो। तीनों ही प्रकार के निश्चय में ज़रा भी कमी है तो निश्चिन्त नहीं रह सकते। सबसे बड़ी बीमारी है - 'चिंता'। चिंता में बीमारी की दवाई डाक्टर्स के पास भी नहीं है। टैम्प्रेरी सुलाने की दवाई दे देंगे लेकिन सदा के लिए चिंता नहीं मिटा सकेंगे। चिंता वाले जितना ही प्राप्ति के पीछे दौड़ते हैं उतना प्राप्ति आगे दौड़ लगाती है। इसलिए सदा निश्चय के पाँव अचल रहें। सदा एकबल एक भरोसा - यही पाँव है। निश्चय कहो, भरोसा कहो एक ही बात है। ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।

(13.01.1986)

किसी भी कार्य में सफलता का आधार - 'निश्चय अटल और नशा सम्पन्न'

'सफलता का आधार सदा सहनशक्ति और समाने की शक्ति है, इन विशेषताओं से सफलता सदा सहज और श्रेष्ठ अनुभव होगी।' औरों का भी सुनायें क्या? आज चिटचैट का दिन विशेष मिलने का रहा तो हर एक अपने अनुभव का वर्णन कर रहे थे। अच्छा और किसका सुनेंगे? (विश्व किशोर भाऊ का) वह वैसे भी कम बोलता है लेकिन जो बोलता है वह शक्तिशाली बोलता है। उसका भी एक ही बोल में सारा अनुभव रहा कि किसी भी कार्य में सफलता का आधार - 'निश्चय अटल और नशा सम्पन्न'। अगर निश्चय अटल है तो नशा स्वतः ही औरों को भी अनुभव होता है। इसलिए निश्चय और नशा सफलता का आधार रहा। यह है उसका अनुभव। जैसे साकार बाप को सदा निश्चय और नशा रहा कि मैं भविष्य में विश्व महाराजन बना कि बना। ऐसे विश्वकिशोर को भी यह नशा रहा कि मैं पहले विश्व महाराजन का पहला प्रिन्स हूँ। यह नशा वर्तमान और भविष्य का अटल रहा। तो समानता हो गई ना। जो साथ में रहे उन्होंने ऐसा देखा ना।

(18.01.1986)

परमात्म कार्य सफल हुआ ही पड़ा है ऐसे निश्चय बुद्धि, निश्चित भविष्य को जानने वाले निश्चिन्त आत्मायें हो

आज समर्थ बाप अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। जिन समर्थ आत्माओं ने सबसे बड़े ते बड़ा समर्थ कार्य, विश्व को नया

श्रेष्ठ विश्व बनाने का दृढ़ संकल्प किया है। हर आत्मा को शान्त वा सुखी बनाने का, समर्थ कार्य करने का संकल्प किया है और इसी श्रेष्ठ संकल्प को लेकर दृढ़ निश्चय बुद्धि बन कार्य को प्रत्यक्ष रूप में ला रहे हैं। सभी समर्थ बच्चों का एक ही यह श्रेष्ठ संकल्प है कि यह श्रेष्ठ कार्य होना ही है। इससे भी ज़्यादा यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के निमित्त और निर्माण के कर्म-फिलासफी के अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है। लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं। दुनिया की अन्जान आत्मायें यही सोचती हैं कि - शान्ति होगी, क्या होगा, कैसे होगा! कोई उम्मीद नहीं दिखाई देती। क्या सचमुच होगा! और आप कहते हो, होगा तो क्या लेकिन हुआ ही पड़ा है। क्योंकि नई बात नहीं है। अनेक बार हुआ है और अब भी हुआ ही पड़ा है। निश्चयबुद्धि निश्चित भावी को जानते हो। इतना अटल निश्चय क्यों है? क्योंकि स्व-परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रमाण से जानते हो कि प्रत्यक्ष प्रमाण के आगे और कोई प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं है। साथ-साथ परमात्म कार्य सदा सफल है ही है। यह कार्य आत्माओं, महान आत्माओं वा धर्म आत्माओं का नहीं है। परमात्म कार्य सफल हुआ ही पड़ा है ऐसे निश्चय बुद्धि, निश्चित भविष्य को जानने वाले निश्चिन्त आत्मायें हो। लोग कहते हैं वा डरते हैं कि विनाश होगा और आप निश्चिन्त हो कि नई स्थापना होगी। कितना अन्तर है - असम्भव और सम्भव का। आपके सामने सदा स्वर्णिम दुनिया का स्वर्णिम सूर्य उदय हुआ ही पड़ा है। और उन्हों के सामने है - विनाश की काली घटायें। अभी आप सभी तो समय समीप होने के कारण सदा खुशी के घुँघरू डाल नाचते रहते हो कि आज पुरानी दुनिया है, कल स्वर्णिम दुनिया होगी। आज और कल, इतना समीप पहुँच गये हो।

(20.01.1986)

‘प्रभु-प्रीत बुद्धि विजयन्ति’

सभी रूहानी शक्ति सेना, पाण्डव सेना, रूहानी सेना सदा विजय के निश्चय और नशे में रहते हैं न, और कोई भी सेना जब लड़ाई करती है तो विजय की गैरन्टी नहीं होती है। निश्चय नहीं होता कि - विजय निश्चित ही है। लेकिन आप रूहानी सेना, शक्ति सेना सदा इस निश्चय के नशे में रहते कि न सिर्फ अब के विजयी है लेकिन कल्प-कल्प के विजयी हैं। अपने कल्प पहले के विजय की कथायें भी भक्ति मार्ग में सुनते आये हो। पाण्डवों की विजय की यादगार कथा अभी भी सुन रहे हो। अपने विजय के चित्र अब भी देख रहे हो। भक्ति में सिर्फ अहिंसक के बजाए हिंसक दिखा दिया है। रूहानी सेना को जिस्मानी साधारण सेना दिखा दिया है। अपना विजय का गायन अभी भी भक्तों द्वारा सुन हर्षित होते हो। गायन भी है - ‘प्रभु-प्रीत बुद्धि विजयन्ति’। ‘विपरीत बुद्धि विनशन्ति’। तो कल्प पहले का आपका गायन कितना प्रसिद्ध है! विजय निश्चित होने के कारण निश्चयबुद्धि विजयी हो। इसलिए माला को भी ‘विजय माला’ कहते हैं। तो निश्चय और नशा दोनों हैं ना! कोई भी अगर पूछे तो निश्चय से कहेंगे कि विजय तो हुई पड़ी है। स्वप्न में भी यह संकल्प नही उठ सकता कि पता नहीं विजय होगी वा नहीं, हुई पड़ी है। पास्ट कल्प और भविष्य को भी जानते हो। त्रिकालदर्शी बन उसी नशे से कहते हो। सभी पक्के हो ना! अगर कोई कहे भी कि सोचो, देखो तो क्या कहेंगे? अनेक बार देख चुके हैं। कोई नई बात हो तो सोचें भी और देखें भी। यह तो अनेक बार की बात अब रिपीट कर रहे हैं। तो ऐसे निश्चय बुद्धि ज्ञानी तू आत्मायें योगी तू आत्मायें हो ना!

(27.02.1986)

नशा हो - हम निश्चयबुद्धि पावन आत्मायें हैं

पवित्रता फाउण्डेशन है। पवित्रता को माता कहते हैं और सुख शान्ति उनके बच्चे हैं। तो जहाँ पवित्रता है वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। इसलिए हैपी भी हो। कभी उदास हो नहीं सकते। सदा खुश रहने वाले। जहाँ होली है तो हैपी भी ज़रूर है। पवित्र आत्माओं की निशानी - ‘सदा खुशी’ है। तो बापदादा देख रहे हैं कि कितने निश्चय बुद्धि पावन आत्मायें बैठी हैं।

(22.03.1986)

हर संकल्प में दृढ़ता माना - 'तपस्या'

मुरलियाँ तो बहुत सुनी। अब मुरलीधर बन सदा नाचते और नचाते रहना है। मुरली से - साँप के विष को भी समाप्त कर लेते हैं। तो ऐसा मुरलीधर हो जो किसी का कितना भी कड़वा स्वभाव संस्कार हो - उसको भी वश कर दे अर्थात् उससे मुक्त कर नचा दे। हर्षित बना दे। अभी यह रिजल्ट देखेंगे कि कौन-कौन ऐसे योग्य मुरलीधर बनते हैं। मुरली से भी प्यार है, मुरलीधर से भी प्यार है लेकिन प्यार का सबूत है - जो मुरलीधर की शुभ आशा है, हर बच्चे प्रति वह प्रैक्टिकल में दिखाना। प्यार की निशानी है - जो कहा वह करके दिखाना। ऐसे मास्टर मुरलीधर हो ना! बनना ही है, अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे! करेंगे, यह ख्याल नहीं करो। करना ही है। हर एक यही सोंचे कि हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा! हमको करना ही है। बनना ही है। कल्प की बाजी जीतनी ही है। पूरे कल्प की बात है। तो फर्स्ट डिवीजन मे आना है, यह दृढ़ता धारण करनी है। कोई नई बात कर रहे हो क्या! कितना बार की हुई बात को सिर्फ लकीर के ऊपर लकीर खींच रहे हो! ड्रामा की लकीर खींची हुई है। नई लकीर भी नहीं लगा रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं, सीधी होगी वा नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रालब्ध को सिर्फ बनाते हो। क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है। बाकी नई बात क्या है! यह तो बहुत पुरानी है। हुई पड़ी है। यह है अटल निश्चय। इसको दृढ़ता कहते हैं। इसको तपस्वी मूर्त कहते हैं। हर संकल्प में दृढ़ता माना - 'तपस्या'।

(11.04.1986)

'ड्रामा के ऊपर निश्चयबुद्धि'

सदा अचल हो? कोई भी हलचल हिलाती तो नहीं? कुछ भी होता है, सुनते, देखते थोड़ा भी हलचल में तो नहीं आ जाते? जब 'नथिंग न्यू' है तो हलचल में क्यों आयें? कोई नई बात हो तो हलचल हो। यह 'क्या', 'क्यों' अनेक कल्प हुई है-इसको कहते हैं 'ड्रामा के ऊपर निश्चयबुद्धि'। सर्वशक्तिवान के साथी हैं, इसलिए बेपरवाह बादशाह हैं। सब फिकर बाप को दे दिये तो स्वयं सदा बेफिकर बादशाह। सदा रूहानी खुशबू फैलाते रहो तो सब विघ्न खत्म हो जायेंगे।

(23.01.1987)

निश्चय और नशे के आधार से उड़ती कला में उड़ो

सभी अपने को श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा समझते हो? सदा हर कदम में आगे बढ़ते जा रहे हो? क्योंकि जब बाप के बन गये तो पूरा अधिकार प्राप्त करना बच्चों का पहला कर्तव्य है। सम्पन्न बनना अर्थात् सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त करना। ऐसे स्वयं को सम्पन्न अनुभव करते हो? जब भाग्यविधाता भाग्य बांट रहे हैं, तो पूरा भाग्य लेना चाहिए ना। तो थोड़े में राजी होने वाले हो या पूरा लेने वाले हो? बच्चे अर्थात् पूरा अधिकार लेने वाले। हम कल्प-कल्प के अधिकारी है - यह स्मृति सदा समर्थ बनाते हुए आगे बढ़ाती रहेगी। यह नई बात नहीं कर रहे हो, यह प्राप्त हुआ अधिकार फिर से प्राप्त कर रहे हो। नई बात नहीं है। कई बार मिले हैं और अनेक बार आगे भी मिलते रहेंगे। आदि, मध्य, अन्त तीनों कालों को जानने वाले हैं - यह नशा सदा रहता है? जो भी प्राप्ति हो रही है वह सदा है, अविनाशी है - यह निश्चय और नशा हो तो इसी आधार से उड़ती कला में उड़ते रहेंगे।

(01.10.1987)

निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है

योग-स्थिति अर्थात् प्रयोग करते हुए न्यारी स्थिति। सहज योग की साधना साधनों के ऊपर अर्थात् प्रकृति के ऊपर विजयी हो। ऐसा न हो उसके बिना तो चल सकता लेकिन इसके बिना रह नहीं सकते, इसलिए डगमग स्थिति हो गई... इसको भी न्यारी जीवन नहीं कहेंगे। ऐसी सिद्धि को प्राप्त करो जो आपके सिद्धि द्वारा अप्राप्ति भी प्राप्ति का अनुभव कराये। जैसे स्थापना के आरम्भ में आसक्ति है वा नहीं, उसकी ट्रायल के लिए बीच-बीच में जानबूझकर प्रोग्राम रखते रहे। जैसे, 15 दिन सिर्फ ढ़ोढ़ा और छाछ खिलाई, गेहूँ होते भी यह ट्रायल कराई गई। कैसे भी बीमार 15 दिन इसी भोजन पर चले। कोई भी बीमार नहीं हुआ।

दमा की तकलीफ वाले भी ठीक हो गये ना। नशा था कि बापदादा ने प्रोग्राम दिया है! जब भक्ति में कहते हैं 'विष भी अमृत हो गया', यह तो छाछ थी! निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है। तो ऐसे पेपर भी आयेंगे - सूखी रोटी भी खानी पड़ेगी। अभी तो साधन हैं। कहेंगे - दांत नहीं चलते, हज़म नहीं होता। लेकिन उस समय क्या करेंगे? जब निश्चय, नशा, योग की सिद्धि की शक्ति होती है तो सूखी रोटी भी नर्म रोटी का काम करेगी, परेशान नहीं करेगी। आप सिद्धि-स्वरूप की शान में हो तो कोई भी परेशान नहीं कर सकता है। जब हठयोगियों के आगे शेर बिल्ली बन जाता, सांप खिलौना बन जाता, तो आप सहज राजयोगी, सिद्धि-स्वरूप आत्माओं के लिए यह सब कोई बड़ी बात नहीं। है तो आराम से यूज़ करो लेकिन समय पर धोखा न दे - यह चेक करो। परिस्थिति, स्थिति को नीचे न ले आये। देह के सम्बन्ध से न्यारा होना सहज है लेकिन देह के पदार्थों से न्यारा होना - इसमें बहुत अच्छा अटेन्शन (ध्यान) चाहिए।

(25.10.1987)

श्वाँसो श्वाँस याद और श्वाँसों श्वाँस सेवा हो - इसको कहते हैं बैलेन्स

जैसे याद का अटेन्शन रखते हो कि निरन्तर रहे, सदा याद का लिंक जुटा रहे; वैसे सेवा में भी सदा लिंक जुटा रहे। जैसे याद में भी भिन्न-भिन्न स्थिति का अनुभव करते हो - कभी बीजरूप का, कभी फरिश्तारूप का, कभी मनन का, कभी रूह-रुहान का लेकिन स्थिति भिन्न-भिन्न होते भी याद की सबजेक्ट में निरन्तर याद में गिनते हो। ऐसे यह भिन्न-भिन्न सेवा का रूप हो। लेकिन सेवा के बिना जीवन नहीं। श्वाँसो श्वाँस याद और श्वाँसों श्वाँस सेवा हो - इसको कहते हैं बैलेन्स। तब ही हर समय ब्लैसिंग प्राप्त होने का अनुभव सदा करते रहेंगे और दिल से सदा स्वत: ही यह आवाज निकलेगा कि आशीर्वादों से पल रहे हैं, आशीर्वाद से, उड़ती कला के अनुभव से उड़ रहे हैं। मेहनत से, युद्ध से छुट जायेंगे। 'क्या', 'क्यों', 'कैसे' - इन प्रश्नों से मुक्त हो सदा प्रसन्न रहेंगे। सफलता सदा जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में अनुभव करते रहेंगे। पता नहीं क्या होगा। सफलता होगी वा नही होगी, पता नहीं हम आगे चल सकेंगे वा नहीं चल सकेंगे - यह पता नहीं का संकल्प परिवर्तन हो 'मास्टर त्रिकालदर्शी स्थिति' का अनुभव करेंगे। 'विजय हुई पड़ी है' - यह निश्चय और नशा सदा अनुभव होगा। यही ब्लैसिंग की निशानियाँ हैं।

(06.11.1987)

सदा निश्चय से आगे बढ़ते रहो

हिम्मते बच्चे मददे बाप। बच्चों की हिम्मत पर सदा बाप की मदद पद्मगुणा प्राप्त होती है। बोझ तो बाप के ऊपर है। लेकिन ट्रस्टी बन सदा बाप की याद से आगे बढ़ते रहो। बाप की याद ही छत्रछाया है। पिछला हिसाब सूली है लेकिन बाप की मदद से काँटा बन जाता है। परिस्थितियाँ आनी जरूर हैं क्योंकि सब कुछ यहाँ ही चुक्तु करना है। लेकिन बाप की मदद काँटा बना देती है, बड़ी बात को छोटा बना देती है क्योंकि बड़ा बाप साथ है। सदा निश्चय से आगे बढ़ते रहो। हर कदम में ट्रस्टी। ट्रस्टी अर्थात् सब कुछ तेरा, मेरा-पन समाप्त। गृहस्थी अर्थात् मेरा। तेरा होगा तो बड़ी बात, छोटी हो जायेगी और मेरा होगा तो छोटी बात, बड़ी हो जायेगी। तेरा-पन हल्का बनाता है और मेरा-पन भारी बनाता है। तो जब भी भारी अनुभव करो तो चेक करो कि कहाँ मेरा-पन तो नहीं? मेरे को तेरे में बदली कर दो तो उसी घड़ी हल्के हो जायेंगे, सारा बोझ एक सेकेण्ड में समाप्त हो जायेगा।

सदा अपने को बाप की छत्रछाया में रहने वाली विशेष आत्माएं अनुभव करते हो? जहाँ बाप की छत्रछाया है, वहाँ सदा माया से सेफ रहेंगे। छत्रछाया के अन्दर माया आ नहीं सकती। मेहनत से स्वत: ही दूर हो जायेंगे। सदा मौज में रहेंगे। क्योंकि जब मेहनत होती है, तो मेहनत मौज अनुभव नहीं कराती। जैसे, बच्चों की पढ़ाई जब होती है तो पढ़ाई में मेहनत होती है ना। जब इम्तिहान के दिन होते हैं तो बहुत मेहनत करते हैं, मौज से खेलते नहीं हैं। और जब मेहनत खत्म हो जाती है, इम्तिहान खत्म हो जाते हैं तो मौज करते हैं। तो जहाँ मेहनत है, वहाँ मौज नहीं। जहाँ मौज है, वहाँ मेहनत नहीं। छत्रछाया में रहने वाले अर्थात् सदा मौज में रहने वाले। क्योंकि यहाँ पढ़ाई ऊंची पढ़ते हो लेकिन ऊंची पढ़ाई होते हुए भी निश्चय है कि हम विजयी हैं ही, पास हुए पड़े हैं। इसलिये मौज में रहते हैं। कल्प-कल्प की पढ़ाई है, नयी बात नहीं है। तो सदा मोज् में रहो और दूसरों को भी मौज

में रहने का सन्देश देते रहो, सेवा करते रहो। क्योंकि सेवा का ही फल इस समय भी और भविष्य में भी खाते रहेंगे। सेवा करेंगे तब तो फल मिलेगा।

(10.11.1987)

निश्चय हो - मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ

संगमयुगी स्वराज्य अधिकारी आत्मायें बने हो? हर कर्मेन्द्रिय के ऊपर अपना राज्य है? कोई कर्मेन्द्रिय धोखा तो नहीं देती है? कभी संकल्प में भी हार तो नहीं होती है? कभी व्यर्थ संकल्प चलते हैं? 'स्वराज्य अधिकारी आत्मायें हैं' - इस नशे और निश्चय से सदा शक्तिशाली बन मायाजीत सो जगतजीत बन जाते हैं। स्वराज्य अधिकारी आत्मायें सहजयोगी, निरन्तर योगी बन सकते हैं। स्वराज्य अधिकारी के नशे और निश्चय से आगे बढ़ते चलो। मातायें नष्टोमोहा हो या मोह है? पाण्डवों को कभी क्रोध का अंश मात्र जोश आता है? कभी कोई थोड़ा नीचे-ऊपर करे तो क्रोध आयेगा? थोड़ा सेवा का चांस कम मिले, दूसरे को ज्यादा मिले तो बहन पर थोड़ा-सा जोश आयेगा कि यह क्या करती है? देखना, पेपर आयेगा। क्योंकि थोड़ा भी देह अभिमान आया तो उमसें जोश या क्रोध सहज आ जाता है। इसलिए सदा स्वराज्य अधिकारी अर्थात् सदा ही निरअहंकारी, सदा ही निर्माण बन सेवाधारी बनने वाले। मोह का बन्धन भी खत्म।

(22.11.1987)

'निश्चय की निशानी है नशा और नशे की निशानी है खुशी'

अनेक बार की विजयी आत्मायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो? विजयी बनना मुश्किल लगता है या सहज? क्योंकि जो सहज बात होती है वह सदा हो सकती है, मुश्किल बात सदा नहीं होती। जो अनेक बार कार्य किया हुआ होता है, वह स्वत: ही सहज हो जाता है। कभी कोई नया काम किया जाता है तो पहले मुश्किल लगता है लेकिन जब कर लिया जाता है तो वही मुश्किल काम सहज लगता है। तो आप सभी इस एक बार के विजयी नहीं हो, अनेक बार के विजयी हो। अनेक बार के विजयी अर्थात् सदा सहज विजय का अनुभव करने वाले। जो सहज विजयी हैं उनको हर कदम में ऐसे ही अनुभव होता कि यह सब कार्य हुए ही पड़े हैं, हर कदम में विजयी हुई पड़ी है। होगी या नहीं - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। जब निश्चय है कि अनेक बार के विजयी हैं तो होगी या नहीं होगी - यह क्वेश्चन नहीं। 'निश्चय की निशानी है नशा और नशे की निशानी है खुशी'। जिसको नशा होगा वह सदा खुशी में रहेगा। हद के विजयी में भी कितनी खुशी होती है। जब भी कहाँ विजय प्राप्त करते हैं, तो बाजे-गाजे बजाते हैं ना। तो जिसको निश्चय और नशा है तो खुशी जरूर होगी। वह सदा खुशी में नाचता रहेगा। शरीर से तो कोई नाच सकते हैं, कोई नहीं भी नाच सकते हैं लेकिन मन में खुशी का नाचना - यह तो बेड पर बीमार भी नाच सकता है। कोई भी हो, यह नाचना सबके लिए सहज है। क्योंकि विजयी होना अर्थात् स्वत: खुशी के बाजे बजना। जब बाजे बजते हैं तो पांव आपेही चलते रहते हैं। जो नहीं भी जानते होंगे, वह भी बैठे-बैठे नाचते रहेंगे। पांव हिलेगा, कांध हिलेगा। तो आप सभी अनेक बार के विजयी हो - इसी खुशी में सदा आगे बढ़ते चलो। दुनिया में सबको आवश्यकता ही है खुशी की। चाहे सब प्राप्तियां हों लेकिन खुशी की प्राप्ति नहीं है। तो जो अविनाशी खुशी की आवश्यकता दुनिया को है, वह खुशी सदा बांटते रहो।

(27.11.1987)

निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है

कर्मातीत अर्थात् देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थ, लौकिक चाहे अलौकिक दोनों सम्बन्ध से, बन्धन से अतीत अर्थात् न्यारे। भल सम्बन्ध शब्द कहने में आता है - देह का सम्बन्ध, देह के सम्बन्धियों का सम्बन्ध, लेकिन देह में वा सम्बन्ध में अगर अधीन हैं तो सम्बन्ध भी बन्धन बन जाता है। सम्बन्ध शब्द न्यारा और प्यारा अनुभव कराने वाला है। आज की सर्व आत्माओं का सम्बन्ध, बन्धन में सदा स्वयं को किसी-न-किसी प्रकार से परेशान करता रहेगा, दु:ख की लहर अनुभव करायेगा, उदासी का

अनुभव करायेगा। विनाशी प्राप्तियाँ होते भी अल्पकाल के लिए वह प्राप्तियों का सुख अनुभव करेगा। सुख के साथ-साथ अभी-अभी प्राप्तिस्वरूप का अनुभव होगा, अभी-अभी प्राप्तियाँ होते भी अप्राप्ति स्थिति का अनुभव होगा। भरपूर होते भी अपने को खाली-खाली अनुभव करेगा। सब कुछ होते हुए भी 'कुछ और चाहिए' - ऐसे अनुभव करता रहेगा और जहाँ 'चाहिए-चाहिए' है वहाँ कभी भी सन्तुष्टता नहीं रहेगी। मन भी राज़ी, तन भी राज़ी रहे, दूसरे भी राज़ी रहें - यह सदा हो नहीं सकता। कोई न कोई बात पर स्वयं से नाराज़ या दूसरों से नाराज़ न चाहते भी होता रहेगा। क्योंकि नाराज़ अर्थात् न राज़ अर्थात् राज़ को नहीं समझा। अधिकारी बन कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने का राज़ नहीं समझा। तो नाराज़ ही होगा ना। कर्मातीत कभी नाराज़ नहीं होगा क्योंकि वह कर्मसम्बन्ध और कर्मबन्धन के राज को जानता है। कर्म करो लेकिन वशीभूत होकर नहीं, अधिकारी मालिक होकर करो। कर्मातीत अर्थात् अपने पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के बन्धन से भी मुक्त। चाहे पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप तन का रोग हो, मन के संस्कार अन्य आत्माओं के संस्कारों से टक्कर भी खाते हों लेकिन कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन चुक्तु करायेंगे। कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तु करना - यह है कर्मातीत बनने की निशानी। योग से कर्मभोग को मुस्कराते हुए सूली से कांटा कर भस्म करना अर्थात् कर्मभोग को समाप्त करना है। व्याधि का रूप न बने। जो व्याधि का रूप बन जाता है वह स्वयं सदा व्याधि का ही वर्णन करता रहेगा। मन में भी वर्णन करेगा तो मुख से भी वर्णन करेगा। दूसरी बात - व्याधि का रूप होने कारण स्वयं भी परेशान होगा और दूसरों को भी परेशान करेगा। वह चिल्लायेगा और कर्मातीत चला लेगा। कोई को थोड़ा-सा दर्द होता है तो भी चिल्लाते बहुत हैं और कोई को ज्यादा दर्द होते भी चलाते हैं। कर्मातीत स्थिति वाला देह के मालिक होने के कारण कर्मभोग होते हुए भी न्यारा बनने का अभ्यासी है। बीच-बीच में अशरीरी-स्थिति का अनुभव बीमारी से परे कर देता है। जैसे साइन्स के साधन द्वारा बेहोश कर देते हैं तो दर्द होते भी भूल जाते हैं, दर्द फील नहीं करते हैं क्योंकि दवाई का नशा होता है। तो कर्मातीत अवस्था वाले अशरीरी बनने के अभ्यासी होने कारण बीच-बीच में यह रूहानी इन्जेक्शन लग जाता है। इस कारण सूली से कांटा अनुभव होता है। और बात - फालो फादर होने के कारण विशेष आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्ष फल बाप से विशेष दिल की दुआयें प्राप्त होती हैं। एक अपना अशरीरी बनने का अभ्यास, दूसरा आज्ञाकारी बनने का प्रत्यक्षफल बाप की दुआयें, वह बीमारी अर्थात् कर्मभोग को सूली से कांटा बना देती हैं। कर्मातीत श्रेष्ठ आत्मा कर्मभोग को, कर्मयोग की स्थिति में परिवर्तन कर देगी। तो ऐसा अनुभव है वा बहुत बड़ी बात समझते हो? सहज है वा मुश्किल है? छोटी को बड़ी बात बनाना या बड़ी को छोटी बात बनाना - यह अपनी स्थिति के ऊपर है। परेशान होना वा अपने अधिकारीपन की शान में रहना - अपने ऊपर है। क्या हो गया वा जो हुआ वह अच्छा हुआ - यह अपने ऊपर है। यह निश्चय बूरे को भी अच्छे में बदल सकता है क्योंकि हिसाब-किताब चुक्तु होने के कारण वा समय प्रति समय प्रैक्टिकल पेपर ड्रामा अनुसार होने के कारण कोई बातें अच्छे रूप में सामने आयेंगी और कई बार अच्छा रूप होते हुए भी बाहर का रूप नुकसान वाला होगा वा जिसको आप कहते हो या इस रूप से अच्छा नहीं हुआ। बातें आयेंगी अभी तक भी ऐसे रूप की बातें आती रही हैं और आती भी रहेंगी। लेकिन नुकसान के पर्दे के अन्दर फायदा छिपा हुआ होता है। बाहर का पर्दा नुकसान का दिखाई देता है, अगर थोड़ा-सा समय धैर्यवत अवस्था, सहनशील स्थिति से अन्तर्मुखी हो देखो तो बाहर के पर्दे के अन्दर जो छिपा हुआ है आपको वही दिखाई देगा, ऊपर का देखते भी नहीं देखेंगे। होलीहंस हो ना? जब वह हंस कंकड़ और रत्न को अलग कर सकता है तो होलीहंस अपने छिपे हुए फायदे को ले लेगा, नुकसान के बीच फायदे को ढूँढ लेगा। समझा? जल्दी घबरा जाते हैं ना। इससे क्या होता? जो अच्छा सोचा जाता वह भी घबराने के कारण बदल जाता है। तो घबराओ नहीं। कर्म को देख कर्म के बन्धन में नहीं फँसो। क्या हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहिए, मेरे से ही क्यों होता, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है - यह रस्सियाँ बांधते जाते हो। यह संकल्प ही रस्सियां हैं। इसलिए कर्म के बन्धन में आ जाते हो। व्यर्थ संकल्प ही कर्मबन्धन की सूक्ष्म रस्सियां हैं। कर्मातीत आत्मा कहेगी - जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा। यह बन्धन को काटने की कैंची का काम करती है। बन्धन कट गये तो 'कर्मातीत' हो गये ना। कल्याणकारी बाप के बच्चे होने के कारण संगमयुग का हर सेकण्ड कल्याणकारी है। हर सेकण्ड का आपका धन्धा ही कल्याण करना है, सेवा ही कल्याण करना है। ब्राह्मणों का आक्यूपेशन (धंधा) ही है विश्व-परिवर्तक, विश्व-कल्याणी। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मा के लिए हर घड़ी निश्चित कल्याणकारी है। समझा?

(18.12.1987)

निश्चय की विशेष निशानियाँ - निश्चय की परख तूफान के समय होती है

आज बापदादा अपने चारों ओर के निश्चयबुद्धि विजयी बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे के निश्चय की निशानियाँ देख रहे हैं। निश्चय की विशेष निशानियाँ - (1) जैसा निश्चय वैसा कर्म, वाणी में हर समय चेहरे पर रूहानी नशा दिखाई देगा। (2) हर कर्म, संकल्प में विजय सहज प्रत्यक्षफल के रूप में अनुभव होगी। मेहनत के रूप में नहीं, लेकिन प्रत्यक्षफल वा अधिकार के रूप में विजय अनुभव होगी। (3) अपने श्रेष्ठ भाग्य, श्रेष्ठ जीवन वा बाप और परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा एक परसेन्ट भी संशय संकल्पमात्र भी नहीं होगा। (4) क्वेश्चन मार्क समाप्त, हर बात में बिन्दु बन बिन्दु लगाने वाले होंगे। (5) निश्चयबुद्धि हर समय अपने को बेफिकर बादशाह सहज स्वत: अनुभव करेंगे अर्थात् बार-बार स्मृति लाने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मैं बादशाह हूँ, यह कहने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी लेकिन सदा स्थिति के श्रेष्ठ आसन वा सिंहासन पर स्थित हैं ही। जैसे लौकिक जीवन में कोई भी परिस्थिति प्रमाण स्थिति बनती है। चाहे दु:ख की, चाहे सुख की, उस स्थिति की अनुभूति में स्वत: ही रहते हैं, बार-बार मेहनत नहीं करते - मैं सुखी हूँ वा मैं दु:खी हूँ। बेफिकर बादशाह की स्थिति का अनुभव स्वत: सहज होता है। अज्ञानी जीवन में परिस्थितियों प्रमाण स्थिति बनती है लेकिन शक्तिशाली अलौकिक ब्राह्मण जीवन में परिस्थिति प्रमाण स्थिति नहीं बनती लेकिन बेफिकर बादशाह की स्थिति वा श्रेष्ठ स्थिति बापदादा द्वारा प्राप्त हुई नॉलेज की लाइट-माइट द्वारा, याद की शक्ति द्वारा जिसको कहेंगे 'ज्ञान और योग की शक्तियों का वर्सा' बाप द्वारा मिलता है। तो ब्राह्मण जीवन में बाप के वर्से द्वारा वा सतगुरू के वरदान द्वारा वा भाग्यविधाता द्वारा प्राप्त हुए श्रेष्ठ भाग्य द्वारा स्थिति प्राप्त होती है। अगर परिस्थिति के आधार पर स्थिति है तो शक्तिशाली कौन हुआ? परिस्थिति पॉवरफुल हो जायेगी ना। और परिस्थिति के आधार पर स्थिति बनाने वाला कभी भी अचल, अडोल नहीं रह सकता। जैसे अज्ञानी जीवन में अभी-अभी देखो बहुत खुशी में नाच रहे हैं ओर अभी-अभी उल्टे सोये हुए हैं। तो अलौकिक जीवन में ऐसी हलचल वाली स्थिति नहीं होती। परिस्थिति के आधार पर नहीं लेकिन अपने वर्से और वरदान के आधार पर वा अपनी श्रेष्ठ स्थिति के आधार पर परिस्थिति को परिवर्तन करने वाला होगा। तो निश्चय बुद्धि इस कारण सदा बेफिकर बादशाह है। क्योंकि फिकर होता है कोई अप्राप्ति वा कमी होने के कारण। अगर सर्व प्राप्तिस्वरूप है, मास्टर सर्वशक्तिवान है तो फिकर किस बात का रहा?

(6) निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा बाप पर बलिहार जाने वाले। बलिहार अर्थात् सर्वन्श समर्पित। सर्व वंश सहित समर्पित। चाहे देह भान में लाने वाले विकारों का वंश, चाहे देह के सम्बन्ध का वंश, चाहे देह के विनाशी पदार्थों की इच्छाओं का वंश। सर्व वंश में यह सब आ जाता है। सर्वन्श समर्पित वा सर्वन्श त्यागी एक ही बात है। समर्पित होना इसको नहीं कहा जाता कि मधुबन में बैठ गये वा सेवाकेन्द्रों पर बैठ गये। यह भी एक सीढ़ी है जो सेवा अर्थ अपने को अर्पण करते हैं लेकिन 'सर्वन्श अर्पित' - यह सीढ़ी की मंजिल है। एक सीढ़ी चढ़ गये लेकिन मंजिल पर पहूँचने वाले निश्चय बुद्धि की निशानी है - तीनों ही वंश सहित अर्पित। तीनों ही बातें स्पष्ट जान गये ना। वंश तब समाप्त होता है जब स्वप्न वा संकल्प में भी अंश मात्र नहीं। अगर अंश है तो वंश पैदा हो ही जायेगा। इसलिए सर्वन्श त्यागी की परिभाषा अति गुह्य है। यह भी कभी सुनायेंगे।

(7) निश्चयबुद्धि सदा बेफिकर, निश्चिन्त होगा। हर बात में विजय प्राप्त होने के नशे में निश्चित अनुभव करेगा। तो निश्चय, निश्चिन्त और निश्चित - यह हर समय अनुभव करायेगा।

(8) वह सदा स्वयं भी नशे में रहेंगे औरउनके नशे को देख दूसरों को भी यह रूहानी नशा अनुभव होगा। औरों को भी रूहानी नशे में बाप की मदद से स्वयं की स्थिति से अनुभव करायेगा।

निश्चयबुद्धि की वा रूहानी नशे में रहने वाले के जीवन की विशेषतायें क्या होंगी? पहली बात - जितना ही श्रेष्ठ नशा उतना ही निमित्त भाव हर जीवन के चरित्र में होगा। निमित्त भाव की विशेषता के कारण निर्माण बुद्धि। बुद्धि पर ध्यान देना - जितनी निर्माण बुद्धि होगी उतनी निर्माण, नव निर्माण कहते हो ना। तो नव निर्माण करने वाली बुद्धि होगी। तो निर्माण भी होंगे, निर्मान भी होंगे। जहाँ यह विशेषतायें हैं उसको ही कहा जाता है - निश्चयबुद्धि विजयी। निमित्त, निर्मान और निर्माण। निश्चयबुद्धि की भाषा क्या होगी? निश्चयबुद्धि की भाषा में सदा मधुरता तो कॉमन बात है लेकिन उदारता होगी। उदारता का अर्थ है सर्व आत्माओं के प्रति आगे बढ़ाने की उदारता होगी। 'पहले आप', 'मैं-मैं' नहीं। उदारता अर्थात् दूसरे को आगे रखना। जैसे ब्रह्मा बाप ने सदैव पहले जगदम्बा वा बच्चों को रखा - मेरे से भी तीखी जगदम्बा है, मेरे से भी तीखे यह बच्चे हैं। यह उदारता की भाषा है। और जहाँ उदारता है, स्वयं के प्रति आगे रहने की इच्छा नहीं है, वहाँ ड्रामा अनुसार स्वत: ही मनइच्छित फल प्राप्त हो ही

जाता है। जितना स्वयं इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रहते, उतना बाप और परिवार अच्छा, योग्य समझ उसको ही पहले रखते हैं। तो 'पहले आप' मन से कहने वाले पीछे रह नहीं सकते। वह मन से 'पहले आप' कहता तो सर्व द्वारा 'पहले आप' हो ही जाता है। लेकिन इच्छा वाला नहीं। तो निश्चयबुद्धि की भाषा सदा उदारता वाली भाषा, सन्तुष्टता की भाषा, सर्व के कल्याण की भाषा। ऐसी भाषा वाले को कहेंगे - 'निश्चयबुद्धि विजयी'। निश्चयबुद्धि तो सभी हो ना? क्योंकि निश्चय ही फाउन्डेशन है।

जब परिस्थितियों का, माया का, संस्कारों का, भिन्न-भिन्न स्वभावों का जब तूफान आता है तब मालूम पड़ता है कि निश्चय का फाउन्डेशन कितना मजबूत है। जैसे इस पुरानी दुनिया में भिन्न-भिन्न प्रकार के तूफान आते हैं ना। कभी वायु का, कभी समुद्र का... ऐसे यहाँ भी भिन्न-भिन्न प्रकार के तूफान आते हैं। तूफान क्या करता है? पहले उड़ाता है फिर फेंकता है। तो यह तूफान भी पहले तो अपनी तरफ मौज में उड़ाते हैं। अल्पकाल के नशे में ऊंचे ले जाते हैं। क्योंकि माया भी जान गई है कि बिना प्राप्ति यह मेरी तरफ होने वाले नहीं है। तो पहले आर्टीफीशल प्राप्ति में ऊपर उड़ाती है। फिर नीचे गिरती कला में ले आती है। चतुर है। तो निश्चयबुद्धि की नज़र त्रिनेत्री होती है, तीसरे नेत्र से तीनों कालों को देख लेते हें, इसलिए कभी धोखा नहीं खा सकते। तो निश्चय की परख तूफान के समय होती है। जैसे तूफान बड़े-बड़े पुराने वृक्ष के फाउन्डेशन को उखाड़ लेते हैं। तो यह माया के तूफान भी निश्चय के फाउन्डेशन को उखाडने की कोशिश करते हैं। लेकिन रिजल्ट में उखड़ते कम हैं, हिलते ज्यादा हैं। हिलने से भी फाउन्डेशन कच्चा हो जाता है। तो ऐसे समय पर अपने निश्चय के फाउन्डेशन को चेक करो। वैसे कोई से भी पूछेंगे - निश्चय पक्का है? तो क्या कहेंगे? बहुत अच्छा भाषण करेंगे। अच्छा भी है निश्चय में रहना। लेकिन समय पर अगर निश्चय हिलता भी है तो निश्चय का हिलना अर्थात् जन्म-जन्म की प्रालब्ध से हिलना। इसलिए तूफानों के समय चेक करो - कोई हद का मान-शान न दे वा व्यर्थ संकल्पों के रुप में माया का तूफान आये, जो चाहना रखते हो वह चाहना अर्थात् इच्छा पूर्ण न हो, ऐसे टाइम पर जो निश्चय है कि - 'मैं समर्थ बाप की समर्थ आत्मा हूँ' - वह याद रहता है वा व्यर्थ समर्थ के ऊपर विजयी हो जाता है? अगर व्यर्थ विजय प्राप्त कर लेता है तो निश्चय का फाउन्डेशन हिलेगा ना। समर्थ के बजाए अपने को कमजोर आत्मा अनुभव करेगा। दिलशिकस्त हो जायेंगे। इसलिए कहते हैं कि तूफान के समय चेक करो। हद का मान-शान, 'मैं-पन' - रूहानी शान से नीचे ले आता है। हद की कोई भी इच्छा - इच्छा मात्रम् अविद्या के निश्चय से नीचे ले आते हैं। तो निश्चय का अर्थ यह नहीं है कि मैं शरीर नहीं, मैं आत्मा हूँ। लेकिन कौनसी आत्मा हूँ! वह नशा, वह स्वमान समय पर अनुभव हो, इसको कहते हैं - 'निश्चयबुद्धि विजयी'। कोई पेपर है ही नहीं और कहे - मैं तो पास विद् ऑनर हो गया, तो कोई उसको मानेगा? सर्टीफिकेट चाहिए ना। कितना भी कोई पास हो जाए, डिग्री ले लेवे लेकिन जब तक सर्टीफिकेट नहीं मिलता है तो वैल्यू नहीं होती। पेपर के समय पेपर दे पास हो सर्टीफिकेट ले - बाप से, परिवार से, तब उसको कहेंगे 'निश्चयबुद्धि विजयी'। समझा? तो फाउन्डेशन को भी चेक करते रहो। निश्चयबुद्धि की विशेषता सुनी ना। जैसा समय वैसे रूहानी नशा जीवन में दिखाई दे। सिर्फ अपना मन खुश न हो लेकिन लोग भी खुश हों। सभी अनुभव करें कि हाँ, यह नशे में रहने वाली आत्मा है। सिर्फ मनपसन्द नहीं लेकिन लोकपसन्द, बाप पसन्द। इसको कहते हैं 'विजयी'।

(27.12.1987)

ब्रह्मा बाप और निश्चय का पेपर

लक्ष्य और लक्षण समान होना - यही समान बनना है। इसके लिए जैसे ब्रह्मा बाप ने पहला कदम हिम्मत का कौन-सा उठाया जिस कदम से ही पद्मापद्म भाग्यवान आदि से अनुभव किया? पहला कदम हिम्तत का - सब बात में समर्पणता। सब कुछ समर्पण किया। कुछ सोचा नहीं कि क्या होगा, कैसे होगा। एक सेकण्ड में बाप की श्रेष्ठ मत प्रमाण बाप ने ईशारा दिया, बाप का ईशारा और ब्रह्मा का कर्म वा कदम। इसको कहते हैं हिम्मत का पहला कदम। तन को भी समर्पण किया। मन को भी सदा मन्मनाभव की विधि से सिद्धिस्वरुप बनाया। इसलिए मन अर्थात् हर संकल्प सिद्ध अर्थात् सफलता स्वरूप बनें। धन को बिना कोई भविष्य की चिंता के निश्चित बन धन समर्पित कि या क्योंकि निश्चय था कि यह देना नहीं है लेकिन पद्मगुणा लेना है। ऐसे सम्बन्ध को भी समर्पित किया अर्थात् लौकिक को अलौकि सम्बन्ध में परिवर्तन किया। छोड़ा नहीं, कल्याण किया परिवर्तन किया। मैं-पन की बुद्धि, अभिमान की बुद्धि समर्पित की। इसलिए सदा तन, मन, बुद्धि से निर्मल, शीतल सुखदाई बन गये। कैसे

भी लौकिक परिवार से वा दुनिया की अन्जान आत्माओं से परिस्थितियाँ आई लेकिन संकल्प में भी स्वप्न में भी कभी संशय के सूक्ष्म स्वरुप 'संकल्पमात्र' की हलचल में नहीं आये।

ब्रह्मा की विशेष इस बात की कमाल रही जो आप सबके आगे साकार रूप में ब्रह्मा बाप एग्जैम्पल था लेकिन ब्रह्मा के आगे कोई साकार एग्जैम्पल नहीं था। सिर्फ अटल निश्चय, बाप की श्रीमत का आधार रहा। आप लोगों के लिए तो बहुत सहज है! और जितना जो पीछे आये हैं, उनके लिए और सहज है! क्योंकि अनेक आत्माओं के परिवर्तन की श्रेष्ठ जीवन आपके आगे एग्जैम्पल है। यह करना है, बनना है - क्लीयर है। इसलिए, आप लोगों को 'क्यूं, क्या' का क्वेश्चन उठने का मार्जिन नहीं है। सब देख रहे हो। लेकिन ब्रह्मा के आगे क्वेश्चन उठने की मार्जिन थी। क्या करना है, आगे क्या होना है, राइट कर रहा हूँ वा रांग कर रहा हूँ - यह संकल्प उठना सम्भव था लेकिन सम्भव को असम्भव बनाया। एक बल एक भरोसा - इसी आधार से निश्चयबुद्धि नम्बरवन विजयी बन गये। इसी समर्पणता के कारण बुद्धि सदा हल्की रही, बुद्धि पर बोझ नहीं रहा। मन निश्चिन्त रहा। चेहरे पर सदा ही बेफिकर बादशाह के चिन्ह स्पष्ट देखे। 350 बच्चे और खाने के लिए आटा नहीं और टाइम पर बच्चों को खाना खिलाना है! तो सोचो, ऐसी हालत में कोई बेफिकर रह सकता हैं एक बजे बेल (घन्टी) बजना है और 11.00 बजे तक आटा नहीं, कौन बेफिकर रह सकता? ऐसी हालत में भी हर्षित, अचल रहा। यह बाप की जिम्मेवारी है, मेरी नहीं है, मैं बाप का तो बच्चे भी बाप के हैं, मैं निमित्त हूँ - ऐसा निश्चय और निश्चिन्त कौन रह सकता? मन-बुद्धि से समर्पित आत्मा। अगर अपनी बुद्धि चलाते कि पता नहीं क्या होग, सब भूखे तो नहीं रह जायेंगे, यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा - ऐसे व्यर्थ संकल्प वा संशय की मार्जिन होते हुए भी समर्थ संकल्प चले कि सदा बाप रक्षक है, कल्याणकारी है। यह विशेषता है समर्पणता की। तो जैसे ब्रह्मा बाप ने समर्पण हाने से पहला कदम 'हिम्मत' का उठाया, ऐसे फालो फादर करो। निश्चय की विजय अवश्य होती है। तो टाइम पर आटा भी आ गया, बेल भी बज गया और पास हो गये। इसको कहते हैं क्वेश्चन मार्क अर्थात् टेढ़ा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। फुलस्टाप। इसी विधि से ही सहज भी होगा और सिद्धि भी प्राप्त होगी। तो यह भी ब्रह्मा की कामल। आज पहला एक कदम सुनाया है। फिकर के बोझ से भी बेफिकर बन जाओ। इसको की कहा जाता है स्नेह का रिटर्न करना।

(22.01.1988)

अपने में निश्चय रख उड़ते चलो

बाप का स्नेह नम्बरवार होते भी सबसे नम्बरवन है। कभी भी यह नहीं समझना कि मेरे से बाप का प्यार कम है, और किसी से ज्यादा है। नहीं। सबसे ज्यादा है। मुख के बोल में कभी किसी से ज्यादा भी बोल लेते हैं, कभी कम भी होता। लेकिन दिल का प्यार बोल में नहीं बंटता है। बाप की नजरों में हर एक बच्चा नम्बरवन है। अभी नम्बर आउट कहाँ हुए हैं? जब तक आउट हो, तब तक हर एक नम्बरवन है, कोई भी नम्बरवन हो सकता है। सुनाया ना - नम्बरवन तो ब्रह्मा सदा है ही। लेकिन फर्स्ट डिवीजन - बाप के साथ फर्स्ट नम्बर में आना अर्थात् फर्स्ट डिवीजन। उन्हों को भी नम्बरवन कहेंगे। तो जब तक फाइनल रिजल्ट आउट नहीं हुई है, तब तक बापदादा चाहे जानते भी है कि वर्तमान समय के प्रमाण लास्ट हैं लेकिन फिरभी लास्ट नहीं समझते। कभी भी लास्ट सो फस्ट बन सकता है, मार्जिन है। कभी-कभी क्या होता है - जो बहुत तेज चलते हैं, वह नजदीक टाइम पर थक जाते हैं; और जो धीरे-धीरे चलते हैं, कभी रुकते नहीं, तरीके से चलते हैं। तो वह रुक जाते हैं और वह पहुँच जाते हैं। इसलिए अभी बाप की नजर में सब नम्बरवन हैं। जब रिजल्ट आउट होगी, तब कहेंगे - यह लास्ट है, यह फर्स्ट है। अभी नहीं कह सकते। इसलिए सिर्फ अपने में निश्चय रख उड़ते चलो।

(23.03.1988)

निश्चय बुद्धि हैं उनकी बुद्धि में यह निश्चित रहता है कि मैं विजयी वना था और सदा ही बनेंगे

यह अभ्यास चलते-फिरते, बीच-बीच में करते रहो। कोई भी संकल्प न आये, फुलस्टॉप कहा और स्थित हो गये। क्योंकि लास्ट पेपर अचानक आना है। अचानक के कारण ही तो नम्बर बनेंगे ना। लेकिन होना एक सेकण्ड में है। तो कितना अभ्यास चाहिए? अगर अभी से नष्टोमोहा हैं, मेरा-मेरा समाप्त है तो फिर मुश्किल नहीं है, सहज है। तो सभी पास होने वाले हो ना! जो

निश्चय बुद्धि हैं उनकी बुद्धि में यह निश्चित रहता है कि मैं विजयी बना था, बनेंगे और सदा ही बनेंगे। बनेंगे या नहीं बनेंगे, यह क्वेश्चन नहीं होता है। तो ऐसे बुद्धि में निश्चित है कि हम ही विजयी हैं? लेकिन बहुतकाल का अभ्यास ज़रूर चाहिए। अगर उस समय कोशिश करेंगे, बहुतकाल का अभ्यास नहीं होगा तो मुश्किल हो जायेगा। बहुतकाल का अभ्यास अन्त में मदद देगा। **(15.11.1989)**

'बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ' - यह स्मृति रहे तो बेफिकर वा निश्चिंत जीवन अनुभव करेंगे

चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - ऐसे निमित्त बन कर करने वाले बेपरवाह बादशाह होते हैं। 'मैं कर रहा हूँ' - यह भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते। लेकिन 'बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ' - यह स्मृति रहे तो बेफिकर वा निश्चिंत जीवन अनुभव करेंगे। कोई चिंता नहीं। कल क्या होगा - उसकी भी चिंता नहीं। कभी यह थोड़ी-सी चिंता रहती है कि कल क्या होगा, कैसे होगा? पता नहीं विनाश कब होगा, क्या होगा? बच्चों का क्या होगा? पोत्रों-धोत्रों का क्या होगा - यह चिंता रहती है? बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि - जो हो रहा है वह अच्छा, और जो होने वाला है वह और भी बहुत अच्छा होगा। क्योंकि कराने वाला अच्छे-ते-अच्छा है ना! इसको कहते हैं - निश्चयबुद्धि विजयी। ऐसे बने हो या सोच रहे हो? बनना तो है ही ना! इतनी बड़ी राजाई मिल जाए तो सोचने की क्या बात है? अपना अधिकार कोई छोड़ता है? झोंपड़ी वाले भी होंगे, थोड़ी-सी मिलकियत भी होगी - तो भी नहीं छोड़ेंगे। यह तो कितनी बड़ी प्राप्ति है! तो मेरा अधिकार है - इस स्मृति से सदा अधिकारी बने उड़ते चलो। यही वरदान याद रखना कि - 'स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।' मेहनत करके पाने वाले नहीं, अधिकार है।

(01.12.1989)

'निश्चय और विजय' - यह एक-दो के पक्के साथी हैं

सदा अपने को निश्चयबुद्धि विजयी आत्माएं अनुभव करते हो? निश्चय की निशानी है - 'विजय'। अगर अपने में वा बाप में निश्चय है तो निश्चय की विजय नहीं हो - यह हो ही नहीं सकता। अगर विजय आधी होती है, पूरी नहीं होती तो इसका कारण है निश्चय की कमी। 'निश्चय और विजय, यह एक-दो के पक्के साथी हैं'। जहाँ निश्चय होगा वहाँ विजय ज़रूरी है। क्योंकि निश्चय है कि बाप सर्वशक्तिवान है और सर्वशक्तिवान बाप के निश्चय से विजय कैसे नहीं होगी! और अपने में भी निश्चय है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, तो विजय कहाँ जायेगी? निश्चयबुद्धि की कभी हार हो नहीं सकती। निश्चयबुद्धि औरों को भी हार से छुड़ाने वाले हैं, स्वयं कैसे हार खा सकते हैं। तो विजयी बनने का फाउनडेशन है 'निश्चय', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिंग हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। अगर फाउन्डेशन कच्चा है तो थोड़ा-सा भी तूफन आयेगा, थोड़ी भी धरनी हिलेगी तो भय होगा कि यह बिल्डिंग हमारी गिर नहीं जाए या क्रेक (दरार) नहीं हो जाए। लेकिन फाउन्डेशन पक्का होगा तो निर्भय होंगे। ऐसे ही निश्चय का फाउन्डेशन पक्का है तो कोई तूफ़ान हिला नहीं सकता। तो ऐसे विजयी हो या कभी-कभी थोड़ी दरार पड़ जाती है? या कभी थोड़ी खिड़कियां, दरवाजे के शीशे हिलते हैं? तूफ़ान लगता है या धरनी की हलचल होती है तो क्या होता है? हलचल तो नहीं होती है ना! हलचल में अचल रहना - इसको कहा जाता है - निश्चयबुद्धि विजयी रत्न। सिर्फ बाप में निश्चय नही, अपने आप में भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। वाह ड्रामा वाह! अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी। निश्चय में इतनी शक्ति है! दिखाई ऐसे देगा कि अकल्याण की बात है लेकिन उसमें भी कल्याण छिपा हुआ होगा। पहले हिलाने के लिए ऐसा रूप आयेगा भी लेकिन आपको हिला नहीं सकता। ऐसे पक्के हो या थोड़ा-थोड़ा हिलते हो? संकल्प वा स्वप्न में भी हिलते तो नहीं? क्योंकि संकल्प में भी अगर थोड़ी-सी कमजोरी आ गई तो संकल्प का प्रभाव वाणी पर पड़ता, वाणी का प्रभाव कर्म पर पड़ता। इसीलिए बाप ने पहले संकल्प को ही बदली किया है, संकल्प करते हो - 'मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ'। यह शुद्ध संकल्प है, इस संकल्प से जीवन बदल गई। अगर संकल्प कमज़ोर हैं तो जीवन भी कमज़ोर बन जायेगी।

तो सदा निश्चय है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। कितना भी माया हिलाये, हिलते तो नहीं? कोई माया से डरता तो नहीं?

सभी बहादुर हो या सोचते हो माया को आना नहीं चाहिए? आधाकल्प माया के साथी रहे हो और अभी आने नहीं देते। क्योंकि अभी जान गये हो कि यह बड़े-ते-बड़ा दुश्मन है। पहले तो मालूम नहीं था कि माया क्या है। मायाजीत बनने का अर्थ ही है - निश्चयबुद्धि विजयी। तो हर कर्म करने के पहले निश्चय पक्का हो। वैसे भी देखो, अगर कोई ताकत वाला, बहादुर नहीं होता है तो कोई भी काम करने से पहले कमज़ोरी का संकल्प करता है - कर सकेंगे, नहीं कर सकेंगे, होगा या नहीं होगा? ताकत वाले को यह संशय नहीं उ सकता। उसे कहो यह भारी चीज़ उठाओ तो जल्दी उठा लेगा और कमज़ोर को कहो तो सोचेगा। तो ऐसे सोच चलता है कि यह काम तो बढ़िया है लेकिन होगा या नहीं होगा? माया के अनेक स्वरूपों को जान गये। नॉलेजफुल बन गये हो ना। माया भी भिन्न-भिन्न रूप से आती है। वह भी जानती है कि इस रूप से मुझे जान जायेंगे। तो नया-नया रूप धारण करती है। फिर कहते हैं - मुझे तो यह पता ही नहीं था, ऐसे भी होता है क्या! लेकिन नॉलेजफुल कभी सोच नहीं सकता, वह जानता है। तो सभी निश्चयबुद्धि विजय हो! विजय जन्मसिद्ध अधिकार है। जन्मसिद्ध अधिकार कोई छीन नहीं सकता। अच्छा!

(21.12.1989)

तीनों निश्चय साथ-साथ रहें

तीनों निश्चय साथ-साथ रहें - बाप, आप और ड्रामा। कभी संकल्प में भी कोई हिला न सके। 'अंगद' बन जाओ। नाखून को भी हिला न सके। टांग तो छोड़ो लेकिन नाखून को भी माया हिला नहीं सकती। ऐसे अंगद बन जाओ।

(21.12.1989)

काम बाप का, नाम बच्चों का

बापदादा सदा बच्चों को यही कहते - 'ब्राह्मण जीवन अर्थात् बेफिक्र बादशाह'। ब्रह्मा बाप बेफिक्र बादशाह बने तो क्या गीत गाया - 'पाना था सो पा लिया, काम बाकी क्या रहा', आप क्या कहते हो? सेवा का काम बाकी रहा हुआ है, लेकिन वह भी करावनहार बाप करा रहे हैं और कराते रहेंगे। हमको करना है - इससे बोझ हो जाता है। बाप हमारे द्वारा करा रहे हैं-तो बेफिक्र हो जायेंगे। निश्चय है - यह श्रेष्ठ कार्य होना ही है वा हुआ ही पड़ा है इसलिए निश्चयबुद्धि, निश्चिंत, बेफिक्र रहते हैं। यह तो सिर्फ बच्चों को बिज़ी रहने लिए सेवा का एक खेल करा रहे हैं। निमित्त बनाए वर्तमान और भविष्य सेवा के फल का अधिकारी बना रहे हैं। काम बाप का, नाम बच्चों का। फल बच्चों को खिलाते, खुद नहीं खाते हैं। तो बेफिक्र हुए ना। सेवा में सफलता का सहज साधन ही यह है, कराने वाला करा रहा है। अगर 'मैं कर रहा हूँ' तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो बाप सर्वशक्तिवान है। कर्म का फल भी इतना ही श्रेष्ठ मिलता है। तो सदा बाप द्वारा प्राप्त हुई बेफिक्र बादशाही वा हथेली पर स्वर्ग के राज्य-भाग्य की गॉडली गिफ़्ट स्मृति में रखो। बाप और गिफ़्ट दोनों की याद से हर दिन तो क्या लेकिन हर घड़ी बड़े-ते-बड़ी घड़ी है, बड़ा दिन है-ऐसी अनुभूति करेंगे। दुनिया वाले तो सिर्फ मुबारक देते हैं। क्या कहते हैं? हैप्पी हो, हेल्दी-वेल्दी हो... कह देते हैं। लेकिन बन तो नहीं जाते हैं ना। बाप तो ऐसी मुबारक देते जो सदा के लिए हेल्थ-वेल्थ हैपी वरदानों के रूप में साथ रहती है। सिर्फ मुख से कह करके खुश नहीं करते है, लेकिन बनाते हैं और बनना ही मनाना है क्योंकि अविनाशी बाप की मुबारक भी अविनाशी होगी ना। तो मुबारक वरदान बन जाती है।

(25.12.1989)

असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रूप में अनुभव करेंगे

बेफिक्र बादशाह हो? बादशाह अर्थात् सदा निश्चय और नशे में स्थित रहने वाले क्योंकि निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा ऊँचा उड़ाता है। तो बेफिक्र बादशाह ही होंगे ना! कोई फिक्र है क्या? सेवा कैसे बढ़ेगी, अच्छे-अच्छे जिज्ञासु पता नहीं कब आयेंगे, कब तक सेवा करनी पड़ेगी - यह सोचते तो नहीं हो? असोच बनने से ही सेवा बढ़ेगी, सोचने से नहीं बढ़ेगी। असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रूप में अनुभव करेंगे। सोचने में ही बुद्धि बिज़ी रखेंगे तो बाप की

टचिंग, बाप की शक्ति ग्रहण नहीं कर सकेंगे। बाबा और हम - कम्बाइण्ड हैं, करावनहार और करने के निमित्त मैं आत्मा। इसको कहते हैं - 'असोच अर्थात् एक की याद'। शुभचिंतन में रहने वाले को कभी चिंता नहीं होती। जहाँ चिंता है वहाँ शुभचिंतन नहीं और जहाँ शुभचिंतन है वहाँ चिंता नहीं।

(25.12.1989)

विघ्न को विघ्न न समझ खेल समझेंगे तो पास हो जायेंगे

ब्राह्मण का अर्थ ही है 'शीतल संस्कार वाले'। आपका यह निजी ओरिजिनल संस्कार है। अभी जोश नहीं आ सकता। बाल-बच्चों पर भी जोश तो नहीं करते? कितना भी रोब दिखाओ लेकिन रोब से आत्माएं दबती वा बदलती नहीं हैं। उस समय दब जाती हैं लेकिन सदा दबना नहीं होता। और प्यार ऐसी चीज है जो पत्थर को भी पानी कर देता है। समझते हो कि रोब दिखाया तो ठीक हो गया। लेकिन ठीक नहीं होता। तो 'स्वराज्य अधिकारी आत्माएं हैं' - यह निश्चय और नशा सदा ही हो। स्वराज्य में सुख है, पर-राज्य में अधीनता है। तो सदा इस रुहानी नशे में नाचते और गाते रहो। खुशी की निशानी है - नाचना और गाना। नाचना-गाना तो छोटे बच्चों को भी आता है। तो सभी खुशी में नाचते-गाते हो या कभी रोते भी हो? मन का रोना भी रोना है। घर वाले दु:ख देते हैं, इसलिए रोना आता है! वह देते हैं, आप लेते क्यों हो? अगर कोई चीज देता है, और कोई लेता नहीं तो वह किसके पास रहेगी? उनका काम है देना, आप लो ही नहीं। 63 जन्म तो रोया अभी दिल पूरी नहीं हुई है? जिस चीज से दिल भर जाती है वह कभी नहीं किया जाता। परमात्मा के बच्चे कभी रो नही सकते। रोना बंद। टंकी सुखा के जाना। न ऑखों का रोना, न मन का रोना! जहॉ खुशी होगी वहाँ रोना नहीं होगा। खुशी वा प्यार के आंसू का रोना नहीं कहा जाता। तो योग की धूप में टंकी को सुखा के जाना। विघ्न को विघ्न न समझ खेल समझेंगे तो पास हो जायेंगे।

(06.01.1990)

कुछ भी हो जाए लेकिन 'बाप और सेवा से कभी भी किनारा नहीं करना है'। 'नियमों को कभी नहीं छोड़ना'।

बाप और बच्चों को इतना दिल का सूक्ष्म कनेक्शन है जो कोई की ताकत नहीं जो अलग कर सके। सबसे बड़े-ते-बड़ा नशा बच्चों को सदा यही रहता है कि दुनिया बाप को याद करती लेकिन बाप किसको याद करता! बाप को तो फिर भी आत्मायें याद करती लेकिन आप आत्माओं को कौन याद करता! कितना बड़ा नशा है! यह नशा सदा रहता है? कम ज्यादा तो नहीं होता? कभी उड़ते, कभी चढ़ते, कभी चलते... ऐसे तो नहीं? न पीछे हटने वाले हो, न रुकने वाले हो लेकिन स्पीड चेंज हो जाती है। बापदादा सदा बच्चों का खेल देखते रहते हैं - कभी चलना शुरु करते हैं, फिर क्या होता है? कोई-न-कोई ऐसा सरकमस्टांस बन जाता है, फिर जैसे कोई धक्का देता है तो चल पड़ते हैं, ऐसे कोई-न-कोई बात ड्रामा अनुसार होती हे जो फिर से उड़ती कला की और ले जाती है। क्योंकि ड्रामानुसार पक्के निश्चयबुद्धि हैं, दिल में संकल्प कर लिया है कि 'बाप मेरा, मैं बाप का', तो ऐसी आत्माओं को स्वत: मदद मिल जाती है। मदद मिलने में कितना समय लगता है? (सेकण्ड) देखो - फोटो निकल रहा है। बाप का कैमरा सेकण्ड में सब निकाल लेता है। कुछ भी हो जाए लेकिन 'बाप और सेवा से कभी भी किनारा नहीं करना है'। याद करने में वा पढ़ाई पढ़ने में मन नहीं भी लगे तो भी जबरदस्ती सुनते रहो, योग लगाते रहो-ठीक हो जायेंगे। क्योंकि माया ट्रायल करती है। यह थोड़ा-सा किनारा कर ले तो आ जाऊं इसके पास। इसलिए कभी किनारा नहीं करना। 'नियमों को कभी नहीं छोड़ना'। अपनी पढ़ाई, अमृतवेला, सेवा जो भी दिनचर्या बनी हुई है, उसमें मन नहीं भी लगे लेकिन दिनचर्या में कुछ मिस नहीं करो। भारत में कहते हैं - 'जितना कायदा उतना फायदा'। तो ये जो कायदे बने हुए हैं, नियम बने हुए हैं उसको कभी भी मिस नहीं करना है। देखो, आपके भक्त अभी तक आपका नियम पालन कर रहे हैं। चाहे मंदिर में मन नहीं भी लगे तो भी जायेंगे जरुर। यह किससे सीखे? आप लोगों ने सिखाया ना! सदैव यह अनुभव करो कि जो भी मर्यादायें वा नियम बने हैं, उसको बनाने वाले हम हैं। आपने बनाया है या बने हुए मिले हैं? लॉ-मेकर्स हो या नहीं? अमृतवेले उठना- यह आपका मन मानता है या बना हुआ है इसलिए इस पर चलते हो- आप स्वयं अनुभव करते, चलते हो या डॉयरेक्शन या निमय बना हुआ है इसलिए चलते हो? आपका मन मानता है ना! तो जो मन मानता है, वह मन में नहीं बनाया ना! कोई मजबूरी से तो

नहीं चले रहे हो - करना ही पड़ेगा। सब मन को पंसद है ना? क्योंकि जो खुशी से किया जाता है उसमें बंधन नहीं लगता है। यहाँ बाप ने आदि, मध्य, अन्त - तीनों कालों की नॉलेज दे दी है। कुछ भी करते हो तो तीनों कालों को जानकर के और उसी खुशी से करते हो। बाप देखते हैं कि कमाल करने वाले बच्चे हैं। बाप से प्यार अटूट है इसलिए कोई भी बात होती है तो भी उड़ते रहते हैं। बाप से प्यार से सभी फुल पास हो। पढ़ाई में नंबरवार हो लेकिन प्यार में नंबरवन हो। सेवा भी अच्छी करते हैं, लेकिन कभी-कभी थोड़ा खेल दिखाते हैं। जैसे बाप से नंबरवरन प्यार है, ऐसे मुरली से भी प्यार है? जब से आये हो तब से कितनी मुरलियाँ मिस हुई होंगी? कभी कोई ऐसे बहाने से क्लास मिस किया हैं? जैसे बाप को याद करना मिस नहीं कर सकते, ऐसे पढ़ाई मिस न हो। इसमें भी नंबरवन होना है। बाप के रुप में याद, शिक्षक के रुप में पढ़ाई और सतुगुरु के रुप में प्राप्त वरदान कार्य में लगाना - यह तीनों में नंबरवन चाहिए। वरदान तो सबको मिलते हैं ना लेकिन समय पर वरदान को कार्य में लगाना - इसको कहते हैं वरदान से लाभ लेना। तो यह तीनों ही बातें चेक करना कि आदि से अब तक इन तीनों बातों में कितना पास रहे, तब विजय माला के मणके बनेंगे।

(22.02.1990)

बाप को सामने रखने से हर आत्मा से भी आत्मिक अटूट प्यार हो जाता है

कई बच्चे ऐसे हैं जो बाप को जानना, बाप का बनना और बाप से प्रीत की रीति निभाना - यह बहुत सहज अनुभव करते हैं लेकिन सभी ब्राह्मण-आत्माओं से चलना - इसमें 'समथिंग' कहते हैं। इसका कारण क्या? बाप से निभाना सहज क्यों लगता है? क्योंकि दिल का प्यार अटूट है। प्यार में निभाना सहज होता है। जिससे प्यार होता है उसका कुछ शिक्षा का इशारा मिलना भी प्यारा लगता है और सदैव दिल में अनुभव होता है कि जो कुछ कहा मेरे कल्याण के लिए कहा। क्योंकि उसके प्रति दिल की श्रेष्ठ भावना होती है। तो जैसे आपके दिल में उनके प्रति श्रेष्ठ भावना है, वैसे ही आपकी शुभभावना का रिटर्न दूसरे द्वारा भी प्राप्त होता है। जैसे गुम्बज में आवाज करते हो तो वही लौटकर आपके पास आती है। तो जैसे बाप के प्रति अटूट, अखण्ड, अटल प्यार है, श्रेष्ठ भावना है, निश्चय है - ऐसे ब्राह्मण-आत्माएं नंबरवार होते हुए भी आत्मिक प्यार अटूट, अखण्ड है? वैराइटी चलन, वेराइटी संस्कार देखकर प्यार करते हैं वह अटूट और अखण्ड नहीं होता है। किसी भी आत्मा की अपने प्रति वा दूसरों के प्रति चलन अर्थात चरित्र वा संस्कार दिल-पसंद नहीं होंगे तो प्यार की परसेन्टेज कम हो जाती है। लेकिन आत्मा का श्रेष्ठ आत्मा के भाव से आत्मिक प्यार उसमें परसेन्टेज नहीं होती है। कैसे भी संस्कार हों, चलन हो लेकिन ब्राह्मण-आत्मओं का सारे कल्प में अटूट सम्बन्ध है, ईश्वरीय परिवार है। बाप ने हर आत्मा को विशेष चुनकर ईश्वरीय परिवार में लाया है। अपने-आप नहीं आये हैं, बाप ने लाया है। तो बाप को सामने रखने से हर आत्मा से भी आत्मिक अटूट प्यार हो जाता है। किसी भी आत्मा की कोई बात आपको पसंद नहीं आती तब ही प्यार में अन्तर आता है। उस समय बुद्धि में यही रखो कि इस आत्मा को बाप ने पसंद किया है, अवश्य कोई विशेषता है तब बाप ने पसंद किया है। शुरु से बापदादा बच्चों को यह सुनाते रहते हैं कि मानों 36 गुणों में किसमें 35 गुण नहीं हैं लेकिन एक गुण भी विशेष है तब बाप ने उनको पसंद किया है। बाप ने उनके 35 अवगुण देखे वा एक ही गुण देखा? क्या देखा? सबसे बड़े-ते-बड़ा गुण वा विशेषता बाप को पहचानने की बुद्धि, बाप के बनने की हिम्मत, बाप से प्यार करने की विधि है जो सारे कल्प में धर्म-पिताओं में भी नहीं थी, राज्य नेताओं में भी नहीं, धनवानों में भी नहीं लेकिन उस आत्मा में हैं। बाप आप सबसे पूछते हैं कि आप जब बाप के पास आये तो गुण सम्पन्न हो के आये थे? बाप ने आपकी कमजोरियों को देखा क्या? हिम्मत बढ़ाई है ना कि आप ही मेरे थे, हैं और सदा बनेंगे। तो फालो फादर करो ना! जब विशेष आत्मा समझ किसको भी देखेंगे, सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे तो बाप को सामने रखने से आत्मा में स्वत: ही आत्मिक प्यार इमर्ज हो जाता है। आपके स्नेह से सर्व के स्नेही बन जायेंगे और आत्मिक स्नेह से सदा सभी द्वारा सद्भावना, सहयोग की भावना स्वत: ही आपके प्रति दुआओं के रुप में प्राप्त होगी। इसको कहते हैं - रुहानी यथार्थ श्रेष्ठ हैंडलिंग।

(07.03.1990)

अपनी विशेषता को और कार्य में लगाओ तो विशेषता बढ़ती जायेगी

बिजी रहने से घबराना नहीं, यह गुड साइन है। कई कहते हैं ना - लौकिक कार्य भी करें फिर अलौकिक सेवा भी करें और अपनी सेवा भी करें - यह तो बहुत बिजी रहना पड़ता है। लेकिन यह बिजी रहना अर्थात् मायाजीत बन जाना। यह ठीक लगता है या लौकिक जॉब करना मुश्किल है? लौकिक जॉब (नौकरी) जो करते हैं उसमें जो कमाई होती है वह कहां लगाते हो? जैसे समय लगाते वैसे धन भी लगाते हो। तो तन-मन-धन तीनों ही लग जाते हैं। सफल हो जाता है ना, इसलिए थकना नहीं। सेंटर खोलते हो तो कितनी आत्माओं का सन्देश सुनते ही कल्याण होता है। तो मन और धन का कनेक्शन है, जहां धन होगा वहां मन होगा। जहां मन होगा, वहां धन होगा।

2.यह स्वीट साइलेन्स प्रिय लगती है ना? क्योंकि आत्मा का ओरिजनल स्वरूप ही 'स्वीट साइलेन्स' है। जो जिस समय चाहो उस समय इस स्वीट सालेन्स की स्थिति का अनुभव कर सकते हो? क्योंकि आत्मा अभी इन बन्धनों से मुक्त हो गई इसलिए जब चाहे तब अपने ओरिजनल स्थिति में स्थित हो जाए। तो बंधनमुक्त हो गए या होना है? इस बार मधुबन में दो शब्द छोड़कर जाना - 'समथिंग और समटाइम'। यह पसंद है ना? सभी छोड़ेंगे? हिम्मत रखने से मदद मिल जायेगी। क्योंकि यह तो जानते हो 63 जन्म अनेक बंधनों में रहे और एक जन्म स्वतंत्र बनने का है, इसका ही फल अनेक जन्म जीवनमुक्ति प्राप्त करेंगे। तो फाउण्डेशन यहां डालना है। जब इतना फाउण्डेशन पक्का होगा तब तो 21 जन्म चलेगा। जितना अपने में निश्चय करेंगे उतना ही नशा होगा। बाप में भी निश्चय, अपने में भी निश्चय और फिर ड्रामा में भी निश्चय। तीनों निश्चय में पास होना है। अच्छा - एक-एक रत्न की अपनी विशेषता है। बापदादा सबकी विशेषता को जानते हैं। अभी आगे चलकर अपनी विशेषता को और कार्य में लगाओ तो विशेषता बढ़ती जायेगी। दुनिया में खर्च करने से धन कम होता है लेकिन यहां जितना यूज करेंगे, खर्च करेंगे उतना बढ़ेगी। सभी अनुभवी हो ना। तो इस वर्ष का यही वरदान याद रखना कि 'हम विशेष आत्मा हैं और विशेषता को कार्य में लगाए और आगे बढ़ायेंगे।' जेसे यहां नजदीक बैठना अच्छा लगता है वैसे वहां भी सदा नजदीक रहना। बापदादा सदा हर एक को इसी श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं कि एक-एक बच्चा योगी भी है और योग्य भी है।

(13.03.1990)

प्रैक्टिकल अनुभवी आत्मा बन 'निश्चय और नशे में रहो'

अपने आपको सफलता के सितारे हैं - ऐसे अनुभव करते हो? जहाँ सर्वशक्तियां हैं, वहाँ सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है। कोई भी कार्य करते हो, चाहे शरीर निर्वाह अर्थ, चाहे ईश्वरीय सेवा अर्थ। कार्य में कार्य करने के पहले यह निश्चय रखो। निश्चय रखना अच्छी बात है लेकिन प्रैक्टिकल अनुभवी आत्मा बन 'निश्चय और नशे में रहो'। सर्व शक्तियां इस ब्राह्मण जीवन में सफलता के सहज साधन हैं। सर्व शक्तियों के मालिक हो इसलिए किसी भी शक्ति को जिस समय आर्डर करो, उस समय हाजिर हो। जैसे कोई सेवाधारी होते हैं, सेवाधारी का जिस समय आर्डर करते हैं तो सेवा के लिए तैयार होता है ऐसे सर्व शक्तियां आपके आर्डर में हो। जितना-जितना मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट होंगे उतना सर्वशक्तियां सदा आर्डर में रहेंगी। थोड़ा भी स्मृति की सीट से नीचे आते हैं तो शक्तियां आर्डर नहीं मानेंगी। सर्वेन्ट भी होते है तो कोई ओबीडियेन्ट होते हैं, कोई थोड़ा नीचे-ऊपर करने वाले होते हैं। तो आपके आगे सर्वशक्तियां कैसे हैं? ओबिडियेन्ट हैं या थोड़े देर के बाद पहुँचती है। जैसे इन स्थूल कर्मेन्द्रियों को, जिस समय, जैसा आर्डर करते हो, उस समय वो आर्डर से चलती है? ऐसे ही ये सूक्ष्म शक्तियां भी आपके आर्डर पर चलने वाली हो। चेक करो कि सारे दिन में सर्वशक्तियां आर्डर में रहीं? क्योंकि जब ये सर्वशक्तियां अभी से आपके आर्डर पर होंगी तब ही अन्त में भी आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। तो इस नये वर्ष में आर्डर पर चलाने का विशेष अभ्यास करना। क्योंकि विश्व का राज्य प्राप्त करना है ना। 'विश्व राज्य अधिकारी बनने के पहले स्वराज्य अधिकारी बनो।'

(31.12.1990)

जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी!

निश्चय बुद्धि विजयी आत्माएं हैं - ऐसा अनुभव करते हो? सदा निश्चय अटल रहता है? वा कभी डगमग भी होते हो? निश्चयबुद्धि की निशानी है - वो हर कार्य में, चाहे व्यावहारिक हो, चाहे परमार्थी हो, लेकिन हर कार्य में विजय का अनुभव करेगा। कैसा भी साधारण कर्म हो, लेकिन विजय का अधिकार उसको अवश्य प्राप्त होगा, क्योंकि ब्राह्मण जीवन का विशेष जन्म सिद्ध अधिकार विजय है। कोई भी कार्य में स्वयं से दिल शिकस्त नहीं होगा, क्योंकि उसे निश्चय है कि विजय जन्म सिद्ध अधिकार है। तो इतना अधिकार का नशा रहता है। जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पांच पाण्डव दिखाते हैं, लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है, तो जब कल्प पहले यादगार में विजयी बने हो तो अभी भी विजयी होंगे ना? कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं, होगी.. - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता। इतना दृढ़ निश्चय सदा आगे उड़ाता रहेगा। तो सदा विजय की खुशी में नाचते गाते रहो।

(18.01.1991)

शरीर भी चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये

सदा अपने को भाग्य विधाता के भाग्यवान बच्चे हैं - ऐसा अनुभव करते हो? पद्मापद्म भाग्यवान हो या सौभाग्यवान हो? जिसका इतना श्रेष्ठ भाग्य है वह सदा हर्षित रहेंगे । क्योंकि भाग्यवान आत्मा को कोई अप्राप्ति है ही नहीं। तो जहाँ सर्व प्राप्तियां होंगी, वहाँ सदा हर्षित होंगे। कोई को अल्पकाल की लॉटरी भी मिलती है तो उसका चेहरा भी दिखाता है कि उसको कुछ मिला है। तो जिसको पद्मापद्म भाग्य प्राप्त हो जाए वह क्या रहेगा? सदा हर्षित। ऐसे हर्षित रहो जो कोई भी देखकर पूछे कि क्या मिला है? जितना-जितना पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जायेंगे उतना आपको बोलने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। आपका चेहरा बोलेगा कि इनको कुछ मिला है, क्योंकि चेहरा दर्पण होता है। जैसे दर्पण में जो चीज जैसी होती है, वैसी दिखाई देती है। तो आपका चेहरा दर्पण का काम करे। इतनी आत्माओं को जो सन्देश मिला है तो इतना समय कहाँ मिलेगा जो आप लोग बैठकर सुनाओ। समय भी नाजुक होता जायेगा, तो सुनाने का भी समय नहीं मिलेगा। तो फिर सेवा कैसे करेंगे? अपने चेहरे से। जैसे म्युजियम के चित्रों से सेवा करते हो। चित्र देखकर प्रभावित होते हैं ना। तो आपका चैतन्य चित्र सेवा के निमित्त बन जाये - ऐसे तैयार चित्र हो? इतने चैतन्य चित्र तैयार हो जायें तो आवाज बुलन्द कर देंगे। सदैव चलते-फिरते, उठते-बैठते यह स्मृति रखो कि हम चैतन्य चित्र हैं। सारे विश्व की आत्माओं की हमारे तरफ नज़र है। चैतन्य चित्र में सबके आकर्षण की बात कौन सी होती है? सदा खुशी होगी। तो सदा खुश रहते हो या कभी उलझन आती है? या वहाँ जाकर कहेंगे - यह हो गया इसलिए खुशी कम हो गई। क्या भी हो जाये, खुशी नहीं जानी चाहिए। ऐसे पक्के हो? अगर बड़ा पेपर आये तो भी पास हो जायेंगें? बापदादा सबका फोटो निकाल रहे हैं कि कौन-कौन हाँ कह रहा है। ऐसे नहीं कहना कि उस समय कह दिया। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे वैसे कोई भी बड़ी बात नहीं है। दूसरी बात आपको निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है। इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। जिसके पास सर्वशक्तियों का खजाना है तो जिस भी शक्ति को ऑर्डर करेंगे वह शक्ति मददगार बनेगी। सिर्फ आर्डर करने वाला हिम्मत वाला चाहिए। तो आर्डर करना आता है या आर्डर पर चलना आता है? कभी माया के आर्डर पर तो नहीं चलते हो? ऐसे तो नहीं कि कोई बात आती है और समाप्त हो जाती है? पीछे सोचते हो - ऐसे करते थे तो बहुत अच्छा होता। ऐसे तो नहीं? समय पर सर्वशक्तियां काम में आती हैं या थोड़ा पीछे से आती हैं? अगर मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट हो तो कोई भी शक्ति आर्डर नहीं माने - यह हो नहीं सकता। अगर सीट से नीचे आते हो और फिर आर्डर करते हो तो वो नहीं मानेंगे। लौकिक रीति से भी कोई कुर्सी से उतरता है तो उसका आर्डर कोई नहीं मानता। अगर कोई शक्ति आर्डर नहीं मानती है तो अवश्य पोज़ीशन की सीट से नीचे आते हो। तो सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट रहो, सदा अचल अडोल रहो, हलचल में आने वाले नहीं। बापदादा कहते हैं शरीर भी चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये। पैसा तो उसके आगे कुछ भी नहीं है। जिसके पास खुशी का खजाना है उसके आगे कोई बड़ी बात नहीं और बापदादा का सदा सहयोगी सेवाधारी बच्चों का साथ है। बच्चा बाप के साथ

है तो बड़ी बात क्या है? इसलिए घबराने की कोई बात नहीं। बाप बैठा है, बच्चों को क्या फिकर है। बाप तो है ही मालामाल। किसी भी युक्ति से बच्चों की पालना करनी ही है, इसलिए बेफिकर। दु:खधाम में सुखधाम स्थापन कर रहे हो तो दु:खधाम में हलचल तो होगी ही। गर्मी की सीज़न में गर्मी होगी ना! लेकिन बाप के बच्चे सदा ही सेफ हैं, क्योंकि बाप का साथ है।

(18.01.1991)

ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो

सदा बाप की ब्लैसिंग स्वत: ही प्राप्त होती रहे - उसकी विधि क्या है? ब्लैसिंग प्राप्त करने के लिए हर समय, हर कर्म में बैलेन्स रखो। जिस समय कर्म और योग दोनों का बैलन्स होता है तो क्या अनुभव होता है? ब्लैसिंग मिलती है ना। ऐसे ही याद और सेवा दोनों का बैलेन्स है तो सेवा में सफलता की ब्लैसिंग मिलती है। अगर याद साधारण है और सेवा बहुत करते हैं तो ब्लैसिंग कम होने से सफलता कम मिलती है। तो हर समय अपने कर्म-योग का बैलेन्स चेक करो। दुनिया वाले तो यह समझते हैं कि कर्म ही सब कुछ है लेकिन बापदादा कहते हैं कि कर्म अलग नहीं, कर्म और योग दोनों साथ-साथ हैं। ऐसे कर्मयोगी कैसा भी कर्म होगा उसमें सहज सफलता प्राप्त करेंगे। चाहे स्थूल कर्म करते हो, चाहे अलौकिक करते हो। क्योंकि योग का अर्थ ही है मन-बुद्धि की एकाग्रता। तो जहाँ एकाग्रता होगी वहाँ कार्य की सफलता बंधी हुई है। अगर मन और बुद्धि एकाग्र नहीं हैं अर्थात् कर्म में योग नहीं है तो कर्म करने में मेहनत भी ज्यादा, समय भी ज्यादा और सफलता बहुत कम। कर्मयोगी आत्मा को सर्व प्रकार की मदद स्वत: ही बाप द्वारा मिलती है। ऐसे कभी नहीं सोचो कि इस काम में बहुत बिज़ी थे इसलिए योग भूल गया। ऐसे टाइम पर ही योग आवश्यक है। अगर कोई बीमार कहे कि बीमारी बहुत बड़ी है इसीलिए दवाई नहीं ले सकता तो क्या कहेंगे? बीमारी के समय दवाई चाहिए ना। तो जब कर्म में ऐसे बिजी हो, मुश्किल काम हो उस समय योग, मुश्किल कर्म को सहज करेगा। तो ऐसे नहीं सोचना कि यह काम पूरा करेंगे फिर योग लगायेंगे। कर्म के साथ-साथ योग को सदा साथ रखो। दिन-प्रतिदन समस्यायें, सरकमस्टांश और टाइट होने हैं, ऐसे समय पर कर्म और योग का बैलेन्स नहीं होगा तो बुद्धि जजमेन्ट ठीक नहीं कर सकती। इसलिए योग और कर्म के बैलेन्स द्वारा अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। समझा। फिर ऐसे नहीं कहना कि यह तो मालूम ही नहीं था - ऐसे भी होता है। यह पहले पता होता तो मैं योग ज्यादा कर लेता। लेकिन अभी से यह अभ्यास करो। जिस आत्मा को बापदादा की बैलेन्स के कारण ब्लैसिंग प्राप्त होती है उसकी निशानी क्या होगी? जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी - यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा - यह क्वेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के सम्बन्ध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है। ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता। इतना निश्चय है या थोड़ा बहुत आयेगा तो हिल जायेंगे? समस्यायें आयें तो मिक्की माउस का खेल तो नहीं करेंगे? मिक्की माउस का खेल देखो भले लेकिन करना नहीं।

(31.12.1991)

ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय

ब्राह्मण अर्थात निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं! क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय। तो निश्चय और विजय दोनों की परसेन्टेज एक है या अन्तर है? रिजल्ट क्या देखी होगी? निश्चय की परसेन्टेज सभी ज्यादा अनुभव करते हैं और विजय की परसेन्टेज निश्चय से कम अनुभव करते हैं। जब किसी से भी पूछते हैं कि निश्चय कितना है तो सभी कहते हैं 100 परसेन्ट, और निश्चय की निशानी विजय कितनी है? उसमें 100 परसेन्ट कहेंगे? आपका स्लोगन निश्चयबुद्धि विजयन्ती। फिर निश्चय और विजय में अन्तर क्यों? निश्चय और विजय दोनों निशानियाँ समान होनी चाहिए ना? लेकिन अन्तर क्यों है? इसका कारण क्या?

कोई भी फाउन्डेशन जब पक्का किया जाता है तो उस स्थान को चारों आर अटेन्शन देकर पक्का किया जाता है। अगर चारों ओर में से एक कोना भी कमजोर रह जाए तो पक्का रहेगा या हिलता रहेगा? ऐसे ही निश्चय का फाउन्डेशन चारों ओर अर्थात् विशेष चार बातों का सम्पूर्ण निश्चय चाहिए। वह चार बातें पहले भी सुनाई हैं:-

एक तो बाप में सम्पूर्ण निश्चय। जो है, जैसा है, जो श्रीमत जैसे बाप की दी हुई है, उसी विधिपूर्वक यथार्थ जानना और मानना और चलना।

दूसरी बात - अपने श्रेष्ठ स्वमान सम्पन्न श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा स्वरुप को जानना, मानना और चलना।

तीसरी बात - अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार को यथार्थ विधि से जो जैसा है वैसे जानना, मानना और चलना।

चौथी बात - सारे कल्प के अन्दर इस श्रेष्ठ पुरुषोत्तम युग वा समय को उसी महत्त्व से जानना, मानना और चलना। इन चार बातों में जो अटल निश्चयबुद्धि हैं और चारों में सम्पन्न परोन्टेज है तो उसको कहेंगे सम्पूर्ण यथार्थ निश्चयबुद्धि।

यह चारों ही निश्चय के फाउन्डेशन के स्तम्भ है। सिर्फ एक बाप में निश्चय है और तीनों बातों में से कोई भी स्तम्भ कमजोर है, सदा मजबूत नहीं है, कभी हिलता कभी अचल होता है, तो वह हलचल हार खिलाती है, विजयी नहीं बनाती। कोई भी हलचल कमजोर बना देती है और कमजोर सदा विजयी बन नहीं सकता। इसलिए निश्चय और विजय में अन्त्र पड़ जाता है। बापदादा के सामने बहुत बच्चें भ्ज्ञझेले बन करके रुहरुहान करते हैं, कि हमें निश्चय तो पूरा है, बाबा मैं आपको और आप मेरे हो, यह पक्का है, 100 परसेन्ट तो क्या 500 परसेन्ट निश्चय है..। लेकिन हलचल भी है। फिर मनाने के लिए कहते हैं - आप तो हमारे हो ना, पक्का कराते हैं। बहुत भोली बातें करते हैं - मैं जो हूँ, जैसी हूँ, आपकी या आपका हूँ। तो बाप भी कहते हैं आप जो हो, जैसे हो, मेरे हो। लेकिन बाप जो है जैसा है आपका है! भोला बनना अच्छा है, दिल से भोले बनो, लेकिन बातों में और कर्म में भोले नहीं बनो। दिल के भोले भोलानाथ के प्यारे हैं। बातों में भोले स्वयं को भी धोखा देते तो दूसरों को भी धोखा दे देते और कर्म के भोले अपना भी नुकसान करते हैं तो सेवा काभी नुकसान करते हैं। इसलिए दिल से भोले बनो, बिल्कूल सेन्ट, ऐसे भोले। सेन्ट अर्थात् महान आत्मा। लेकिन बातों में त्रिकालदर्शी बन करके बात सुनो और बोला। कर्म में, हर कर्म के परिणाम को नॉलेजफुल होकर जानो और फिर करो। ऐसे नहीं कि होना तो नहीं चाहिए था लेकिन हो गया, बोलना नहीं चाहिए था लेकिन बोल लिया। इससे सिद्ध है कि कर्म के परिणाम को न जान भोलेपन में कर्म कर लेते हो। ऐसे नहीं समझो कि हम भोले हैं इसीलिए ऐसे हो जाता है - ऐसे अपने को छुड़ाना नहीं है। दिल का भोला सबका प्यारा होगा। तो समझा भोला किसमें बनना है? तो निश्चय और विजय को समान बनाने की विधि क्या हुई? चारों तरफ, चारों बातों का समान परोन्टेज वाला निश्चय हो। कई बच्चे और क्या कहते हैं कि बाबा आपमें तो निश्चय है लेकिन अपने आपमें इतना निश्चय नहीं है। कभी होता है, कभी अपने में निश्चय कम हो जाता है। फिर उन्हों की भाषा क्या होती है? एक ही गीत गाते हैं। पता नहीं , पता नहीं, पता नहीं..। पता नहीं ऐसे क्यों होता है, पता नहीं मेरा भाग्य है, पता नहीं बाप की मदद मिलेगी वा नहीं, पता नहीं सफलता होगी वा नहीं। जब मास्टर सर्वशक्तिवान हो तो इस निश्चय में कमी है तब पता नहीं, पता नहीं का गीता गाते हो। और तीसरे फिर क्या कहते हैं? कि बाबा हमने तो आपको देख करके सौदा किया। बाप हमारे हो हम आपके हैं। इस ब्राह्मण परिवार से हमने सौदा नहीं किया। ब्राह्मण परिवार खिटखिट है, आप ठीक हो। ब्राह्मणों के संगठन में चलना मुश्किल हैं, एक आपसे चलना सहज है। तो बापदादा क्या कहेंगे? बापदादा मुस्कर‌राते हैं, ऐसे बच्चों से बापदादा का एक प्रश्न है क्योंकि ऐसी आत्माएं प्रसन्न-चित्त नहीं रहती, प्रश्न बहुत करती है, ये ऐसा क्यों, ऐसा होता है क्या, तो वह प्रसन्न-चित्त आत्मा नहीं है, प्रश्न चित्त आत्मा है। बापदादा भी उन्हों से प्रश्न करते हैं कि आप आत्मा मुक्तिधाम में रहने वाली हो या जीवनमुक्ति में आने वाली हो? मुक्ति में रहना है फिर जीवनमुक्ति में आना है ना। तो जीवनममुक्ति में सिर्फ बाबा ब्रह्मा होगा या राजधानी होगी? सिर्फ ब्रह्मा और सरस्वती राजा रानी होंगे? जीवनमुक्ति का वर्सा पाना है ना। आप लोग चैलेन्ज करते हो कि आदि सनातन धर्म और अन्य धर्म में सबसे बड़ा अन्तर है। वो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। और आप धर्म और राज्य दोनों की स्थापना कर रहे हो। यह पक्का है ना। धर्म की स्थापना और राज्य की भी स्थापना कर रहे हो ना, तो राज्य में क्या होगा? सिर्फ एक राजा, एक रानी होंगे? एक राजा रानी और आप एक बच्चा या बच्ची, बस। ऐसा राज्य होता है? तो हमें राजधानी में आना है। यह याद रखो। राजधानी में आना अर्थात ब्राह्मण परिवार में सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट काना, श्रेष्ठ सम्बन्ध में आना। अभी बापदादा पूछेंगे सभी से कि आप माला में आने चाहते

हो? या कहेंगे माला से बाहर रह गये हो तो भी ठीक है, हर्जा नहीं है। माला में आना है। चाहे 108 में आओ चाहे 16000 में आओ। लेकिन आना है वा नहीं। (हाँ जी) फिर अभी ब्राह्मण परिवार से क्यों घबराते हो? जब कोई बात होती है तो क्यों कहते हो हमारा तो बाबा है। बहनें क्या करेंगी भाई क्या करेंगे? हमने भाई-बहनों से वायदा नहीं किया है, लेकिन यह ब्राह्मण जीवन शुद्ध सम्बन्ध का जीवन है, माला की जीवन है। माला का अर्थ ही है संगठन। ब्राह्मण परिवार के निश्चय में अगर कोई संशय आ जाता है, व्यर्थ संकल्प आ जाता है तो वह निश्चय को डगमग कर देता है। हलचल में लाता है। बाबा अच्छा, ज्ञान अच्छा, लेकिन ये दादियाँ अच्छी नहीं, टीचर्स अच्छी नहीं, परिवार अच्छा नहीं..। यह निश्चयबुद्धि के बोल हैं? उस समय निश्चयबुद्धि कहें कि संकल्प बुद्धि कहें? व्यर्थ संकल्प प्रसन्नचित्त बुद्धि रहने नहीं देते, तो समझा निश्चय की विशेषता क्या है? चौथी रुररिहान क्या करते हैं? वह फिर कहते कि समय श्रेष्ठ है, पुरुषोत्तम युग है, आत्मा परमात्मा के मेले का युग है यह सब मानते हैं फिर क्या कहते? अभी थोड़ा समय तो है ही, इतने में विनाश तो होना नहीं है, यह तो स्थापना के समय से कहते आये हैं कि विनाश होना है। दूसरी दीवाली नहीं आनी है। तो विनाश की बाते तो स्थापना के समय से चल रही हैं। विनाश कहते-कहते कितने वर्ष हो गये। अभी भी पता नहीं विनाश कब हो! थोड़ा सा अलबेले के, आलस्य के, ढीले पुरुषार्थ के डनलप के तकियें में आराम कर लें। समय पर ठीक हो जायेंगे। बाप को भी यह पक्का कराते हैं कि आप देखना हम समय पर बहुत नम्बर आगे ले लेंगे। लेकिन बापदादा ऐसे बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं हैं। लेकिन समय के पहले परिवर्तन किया तो आपके पुरुषार्थ में यह पुरुषार्थ की मार्क्स जमा होगी और अगर समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी आपको नहीं मिलेगी। तो टोटल रिज़ल्ट में अलबेले या आलस्य के नींद के कारण धोखा खा लेंगे। यह भी कुम्भ्करण के नींद का अंश है। बड़ा कुम्भकरण नहीं है, छोटा है। फिर उसको क्या हुआ? अपने को बचा सका? नहीं बच सका ना! तो अन्त समय में भी अपने को फुल पास के योग्य नहीं बना सकेंगे। समझा! कभी कैसी रुहरुहान करते हो, कभी बहुत हिम्मत की भी करते हो, कभी नाज़-नखरे की करते हो और कभी खिटपिट की करते हो।

आज इस वर्ष के सीज़न का सम्पन्न है। समाप्ति नहीं कहेंगे, सम्पन्न हो रहा है। इसलिए रिज़ल्ट सुना रहे हैं। तो अभी क्या करना है? चेक करो कि निश्चय के फाउन्डेशन के चारों ओर मज़बूत है या चारों में से कोई भी बात में मज़बूत होने के बजाए बातों के कारण मजबूरर है। यह चेक करो। अभी फिर तपस्या करनी है ना। पहले भी सुनाया कि प्यार का सबूत देना है और प्यार को सबूत है समान बनना। और दूसरी बात क्या करनी है। यह वर्ष का होम वर्क दे रहे हैं। एक वर्क तो सुना। दूसरी बात - अपने चारों ओर के फाउन्डेशन को पक्का करो। एक भी बात में कमजोरी नहीं हो तभी माला के मणके बन पूज्य आत्मा वा राज्य अधिकारी आत्मा बनेंगे। क्योंकि ब्राह्मण सो देवता बनना है। सिवाए ब्राह्मण के देवता नहीं बन सकते हैं। ब्राह्मणों से निभाना अर्थात् दैवी राज्य के अधिकारी बनना। तो परिवार से निभाना पड़ेगा। हलचल काए समाप्त करना पड़ेगा। तब निश्चय और विजय दोनों की समानता हो जायेगी। यह अन्तर मिटाने का महामन्त्र है। चारों ओर मज़बूत होना। चार ही निश्चय की परसेन्टेज समान बनाना है। समझा! होमवर्क स्पष्ट हुआ ना। अच्छे स्टूडेन्ट हो ना या कहेंगे कि अपने सेन्टर के होम में गये, प्रवृत्ति के होम में गये तो होम में ही होम वर्क रखकर आये। ऐसे तो नहीं कहेंगे ना। होशियार स्टूडेन्ट की निशानी क्या होती है? होम वर्क में भी नम्बरवन, तो प्रैक्टिकल पढ़ाई में भी नम्बरवन। क्योंकि मार्क्स जमा होती है। अच्छा और क्या रिजल्ट देखी? वर्तमान समय बच्चों की दो होशियारी देखीं। अपनी होशियारी तो जानते होंगे ना? पहली होशियारी क्या देखी? स्व को देखना और पर को देखना। स्वदर्शन चक्रधारी बनना या पर दर्शन चक्रधारी बनना। दो बातें हैं ना। मैजारिटी किसमें होशियार हैं? बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि कई बच्चों की नजदीक की नज़र बहुत तेज हो रही हैं और कई बच्चों की फिर दूर की नज़र बहुत तेज हो रही है। लेकिन मैजारिटी की दूर की नज़र तेज है, नजदीक की नज़र कुछ ढीली है। देखना चाहते हैं लेकिनि स्पष्ट देख नहीं पाते हैं और फिर होशियारी क्या करते हैं? कोई भी बात होगी तो अपने को सेफ रखने के लिए दूसरों की बात बड़ी करके स्पष्ट सुनायेंगे। अपनी बड़ी बात को छोटा करेंगे और दूसरे की छोटी बात को बड़ा करेंगे यह होशियारी मैजारिटी की देखी। दूसरी होशियारी क्या देखी? आजकल एक विशेष भाषा बहुत यूज़ करते हैं कि हमसे असत्य देखा नहीं जाता, असत्य सुना नहीं जाता, इसलिए असत्य को देख झूठ को सून करके अन्दर में जोश आ जाता है। तो यह भाषा राईट है? अगर वह असत्य है और आपको असत्य को देख जोश आता है तो जोश सत्य है या असत्य है? जोश भी तो असत्य है ना! हम यह करके दिखायेंगे, यह चैलेन्ज करना राइट है? यह सदैव याद रखो कि सत्यता की निशानी क्या है! जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना

चाहता है, लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। आवेशता या जोश यह सत्यता की निशानी है? सत्यता में जोश आयेगा? तो अगर झूठ को देख करके मुझे गुस्सा आता है, तो राईट है? कोई आग लगायेगा तो सेक नहीं आयेगा कि सेक प्रुफ हो सकते हैं? अगर हमें नॉलेज है कि यह असत्यता की आग है और आग का सेक होता है तो पहले अपने को सेफ करेंगे ना कि सेक में थोड़ा सा जल भी जाए तो चलेगा, हर्जा नहीं। तो सदैव यह याद रखो कि सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्ण। अगर सभ्यता को छोड़कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। आप सत्य को सिद्ध करना चाहते हो लेकिन सभ्यता को छोड़ करके अगर सत्यता को सिद्ध करेंगे तो जिद्द हो जायेगा। सिद्ध नहीं। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा। समझा - दूसरी होशियारी! ऐसे होशियार नहीं बनना। तो यह भी होमवर्क है कि ऐसे होशियारी को छोड़कर निर्माण बनो। बिल्कूल निर्माण। मैं राईट हूँ, यह रांग है यह निर्माणता नहीं है। दुनिया वाले भी कहते हैं कि सत्य को अगर कोई सिद्ध करता है तो कुछ न कुछ समाया हुआ है। कई बच्चों की भाषा हो गई है मैं बिल्कुल सच बोलता हूँ, 100 परसेन्ट सत्य बोलता हूँ। लेकिन सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप नहीं सकता। चाहे कितनी भी दीवारें कोई आगे लाये लेकिन सत्यता का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता। सच्चा आदमी कभी अपने को यह नहीं कहेगा कि मैं सच्चा हूँ। दूसरा कहे कि आप सच्चे हो और भी हंसी के बात सुनाएं? सुनने का इन्टरेस्ट अच्छा है। करने का भी है ना?

(15.04.1992)

अकल्याण की सीन में भी कल्याण दिखाई दे

बाप में निश्चय है कि वही कल्प पहले वाला बाप फिर से आकर मिला है। ऐसे ही अपने में भी इतना निश्चय है कि हम भी वही कल्प पहले वाले बाप के साथ पार्ट बजाने वाली विशेष आत्माएं हैं? या बाप में निश्चय ज्यादा है, अपने में कम है? अच्छा, ड्रामा में जो भी होता है उसमें भी पक्का निश्चय है? जो ड्रामा में होता है वह कल्याणकारी युग के कारण सब कल्याणकारी है। या कुछ अकल्याण भी हो जाता है? कोई मरता है तो उसमें कल्याण है? वो मर रहा है और आप कल्याण कहेंगे, कल्याण है? बिजनेस में नुकसान हो गया-यह कल्याण हुआ? तो नुकसान भी कल्याणकारी है! ज्ञान के पहले जो बातें कभी आपके पास नहीं आई, ज्ञान के बाद आई-तो उसमें कल्याण है? माया नीचे-ऊपर कर रही है, कल्याण है? इसमें क्या कल्याण है? माया आपको अनुभवी बनाती है। अच्छा, तो ड्रामा में भी इतना ही अटल निश्चय हो। चाहे देखने में अच्छी बात न भी हो लेकिन उसमें भी गुप्त अच्छाई क्या भरी हुई है, वो परखना चाहिए। जैसे कई चीजें होती हैं, उनका बाहर से कवर (ढक्कन) अच्छा नहीं होता है लेकिन अन्दर बहुत अच्छी चीज होती है। बाहर से देखेंगे तो लगेगा-पता नहीं क्या है? लेकिन पहचान कर उसे खोलकर अन्दर देखेंगे तो बढ़िया चीज निकल आयेगी। तो ड्रामा की हर बात को परखने की बुद्धि चाहिए। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर आती है। परिस्थिति सामने आवे और परिस्थिति के समय निश्चय की स्थिति, तब कहेंगे निश्चय बुद्धि विजयी। तो तीनों में पक्का निश्चय चाहिए-बाप में, अपने आप में और ड्रामा में। दर्द में तड़प रहे हो और कहेंगे-वाह ड्रामा वाह! उस समय चिल्लायेंगे या 'वाह-वाह' करेंगे? 'हाय बाबा बचाओ' - यह नहीं कहेंगे? जब निश्चय है, तो निश्चय का अर्थ ही है-संशय का नाम-निशान न हो। कुछ भी हो जाए लेकिन अटल-अचल निश्चयबुद्धि, कोई भी परिस्थिति हलचल में नहीं ला सकती। क्योंकि हलचल में आना अर्थात् कमजोर होना।

कोई भी चीज ज्यादा हलचल में आ जाए, हिलती रहे-तो टूटेगी ना! तो संकल्प में भी हलचल नहीं। ऐसे अटल-अचल आत्माएं अटल राज्य के अधिकारी बनती हैं। सतयुग-त्रेता में अटल राज्य है, कोई उस राज्य को टाल नहीं सकता। कोई और राजा लड़ाई करके राज्य छीन ले-यह हो ही नहीं सकता। इसलिए यह अविनाशी अटल राज्य गाया हुआ है। अनेक जन्म यह अटल-अखण्ड राज्य करते हो। लेकिन कौन अधिकारी बनता? जो यहां संगम पर अचल-अखण्ड रहते हैं, खण्डित नहीं होते। आज निश्चय है, कल निश्चय डगमग हो जाए-उसको कहते हैं खण्डित। तो खण्डित चीज कभी पूज्य नहीं होती। अगर मूर्ति भी

कभी खण्डित हो जाए तो पूजा नहीं होगी, म्युजियम (संग्रहालय) में भले रखें लेकिन पूजा नहीं होगी। तो अखण्ड निश्चयबुद्धि आत्माएं। ऐसे निश्चयबुद्धि सदा ही विजय की खुशी में रहते हैं, उनके अन्दर सदा खुशी के बाजे बजते रहते हैं। आज की दुनिया में भी जब विजय होती है तो बाजे बजते हैं ना। तो ऐसे सदा निश्चयबुद्धि आत्मा के मन में सदा खुशी के बाजे-गाजे बजते रहते हैं। बार-बार बजाने नहीं पड़ते, आटोमेटिक बजते रहते हैं। ऐसे अनुभव करते हो? या कभी बाजे-गाजे बन्द हो जाते हैं? भक्ति में कहते हैं अनहद गीत-जिसकी हद नहीं होती, आटोमेटिक बजता रहे। तो अनहद गीत बजते रहें। डबल विदेशियों के पास आटोमेटिक गीत बजते हैं? सदा बजते हैं या कभी-कभी? सदा बजते हैं।

सबसे बड़े ते बड़ा खजाना खुशी का अभी मिलता है। सम्भालना आता है ना। सम्भाल करने की विधि है-सदा बाप को साथ रखना। अगर बाप सदा साथ है तो बाप का साथ ही बड़े ते बड़ा सेफ्टी का साधन है। तो खजाना सेफ रखना आता है या माया चोरी करके जाती है? छिप-छिप कर आती तो नहीं है? वो भी चतुर है। आने में वो भी कम नहीं है। लेकिन बाप का साथ माया को भगाने वाला है। तो आप कौनसी आत्माएं हो? निश्चयबुद्धि विजयी आत्माएं हो! सदा विजय का तिलक मस्तक पर लगा हुआ है, जिस तिलक को कोई मिटा नहीं सकता। अविनाशी तिलक है ना! या माया का हाथ आ जाता है तो मिट जाता है? अच्छा!

सभी महान् आत्मायें हो ना। कहाँ के भी हो लेकिन इस समय तो सभी मधुबन निवासी हो। मधुबन कहने से खुशी होती है ना। क्यों? मधुबन कहने से मधुबन का बाबा याद आता है। इसीलिए मधुबन निवासी बनना पसन्द करते हो। सब चाहते हो ना-यहीं रह जायें। वो भी दिन आ जायेंगे। खटिया नहीं मिलेगी, तकिया नहीं मिलेगा-फिर नींद कैसे आयेगी? तैयार हो ऐसे सोने के लिए? अपनी बांह को ही तकिया बनाना पड़ेगा, पत्थर पर सोना पड़ेगा। कितने दिन सोयेंगे? अभ्यास सब होना चाहिए। अगर साधन मिलता है तो भले सोओ, लेकिन नहीं मिले तो नींद नहीं आवे-ऐसा अभ्यास नहीं हो। अभी तो किसी को खटिया चाहिए, किसी को अलग कमरा चाहिए। इसलिए ज्यादा नहीं मंगाते। अगर सभी पट पर सोओ तो कितने आ सकते हैं? डबल संख्या हो सकती है ना। फिर कोई नहीं कहेगा-टांग में दर्द है, कमर में दर्द है, बैठ नहीं सकती हूँ? क्या भी मिले, खाना मिले, नहीं मिले-तैयार हो? वो भी पेपर आयेगा। डबल विदेशी पट में सो सकेंगे? इतने पक्के होने चाहिएं-अगर बिस्तरा मिला तो भी अच्छा, नहीं मिला तो भी अच्छा। 'हाय-हाय' नहीं करेंगे। सहन करने में माताएं होशियार होती हैं। पाण्डव भी होशियार हैं। जब इतना साथ होगा तो संगठन की खुशी सब-कुछ भुला देती है। तो निश्चय है ना। ब्राह्मण जीवन अर्थात् मौज ही मौज-उठें तो भी मौज में, सोयें तो भी मौज में।

(13.10.1992)

सम्पन्न बनना अर्थात् कमजोरी को खत्म करना।

बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। सदैव अलर्ट माना सदा एवररेडी! आपको क्या निश्चय है-विनाश के समय तक रहेंगे या पहले भी जा सकते हैं? पहले भी जा सकते हैं ना। इसलिए एवररेडी। विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का इन्तजार नहीं करो। वह रचना है, आप रचता हो। सदा एवररेडी। क्या समझा? अटेन्शन रखना। जो भी कमी महसूस हो उसे बहुत जल्दी से जल्दी समाप्त करो। सम्पन्न बनना अर्थात् कमजोरी को खत्म करना। ऐसे नहीं-यहाँ आये तो यहाँ के, वहाँ गये तो वहाँ के। सभी तीव्र पुरुषार्थी बनकर जाना। अच्छा!

(21.11.1992)

पक्का निश्चय है या कभी-कभी मूँझ भी जाते हो? जब बाप को अपनी सब जिम्मेवारियां दे दी, तो आप मौज में ही रहेंगे ना। जिम्मेवारियाँ माथा भारी करती हैं। जब भी खुशी कम होती है तो कहते या सोचते हो कि-क्या करें, यह भी सम्भालना पड़ता है ना, करना पड़ता है ना, जिम्मेवारी है ना। उस समय सोचते हो ना। लेकिन जिम्मेवार बाप है, मैं निमित्त-मात्र हूँ। मेरी जिम्मेवारी है - तो भारीपन होता है। बाप की जिम्मेवारी है, मैं निमित्त हूँ-तो हल्के हो जायेंगे। हल्का उड़ेगा। भारी चीज उड़ेगी

नहीं, बार-बार नीचे आ जायेगी। थोड़ा भी संकल्प आया मुझे करना पड़ता है, मुझे ही करना है-तो भारीपन हुआ। तो डबल लाइट हो ना। या थोड़ा-थोड़ा बोझ है? सदा उड़ते रहो। उड़ती कला अर्थात् तीव्र गति।

(30.11.1992)

कोई भी बड़ी बात को छोटा बनाना या छोटी बात को बड़ी बनाना अपने हाथ में है

सभी ने माया को जीत लिया है? सभी मायाजीत बन गये हो? कि अभी विजयी बनना है? माया का काम है खेल करना और आपका काम है खेल देखना। खेल में घबराना नहीं। घबराते हैं तो वह समझ जाती है कि ये घबरा तो गये हैं, अब लगाओ इसको अच्छी तरह से। माया भी तो जानने में होशियार है ना। कुछ भी हो जाये, घबराना नहीं। विजय हुई ही पड़ी है। इसको कहा जाता है सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि। पता नहीं क्या होगा, हार तो नहीं जाऊंगा, विजय होगी वा नहीं -ये नहीं। सदैव यह नशा रखो कि पाण्डव सेना की विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कौरवों की होगी क्या? तो आप कौन हो? पाण्डवों की विजय तो निश्चित है ना।

कोई भी बड़ी बात को छोटा बनाना या छोटी बात को बड़ी बनाना अपने हाथ में है। किसका स्वभाव होता है छोटी बात को बड़ा बनाने का और किसका स्वभाव होता है बड़ी बात को छोटा बनाने का। तो माया की कितनी भी बड़ी बात सामने आ जाये लेकिन आप उससे भी बड़े बन जाओ तो वह छोटी हो जायेगी। आप नीचे आ जायेंगे तो वह बड़ी दिखाई देगी और ऊपर चले जायेंगे तो छोटी दिखाई देगी। कितनी भी बड़ी परिस्थिति आये, आप ऊंची स्व-स्थिति में स्थित हो जाओ तो परिस्थिति छोटी-सी बात लगेगी और छोटी-सी बात पर विजय प्राप्त करना सहज हो जायेगा। निश्चय रखो कि अनेक बार के विजयी हैं। अभी कोई इस कल्प में विजयी नहीं बन रहे हैं, अनेक बार विजयी बने हैं। इसलिए कोई नई बात नहीं है, पुरानी बात है। लेकिन उस समय याद आये। ऐसे नहीं-टाइम बीत जाये, पीछे याद आये कि ये तो छोटी बात है, मैंने बड़ी क्यों बना दी। समय पर याद आवे कि मैं कल्प-कल्प का विजयी हूँ।

(30.11.1992)

योग भी सहज हो जाये, उसकी सबसे सहज विधि है - 'मेरा बाबा'

सबसे सहज आगे बढ़ने की विधि क्या है? आगे तो सभी बढ़ रहे हो लेकिन सबसे सहज विधि कौनसी है? योग भी सहज हो जाये, उसकी विधि क्या है? सबसे सहज विधि है - 'मेरा बाबा'। और कुछ भी याद न हो, हर समय एक ही बात याद हो - 'मेरा बाबा'। क्योंकि मन वा बुद्धि कहाँ जाती है? जहाँ मेरापन होता है। अगर शरीर-भान में भी आते हो तो क्यों आते हो? क्योंकि मेरापन है। अगर 'मेरा बाबा' हो जाता तो स्वत: ही मेरे तरफ बुद्धि जायेगी। सहज साधन है - 'मेरा बाबा'। मेरापन न चाहते हुए भी याद आता है। जैसे-चाहते नहीं हो कि शरीर याद आवे, लेकिन क्यों याद आता है? मेरापन खींचता है ना, न चाहते भी खींचता है। जब यह सदा निश्चय और स्मृति में रहे - 'मेरा बाबा' - तो पुरुषार्थ की मेहनत करने के बजाए स्वत: ही मेरापन खींचेगा। तो सहज साधन क्या हुआ? इसीलिए 'एक' को ही याद करो। 'एक' को ही याद करना सहज होता है।

(10.12.1992)

भगवान् की मत पर चले अर्थात् फालो किया तो विजय हुई

सुना तो बहुत है, बाकी क्या रहा? बनना। सुनने का अर्थ ही है बनना। तो बन गये हो? बाप भी ऐसे शक्तिशाली बच्चों को देख हर्षित होते हैं। लौकिक में भी बाप को कौनसे बच्चे प्यारे लगते हैं? जो आज्ञाकारी, फालो फादर करने वाले होंगे। तो आप कौन हो? फालो फादर करने वाले हो। फालो करना सहज होता है ना। बाप ने कहा और बच्चों ने किया। सोचने की भी आवश्यकता नहीं। करें, नहीं करें, अच्छा होगा, नहीं होगा-यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं। फालो करना सहज है ना। हर कर्म में क्या-क्या फालो करो और कैसे करो-यह भी सभी को स्पष्ट है। जो हर कदम में फालो करने वाले हैं उनको क्या नशा

रहता है? यह निश्चय का नशा रहता है कि हर कर्म में सफलता हुई ही पड़ी है। होगी या नहीं होगी-नहीं। हुई ही पड़ी है। क्योंकि कल्प पहले भी पाण्डवों की विजय हुई ना। पाण्डवों ने क्या किया? भगवान् की मत पर चले अर्थात् फालो किया तो विजय हुई। तो वही कल्प पहले वाले हो ना। तो यह निश्चय स्वत: ही नशा दिलाता है। कोई भी बात मुश्किल नहीं लगेगी। तो सदा ही सहज और श्रेष्ठ प्राप्ति का अनुभव करते चलो। मालिक सो बालक हैं-यह डबल नशा समय प्रमाण प्रैक्टिकल में लाओ। कभी कोई खिटखिट भी हो जाये तो भी खुशी कम न हो। सदा खुश रहो। अच्छा!

(10.12.1992)

यह निश्चय पक्का हो कि हम ही कल्प-कल्प के विजयी हैं और हम ही बार-बार बनेंगे

यह निश्चय पक्का हो कि हम ही कल्प-कल्प के विजयी हैं और हम ही बार-बार बनेंगे। इतना पुरुषार्थ किया है? आप नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे? आप ही विजयी बने थे, विजयी बने हैं और विजयी रहेंगे। 'विजयी' शब्द बोलने से ही कितनी खुशी होती है! चेहरा बदल जाता है ना। जो सदा विजयी रहते वो कितना खुश रहते हैं! इसीलिए जब भी कोई किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त करता है तो खुशी के बाजे बजते हैं। आपके तो सदा ही बाजे बजते हैं। कभी भी खुशी के बाजे बन्द न हों। आधा कल्प के लिए रोना बन्द हो गया। जहाँ खुशी के बाजे बजते हैं वहाँ रोना नहीं होता। अच्छा!

(20.12.1992)

यथार्थ निर्णय का आधार-निश्चयबुद्धि और निश्चिंत स्थिति

सदा अपने को विजयी रत्न अनुभव करते हो? सदा विजयी बनने का सहज साधन क्या है? सदा विजयी बनने का सहज साधन है-एक बल एक भरोसा। एक में भरोसा और उसी एक भरोसे से एक बल मिलता है। निश्चय सदा ही निश्चिंत बनाता है। अगर कोई समझते हैं कि मुझे निश्चय है, तो उसकी निशानी है कि वो सदा निश्चिंत होगा और निश्चिंत स्थिति से जो भी कार्य करेगा उसमें जरूर सफल होगा। जब निश्चिंत होते हैं तो बुद्धि जजमेन्ट यथार्थ करती है। अगर कोई चिंता होगी, फिक्र होगा, हलचल होगी तो कभी जजमेन्ट ठीक नहीं होगी। तराजू देखा है ना। तराजू की यथार्थ तौल तब होती है जब तराजू में हलचल नहीं हो। अगर हलचल होगी तो यथार्थ नहीं कहा जायेगा। ऐसे ही, बुद्धि में अगर हलचल है, फिक्र है, चिन्ता है तो हलचल जरूर होगी।

इसीलिए यथार्थ निर्णय का आधार है-निश्चयबुद्धि, निश्चिंत। सोचने की भी आवश्यकता नहीं। क्योंकि फालो फादर है ना। यह करूँ, वह करूँ -ये तब सोचे जब अपना कुछ करना हो। फालो करना है ना। तो फालो करने के लिए सोचने की आवश्यकता नहीं। कदम पर कदम रखना। कदम है श्रीमत। जो श्रीमत मिली है उसी प्रमाण चलना अर्थात् कदम पर कदम रखना। तो सोचने की आवश्यकता है क्या? नहीं है ना। निश्चिंत हैं तो सदा ही निर्णय यथार्थ देंगे। जब निर्णय यथार्थ होगा तो विजयी होंगे। निर्णय ठीक नहीं होता तो जरूर हलचल है। जब भी कोई हलचल हो तो सोचो कि ब्रह्मा बाप ने क्या किया? क्योंकि ब्रह्मा बाप कर्म का सैम्पल है। ब्रह्मा बाप ने हर कदम श्रीमत पर उठाये। तो फालो फादर। सिर्फ फालो ही करना है, कोई नया रास्ता नहीं निकालना है, सोचना नहीं है। जब मनमत मिक्स करते हो तब मुश्किल होता है। एक-मुश्किल होगा; दूसरा-असफल। मेहनत तो की है ना। गांव में खेती का काम करते हैं तो मेहनत करते हैं। यहाँ तो मेहनत नहीं करनी है। सहज पसन्द है या मेहनत? मेहनत करके, अनुभव करके देख लिया।

अब बाप कहते हैं-मेहनत छोड़ मोहब्बत में रहो, लवलीन रहो। जो लव में लीन होता है उसको मेहनत नहीं करनी पड़ती है। ब्राह्मण माना मौज, ब्राह्मण माना मेहनत नहीं। बाप ने कहा और बच्चों ने किया-इसमें मेहनत की क्या बात है! बच्चों का काम है करना, सोचना नहीं। सहज योगी हो ना। सदा विजयी रत्न हो ना। यह रूहानी निश्चय चाहिए कि हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे! इतना अटल निश्चय हो। जब फालो फादर कर रहे हो तो कौन बनेंगे? वही बनेंगे ना। निश्चय तो निश्चय ही हुआ ना। अगर निश्चय में 10 परसेन्ट, 20 परसेन्ट कम हुआ तो निश्चय नहीं कहेंगे।

जो सदा विजयी है उसी को ही बेफिक्र बादशाह कहा जाता है। जो अभी बादशाह बनता है वो ही भविष्य में बादशाह

बनेंगे। अभी बेफिक्र बादशाह नहीं तो भविष्य में भी नहीं। तो राजा बनने वाले हो या औरों को राज्य करते हुए देखेंगे? स्वराज्य है तो विश्व-राज्य है। ऐसे अधिकारी हो? अधीन तो नहीं होते-क्या करें, संस्कार पक्का है? ऐसे तो नहीं-चाहते नहीं लेकिन हो जाता है? इसको कहेंगे अधीन। तो कभी अधीन तो नहीं हो जाते? 'क्रोध करना तो नहीं चाहते लेकिन आ जाता है। चाहते नहीं हैं लेकिन मजबूर हो जाते हैं।' नहीं। अधिकारी बन गये तो अधीनता समाप्त हुई। जैसे चाहें, जो चाहें वह कर सकते हैं। अधिकारी के संकल्प में यह कभी नहीं आयेगा कि- चाहते नहीं हैं, हो जाता है, पुरुषार्थ कर रहे हैं; हो जायेगा। इससे सिद्ध है कि अधीन हैं। जो अधीन होगा वह अधिकारी नहीं। जो अधिकारी होगा वो अधीन नहीं। या रात होगी या दिन होगा। दोनों इकट्ठे नहीं। 'अधिकार' और 'अधीनता' - दोनों इकट्ठे नहीं चल सकते। मातायें अधिकारी बन गई? लोगों ने कहाँ फेंक दिया और बाप ने कहाँ रख दिया! लोगों ने पांव की जुत्ती बना दिया और बाप ने सिर का ताज बनाया। खुशी है ना। कहाँ जूती, कहाँ ताज-कितना फर्क है! अभी तो शक्तिस्वरूप बन गये। पाण्डव भी शक्तिरूप में देखते हैं ना। शिव शक्ति भी विजयी हैं तो पाण्डव भी विजयी हैं। अविनाशी निश्चय, अविनाशी नशा है तो सदा ही विजय निश्चित है।

(20.12.1992)

निश्चय हो कि मैं कल्प-कल्प का विजयी हूँ

कितने बार विजयी बने हो? (अनेक बार) याद है या ऐसे ही कहते हो? सुना है कि ड्रामा रिपीट होता है, इसीलिए कहते हो या समझते हो अनेक बार किया है? अगर ड्रामा की प्वाइन्ट बुद्धि में क्लीयर है कि हू-ब-हू रिपीट होता है, तो उस निश्चय के प्रमाण हू-ब-हू जब रिपीट होता है, तो अनेक बार रिपीट हुआ है और अब रिपीट कर रहे हैं। लेकिन निश्चय की बात है। अगले कल्प में और कोई विजयी बने और इस कल्प में आप विजयी बनो-यह हो नहीं सकता। क्योंकि जब बना-बनाया ड्रामा कहते हैं, तो बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात् रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल-अडोल रहता है।

(20.12.1992)

'निश्चय है और निश्चित है' - इस अधिकार की भावी को कोई टाल नहीं सकता

नव-जीवन रचता बाप ने आप सभी बच्चों को यह अमूल्य अविनाशी गिफ्ट दे दी है। अधिकारी बन गये हो ना। ब्राह्मण आत्मायें सदा अखुट निश्चय की फलक से क्या कहते कि यह विश्व का राज्य-भाग्य तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है! इतनी फलक है ना। या कभी कम हो जाती, कभी ज्यादा हो जाती? 'निश्चय है और निश्चित है' - इस अधिकार की भावी को कोई टाल नहीं सकता। निश्चयबुद्धि आत्माओं के लिए यह निश्चित भावी है। निश्चित है ना। या कुछ चिन्ता है-पता नहीं, मिलेगा या नहीं? कभी संकल्प आता है? अगर ब्राह्मण हैं तो निश्चित है-ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। पक्का निश्चय है ना। कि थोड़ी हलचल होती है? अचल, अटल है? तो ऐसी गोल्डन गिफ्ट बाप ने आपको दी और आप क्या करेंगे? औरों को देंगे। अल्पकाल की गिफ्ट है तो अल्पकाल समाप्त होने पर गिफ्ट भी समाप्त हो जाती है। लेकिन यह अविनाशी गिफ्ट हर जन्म आपके साथ रहेगी।

(31.12.1992)

अपोजिशन को श्रेष्ठ पोजिशन से समाप्त करो

जो भी कर्म करो, विशेष अन्डरलाइन करो कि कर्म के पहले, बोल के पहले, संकल्प के पहले चेक करो कि - 'यह ब्रह्मा बाप समान है? यह प्यार की निशानी है?' फिर संकल्प को स्वरूप में लाओ, बोल को मुख से बोलो, कर्म को कर्मेन्द्रियों से करो। पहले चेक करो, फिर प्रैक्टिकल करो। ऐसे नहीं कि सोचा तो नहीं था लेकिन हो गया। नहीं। ब्रह्मा बाप की विशेषता विशेष यही है-जो सोचा वह किया, जो कहा वह किया। चाहे नया ज्ञान होने के कारण अपोजिशन कितनी भी रही लेकिन अपने स्वमान की स्मृति से, बाप के साथ की समर्थी से और दृढ़ता, निश्चय के शस्त्रों से, शक्ति से अपनी पोजिशन की सीट पर सदा

अचल-अटल रहे। तो जहाँ पोजिशन है वहाँ अपोजिशन क्या करेगी। अपोजिशन 'पोजिशन' को दृढ़ बनाती है। हिलाती नहीं, और दृढ़ बनाती है। जिसका प्रैक्टिकल विजयी बनने का सबूत स्वयं आप हो और साथ-साथ चारों ओर की सेवा का सबूत है। जो पहले कहते थे कि यह धमाल करने वाले हैं, वे अब कहते हैं - कमाल करके दिखाई है! तो यह कैसे हुआ? अपोजिशन को श्रेष्ठ पोजिशन से समाप्त कर दिया।

तो अब इस वर्ष में क्या करेंगे? जैसे ब्रह्मा बाप ने निश्चय के आधार पर, रूहानी नशे के आधार पर निश्चित भावी के ज्ञाता बन सेकेण्ड में सब सफल कर दिया; अपने लिए नहीं रखा, सफल किया। जिसका प्रत्यक्ष सबूत देखा कि अन्तिम दिन तक तन से पत्र-व्यवहार द्वारा सेवा की, मुख से महावाक्य उच्चारण किये। अन्तिम दिवस भी समय, संकल्प, शरीर को सफल किया। तो स्नेह की निशानी है-सफल करना। सफल करने का अर्थ ही है-श्रेष्ठ तरफ लगाना। तो जब सफलता का लक्ष्य रखेंगे तो व्यर्थ स्वतः ही खत्म हो जायेगा। जैसे-रोशनी से अंधकार स्वतः ही खत्म हो जाता है। अगर यही सोचते रहो कि अंधकार को निकालो-तो टाइम भी वेस्ट, मेहनत भी वेस्ट। ऐसी मेहनत नहीं करो। 'आज क्रोध आ गया, आज लोभ आ गया, आज व्यर्थ सुन लिया, बोल दिया, आज व्यर्थ हो गया' - इसको सोचते-सोचते मेहनत करते दिलशिकस्त हो जायेंगे। लेकिन 'सफल करना है' - इस लक्ष्य से व्यर्थ स्वतः ही खत्म हो जायेगा। यह सफल का लक्ष्य रखना मानो रोशनी करना है। तो अंधकार स्वतः ही खत्म हो जायेगा। समझा, अव्यक्त वर्ष में क्या करना है? बापदादा भी देखेंगे कि नम्बरवन प्यारे बनते हैं या नम्बरवार प्यारे बनते हैं। सभी नम्बरवन बनेंगे?

(31.12.1992)

अगर नाव और खिवैया मजबूत हैं तो कोई भी तूफान आगे बढ़ाने का साधन बन जाता है

जैसे सेवा में प्रत्यक्षता होती जा रही है, विधि बदलती जा रही है। ऐसे हर एक अपने में सम्पूर्णता और सम्पन्नता की प्रत्यक्षता करो। अभी इसकी आवश्यकता है और अवश्य सम्पन्न होनी ही है। कल्प-कल्प की निशानी आपकी सिद्ध करती है कि सफलता हुई ही पड़ी है। यह विजय माला क्या है? विजयी बने हैं, सफलतामूर्त बने हैं, तब तो निशानी है ना! इस भावी को टाल नहीं सकते। कोई कितना भी सोचे कि अभी तो इतने तैयार नहीं हुए हैं, अभी तो खिट-खिट हो रही है-इसमें घबराने की जरूरत नहीं। कल्प-कल्प के सफलता की गारन्टी यह यादगार है। 'क्या होगा', 'कैसे होगा' - इस क्वेश्चन-मार्क की भी आवश्यकता नहीं है। होना ही है। निश्चित है ना। निश्चित भावी को कोई हिला नहीं सकता। अगर नाव और खिवैया मजबूत हैं तो कोई भी तूफान आगे बढ़ाने का साधन बन जाता है। तूफान भी तोहफा बन जाता है। इसलिए यह बीच-बीच में बाईप्लाट्स होते रहते हैं। लेकिन अटल भावी निश्चित है। इतना निश्चय है? या थोड़ा कभी नीचे-ऊपर देखते हो तो घबरा जाते हो-पता नहीं कैसे होगा, कब होगा? क्वेश्चन-मार्क आता है? यह तूफान ही तोहफा बनेगा। समझा? इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयी। सिर्फ फालो फादर। अच्छा!

(31.12.1992)

त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चिंत रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है

बापदादा सदा कहते हैं कि अमृतवेले सदा तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है, नथिंगन्यु, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक। मस्तक स्मृति का स्थान है, इसलिए तिलक मस्तक पर ही लगाते हैं। तीन बिन्दियों का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रखना। फिर सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे। यह 'क्यूं' और 'क्या' ही हलचल है। तो अचल रहने का साधन है-अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। यह भूलो नहीं। जिस समय कोई बात होती है उस समय फुलस्टॉप लगाओ। ऐसे नहीं कि याद था लेकिन उस समय भूल गया। गाड़ी में यदि समय पर ब्रेक न लगे तो फायदा होगा या नुकसान? तो समय पर फुलस्टॉप लगाओ। नथिंग न्यु-होना था, हो रहा है। और साक्षी होकर के देखकर आगे बढ़ते चलो। तो त्रिकालदर्शी अर्थात् आदि, मध्य, अन्त-तीनों को जान जैसा समय, वैसा अपने को सदा सेफ रख सको। ऐसे नहीं कहो कि - 'यह समस्या बहुत बड़ी थी ना, छोटी होती तो मैं पास हो जाती

लेकिन समस्या बहुत बड़ी थी!' कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान हो ना! तो बड़े हुए ना! बड़े के आगे समस्या नहीं है लेकिन खेल है! इसको कहा जाता है त्रिकालदर्शी। त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चिंत रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है।

जब अपने को जिम्मेवार समझते हो तब चिंता होती है और बाप को जिम्मेवार समझते हो तो निश्चिंत हो जाते हो। कई बार कहते हैं ना-क्या करें, जिम्मेवारी है ना, निभाना पड़ता है। लेकिन ट्रस्टी बन निभाओ। गृहस्थी बनकर निभा नहीं सकेंगे। ट्रस्टी बनकर के निभाने से सहज भी होगा और सफल भी होंगे। तो सब चिंता छोड़कर जाना। जिनके पास थोड़ी-बहुत हो, तो छोड़कर जाना, साथ नहीं ले जाना। वैसे तीर्थ पर कुछ छोड़कर आते हैं ना। तो यह भी महान् तीर्थ है ना! तो सदा के लिए निश्चिंत, निश्चयबुद्धि। समझा? किचड़ा साथ में नहीं रखा जाता है। माताओं को आदत होती है-पुरानी चीज़ भी होगी तो गांठ बांधकर रख देंगी! तो यह भी गांठ बाँधकर नहीं जाना। मातायें गठरी बांधती हैं, पाण्डव जेब में रखते हैं। तो इसे छोड़कर निश्चिंत अर्थात् सदा अचल-अडोल स्थिति में रहना।

(09.01.1993)

एक बाप पर निश्चय रखने से बुद्धि एकाग्र हो जाती है

सदा एक बल एक भरोसा—यह अनुभव करते रहते हो? जितना एक बाप में भरोसा अर्थात् निश्चय है तो बल भी मिलता है। क्योंकि एक बाप पर निश्चय रखने से बुद्धि एकाग्र हो जाती है, भटकने से छूट जाते हैं। एकाग्रता की शक्ति से जो भी कार्य करते हो उसमें सहज सफलता मिलती है। जहाँ एकाग्रता होती है वहाँ निर्णय बहुत सहज होता है। जहाँ हलचल होगी तो निर्णय यथार्थ नहीं होता है। तो 'एक बल, एक भरोसा' अर्थात् हर कार्य में सहज सफलता का अनुभव करना। कितना भी मुश्किल कार्य हो लेकिन 'एक बल, एक भरोसे' वाले को हर कार्य एक खेल लगता है। काम नहीं लगता है, खेल लगता है। तो खेल करने में खुशी होती है ना! चाहे कितनी भी मेहनत करने का खेल हो लेकिन खेल अर्थात् खुशी। देखो, मल्ल-युद्ध करते हैं तो उसमें भी कितनी मेहनत करनी पड़ती! लेकिन खेल समझ के करते हैं तो खुश होते हैं, मेहनत नहीं लगती। खुशी-खुशी से कार्य सहज सफल भी हो जाता है। अगर कोई कार्य करते भी हैं, लेकिन खुश नहीं, चिंता वा फिक्र में हैं—तो मुश्किल लगेगा ना! 'एक बल, एक भरोसा'—इसकी निशानी है कि खुश रहेंगे, मेहनत नहीं लगेगी। 'एक भरोसा, एक बल' द्वारा कितना भी असम्भव काम होगा तो वो सम्भव दिखाई देगा।

(18.01.1993)

प्रतिज्ञा का अर्थ ही है कि जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाये

प्रतिज्ञा का अर्थ ही है कि जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाये। कुछ भी त्याग करना पड़े, कुछ भी सुनना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा न जाये। ऐसे नहीं—जब कोई समस्या नहीं तब तो प्रतिज्ञा ठीक है, अगर कोई समस्या आ गई तो समस्या शक्तिशाली हो जाए और प्रतिज्ञा उसके आगे कमजोर हो जाए। इसको प्रतिज्ञा नहीं कहा जाता। वचन अर्थात् वचन। तो ऐसे प्रतिज्ञा मन से करें, कहने से नहीं। कहने से करने वाले उस समय तो शक्तिशाली संकल्प करते हैं। कहने से करने वाले में शक्ति तो रहती है लेकिन सर्व शक्तियां नहीं रहतीं। जब मन से प्रतिज्ञा करते हो और किससे प्रतिज्ञा की? बाप से। तो बाप से मन से प्रतिज्ञा करना अर्थात् मन को 'मन्मनाभव भी बनाना और मन्मनाभव का मन्त्र सदा किसी भी परिस्थिति में यन्त्र बन जाता है। लेकिन मन से करने से यह होगा। मन में आये कि मुझे यह करना नहीं है। अगर मन में यह संकल्प होता है कि—कोशिश करेंगे, करना तो है ही, बनना तो है ही, ऐसे नहीं करेंगे तो क्या होगा; क्या करेंगे, इसलिए कर लो........। इसको कहा जायेगा थोड़ी-थोड़ी मजबूरी। जो मन से करने वाला होगा वह यह नहीं सोचेगा कि करना ही पड़ेगा........। वह यह सोचगा कि बाप ने कहा और हुआ ही पड़ा है। निश्चय और सफलता में निश्चित होगा। यह है फर्स्ट नम्बर की प्रतिज्ञा। सेकेण्ड नम्बर की प्रतिज्ञा है— बनना तो है , करना तो है ही, पता नहीं कब हो जाये। यह 'तो', 'तो'........करना अर्थात् तोता हो गया ना। बापदादा के पास हर एक ने कितनी बार प्रतिज्ञा की है, वह सारा फाइल है। फाइल बहुत बड़े हो गये हैं। अभी फाइल नहीं भरना है, फाइनल करना है।

जब कोई बापदादा को कहते हैं कि प्रतिज्ञा की चिटकी लिखायें, तो बापदादा के सामने सारी फाइल आ जाती है। अभी भी ऐसे करेंगे? फाइल में कागज एड करेंगे कि फाइनल प्रतिज्ञा करेंगे?

(18.02.1993)

निश्चय रखकर चलो कि यह हुआ पड़ा है, सिर्फ प्रैक्टिकल में लाना है

दृढ़ संकल्प यूज़ किया अर्थात् सफल किया। जितना दृढ़ संकल्प को सफल करते जायेंगे उतनी सहज सफलता अनुभव करते जायेंगे। कभी भी यह नहीं सोचो कि यह कैसे होगा। 'कैसे' के बजाए सोचो कि 'ऐसे' होगा। संगम पर विशेष वरदान ही है—असम्भव को सम्भव करना। तो 'कैसे' शब्द आ ही नहीं सकता। यह होना मुश्किल है—नहीं। निश्चय रखकर चलो कि यह हुआ पड़ा है, सिर्फ प्रैक्टिकल में लाना है। यह रिपीट होना है। बना हुआ है, बने हुए को बनाना अर्थात् रिपीट करना। सहज सफलता का आधार दृढ़ संकल्प के खजाने को सफल करो। समझा, क्या होगा, कैसे होगा—नहीं। होगा और सहज होगा! संकल्प की हलचल है तो वह सफलता को हलचल में ले आयेगी।

(18.02.1993)

संगम का हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा है - इस निश्चय से सहजयोगी बनो

सभी प्वाइंट्स का सार क्या है? प्वाइंट बनना। सब प्वाइंट्स का इसेन्स हुआ-प्वाइंट बनना। तो प्वाइट बनना सहज है या मुश्किल है? जो सहज बात होती है वो सदा होती है और मुश्किल होती है तो समटाइम (कभी-कभी) होती है। सबसे इजी (सहज) क्या है? प्वाइंट। प्वाइंट को लिखना सहज है ना! जब भी प्वाइंट रूप में स्थित नहीं होते तो क्वेश्चन-मार्क की क्यू होती है ना! क्वेश्चन-मार्क मुश्किल होता है! तो जब भी क्वेश्चन-मार्क आये तो उसके बदले इजी 'प्वाइंट' लगा दो। किसी भी बात को समाप्त करना होता है तो कहते हैं-इसको बिन्दी लगा दो। फुलस्टॉप लगाना आता है ना! फुलस्टॉप लगाने का सहज सलोगन याद रखो-जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा वह अच्छा होगा! क्योंकि क्वेश्चन तब उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा। इससे सदा सहज-योगी जीवन का अनुभव करेंगे! 'अच्छा' कहने से अच्छा हो ही जाता है। स्वयं भी अच्छे और जो एक्ट करेंगे वह भी अच्छी! अच्छे को देखकर के दूसरे आकर्षित अवश्य होंगे। सभी अच्छा ही पसन्द करते हैं। अच्छा! सेवा अच्छी चल रही है ना! संख्या भी बढ़ाओ और क्वालिटी भी बढ़ाते चलो। ऐसे माइक तैयार करो जो एक के नाम से अनेकों का कल्याण हो जाए। स्वयं सदा सन्तुष्ट हो? अपने लिए तो कोई क्वेश्चन नहीं है ना! 'निश्चय' है फाउन्डेशन, निश्चय का फाउन्डेशन होगा तो कर्म आटोमेटिकली श्रेष्ठ होंगे। पहले स्मृति निश्चय की होती है। संकल्प में निश्चय अर्थात् दृढ़ता होगी तो कर्म आटोमेटिकली फल देंगे। अच्छा! सभी खुश और सन्तुष्ट हैं! सदा खुशी में नाचने वाले हैं! हलचल का समय समाप्त हो गया। पास्ट को पास्ट किया और फयुचर तो है ही बहुत सुन्दर! गोल्डन फयुचर है!

(18.02.1993)

सेल्फ पर राज्य करने वाले बेफिक्र बादशाह बनो

सदा अपने को राजा समझते हो? सेल्फ पर राज्य है अर्थात् स्वराज्य अधिकारी हो। और दूसरे कौनसे राजा हो? बेफिक्र बादशाह। बेफिक्र बादशाह इस समय बनते हो। क्योंकि सतयुग में फिक्र वा बेफिक्र का ज्ञान ही नहीं है। कल क्या थे और आज क्या बने हो! बेफिक्र बादशाह बन गये ना! बेफिक्र बनने से भण्डारे भरपूर हो गये हैं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् बेफिक्र बादशाह। स्वराज्य मिला-सब-कुछ मिला। स्वराज्य मिला है? कभी कोई कर्मेन्द्रियां तो धोखा नहीं देती? कभी-कभी थोड़ा खेल करती हैं तो कन्ट्रोलिंग पॉवर या रूलिंग पॉवर कम है। तो सदैव चलते-फिरते यह स्मृति सदा रहे कि-मैं स्वराज्य अधिकारी बेफिक्र बादशाह हूँ। बाप आया ही है आप सबके फिक्र लेने के लिए। तो फिक्र दे दिया ना। थोड़ा छिपाके तो नहीं रखा है? पॉकेट चेक करके देखो। बुद्धि रूपी, मन रूपी पॉकेट दोनों ही देखो। जब हैं ही बाप के बच्चे, तो बच्चे बेफिक्र होते हैं। क्योंकि बाप दाता

है, तो दाता के बच्चों को क्या फिक्र है! अच्छा, यह कौनसी भाषा वाले हैं? (स्पेनिश, पोर्चगीज) देखो, साइन्स के साधन आपके काम में तो आ रहे हैं ना! ड्रामा अनुसार साइन्स वालों को भी टच तभी हुआ है जब बाप को आवश्यकता है। साधन यूज़ करना अलग चीज़ है और साधनों के वश होना अलग चीज़ है। तो आप साधनों को यूज़ करते हो या साधनों के वश हो जाते हो? कभी कोई साधन अपनी तरफ खींचते तो नहीं हैं? मास्टर क्रियेटर होकर के क्रियेशन से लाभ भले लो। अगर वशीभूत हो गये तो दु:ख देंगे।

(18.02.1993)

हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे - ये निश्चय हो

सभी के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर नूंधी हुई है। क्योंकि भाग्यविधाता के बच्चे हैं। तो जिसका बाप भाग्यविधाता है, उसका कितना बड़ा भाग्य है! तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को देख हर्षित रहते हो और सदा रहते रहना। ये भाग्य की लकीर सिर्फ एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन अनेक जन्म ये भाग्य साथ रहेगा। भाग्य आपके साथ जायेगा ना। गारन्टी है ना। दुनिया वाले कहते हैं-हाथ खाली आये, हाथ खाली जायेंगे। लेकिन आप कहते हो- हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे। ये निश्चय है ना। भाग्य का अनुभव करते हो ना। सभी अनुभवी हैं। तो इसी अनुभव को सदा आगे बढ़ाते रहो। स्मृति रखना माना बढ़ाना। बापदादा हर एक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। क्योंकि आप ब्राह्मण आत्माओं के श्रेष्ठ भाग्य से ऊंचा भाग्य किसका है ही नहीं। अभी क्या नवीनता करेंगे? नवीनता है - कि कम समय में ज्यादा सेवा कर सफलता प्राप्त होना। उसके लिये क्या करेंगे? ऐसी आत्माओं को निमित्त बनाओ जो एक के आवाज से अनेक सहज बाप के समीप आ जायें। बापदादा ने कहा ना-अभी माइक तैयार करो जिनका आवाज बुलन्द हो।

(07.03.1993)

अपनी सर्व जिम्मेवारियां बाप को देकर बेफिक्र बादशाह बनो

सदा अपने को बेफिक्र बादशाह अनुभव करते हो? या थोड़ा-थोड़ा फिक्र है? क्योंकि जब बाप ने आपकी जिम्मेवारी ले ली, तो जिम्मेवारी का फिक्र क्यों? अभी सिर्फ रेस्पान्सिबिल्टी है बाप के साथ-साथ चलते रहने की। वह भी बाप के साथ-साथ है, अकेले नहीं। तो क्या फिक्र है? कल क्या होगा-ये फिक्र है? जॉब का फिक्र है? दुनिया में क्या होगा- ये फिक्र है? क्योंकि जानते हो कि-हमारे लिए जो भी होगा अच्छा होगा। निश्चय है ना। पक्का निश्चय है या हिलता है कभी ? जहाँ निश्चय पक्का है, वहाँ निश्चय के साथ विजय भी निश्चित है। ये भी निश्चय है ना कि विजय हुई पड़ी है। या कभी सोचते हो कि - पता नहीं होगी या नहीं? क्योंकि कल्प-कल्प के विजयी हैं और सदा रहेंगे-ये अपना यादगार कल्प पहले वाला अभी फिर से देख रहे हो। इतना निश्चय है ना कि कल्प-कल्प के विजयी हैं। इतना निश्चय है? कल्प पहले भी आप ही थे या दूसरे थे? तो सदा यही याद रखना कि हम निश्चयबुद्धि विजयी रत्न हैं। ऐसे रत्न हो जिन रत्नों को बापदादा भी याद करते हैं। ये खुशी है ना? बहुत मौज में रहते हो ना। इस अलौकिक दिव्य श्रेष्ठ जन्म की और अपने मधुबन घर में पहुंचने की मुबारक।

(26.03.1993)

सदा स्मृति रखो कि-कल्याणकारी बाप मिला तो सदा कल्याण ही कल्याण है

ज्ञान में तीन का महत्व है। त्रिकालदर्शी भी बनते हैं। तीनों काल को जानते हो। या सिर्फ वर्तमान को जानते हो? कोई भी कर्म करते हो तो त्रिकालदर्शी बनकर कर्म करते हो या सिर्फ एकदर्शी बनकर कर्म करते हो? क्या हो-एक दर्शी या त्रिकालदर्शी? तो कल क्या होने वाला है-वह जानते हो? कहो-हम यह जानते हैं कि कल जो होगा वह बहुत अच्छा होगा। ये तो जानते हो ना! तो त्रिकालदर्शी हुए ना। जो हो गया वो भी अच्छा, जो हो रहा है वह और अच्छा और जो होने वाला है वह और बहुत अच्छा! यह निश्चय है ना कि अच्छे से अच्छा होना है, बुरा नहीं हो सकता। क्यों? अच्छे से अच्छा बाप मिला, अच्छे से अच्छे आप बने,

अच्छे से अच्छे कर्म कर रहे हो। तो सब अच्छा है ना। कि थोड़ा बुरा, थोड़ा अच्छा है? जब मालूम पड़ गया कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, तो श्रेष्ठ आत्मा का संकल्प, बोल, कर्म अच्छा होगा ना! तो यह सदा स्मृति रखो कि-कल्याणकारी बाप मिला तो सदा कल्याण ही कल्याण है। बाप को कहते ही हैं विश्व-कल्याणकारी और आप मास्टर विश्व-कल्याणकारी हो! तो जो विश्व का कल्याण करने वाला है उसका अकल्याण हो ही नहीं सकता। इसलिए यह निश्चय रखो कि हर समय, हर कार्य, हर संकल्प कल्याणकारी है। संगमयुग को भी नाम देते हैं-कल्याणकारी युग। तो अकल्याण नहीं हो सकता। तो क्या याद रखेंगे? जो हो रहा है वह अच्छा और जो होने वाला वह बहुत-बहुत अच्छा। तो यह स्मृति सदा आगे बढ़ाती रहेगी। अच्छा, सभी कोने-कोने में बाप का झण्डा लहरा रहे हो। सभी बहुत हिम्मत और तीव्र पुरुषार्थ से आगे बढ़ रहे हो और सदा बढ़ते रहेंगे। फ्युचर दिखाई देता है ना। कोई भी पूछे- आपका भविष्य क्या है? तो बोलो-हमको पता है, बहुत अच्छा है।

(26.03.1993)

आप सबके हर संकल्प में परमात्म चिन्तन है इसलिये बेफ़िक्र हैं

सभी कार्य अच्छे चल रहे हैं ना? अच्छे उमंग-उत्साह से कार्य हो रहा है। करावनहार करा रहे हैं और निमित्त बन करने वाले कर रहे हैं। ऐसे अनुभव होता है ना? सर्व के सहयोग की अंगुली से हर कार्य सहज और सफल होता है। कैसे हो रहा है - ये जादू लगता है ना। दुनिया वाले तो देखते और सोचते रह जाते हैं। और आप निमित्त आत्मायें सदा आगे बढ़ते जायेंगे। क्योंकि बेफ़िक्र बादशाह हो। दुनिया वालों को तो हर क़दम में चिन्ता है और आप सबके हर संकल्प में परमात्म चिन्तन है इसलिये बेफ़िक्र हैं। बेफ़िक्र हैं ना? अच्छा है, अविनाशी सम्बन्ध है। अच्छा, तो सब ठीक चल रहा है और चलना ही है। निश्चय है और निश्चिन्त हैं। क्या होगा, कैसे होगा-यह चिन्ता नहीं है।

(18.11.1993)

त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर तीनों कालों को देखो तो सदा खुशी रहेगी

सदा यह नशा रहता है कि हम विशेष आत्मायें हैं? तो गाया हुआ है कोटों में कोई, कोई में भी कोई तो पहले सुनते थे लेकिन अभी अनुभव कर रहे हो कि हम ही कोटों में कोई आत्मायें थी और हैं और सदा बनेंगी। कभी सोचा था कि इतना विशेष पार्ट इस ड्रामा के अन्दर हमारा नूँधा हुआ है! लेकिन अभी प्रैक्टिकल में अनुभव कर रहे हो। पक्का निश्चय है ना। कल्प-कल्प कौन बनता है? क्या कहेंगे? हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे। तीनों काल का ज्ञान अभी आ गया है। त्रिकालदर्शी बन गये ना। एक सेकेण्ड में तीनों काल को देख सकते हो? क्या थे, क्या हैं और क्या होंगे-स्पष्ट है ना। कल पुजारी, आज पूज्य बन रहे हैं। जब त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होते हो तो कितना मज़ा आता है। जैसे कोई भी देश में जब टॉप प्वाइन्ट पर खड़े होकर सारे शहर को देखते हैं तो मज़ा आता है ना। ऐसे ही यह संगमयुग टॉप प्वाइन्ट है तो इस पर खड़े होकर देखो तो मज़ा आयेगा। कल थे और कल बनने वाले हैं। इतना स्पष्ट अनुभव होता है? कल क्या बनने वाले हो? देवता। कितने बार बने हो? अनेक बार बने हो। तो कितना सहज और स्पष्ट हो गया। फ़लक से कहते हो ना-हम ही तो थे और कौन होंगे। अभी तो यही दिल कहता है ना कि और कौन बनेगा, हम थे, हम ही बन रहे हैं इसको कहते हैं मास्टर नॉलेजफुल। फुल नॉलेज आ गई है ना। एक काल की नहीं, तीनों काल की। तो जैसे बाप नालेजफुल है, बाप की महिमा में फुल के कारण सागर कहते हैं। सागर सदा फुल रहता है। तो नॉलेजफुल बन गये। एक काल के भी ज्ञान की कमी नहीं। भरपूर। इतना नशा है?

(18.11.1993)

ब्राह्मण जीवन का आधार - याद और सेवा

ड्रामा अनुसार ब्राह्मण जीवन में सभी को सेवा का चांस मिला हुआ है ना। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का आधार ही है याद और सेवा। अगर याद और सेवा कमज़ोर है तो जैसे शरीर का आधार कमज़ोर हो जाता है तो शरीर दवाइयों के धक्के से

चलता है ना। तो ब्राह्मण जीवन में अगर याद और सेवा का आधार मज़बूत नहीं, कमज़ोर है, तो वह ब्राह्मण जीवन भी कभी तेज़ चलेगा, कभी ढीला चलेगा, धक्के से चलेगा। कोई सहयोग मिले, कोई साथ मिले, कोई सरकमस्टांस मिले तो चलेंगे, नहीं तो ढीले हो जायेंगे। इसलिए याद और सेवा का विशेष आधार सदा शक्तिशाली चाहिए। दोनों ही शक्तिशाली हों। सेवा बहुत है, याद कमज़ोर है या याद बहुत अच्छी है, सेवा कमज़ोर है तो भी तीव्रगति नहीं हो सकती। याद और सेवा दोनों में तीव्रगति चाहिए। शक्तिशाली चाहिए। तो दोनों ही शक्तिशाली हैं या फ़र्क पड़ जाता है? कभी सेवा ज्यादा हो जाती, कभी याद ज्यादा हो जाती? दोनों साथ-साथ हों। याद और निस्वार्थ सेवा। स्वार्थ की सेवा नहीं, निस्वार्थ सेवा है तो माया जीत बनना बहुत सहज है। हर कर्म में, कर्म की समाप्ति के पहले सदा विजय दिखाई देगी। इतना अटल निश्चय का अनुभव होगा कि विजय तो हुई पड़ी है? अगर ब्राह्मण आत्माओं की विजय नहीं होगी तो किसकी होगी? क्षत्रियों की होगी क्या? ब्राह्मणों की विजय है ना। क्वेश्चन मार्क नहीं होगा। कर तो रहे हैं, चल तो रहे हैं, देख लेंगे, हो जायेगा, होना तो चाहिए-तो ये शब्द नहीं आयेंगे। पता नहीं क्या होगा, होगा या नहीं होगा-यह निश्चय के बोल हैं? निश्चयबुद्धि विजयी-यह गायन है ना? तो जब प्रैक्टिकल हुआ है तब तो गायन है। निश्चयबुद्धि की निशानी है-विजय निश्चित। जैसे किसी भी प्रकार की किसको शक्ति होती है-चाहे धन की हो, बुद्धि की हो, सम्बन्ध-सम्पर्क की हो तो उसको निश्चय रहता है-यह क्या बड़ी बात है, यह तो कोई बात ही नहीं है। आपके पास तो सब शक्तियां हैं। धन की शक्ति है कि धन की शक्ति करोड़पतियों के पास है? सबसे बड़ा धन है अविनाशी धन, जो सदा साथ है। तो धन की शक्ति भी है, बुद्धि की शक्ति भी है, पोज़ीशन की शक्ति भी है। जो भी शक्तियां गाई हुई हैं सब शक्तियां आप में हैं। हैं या कभी प्राय: लोप हो जाती हैं? इन्हें इमर्ज रूप में अनुभव करो। ऐसे नहीं-हाँ, हूँ तो सर्वशक्तिमान् का बच्चा लेकिन अनुभव नहीं होता। तो सभी भरपूर हो कि थोड़ा-थोड़ा खाली हो? समय पर विधि द्वारा सिद्धि प्राप्त हो। ऐसे नहीं समय पर हो नहीं और वैसे नशा हो कि बहुत शक्तियां हैं। कभी अपनी शक्तियों को भूलना नहीं, यूज़ करते जाओ-अगर स्व प्रति कार्य में लगाना आता है तो दूसरे के कार्य में भी लगा सकते हैं। पाण्डवों में शक्ति आ गई या कभी क्रोध आता है? थोड़ा-थोड़ा क्रोध आता है? कोई क्रोध करे तो क्रोध आता है, कोई इन्सल्ट करे तो क्रोध आता है? यह तो ऐसे ही हुआ जैसे दुश्मन आता है तो हार होती है। माताओं को थोड़ा-थोड़ा मोह आता है? पाण्डवों को अपने हर कल्प के विजयपन की सदा खुशी इमर्ज होनी चाहिये। कभी भी कोई पाण्डवों को याद करेंगे तो पाण्डव शब्द से विजय सामने आयेगी ना। पाण्डव अर्थात् विजयी। पाण्डवों की कहानी का रहस्य ही क्या है? विजय है ना। तो हर कल्प के विजयी। इमर्ज रूप में नशा रहे। मर्ज नहीं।

(25.11.1993)

मास्टर सर्वशक्तिमान् की निशानी है कि संकल्प और कर्म दोनों समान होगा

अपना आक्यूपेशन सदा याद रखो कि हम मास्टर सर्वशक्तिमान् हैं-क्योंकि आजकल सर्व आत्मायें अति कमज़ोर हैं तो कमज़ोर आत्माओं को शक्ति चाहिये। शक्ति कौन देगा? जो स्वयं मास्टर सर्वशक्तिमान् होगा। किसी भी आत्मा से मिलेंगे तो वो क्या अपनी बातें सुनायेंगे? कमज़ोरी की बातें सुनाते हैं ना? जो करना चाहते हैं वो कर नहीं सकते तो इसका प्रमाण है कि कमज़ोर हैं और आप जो संकल्प करते हो वो कर्म में ला सकते हो। तो मास्टर सर्वशक्तिमान् की निशानी है कि संकल्प और कर्म दोनों समान होगा। ऐसे नहीं कि संकल्प बहुत श्रेष्ठ हो और कर्म करने में वो श्रेष्ठ संकल्प नहीं कर सको, इसको मास्टर सर्वशक्तिमान् नहीं कहेंगे। तो चेक करो कि जो श्रेष्ठ संकल्प होते हैं वो कर्म तक आते हैं या नहीं आ सकते? मास्टर सर्वशक्तिमान् की निशानी है कि जो शक्ति जिस समय आवश्यक हो उस समय वो शक्ति कार्य में आये। तो ऐसे है या आह्वान करते हो, थोड़ा देरी से आती है? जब कोई बात पूरी हो जाती है, पीछे स्मृति में आये कि ऐसा नहीं, ऐसा करते, तो इसको कहा जाता है समय पर काम में नहीं आई। जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियां ऑर्डर पर चल सकती हैं ना, हाथ को जब चाहो, जहाँ चाहो वहाँ चला सकते हो, ऐसे यह सूक्ष्म शक्तियां इतने कन्ट्रोल में हों-जिस समय जो शक्ति चाहो काम में लगा सको। तो ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर है? ऐसे तो नहीं सोचते कि चाहते तो नहीं थे लेकिन हो गया। तो सदा अपनी कन्ट्रोलिंग पॉवर को चेक करते हुए शक्तिशाली बनते चलो। सब उड़ती कला वाले हो कि कोई चढ़ती कला वाला, कोई उड़ती कला वाला? वा कभी उड़ती, कभी चढ़ती, कभी चलती कला हो जाती है? बदली होता है वा एकरस आगे बढ़ते रहते हो? कोई विघ्न आता है तो कितने समय में

विजयी बनते हो? टाइम लगता है? क्योंकि नॉलेजफुल हो ना। तो विघ्नों की भी नॉलेज है। नॉलेज की शक्ति से विघ्न वार नहीं करेंगे लेकिन हार खा लेंगे। इसी को ही मास्टर सर्वशक्तिमान् कहा जाता है। तो अमृतवेले से इस आक्यूपेशन को इमर्ज करो और फिर सारा दिन चेक करो।

(02.12.1993)

ब्राह्मण जीवन अर्थात् सदा खुश जीवन

ब्राह्मण जीवन अर्थात् सदा खुश जीवन। ब्राह्मण बने किसलिये? कभी-कभी खुश रहने के लिये? सदा खुश रहने के लिये। तो कभी-कभी खुश नहीं रहना, सदा खुश रहना। बाप ने अविनाशी ख़ज़ाना दिया है, कभी-कभी का नहीं दिया है। कभी बाप ने कहा है क्या कि कभी-कभी खुश रहना, कभी दु:ख आये तो कोई हर्जा नहीं। सदा खुशी भव, सदा शान्त भव। कभी-कभी का वरदान नहीं होता है। तो क्या करना है - सदा रहना है ना या कभी-कभी भी ठीक है, चलेगा? 'कभी-कभी' शब्द समाप्त कर दो। कभी-कभी नहीं, अभी-अभी। हर घड़ी कहो अभी खुश हैं। आपका स्लोगन भी क्या है? अभी का स्लोगन है या कभी का है? अभी का है ना। तो जिस घड़ी कोई देखे, कोई मिले तो अभी-अभी खुशनसीब हैं ऐसे अनुभव करे। कभी-कभी खुश रहने वाले क्या कहलायेंगे? सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी? तो सूर्यवंशी हो या चन्द्रवंशी हो? सूर्यवंशी हो पक्का या यहाँ कहते हो सूर्यवंशी, वहाँ चन्द्रवंशी बन जायेंगे? सदा सूर्यवंशी हो ना। भगवान् के बनकर फिर भी चन्द्रवंशी बने तो क्या किया? गायन है ना कि जब भगवान् ने भाग्य बांटा तो सोये हुए थे क्या? अगर आधा लेते हैं तो आधा समय सोये हुए थे तभी नहीं लिया। तो पूरा भाग्य लेने वाले हो, आधा नहीं। तो कौन हो? सूर्यवंशी। एक भी चन्द्रवंशी नहीं। पक्का सोच लिया है, ऐसे ही तो नहीं कह रहे हो? फ़लक से कहो कि हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे? और कोई है क्या? आप ही हो ना। तो यह नशा रखो कि हम ही थे, हम ही हैं और हम ही बनेंगे। तीनों काल के लिये निश्चय है।

(02.12.1993)

सदा इसी स्वमान में रहो कि मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ, कल्याण करना मेरा कर्तव्य है

इस समय अर्थात् संगमयुग को कल्याणकारी युग कहा जाता है। यह कल्याणकारी युग है और कल्याणकारी आप आत्मायें हो। तो सदा ये अपना स्वमान याद रहता है कि मैं कल्याणकारी आत्मा हूँ? संगमयुग पर विशेष कर्तव्य ही है कल्याण करना। पहले स्व का कल्याण और साथ-साथ सर्व का कल्याण। तो ऐसे कल्याण करने की शक्ति अपने में अनुभव करते हो? किसी के वायुमण्डल का प्रभाव तो नहीं पड़ता है? दुनिया का वायुमण्डल है अकल्याण का और आपका वायुमण्डल है कल्याण करने का। तो अकल्याण का वायुमण्डल शक्तिशाली या कल्याण का वायुमण्डल शक्तिशाली? तो आपके ऊपर औरों का वायुमण्डल प्रभाव नहीं कर सकता। वो कमज़ोर है और आप शक्तिशाली हो। तो शक्तिशाली कमज़ोर के ऊपर जीत प्राप्त करता है, कमज़ोर शक्तिशाली के ऊपर जीत नहीं प्राप्त करता। कैसा भी तमोगुणी वायुमण्डल हो लेकिन आप सर्वशक्तिमान् बाप के साथी हो। जहाँ भगवान् है वहाँ विजय है। तो वायुमण्डल को बदलने वाले हो। चैलेन्ज की है ना कि हम विश्व परिवर्तक हैं। तो कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी आप आत्मायें हो और कल्याणकारी बाप है। तो कितनी शक्ति हो गई। समय की भी शक्ति, स्वयं की भी शक्ति और बाप की भी शक्ति। तो यह याद रखो—दुनिया के लिये अकल्याण का समय है, आपके लिये कल्याण का समय है। दुनिया वालों को सिर्फ़ विनाश दिखाई देता है और आपको विनाश के साथ स्थापना सामने है। तो सदा दिल में यह श्रेष्ठ संकल्प इमर्ज करो कि स्थापना हुई कि हुई। अपना भविष्य स्पष्ट है ना। जैसे वर्तमान स्पष्ट है ऐसे ही भविष्य भी स्पष्ट है। शक्तियों को तो नशा होना चाहिये कि संगमयुग विशेष शक्तियों का युग है। संगम पर ही बाप शक्तियों को आगे करते हैं। पाण्डवों को भी खुशी होती है ना कि शक्तियां आगे हैं तो हम आगे हैं ही। सदा मन में यही शुभ भावना रहती है कि सर्व का कल्याण हो। मनुष्यात्मायें तो क्या प्रकृति का भी कल्याण करने वाले। इसलिये प्रकृतिजीत, मायाजीत कहलाते हो। क्योंकि पुरुष हो ना, आत्मा पुरुष है तो आत्मा पुरुष प्रकृतिजीत बनती है। प्रकृति भी सुखदायी बन जाती है। इस समय देखो प्रकृति कितना दु:ख देती है। थोड़ा सा भी तूफ़ान आया, थोड़ा सा धरनी हलचल में आई कितनों को दु:ख मिलता है। तो आपके

लिये सुखदायी प्रकृति है और लोगों के लिये दु:खदायी। कोई भी दु:ख की घटना देखते हो, सुनते हो तो दु:ख की लहर आती है? कभी पोत्रा, धोत्रा दु:खी होता हो तो दु:ख की लहर आती है? दु:खधाम से न्यारे हो गये। संगम पर हो या कलियुग में हो? तो दु:खधाम से किनारा कर लिया या कि थोड़ा-थोड़ा दु:खधाम से लगाव है? बिल्कुल न्यारे हो गये? या हो रहे हो? तो सदा समय और स्वयं को याद रखो। स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी। तो इस स्मृति से सदा ही मायाजीत और प्रकृतिजीत रहेंगे। ज़रा भी हलचल नहीं हो। तो अचल भी हो, अडोल भी हो, अटल भी हो। कोई इस निश्चय से टाल नहीं सकता। अच्छा। सभी उड़ती कला वाले हो ना? उड़ते चलो और उड़ाते चलो।

(02.12.1993)

चिंताओं से फ्री सदा निश्चिंत वा बेफ़िक्र बादशाह रहने के लिए निश्चयबुद्धि बनो

सदा अपने को कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा अनुभव करते हो? अनेक बार यह अधिकार प्राप्त किया है और आगे के लिये भी निश्चित है कि कल्प-कल्प करते ही रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना। क्योंकि निश्चय है इस ब्राह्मण जीवन का फ़ाउन्डेशन। अगर निश्चय का फ़ाउन्डेशन पक्का है तो कभी भी हिलेंगे नहीं। चाहे कितने भी तूफ़ान आ जाये, चाहे कितने भी भूकम्प हो जायें लेकिन हिलेंगे नहीं। क्योंकि फ़ाउन्डेशन पक्का है। अभी भी देखो, प्रकृति का भूकम्प आता है तो कौन सी बिल्डिंग गिरती है? जो कच्ची होती है। पक्के फ़ाउन्डेशन वाली नहीं गिरेगी। तो आपका फ़ाउन्डेशन कितना पक्का है? हिलने वाला है क्या? हिलेगी नहीं लेकिन थोड़ी दरार आ जायेगी? थोड़ी भी नहीं। क्योंकि कोई तो गिर जाते हैं कोई गिरते नहीं लेकिन थोड़ी दरार आ जाती है। तो आप उनसे भी पक्के हो। तो निश्चय की निशानी है-हर कार्य में मंसा में भी, वाणी में भी, कर्म में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी हर बात में सहज विजय हो। मेहनत करके विजयी बने, वह विजय नहीं है। सहज विजयी। तो निशानी दिखाई देती है या विजय प्राप्त करने में मेहनत लगती है? कभी सहज, कभी मेहनत? लेकिन निश्चय की निशानी है सहज विजय। अगर मेहनत लगती है तो समझो कुछ मिक्स है। संशय नहीं भी हो लेकिन कुछ व्यर्थ मिक्स है इसलिये सहज विजय नहीं होती। नहीं तो विजय निश्चयबुद्धि आत्माओं के लिये तो सदा एवररेडी है। उसका स्थान ही वह है। जहाँ निश्चय है, वहाँ विजय होगी। निश्चय वालों के पास ही जायेगी ना। तो निश्चय सब बातों में चाहिये। सिर्फ़ बाप में निश्चय नहीं। लेकिन अपने आपमें भी निश्चय, ब्राह्मण परिवार में भी निश्चय, ड्रामा के हर दृश्य में भी निश्चय। तभी कहेंगे कि सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि। अगर बाप में निश्चय है लेकिन अपने में नहीं है, चलते-चलते अपने से दिलशिकस्त होते हैं तो निश्चय नहीं है तब तो होते हैं। तो वह भी अधूरा निश्चय हुआ। बाप में भी है, अपने आपमें भी है लेकिन परिवार में नहीं है। परिवार के कारण डगमग होते हैं। तो भी अधूरा निश्चय कहेंगे। ड्रामा में भी फुल निश्चय हो। जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसको कहते हैं ड्रामा में निश्चय। ऐसे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि हैं? कभी तो फुल है, कभी आधा है। जब अनेक बार का नशा है तो अनेक बार विजयी बने हो, अब रिपीट कर रहे हो। कोई नई बात नहीं कर रहे हो, रिपीट कर रहे हो। तो रिपीट करना तो सहज होता है ना। तो निश्चयबुद्धि विजयी-सदा यह स्मृति में रहे। निश्चय भी है और विजय भी है। ये नशा हो कि हमारी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी। विजय है और सदा होगी। तो अटल निश्चय हो। टलने वाला नहीं हो, थोड़ी सी बात हुई और निश्चय अटल नहीं रहे, ऐसा निश्चय नहीं हो। अटल निश्चय तो अटल विजय होगी। विजय की भावी टल नहीं सकती। अटल है। तो ऐसे निश्चयबुद्धि सदा हर्षित रहेंगे, निश्चिंत रहेंगे। क्योंकि चिन्ता खुशी को खत्म करती है। और निश्चिन्त हैं तो खुशी सदा रहेगी। तो निश्चयबुद्धि की दूसरी निशानी है निश्चिन्त। नहीं तो थोड़ी बात भी होगी तो चिन्ता होगी कि ये क्या हुआ, ये ऐसा हुआ। इस क्यों क्या से भी निश्चिन्त। क्या, क्यों, कैसे-ये चिन्ता की लहर है। अभी बड़ी चिन्ता नहीं होगी, इस रूप में होगी। होना नहीं चहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा, ये शब्द बदल जाते हैं। तो ऐसा है कि कभी-कभी क्वेश्चन मार्क होता है? कई कहते हैं ना कि मेरे पास ही ये क्यों होता है? मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे ये बंधन क्यों है, मेरे पीछे माया क्यों आती है, मेरा ही हिसाब किताब कड़ा है क्यों? तो 'क्यों' आना माना चिन्ता की लहर है। तो इस चिन्ताओं से भी परे-इसको कहा जाता है निश्चिन्त। तो कौन हो? निश्चिन्त हो या थोड़ी-थोड़ी क्यों, क्या है? निश्चिन्त आत्मा का सदा सलोगन है अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे। बुराई से भी अपना पाठ पढ़ लेंगे। बुराई को बुराई के रूप में नहीं देखेंगे। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त। 'चिन्ता' शब्द से भी अविद्या हो।

जैसे गायन है ना इच्छा मात्रम अविद्या। ऐसे चिन्ता की भी अविद्या हो। चिन्ता क्या होती है-यह अनुभव नहीं हो। तो ऐसी अवस्था इसको कहा जाता है निश्चिन्त। कोई भी बात आये तो 'क्या होगा' नहीं आयेगा, फ़ौरन ही यह आयेगा 'अच्छा होगा', बीत गया अच्छा हुआ। जहाँ अच्छा है वहाँ सदा बेफ़िक्र बादशाह हैं। तो निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफ़िक्र बादशाह। तो ऐसे है या थोड़ा-थोड़ा फ़िक्र कभी आ जाता है? तो बेफ़िक्र बादशाह ही बाप समान है। बाप को फ़िक्र है क्या? इतना बड़ा परिवार होते भी फ़िक्र है क्या? सब कुछ जानते हुए, देखते हुए बेफ़िक्र। ऐसे बेफ़िक्र हो? मातायें बेफ़िक्र हो या प्रवृत्ति में जाकर थोड़ा फ़िक्र हो जाता है? वायुमण्डल में जाकर थोड़ा प्रभाव पड़ जाता है? वायुमण्डल का प्रभाव नहीं पड़ता? अपना प्रभाव वायुमण्डल पर डालो, वायुमण्डल का प्रभाव आपके ऊपर नहीं पड़े। क्योंकि वायुमण्डल रचना है, आप मास्टर रचता हो। वायुमण्डल बनाने वाला कौन? मनुष्यात्मा। तो रचता हो गया ना। तो रचता के ऊपर रचना का प्रभाव नहीं हो, लेकिन रचता का रचना के ऊपर प्रभाव हो। तो कोई भी बात आये तो यह याद करो कि मैं विजयी आत्मा हूँ।

(09.12.1993)

उमंग-उत्साह ये उड़ने के पंख हैं। अगर पंख मज़बूत होते हैं तो तीव्र गति से उड़ सकते हैं

सभी अपने को सदा उमंग-उत्साह से उड़ने वाली आत्मायें अनुभव करते हो? सदा उमंग-उत्साह बढ़ता रहता है या कभी कम होता है कभी बढ़ता है? क्योंकि जितना उमंग-उत्साह होगा उतना औरों को भी उमंग-उत्साह में उड़ायेंगे। सिर्फ़ स्वयं नहीं उड़ने वाले हो लेकिन औरों को भी उड़ाने वाले हो। तो उमंग-उत्साह ये उड़ने के पंख हैं। अगर पंख मज़बूत होते हैं तो तीव्र गति से उड़ सकते हैं। अगर पंख कमज़ोर होंगे और तीव्र गति से उड़ने की कोशिश भी करेंगे तो नहीं उड़ सकेंगे, बार-बार नीचे आयेंगे। तो उमंग-उत्साह के पंख सदा मज़बूत हों। कभी कमज़ोर, कभी मज़बूत नहीं, सदा मज़बूत। क्योंकि अनेक आत्माओं को उड़ाने की ज़िम्मेवार आत्मायें हो। विश्व कल्याण करने की ज़िम्मेवारी ली है ना? तो सदा इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी स्मृति में रहे। जब कोई भी ज़िम्मेवारी होती है तब जो भी काम करेंगे तो तीव्र गति से करेंगे और ज़िम्मेवारी नहीं होती है तो अलबेले होते हैं। तो हरेक के ऊपर कितनी बड़ी ज़िम्मेवारी है! सभी ने यह ज़िम्मेवारी का संकल्प लिया है? या सोचते हो कि यह बड़ों का काम है, हम तो छोटे हैं-ऐसे तो नहीं। यह तो पुराने जाने हम तो नये हैं-ऐसे तो नहीं। चाहे बड़े हों, चाहे छोटे हों, चाहे पुराने हों, चाहे नये हों, लेकिन ब्राह्मण बनना अर्थात् ज़िम्मेवारी लेना। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन हैं तो बी.के.या और कुछ हैं? तो बी.के.अर्थात् ब्राह्मण बनना और ब्राह्मणों की ज़िम्मेवारी है ही। तो ये ज़िम्मेवारी की स्मृति कभी भी आपको अलबेला नहीं बनायेगी। लौकिक कार्य में भी जब कोई ज़िम्मेवारी बढ़ती है तो आलस्य और अलबेलापन आता है या चला जाता है? अगर कोई कहेगा भी ना कि चलो थोड़ा आराम कर लो, बैठ जाओ, क्या करना है, तो बैठ सकेंगे? तो ज़िम्मेवारी, आलस्य और अलबेलापन खत्म कर देती है। तो चेक करो कि कभी भी आलस्य या अलबेलापन तो नहीं आ जाता? चल तो रहे हैं, हो जायेगा-ये है अलबेलापन। आज नहीं तो कल हो जायेगा-ये आलस्य है। कल नहीं, आज भी नहीं, अब। क्योंकि कोई भरोसा नहीं। अगर अधूरा पुरुषार्थ रह गया तो कहाँ पहुँचेंगे? सूर्यवंश में या चन्द्रवंश में? आधा पुरुषार्थ रहा तो प्रालब्ध भी आधी मिलेगी ना। तो चन्द्रवंश में जाना है? नहीं जाना है? कोई एक भी नहीं जायेगा? मातायें भी सभी सूर्यवंशी बनेंगी? अच्छा। क्योंकि जब पाना है तो पूरा ही पायें ना। आधा पाना तो समझदारी नहीं है। समझदार सदा ही स्वयं को पूरा अधिकारी बनायेगा क्योंकि बच्चा अर्थात् अधिकारी। तो ऐसी अधिकारी आत्मायें हो या कभी-कभी थक भी जाते हो? अधिकार लेते-लेते थक तो नहीं जाते? कभी मन में थक जाते हैं-कहाँ तक करेंगे? अथक हैं, थकने वाले नहीं हैं। थकना काम चन्द्रवंशियों का है और अथक रहना ये सूर्यवंशी की निशानी है। क्या भी हो जाये लेकिन सदा अथक। जिसको उमंग-उत्साह होता है वह कभी थकता नहीं। उमंग कम होगा तो थकावट ज़रूर आयेगी। उमंग-उत्साह वाले सदैव अपने चेहरे से औरों को भी उमंग दिलाते रहेंगे। एक है चेहरा, दूसरा है चलन। तो अपने चेहरे और चलन से सदा औरों को भी उमंग-उत्साह में बढ़ाते रहो। ऐसी चलन हो जो कोई भी देखे तो सोचे कि ये उमंग-उत्साह में सदा कैसे रहता है? जैसे कोई बहुत खुश रहता है तो उसको देख करके दूसरे भी खुश हो जाते हैं ना। कोई रोने वाले होते हैं तो रोने वाले को देखकर दूसरे क्या करेंगे? अगर रोयेंगे नहीं तो मुस्करायेंगे भी नहीं। तो आपकी चलन और चेहरा ऐसे हैं? फ़लक से जवाब दो कि हम नहीं होंगे तो कौन होगा। कल्प-कल्प के आप ही हैं और सदा

ही रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना। तो हम ही थे और हम ही रहेंगे। पक्का है ना? जब सीज़न ही उड़ने की है तो उड़ने के समय पर गिरना तो अच्छा नहीं होता है ना। तो उड़ने वाले हैं और उड़ाने वाले भी। कभी भी, कोई भी बात आये तो याद करो कि हम कौन हैं? हमारी क्या ज़िम्मेवारी है?

(16.12.1993)

‘स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करो’

मैजारिटी की रिज़ल्ट देखते हुए क्या दिखाई देता है? कि ज्ञान बहुत है, योग की विधि के भी विधाता बन गये, धारणा के विषय पर वर्णन करने में भी बहुत होशियार हैं और सेवा में एक-दो से आगे हैं, बाकी क्या है? ज्ञाता तो नम्बरवन हो गये हैं, सिर्फ़ एक बात में अलबेले बन जाते हो, वो है- ‘स्व को सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करना’। समझते भी हो कि यही कमज़ोरी सुख की अनुभूति में अन्तर लाती है, शक्ति स्वरूप बनने में वा बाप समान बनने में विघ्न स्वरूप बनती है फिर भी क्या होता है? स्वयं को परिवर्तन नहीं कर सकते, फुलस्टॉप नहीं दे सकते। ठीक है, समझते हैं-का कॉमा (,) लगा देते हैं, वा दूसरों को देख आश्चर्य की निशानी (!) लगा देते हो कि ऐसा होता है क्या! ऐसे होना चाहिये! वा क्वेश्चन मार्क की क्यू (लाइन) लगा देते हो, क्यों की क्यू लगा देते हो। फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दु (.)। तो फुल स्टॉप तब लग सकता है जब बिन्दु स्वरूप बाप और बिन्दु स्वरूप आत्मा-दोनों की स्मृति हो। यह स्मृति फुल स्टॉप अर्थात बिन्दु लगाने में समर्थ बना देती है। उस समय कोई-कोई अन्दर सोचते भी हैं कि मुझे आत्मिक स्थिति में स्थित होना है लेकिन माया अपनी स्क्रीन द्वारा आत्मा के बजाय व्यक्ति वा बातें बार-बार सामने लाती है, जिससे आत्मा छिप जाती है और बार-बार व्यक्ति और बातें सामने स्पष्ट आती हैं। तो मूल कारण स्व के ऊपर कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पॉवर कम है। दूसरों को कन्ट्रोल करना बहुत आता है लेकिन स्व पर कन्ट्रोल अर्थात् परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाना कम आता है।

बापदादा कोई-कोई बच्चों के शब्द पर मुस्कराते रहते हैं। जब स्व के परिवर्तन का समय आता है वा सहन करने का समय आता है वा समाने का समय आता है तो क्या कहते हो? बहुत करके क्या कहते कि ‘मुझे ही मरना है’, ‘मुझे ही बदलना है’, ‘मुझे ही सहन करना है’ लेकिन जैसे लोग कहते हैं ना कि ‘मरा और स्वर्ग गया’ उस मरने में तो स्वर्ग में कोई जाते नहीं हैं लेकिन इस मरने में तो स्वर्ग में श्रेष्ठ सीट मिल जाती है। तो यह मरना नहीं है लेकिन स्वर्ग में स्वराज्य लेना है। तो मरना अच्छा है ना? क्या मुश्किल है? उस समय मुश्किल लगता है। मैं ग़लत हूँ ही नहीं, वो ग़लत है, लेकिन ग़लत को मैं राइट कैसे करूँ, यह नहीं आता। रांग वाले को बदलना चाहिये या राइट वाले को बदलना चाहिये? किसको बदलना है? दोनों को बदलना पड़े। ‘बदलने’ शब्द को आध्यात्मिक भाषा में आगे बढ़ना मानो, ‘बदलना’ नहीं मानो, ‘बढ़ना’। उल्टे रूप का बदलना नहीं, सुल्टे रूप का बदलना। अपने को बदलने की शक्ति है? कि कभी तो बदलेंगे ही।

(23.12.1993)

जब भाग्य विधाता अपना बन गया तो भाग्य कहाँ जायेगा?

सदैव यही गीत गाते रहते हो ना कि वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य! भगवान भी मिला और भाग्य भी मिला। कोई पूछे या सोचे कि मेरा भाग्य क्या है? अज्ञानी लोग तो सोचते हैं ना कि पता नहीं मेरा भाग्य क्या है? आप सोचते हो कि मेरा भाग्य क्या है? कभी संकल्प आता है या नहीं आता है? अपने भाग्य पर निश्चय है? जब भाग्य विधाता अपना बन गया तो भाग्य कहाँ जायेगा? जहाँ भाग्य विधाता है वहीं भाग्य है। तो सोचने की भी आवश्यकता नहीं है-क्या होगा! तो इतनी खुशी है कि कम-ज्यादा होती है? अभी कम नहीं होना चाहिये। ज्यादा से ज्यादा हो, लेकिन कम नहीं हो।

(23.12.1993)

निश्चय है कि अनेक बार बने हैं, अब भी हैं और आगे भी बनते रहेंगे

कभी कोई बात में घबराने वाले तो नहीं हो? वहाँ जाकर कोई बात आ जाये तो घबरायेंगे नहीं? देखना, वहाँ जायेंगे तो माया आयेगी। फिर ऐसे तो नहीं कहेंगे कि मैंने तो समझा नहीं था, ऐसे भी हो सकता है! नये-नये रूप में आयेगी, पुराने रूप में नहीं आयेगी। फिर भी बहादुर हो। निश्चय है कि अनेक बार बने हैं, अब भी हैं और आगे भी बनते रहेंगे। निश्चय की विजय है ही। मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्मृति में रहने वाले कभी घबरा नहीं सकते।

सभी एवररेडी हो गये हो या थोड़ा-थोड़ा अभी तैयार होना है? कल विनाश आ जाये तो तैयार हो? कि सोचेंगे कि अभी ये करना था एवररेडी हो, सम्पूर्ण हो गये हो? (सम्पूर्ण बनना है) तो एवररेडी कैसे हुए? बनना है तो देरी है ना। ऐसे नहीं सोचना कि उस समय हो जायेंगे। इसके लिए बहुत समय का अभ्यास चाहिये। अगर उस समय कोशिश करेंगे तो मुश्किल है, हो नहीं सकेंगे, टिक नहीं सकेंगे। इसीलिये अभी से एवररेडी के संस्कार इमर्ज करो।

माताओं को विशेष खुशी है ना कि क्या से क्या बन गये! दुनिया वालों ने जितना गिराया, बाप ने उतना ही चढ़ा दिया। माताओं को कभी दु:ख की लहर आती है? अच्छा-पाण्डवों को कभी दु:ख की लहर आती है? बिज़नेस में, नौकरी में नुकसान हो जाये तो! देवाला निकल जाए तो? इतने पक्के हो? क्योंकि निश्चय है अगर बाप के सच्चे बच्चे बने, तो बाप दाल रोटी खिलाते रहेंगे। ज्यादा नहीं देगा लेकिन दाल रोटी देगा। चाहिये भी क्या? दाल-रोटी ही चाहिये ना। रोटी नहीं तो चावल ही मिल जायेगा। इतना पक्का निश्चय है ना। बस ऐसे ही निश्चय में अटल, अखण्ड, अटल उड़ते रहो।

(23.12.1993)

उमंग-उत्साह आप ब्राह्मणों के लिये बड़े से बड़ी शक्ति है

मनाने का अर्थ है उमंग-उत्साह में आना। उत्साह होता है, इसीलिये मनाने के दिन को उत्सव कहा जाता है। उत्साह से ही एक-दो को बधाइयां वा मुबारक देते हैं वा ग्रीटिंग्स देते हैं। आप ब्राह्मण आत्माओं के लिये हर दिन उत्सव है। सदा उत्सव अर्थात् उमंग-उत्साह में रहते हो। यह उमंग-उत्साह ही ब्राह्मण जीवन है। दुनिया की रीति प्रमाण विशेष दिन को मनाते हो, आज मनाने के लिये इकट्ठे हुए हो ना। लेकिन आपका नव युग नई जीवन का उमंग-उत्साह सदा ही है। ऐसे नहीं कि 2 तारीख हो जायेगी तो उमंग-उत्साह खलास हो जायेगा, एक मास हो गया तो और खत्म हो जायेगा। हर दिन उमंग-उत्साह बढ़ता जाता है, कम नहीं होता। ऐसे है ना? कि अपने-अपने स्थान पर जायेंगे तो उत्साह खत्म हो जायेगा? हर घड़ी उमंग-उत्साह की है। क्योंकि उमंग-उत्साह ही आप ब्राह्मणों की उड़ती कला के पंख है। इस उमंग-उत्साह के पंखों से सदा उड़ते रहते हो। अगर कार्य अर्थ कर्म में भी आते हो फिर भी उड़ती कला की स्थिति से कर्मयोगी बन कर्म में आते हो। तो उड़ती कला वाले हो ना, तो बिना पंखों के तो उड़ नहीं सकते। यह उमंग-उत्साह उड़ती कला के पंख सदा साथ हैं। यह उमंग-उत्साह आप ब्राह्मणों के लिये बड़े से बड़ी शक्ति है। नीरस जीवन नहीं है। दुनिया वाले तो कहेंगे कि क्या करें, रस नहीं है, नीरस है, बेरस है और आप क्या कहेंगे उमंग-उत्साह का रस है ही है। कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते हो। सदा दिल खुश। कैसी भी मुश्किल बात हो, लेकिन उमंग-उत्साह मुश्किल को सहज कर देता है। उत्साह तूफ़ान को भी तोहफ़ा बना देता है, पहाड़ को भी राई नहीं लेकिन रुई बना देता है। उत्साह किसी भी परीक्षा वा समस्या को मनोरंजन अनुभव कराता है। इसलिये उमंग-उत्साह में रहने वाले नव युग के आधारमूर्त नव जीवन वाले ब्राह्मण आत्मायें हो। अपने को जानते हो। मानते भी हो या सिर्फ़ जानते हो? क्या कहेंगे? जानते भी हैं, मानते भी हैं और उसी में चलते भी हैं। सदा यह उत्साह रहता है कि कल्प पहले भी हम ही थे, अब भी हैं और अनेक बार हम ही बनेंगे। तो अविनाशी उत्साह हो गया ना। थे, हैं और सदा होंगे - तीनों काल का हो गया ना। पास्ट, प्रेजन्ट और फ्युचर - तीन काल हो गये। तो अविनाशी हो गया ना। बापदादा देख रहे थे कि अविनाशी उमंग-उत्साह में रहने वाली आत्मायें नम्बरवार हैं या सब नम्बरवन हैं? जब हैं ही निश्चयबुद्धि विजयी तो विजयी तो ज़रूर नम्बरवन होंगे ना, नम्बरवार थोड़ेही होंगे।

(31.12.1993)

सर्व ख़ज़ानों को सफल करते जाओ तो सफलता आपेही आपके आगे आयेगी

सभी अपने को सफलता मूर्त अनुभव करते हो? सफलता ब्राह्मण जीवन का जन्म सिद्ध अधिकार है-ऐसे अनुभव करते हो? सदा सफलता सहज रहे उसका साधन वा सबसे सहज विधि क्या है? निश्चय में भी मेहनत करनी पड़ती है, साथ निभाने में भी मेहनत करनी पड़ती है। सबसे सहज साधन है-सर्व ख़ज़ानों को सफल करते जाओ तो सफलता आपेही आपके आगे आयेगी। सफल करना ही सफलता प्राप्त करना है। तो सफल करना आता है? अच्छा, समय को सफल करते हो तो उसकी सफलता आपको क्या मिलती है? जो यहाँ समय सफल करते हैं उन्हें सतयुग, त्रेता तो क्या लेकिन सारे कल्प का समय या तो राज्य अधिकारी बनते हो या पूज्य अधिकारी बनते हो। यहाँ एक जन्म के समय को सफल करते हो तो कितने जन्म के लिए समय सफल हो जाता है। वैसे जो भी ख़ज़ाने मिले हैं उन ख़ज़ानों को सफल करते जाओ। कितने ख़ज़ाने हैं! तो सारे दिन में सभी ख़ज़ाने सफल करते हो या कभी कोई करते हो, कभी कोई करते हो?

(31.12.1993)

विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है-इस निश्चय और नशे से निर्विघ्न स्थिति का अनुभव करो

जैसे ऊंचे से ऊंचा बाप है ऐसे हम आत्मायें भी ऊंचे से ऊंची श्रेष्ठ आत्मायें हैं-यह अनुभव करते हुए चलते हो? क्योंकि दुनिया वालों के लिये तो सबसे श्रेष्ठ, ऊंचे से ऊंचे हैं बाप के बाद देवतायें। लेकिन देवताओं से ऊंचे आप ब्राह्मण आत्मायें हो, फ़रिश्ते हो-ये दुनिया वाले नहीं जानते। देवता पद को इस ब्राह्मण जीवन से ऊंचा नहीं कहेंगे। ऊंचा अभी का ब्राह्मण जीवन है। देवताओं से भी ऊंचे क्यों हो, उसको तो अच्छी तरह से जानते हो ना। देवता रूप में बाप का ज्ञान इमर्ज नहीं होगा। परमात्म मिलन का अनुभव इस ब्राह्मण जीवन में करते हो, देवताई जीवन में नहीं। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं लेकिन इस समय देवताई जीवन से भी ऊंच हो, तो इतना नशा सदा रहे, कभी-कभी नहीं। क्योंकि बाप अविनाशी है और अविनाशी बाप जो ज्ञान देते हैं वह भी अविनाशी है, जो स्मृति दिलाते हैं वह भी अविनाशी है, कभी-कभी नहीं। तो यह चेक करो कि सदा यह नशा रहता है वा कभी-कभी रहता है? मज़ा तो तब आयेगा जब सदा रहेगा। कभी रहा, कभी नहीं रहा तो कभी मज़े में होंगे, कभी मूँझे हुए रहेंगे। तो अभी-अभी मज़ा, अभी-अभी मूँझ नहीं, सदा रहे। जैसे यह श्वास सदा ही चलता है ना। यदि एक सेकण्ड भी श्वास रुक जाये या कभी-कभी चले तो उसे जीवन कहेंगे? तो इस ब्राह्मण जीवन में निरन्तर मजे में हो? अगर मज़ा नहीं होगा तो मूँझेंगे ज़रूर। तो मातायें सदा मज़े में रहती हो? शक्तियां हो ना, साधारण तो नहीं हो या घर में जाती हो तो साधारण मातायें बन जाती हो? नहीं, सदा यह याद रहे कि हम शक्तियां है। हद के नहीं हैं, बेहद के विश्व कल्याणकारी हैं। शक्तियां अर्थात् असुरों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाली। शक्तियों को कहते ही हैं-असुर संहारनी अर्थात् आसुरी संस्कार को संहार करने वाली। तो सभी शक्तियां ऐसी बहादुर हो? और पाण्डव अर्थात् विजयी। पाण्डव कभी यह नहीं कह सकते कि चाहते नहीं हैं लेकिन हार हो जाती है। क्योंकि आधा कल्प हार खाई, अभी विजय प्राप्त करने का समय है तो विजय के समय पर भी यदि हार खायेंगे तो विजयी कब बनेंगे? इसलिये इस समय सदा विजयी। विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है। अधिकार को कोई छोड़ते नहीं, लड़ाई-झगड़ा करके भी लेते हैं और यहाँ तो सहज मिलता है। विजय अपना जन्म-सिद्ध अधिकार है। अधिकार का नशा वा खुशी रहती है ना? हद के अधिकार का भी कितना नशा रहता है! प्राइम मिनिस्टर को भूल जायेगा क्या कि मैं प्राइम मिनिस्टर हूँ? सोयेगा, खायेगा तो भूलेगा क्या कि मैं प्राइम मिनिस्टर हूँ? तो हद का अधिकार और बेहद का अधिकार कितना भी कोई भुलाये भूल नहीं सकता। माया का काम है भुलाना और आपका काम है विजयी बनना क्योंकि समझ है ना कि विजय और हार क्या है? हार के भी अनुभवी हैं और विजय के भी अनुभवी हैं। तो हार खाने से क्या हुआ और विजय प्राप्त करने से क्या हुआ-दोनों के अन्तर को जानते हो इसलिये सदा विजयी हैं और सदा रहेंगे। क्योंकि अविनाशी बाप और अविनाशी प्राप्ति के अधिकारी हम आत्मायें हैं-यह सदा इमर्ज रूप में रहे। ऐसे नहीं हैं तो! बने तो हैं! जानते तो हैं! ऐसे नहीं। प्रैक्टिकल में हैं। जो जानते हैं वही निश्चय कर चलते हैं। तो हर कर्म में विजय का निश्चय और नशा हो। नशे का आधार है ही निश्चय। निश्चय कम तो नशा कम। इसीलिये कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। तो फ़ाउन्डेशन क्या हुआ? निश्चय। निश्चय में कभी-कभी वाले नहीं बनना। नहीं तो अन्त में रिज़ल्ट के समय भी प्राप्ति कभी-कभी की होगी फिर पश्चाताप् करना पड़ेगा। अभी प्राप्ति है, फिर पश्चाताप् होगा।

तो प्राप्ति के समय प्राप्ति करो, पश्चाताप् के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे। कर लेंगे, हो जायेगा! नहीं, करना ही है-यह निश्चय हो। कर लेंगे.... दिलासे पर नहीं चलो। कर तो रहे हैं ना.. और क्या होगा... हो ही जायेंगे.... नहीं, अभी होना है। गें-गें नहीं, हैं। जब दूसरों को चैलेन्ज करते हो कि श्वास पर कोई भरोसा नहीं, औरों को ज्ञान देते हो ना तो पहले स्वयं को ज्ञान दो। कभी करने वाले हैं या अब करने वाले हैं? तो सदा विजय के अधिकारी आत्मायें हो। विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है-इस स्मृति से उड़ते चलो। कुछ भी हो जाये, ये स्मृति में लाओ कि मैं सदा विजयी हूँ। क्या भी हो जाये, निश्चय अटल है, कोई टाल नहीं सकता।

(10.01.1994)

सदा यह स्मृति रखो कि अनेक बार की अधिकारी आत्मायें हैं

सभी अपने को बाप के वर्से के अधिकारी आत्मायें अनुभव करते हो। अधिकारी आत्माओं की निशानी क्या होती है? अधिकार का निश्चय और नशा रहता है। ये अविनाशी रूहानी नशा है। तो अधिकार में क्या-क्या मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो कितनी है? बड़ी लिस्ट है या छोटी लिस्ट है? तो सदैव अपने भिन्न-भिन्न प्राप्त अधिकारों को सामने रखो। इमर्ज रूप में लाओ। जितना इमर्ज होगा, स्मृति में होगा, तो स्मृति की समर्थी आती है। कभी किस अधिकार को याद करो, कभी किस अधिकार को याद करो। वेराइटी है ना। आजकल के मानव को भी वेराइटी में रुचि होती है ना। तो आपके पास कितनी वेराइटी है? बहुत है ना! कभी वरदान को इमर्ज करो, कभी वर्से में ख़ज़ाने जो मिले हैं उनको इमर्ज करो तो कैसी स्थिति रहेगी? क्योंकि जैसी स्मृति वैसी स्थिति रहती है। अगर स्मृति अधिकार की रही तो स्थिति क्या रहेगी? खुशी में नाचते रहेंगे ना। आजकल की दुनिया में किसी को रिवाजी अधिकार भी मिलता है तो कितना मेहनत करके अधिकार लेते हैं, जानते हैं यह सदा काल का नहीं है फिर भी कितना कुछ करते हैं। और आपको बिना मेहनत के अधिकार मिल गया। मेहनत करनी पड़ी क्या? बच्चा बनना अर्थात् अधिकार लेना। मेरा माना और अधिकार मिला। तो वाह मेरा अधिकार! वाह मैं श्रेष्ठ अधिकारी आत्मा! हद के अधिकार में नहीं, बेहद के अधिकार में। हद के अधिकार के पीछे अगर कोई जाता है तो बेहद का अधिकार गंवाता है। तो सदा बेहद के अधिकार की खुशी में रहो। खुश रहते हो ना? आप जैसी खुशी किसके पास है? निश्चिन्त हो गये, कोई चिन्ता है क्या? पता नहीं, क्या होगा-ये चिन्ता है? निश्चिन्त हैं। क्योंकि अविनाशी अधिकार निश्चित ही है। तो जहाँ निश्चित होता है वहाँ निश्चिन्त होते हैं। कोई भी बात निश्चित नहीं होती है तो उसकी चिन्ता रहती है, पता नहीं क्या होगा! मातायें सभी निश्चिन्त है कि कोई-कोई चिन्ता रहती है? अगर सब बाप के हवाले कर दिया तो निश्चिन्त होंगे। अपने ऊपर बोझ रखा तो निश्चिन्त नहीं होंगे, फिर चिन्ता ज़रूर होगी। मेरी ज़िम्मेवारी है, मेरी फर्ज-अदाई है, मेरापन आना माना चिन्ता। अगर फर्ज है या ज़िम्मेवारी है तो बेहद की है, हद की नहीं। विश्व की है। दो-चार की नहीं। अपने को अभी जगत माता समझती हो कि चार-पांच बच्चे, पोत्रे पोत्रियों की मातायें हो? किसी आत्मा को भी देखेंगे तो क्या लगता है? यह हमारा परिवार है? कि सिर्फ लौकिक को अपना परिवार समझते हो? बेहद परिवार के हैं। बाप की सहयोगी आत्मायें हैं। बेहद का नशा है ना, कि कभी हद का, कभी बेहद का? जैसे बाप वैसे बच्चे होते हैं तो बाप बेहद का बाप है तो बच्चे भी बेहद के हुए ना। तो क्या याद रखेंगे? हम अधिकारी आत्मायें हैं। सिर्फ वर्से के नहीं, वरदानों के भी-डबल अधिकार है। वरदान भी देखो कितने मिलते हैं! रोज़ वरदान मिलता है ना! तो वरदानों से भी झोली भरते हो और वर्से से भी झोली भरते हो। इसलिये सदा भरपूर रहते हो, खाली नहीं। सदा यह स्मृति रखो कि अनेक बार की अधिकारी आत्मायें हैं।

(01.02.1994)

एक बाप में भरोसा अर्थात् निश्चय होने से साइलेन्स का बल, योग का बल स्वतः ही अनुभव होता है

एक बल एक भरोसा ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हैं, ऐसे अनुभव करते हो? एक बल एक भरोसा है या अनेक बल अनेक भरोसे हैं? एक बल कौन सा है? साइलेन्स का बल, योग का बल। एक बाप में भरोसा अर्थात् निश्चय होने से यह साइलेन्स का बल, योग का बल स्वतः ही अनुभव होता है। तो साइलेन्स की शक्ति वाले हैं, योग बल वाले हैं-यह स्मृति रहती है? शान्ति की शक्ति सर्व श्रेष्ठ शक्ति है। क्योंकि और सभी शक्तियां कहाँ से निकलती हैं? शान्ति की शक्ति से ना! आज साइन्स की शक्ति का

प्रभाव है लेकिन वह भी निकली कहाँ से? शान्ति की शक्ति से निकली ना? तो शान्ति की शक्ति द्वारा जो चाहो वह कर सकते हो। असम्भव को भी सम्भव कर सकते हो। जो दुनिया वाले आज असम्भव कहते हैं आपके लिए वह सम्भव है ना! तो सम्भव होने के कारण सहज लगता है। मेहनत नहीं लगती। दुनिया वाले तो अभी भी यही सोचते रहते हैं कि परमात्मा को पाना बहुत मुश्किल है। और आप क्या कहेंगे? पा लिया। वह कहेंगे कि परम आत्मा तो बहुत ऊंचा हजारों सूर्यो से भी तेजोमय है और आप कहेंगे वह तो बाप है। स्नेह का सागर है। जलाने वाला नहीं है। हजारों सूर्य से तेजोमय तो जलायेगा ना और आप तो स्नेह के सागर के अनुभव में रहते हो, तो कितना फ़र्क हो गया। जो दुनिया ना कहती वह आप हाँ करते। फ़र्क हो गया ना। कल आप भी नास्तिक थे और आज आस्तिक बन गये। कल माया से हार खाने वाले और आज मायाजीत बन गये। फ़र्क है ना। मातायें जो कल पिंजड़े की मैना थी और आज उड़ती कला वाले उड़ते पंछी है। तो उड़ती कला वाले हो या कभी-कभी वापस पिंजड़े में जाते हो? कभी-कभी दिल होती है पिंजड़े में जाने की? बंधन है पिंजड़ा और निर्बन्धन है उड़ना। मन का बंधन नहीं होना चाहिए। अगर किसी को तन का बंधन है तो भी मन उड़ता पंछी है। तो मन का कोई बंधन है या थोड़ा-थोड़ा आ जाता है? जो मन मनाभव हो गये वह मन के बंधन से सदा के लिए छूट गये। अच्छा, प्रवृत्ति को सम्भालने का बंधन है? ट्रस्टी होकर सम्भालते हो? अगर ट्रस्टी हैं तो निर्बन्धन और गृहस्थी हैं तो बंधन है। गृहस्थी माना बोझ और बोझ वाला कभी उड़ नहीं सकता। तो सब बोझ बाप को दे दिया या सिर्फ थोड़ा एक दो पोत्रा रख दिया है? पाण्डवों ने थोड़ा-थोड़ा जेबखर्च रख दिया है? थोड़ा-थोड़ा रोब रख दिया, क्रोध रख दिया, यह जेबखर्च है? मेरे को तेरा कर दिया? किया है या थोड़ा-थोड़ा मेरा है? ठगी करते हैं ना मेरा सो मेरा और तेरा भी मेरा। ऐसी ठगी तो नहीं करते? आधाकल्प तो बहुत ठगत रहे ना। कहना तेरा और मानना मेरा तो ठगी की ना। अभी ठगत नहीं लेकिन बच्चे बन गये। उड़ती कला कितनी प्यारी है, सेकेण्ड में जहाँ चाहो वहाँ पहुंच जाओ। उड़ती कला वाले सेकेण्ड में अपने स्वीट होम में पहुंच सकते हैं। इसको कहा जाता है योगबल, शान्ति की शक्ति।

(01.02.1994)

पुरुषार्थ और योग के प्रयोग से सबकी वृत्तियों को परिवर्तन करो

सबके बुद्धियों को टच किया है। सबके पुरुषार्थ और सबके श्रेष्ठ संकल्प ने विजय प्राप्त करा ली। सफलता अधिकार है। पुरुषार्थ करना भी ड्रामा में नूँध है और सफलता प्राप्त होना भी निश्चित है। सिर्फ निश्चय को देखने के लिये बीच-बीच में हलचल होती है। तो अनुभव किया, योग के प्रयोग से सहज हो गया ना। सिर्फ पुरुषार्थ से नहीं, पुरुषार्थ में ज्यादा लग जाते, योग का प्रयोग कम करते तो सफलता थोड़ी दूर हो जाती है। पुरुषार्थ और योग के प्रयोग से सबकी वृत्तियों को परिवर्तन करना-ये साथ-साथ रहता है तो सफलता समीप आती है। तो योग के प्रयोग का यह भी अनुभव देख लिया। एक दृढ़ निश्चय और दूसरा प्रयोग द्वारा किसी की भी बुद्धि को परिवर्तन कर सकते हैं लेकिन इतना पॉवरफुल योग हो। यह संगठन के प्रयोग ने सफलता प्रत्यक्ष रूप में दिखाई। हिस्ट्री में देखो, आदि से सेवा की हिस्ट्री में जब भी कोई हलचल हुई है तो सफलता योग के प्रयोग की विशेषता से ही हुई है। पुरुषार्थ निमित्त बनता है, पुरुषार्थ धरनी बनाता है, वो भी ज़रूरी है। लेकिन सफलता का बीज उत्पन्न होने का साधन, बाहर आने का साधन फिर भी योग का प्रयोग ही रहा। यह सबको अनुभव है ना। धरनी को बनाना भी ज़रूरी है लेकिन बीज से फल प्रत्यक्षरूप में आये उसके लिये बैलेन्स चाहिये। बैलेन्स में जरा भी, 5 परसेन्ट, 10 परसेन्ट भी कमी पड़ती है तो फ़र्क हो जाता है। लेकिन सभी ने उमंग-उत्साह से सहयोग दिया और सफलता प्राप्त की। तो बापदादा सभी बच्चों को सफलता की मुबारक देते हैं।

(09.03.1994)

प्योरिटी की रॉयल्टी ही ब्राह्मण जीवन की विशेषता है

सभी ब्राह्मण जीवन की विशेषता वा फ़ाउन्डेशन को जानते हो? क्या है? (प्योरिटी) यह पक्का है कि प्योरिटी ही फ़ाउन्डेशन है? तो सभी पक्के ब्राह्मण हैं ना! प्योरिटी की रायॅल्टी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। जैसे कोई रॉयल फैमिली का बच्चा होगा तो उसके चेहरे से चलन से मालूम पड़ता है कि यह कोई रायॅल कुल का है। ऐसे ब्राह्मण जीवन की परख यह प्योरिटी

की झलक से ही होती है। और चेहरे वा चलन से प्योरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी प्योरिटी हो। संकल्प में भी अपवित्रता का नाम निशान न हो। तो ऐसे है या कभी संकल्प में थोड़ा सा प्रभाव पड़ता है? क्योंकि पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत नहीं। लेकिन प्योरिटी अर्थात् किसी भी विकार अर्थात् अशुद्धि का प्रभाव न हो। तो फ़ाउन्डेशन पक्का है या कभी कभी क्रोध को छुट्टी दे देते हो? बाल बच्चा आ जाता या अंश और वंश सब खत्म। क्या समझते हो? माताओं में मोह आता है? बॉडीकॉन्सेसनेस की अटैचमेंट है? कोई विकार का अंश मात्र भी नहीं। क्योंकि बड़ों से तो मोह वा लगाव जल्दी निकल जाता है, लेकिन छोटों-छोटों से थोड़ा ज्यादा होता है। जैसे लौकिक संबंध में भी बच्चों से इतना प्यार नहीं होगा जितना पोत्रों और धोत्रों से होता है। ऐसे विकारों के भी ग्रेट चिल्ड्रेन से प्यार तो नहीं है? फ़ाउन्डेशन प्योरिटी है इसलिए इस फाउन्डेशन के ऊपर सदा ही अटेन्शन रहे। सबका लक्ष्य बहुत अच्छा है। तो जैसे लक्ष्य है वैसे ही लक्षण स्वयं को भी अनुभव हों और दूसरों को भी अनुभव हो। क्योंकि अनेक अपवित्र आत्माओं के बीच में आप पवित्र आत्मायें बहुत थोड़े हो। तो थोड़ी सी पवित्र आत्माओं को अपवित्रता को खत्म करना है। तो कितनी पावर चाहिए! तो सदा चेक करो कि अपवित्रता का अंश मात्र भी न हो। क्योंकि आपके जड़ चित्रों का भी सदा ही निर्विकारी कहकर गायन करते हैं। यह किसकी महिमा करते हैं? आपकी है या भारतवासियों की है? तो प्रैक्टिकल चेतन में बने हैं तब तो महिमा हो रही है। यह पक्का निश्चय है ना कि यह हम ही हैं! तो ब्राह्मण अर्थात् प्योरिटी की रॉयल्टी में रहने वाले। प्योरिटी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है। हिम्मत रखकर आगे बढ़ रहे हो और और भी आगे से आगे बढ़ना ही है। उड़ती कला वाले हो ना! कि चलने वाली कला में हो? कभी नीचे ऊपर होते हो? सदा फाइन है या कभी-कभी फाइन? सम टाइम खत्म हुआ? अभी-रुहरिहान में तो आकर नहीं कहेंगे कि नहीं थोड़ा थोड़ा रह गया है? नहीं। अभी क्या रुहरिहान करेंगे? ओ.के.। ओ.के.कहने से ही देखो चेहरे मुस्कराते हैं। और जब समटाइम कहते हो तो आंखे नीचे हो जाती हैं। सदैव यह स्मृति में रखो कि अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे। अभी बनना है। पुरुषार्थ करेंगे, देखेंगे, नहीं। होना ही है, तो इसको कहा जाता है निश्चय बुद्धि विजयी। तो कौन हो? प्योरिटी की रॉयल्टी में रहने वाले।

(09.03.1994)

परमात्म अधिकारी - इससे बड़ा अधिकार और है ही क्या!

प्राप्तियों में विशेष सम्बन्ध और सम्पत्ति आव-श्यक है। सम्बन्ध में भी अगर एक भी सम्बन्ध अप्राप्त है तो सम्पूर्ण सन्तुष्टता नहीं होगी। तो सम्बन्ध में भी सर्व चाहिये और अविनाशी चाहिये। अगर कोई भी सम्बन्ध विनाशी है तो अप्राप्ति और असन्तुष्टता स्वत: हो जाती है। लेकिन एक ही वर्तमान संगमयुग है जिसमें सर्व अविनाशी सम्बन्ध एक बाप से अनुभव कर सकते हो। सतयुग में भी सम्बन्ध बहुत थोड़े हैं, सर्व नहीं हैं, लेकिन इस समय जिस सम्बन्ध की आकर्षण हो, अनुभूति करना चाहे वो सम्बन्ध परम आत्मा द्वारा अनुभव कर सकते हो। हर एक के जीवन में सम्बन्ध की भी अलग-अलग पसन्दी होती है। किसको बाप का सम्बन्ध इतना अच्छा नहीं लगेगा, फ्रैण्ड ज्यादा अच्छा लगेगा। लेकिन एक समय पर और एक से सर्व सम्बन्ध प्राप्त हैं? सर्व प्राप्ति है कि कुछ रहा हुआ है? पीछे बैठे हुए क्या समझते हैं? आज नये-नये को आगे बैठने का चांस दिया है। अच्छा, जो इस कल्प में इस बार पहली बार आये हैं वो हाथ उठाओ। भले पधारे। बापदादा भी पद्मगुणा स्नेह सम्पन्न वेलकम कर रहे हैं। नये होते भी कल्प-कल्प के अधिकारी हैं, ये तो समझते हो ना? बापदादा सदा कहते हैं - बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे समान बाप हैं। इसलिये सदा अपने रूहानी बेहद के सम्पूर्ण अधिकार के निश्चय और नशे में रहो। बेहद का नशा है, हद का नहीं रखना। देखो, कितने श्रेष्ठ अधिकारी हो जो स्वयं बाप ऑलमाइटी अथॉरिटी के ऊपर अधिकार रख दिया। परमात्म अधिकारी - इससे बड़ा अधिकार और है ही क्या! जब बीज को अपना बना लिया तो वृक्ष तो समाया हुआ है ही। सर्व सम्बन्धों का भी अविनाशी अधिकार ले लिया और सम्पत्ति में भी अगर सिर्फ स्थूल सम्पत्ति है तो भी सदा सन्तुष्ट नहीं रह सकते। स्थूल सम्पत्ति के साथ अगर सर्व गुणों की सम्पत्ति, सर्व शक्तियों की सम्पत्ति और श्रेष्ठ सम्पन्न ज्ञान की सम्पत्ति नहीं हैं तो सन्तुष्टता सदा नहीं रह सकती। लेकिन आप सबके पास यह श्रेष्ठ सम्पत्तियाँ हैं। सम्पत्तिवान हो ना? दुनिया वाले तो सिर्फ स्थूल सम्पत्ति वाले को सम्पत्ति भव का वरदान देते हैं लेकिन आप सबको वरदाता बाप सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति भव का वरदान देते हैं। तो सब सम्पत्ति हैं ना कि कोई कम है? फुल है?

(03.04.1994)

पुरुष(आत्मा) बन रथ द्वारा कराना - इसको कहा जाता है पुरुषार्थ

व्यर्थ को वा उल्टे संकल्प को चेक करो तो उसकी गति बहुत फास्ट होती है। अभी-अभी संकल्प आया, अभी-अभी बोल लिया, अभी-अभी कर भी लिया। संकल्प, बोल, कर्म इकट्ठा-इकट्ठा बहुत फास्ट होता है। उसकी गति का जोश इतना तीव्र होता है जो श्रेष्ठ संकल्प, कर्म, मर्यादा, ब्राह्मण जीवन की महानता का होश समाप्त हो जाता है। व्यर्थ का जोश - सत्यता का होश, यथार्थता का होश समाप्त कर देता है और कुछ समय के बाद जब होश आता तब सोचते हैं करना नहीं चाहिये था, यथार्थ नहीं है लेकिन उस समय जब जोश होता है तो यथार्थ की पहचान बदल कर अयथार्थ को यथार्थ अनुभव करते हैं। तो व्यर्थ का जोश, होश को ख़त्म कर देता है। तो इस वर्ष सभी बच्चे विशेष व्यर्थ से इनोसेन्ट बनो। जैसे जब आप आत्मायें अपने सतयुगी राज्य में थी तो व्यर्थ वा माया से इनोसेन्ट थी इसलिये देवताओं को महान् आत्मायें, सेन्ट कहते हैं, ऐसे अपने वो संस्कार इमर्ज करो, व्यर्थ की अविद्या स्वरूप बनो। समय, श्वास, बोल, कर्म, सर्व में व्यर्थ की अविद्या अर्थात् इनोसेन्ट। जब व्यर्थ की अविद्या हो गई तो दिव्यता स्वत: ही सहज ही अनुभव होगी और अनुभव करायेगी। अभी तक यह नहीं सोचो कि पुरुषार्थ तो कर ही रहे हैं...। पुरुष इस रथ पर कर रहा है तो पुरुष बन रथ द्वारा कराना - इसको कहा जाता है पुरुषार्थ। पुरुषार्थ चल रहा है, नहीं, लेकिन पुरुषार्थी सदा उड़ रहा है। यथार्थ पुरुषार्थी इसको कहा जाता है। पुरुषार्थ का अर्थ यह नहीं है कि एक बारी की ग़लती बार-बार करते रहो और पुरुषार्थ को अपना सहारा बनाओ। यथार्थ पुरुषार्थी हो, स्वभाव भी स्वाभाविक हो, अति सहज। अभी मेहनत को किनारे करो। अल्पकाल के आधारों का सहारा, जिसको किनारा बनाकर रखा है, ये अल्पकाल के सहारे के किनारे अभी छोड़ दो। जब तक ये किनारे हैं तो सदा बाप का सहारा अनुभव नहीं हो सकता और बाप का सहारा नहीं है इसलिये हद के किनारों को सहारा बनाते हैं। चाहे अपने स्वभाव-संस्कारों को, चाहे परिस्थितियों को, जो किनारे बनाये हैं ये सब अल्पकाल के दिखावा-मात्र धोखे वाले हैं। धोखे में नहीं रह जाओ। बाप का सहारा छत्रछाया है। अल्पकाल की बातें धोखेबाज हैं। माया की बहुत मीठी-मीठी बातें सुनते रहते हैं, बहुत सुन चुके हैं। जैसे द्वापर के शास्त्र बनाने वाले बातें बनाने में बहुत होशियार हैं, कितनी मीठी-मीठी बातें बना दी हैं। तो बातें नहीं बनाओ, बातें बनाने में सब एक-दो से होशियार हैं। न बातें बनाओ, न बातें देखो, न बातें करो। लेकिन क्या करो? बाप को देखो, बाप समान करो, बाप समान बनो। जब कोई बात सामने आती तो बात बनाना सेकण्ड में आ जाता है। क्योंकि माया की गति भी तीव्र है ना। ऐसे सुन्दर रूप की बात बना देती है जो सुनते बाप को तो हंसी आती है लेकिन दूसरे प्रभावित हो जाते हैं - बोलते तो ठीक हैं, बहुत अच्छा है, बात तो ठीक है और स्वयं को भी ठीक लगते हो। लेकिन समय की तीव्र गति को देख अब इस किनारों से तीव्र उड़ान करो। ये अनेक प्रकार की बातें व्यर्थ रजि-स्टर के रोल बनाती रहती हैं। रोल के ऊपर रोल बनता जाता है। इसलिये इससे इनोसेन्ट बनो। इस इनोसेन्ट स्टेज़ से बनी-बनाई सेवा की स्टेज़ आपके सामने आयेगी। इस वर्ष के यथार्थ पुरुषार्थ के प्रत्यक्षफल की निशानी बनी-बनाई सेवा आपके सामने आयेगी। व्यर्थ का सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आयेगी। आप सभी सेवा के निमित्त तो अनेक वर्ष बने, अब औरों को निमित्त बनाने की सेवा के निमित्त बनो। माइक वो हो और माइट आप हो। बहुत समय आप माइक बने, अब माइक औरों को बनाओ, आप माइट बनो। आपके माइट से माइक निमित्त बनें। इसको कहा जाता है तीव्र गति के उड़ान की निशानी। समझा क्या करना है? तीव्र उड़ान है ना। कि कभी तीव्र, कभी स्लो? सदा तीव्र गति के उड़ान से उड़ते रहेंगे। बादलों को देख घबराओ नहीं। ये बातें ही बादल हैं। सेकण्ड में क्रॉस करो। विधि को जानो और सेकण्ड में विधि द्वारा सिद्धि को प्राप्त करो। एक तरफ है रिद्धि-सिद्धि का फोर्स और आपका है विधि सम्पन्न सिद्धि का फोर्स। रिद्धि-सिद्धि है अल्पकाल और विधि-सिद्धि सदाकाल के लिये।

(14.04.1994)

दृढ़ निश्चय भाग्य को निश्चित कर देता है

भाग्य विधाता को अपना बनाया अर्थात् भाग्य के अधिकार को प्राप्त कर लिया। जिसको नशा है वो सदा यही अनुभव करते हैं कि भाग्य मेरा नहीं होगा तो किसका होगा? क्योंकि भाग्य विधाता ही मेरा है। इतना नशा है या कभी-कभी चढ़ता है, कभी उतरता है? संगम का समय ही कितना छोटा-सा है। और आप मैजारिटी तो सब नये हो। कितना थोड़ा समय मिला है!

लेकिन ड्रामा में विशेष इस संगमयुग की ये विशेषता है कि कोई भी नया हो या पुराना हो, नये को भी गोल्डन चांस है—नम्बर आगे लेने का। तो नयों में उमंग है या समझते हो हमारे से आगे तो बहुत हैं, हम तो आये ही अभी हैं....। नहीं, ये खुली छुट्टी है — जितना आगे बढ़ना चाहें उतना बढ़ सकते हैं — सिर्फ अभ्यास पर अटेन्शन हो। कोई-कोई पुराने अलबेले हो जाते हैं और आप नये अलबेले नहीं होना तो आगे बढ़ जायेंगे। नम्बर ले लेंगे। नम्बर लेना है ना? फर्स्ट नम्बर नहीं, फर्स्ट डिविज़न। फर्स्ट नम्बर तो ब्रह्मा बाप निश्चित हो गये ना। लेकिन फर्स्ट डिविज़न में जितने चाहे उतने आ सकते हैं। तो सभी किस डिविज़न में आयेंगे? सभी फर्स्ट में आयेंगे तो सेकण्ड में कौन आयेगा? मातायें किसमें आयेगी? फर्स्ट में आयेंगी? बहुत अच्छा। 'आना ही है' — यह दृढ़ निश्चय भाग्य को निश्चित कर देता है। पता नहीं.... आयेंगे, नहीं आयेंगे...., पता नहीं आगे चलकर कोई माया आ जाये..., माया बड़ी चतुर है — ऐसे व्यर्थ संकल्प कभी भी नहीं करना। जब सर्वशक्तिमान् साथ है तो माया तो उसके आगे पेपर टाइगर है। इसलिये घबराना नहीं। 'पता नहीं' का संकल्प कभी नहीं करना। मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म करते चलो। साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है। साथ भूल जाते हैं तो मुश्किल हो जाता है। लेकिन सभी का वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे — यही वायदा है ना? कि अकेले रहेंगे, अकेले जायेंगे? तो साथ का अनुभव बढ़ाओ। जानते हो कि साथ हैं, मानते भी हो लेकिन फर्क क्या पड़ता है? जानते भी हो, मानते भी हो लेकिन समय पर उसी प्रमाण चलते नहीं हो। माया का फोर्स ये जो कोर्स है उसको भुला देता है। लेकिन क्या माया बहुत बलवान है? वह बलवान है या आप बलवान हो? या कभी माया बलवान, कभी आप बलवान? आपकी कमज़ोरी माया है, और कुछ नहीं है। आपकी कमज़ोरी माया बनकर सामने आती है। जैसे शरीर की कमज़ोरी बीमारी बनकर सामने आती है ना, ऐसे आत्मा की कमज़ोरी माया बन करके सामना करती है। तो न कमज़ोर बनना है, न माया आनी है। लक्ष्य ही है — मायाजीत जगतजीत। कितने बार विजयी बने हो? अनगिनत बार, फिर भी घबरा जाते हो! कोई नई बात होती है तो कहा जाता है — नई बात थी ना, मुझे पता नहीं था इसीलिये घबरा गये। लेकिन एक तरफ कहते हो अनेक बार विजयी बने हैं। फिर क्यों घबराते हो? बाप का प्यार ही ये है कि हर बच्चा श्रेष्ठ आत्मा बन राज्य अधिकारी बने। प्रजा अधिकारी तो नहीं बनना है ना? तो राज्य अधिकारी अर्थात् हर कर्मेन्द्रिय जीत। अगर अपनी कर्मेन्द्रियों के ऊपर, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर विजय नहीं तो प्रजा पर क्या राज्य करेंगे! अगर ऐसे राजे बने जो अपने ऊपर विजय नहीं पा सकते तो सतयुग भी कलियुग बन जायेगा। इसीलिये ये चेक करो कि मन-बुद्धि-संस्कार कन्ट्रोल में हैं? मन आपको चलाता है या आप मन को चलाने वाले हो? जब ये कम्पलेन करते हो कि मेरा मन आज लगता नहीं, मेरा मन आज भटक रहा है तो ये मनजीत हुए? आज मन उदास है, आज मन और आकर्षण की तरफ जा रहा है — ये विजयी के संकल्प हैं? तो जो स्वयं पर विजय नहीं पा सकते हैं वो विश्व पर कैसे विजय प्राप्त करेंगे? इसलिये चेक करो कर्मेन्द्रिय जीत, मन जीत कहाँ तक बने हैं? अगर फर्स्ट डिविज़न में आना है तो इस लक्षण से लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हो।

(17.11.1994)

हमारा तो अधिकार है। वर्से पर भी, पढ़ाई पर भी और वरदान पर भी

संगमयुग के समय की विशेषता है कि तीनों रूप की प्राप्ति है। एक—वर्से के रूप में, दूसरा—पढ़ाई को सोर्स ऑफ इनकम कहते हैं तो पढ़ाई की प्राप्ति के आधार से और तीसरा है वरदान के रूप में। वर्सा भी है, इनकम भी है और वरदान भी है। प्राप्ति बहुत भारी है, बहुत बड़ी है! सिर्फ सम्भालने वाले बनो। वर्सा भी बेहद है, इनकम भी बेहद है और वरदान भी बेहद के हैं। कभी सोचा था कि रोज़ भगवान का वरदान मिलेगा? इतने वरदान किसी को भी, कभी भी नहीं मिल सकते। लेकिन आप तो कहते हो हमारा तो अधिकार है। वर्से पर भी, पढ़ाई पर भी और वरदान पर भी। छोटी बात नहीं है, बहुत बड़ी है! तीनों ही सम्बन्ध से तीनों के ऊपर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया ना? सभी फ़खुर से कहते हैं ना—बाप मेरा है। ये कहते हो क्या कि मेरा नहीं, तेरा है? हमारे लिये बाप पढ़ाने आता है—ये समझते हो ना? तो पढ़ाई पर अधिकार है ना? और वरदाता के पास वरदान है ही किसके लिये? हरेक सोचता है कि मेरे लिये ही वरदाता बाप है। तो तीनों पर अधिकार है। कहने में तो बहुत साधारण है। इसीलिये तो दुनिया वाले हंसते हैं कि, हैं क्या और कहते क्या हैं? तो अधिकार को सदा स्मृति में रख कदम उठाओ। इमर्ज रूप में रखो, मर्ज रूप में नहीं। हैं तो ब्रह्माकुमार, हैं ही बाबा के... ऐसे नहीं। इमर्ज रुप में, मन में, बुद्धि में, कर्म में इमर्ज रखो। मन

में ये संकल्प इमर्ज हो कि मैं ये हूँ, बुद्धि में स्मृति स्वरूप हो और कर्म में अधिकारी के निश्चय और नशे से हर कर्म हो। ऐसे नहीं, अमृतवेले तो इमर्ज रहता है फिर सारे दिन में मर्ज हो जाता है। नहीं, सदा इमर्ज रूप में रहे। तो जमा का खाता बढ़ाओ। तीव्र गति से बढ़ाना, ढीला-ढाला नहीं करना। क्योंकि समय आप मास्टर रचयिता के लिये रुका हुआ है। अभी भी प्रकृति को ऑर्डर करें तो क्या नहीं कर सकती है? अगर पांचों ही तत्व हलचल मचाना शुरू कर दें तो क्या नहीं हो सकता और कितने में हो सकता? तो समय, प्रकृति और माया विदाई के लिये इन्तज़ार कर रही है। आप सम्पूर्णता की बधाइयाँ मनाओ तो वो विदाई लेकर ही जायेगी। माया भी देखती है अभी ये तैयार नहीं हैं तो चांस लेती रहती है। प्रकृति को ऑर्डर करें? पुरुष तैयार हैं? प्रकृति तो तैयार हो जायेगी। ऑर्डर करें? कि ज्ञान सरोवर तैयार हो पीछे ऑर्डर करें? ऐसे एवररेडी हो, कि रेडी हो? शक्तियाँ एवररेडी हैं? सम्पूर्ण हो गये? थोड़े को तो एवररेडी नहीं कहेंगे ना? ये सोचो, चेक करो कि अगर इस घड़ी भी महाविनाश हो जाये तो अपनी तस्वीर देखो नॉलेज के आइने में, कि मैं क्या बनूँगा? आइना तो सबके पास है ना? क्लीयर है ना? तो अपने तकदीर की तस्वीर देखो। बाप को क्या टाइम लगेगा? जब ब्रह्मा के लिये गायन है कि संकल्प से सृष्टि रच ली तो क्या संकल्प से विनाश नहीं हो सकता? बाप जानते हैं राजधानी चलनी है तो उसमें एक ब्रह्मा क्या करेगा? साथी चाहिये ना? तो ब्रह्मा बाप भी आप साथियों के लिये रुके हुए हैं। तो बाप बच्चों से प्रश्न करते हैं, बच्चे तो बाप से प्रश्न बहुत कर चुके हैं। अभी बाप बच्चों से प्रश्न करते हैं कि डेट फिक्स करो। सभी काम की डेट फिक्स करते हो ना? तो इसकी भी डेट फिक्स करो, इसका भी मुहूर्त होना है ना। ज्ञान सरोवर की भी डेट फिक्स है, हॉस्पिटल की भी डेट फिक्स है। इसकी डेट क्या है? ये किसको फिक्स करनी है? बाप को नहीं करनी है। ये बाप ने आप बच्चों के हाथ में दिया है। कोई काम तो आप भी करेंगे, कि सब बाप करेंगे? डेट फिक्स का प्रोग्राम बनाना।

(14.12.1994)

अभी देवता बनना है या भविष्य में बनेंगे? देवता अर्थात् सर्व गुणों से सजे-सजाये। ये दिव्यगुण संगम के देवता जीवन के श्रृंगार हैं। इस समय दिव्य गुणों से सजे-सजाये होते हो तब ही भविष्य में स्थूल श्रृंगार से सजे-सजाये रहते हो। तो देवता अर्थात् दिव्यगुणों से सजे-सजाये। और दूसरा देवता अर्थात् देने वाला। लेवता नहीं, लेकिन देवता। तो मास्टर दाता हो? वा कभी लेवता, कभी देवता? चेक करो कि दिव्य गुणों का श्रृंगार सदा रहता है वा कभी कोई श्रृंगार भूल जाता है, कभी कोई श्रृंगार भूल जाता है? सम्पूर्ण सर्व गुण सम्पन्न...... यही देवता जीवन की निशानी है। ये गुण ही गहने हैं। तो देखो कि ब्राह्मण स्वरूप की सर्व शक्तियाँ, फरिश्ते स्वरूप की डबल लाइट स्थिति और देवता स्वरूप की दातापन की निशानी और दिव्य गुणों सम्पन्न बने हैं? तीनों स्वरूप अनुभव करते हो? जैसे बाप के तीन सम्बन्ध—बाप, शिक्षक, सद्गुरु सदा याद रहते, ऐसे ये तीन स्वरूप सदा याद रखो। समझा? बनना तो आपको ही है या और कोई आने वाले हैं? आपको ही बनना है ना? आज ब्राह्मण, कल फ़रिश्ता और कल देवता। अपने फ़रिश्ते स्वरूप को ज्ञान के दर्पण में देखो। फ़रिश्ते सदा उड़ते रहते हैं और मैसेज़ देते रहते हैं। फ़रिश्ता आया, सन्देश दिया और उड़ा। तो वो फरिश्ते कौन हैं? आप ही हो ना? फ़लक से कहो—हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे। पक्का है ना? इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयी। क्षत्रिय हो वा विजयी हो? क्षत्रिय कोई तो बनेगा? वो दूसरे बनेंगे! तो आप ब्राह्मण हो। चलते-चलते कभी क्षत्रिय नहीं बनना। अगर बार-बार क्षत्रिय बनते रहेंगे, युद्ध करते रहेंगे तो युद्ध के संस्कार ले जाने वाले कहाँ पहुँचेंगे? चन्द्रवंशी में या सूर्यवंशी में? तो चन्द्रवंशी तो पसन्द नहीं है ना, कि कभी-कभी हो गये तो भी हर्जा नहीं? तो सब कौन हो? ब्राह्मण? पक्के ब्राह्मण हो या थोड़े-थोड़े कच्चे? शक्तियाँ पक्की हैं? पाण्डव पक्के हैं? अगर पक्के हैं तो सदा खुशखबरी के पत्र आवें। माया आ गई, ये हो गया, पता नहीं क्या हो गया, कैसे हो गया—ये संकल्प में भी नहीं हो। बाप तो कहते हैं स्वप्न मात्र भी नहीं। स्वप्न में भी क्यों, क्या नहीं—ऐसे पक्के हो?

(23.12.1994)

निश्चयबुद्धि की निशानियाँ - निश्चित विजयी और सदा निश्चिन्त स्थिति का अनुभव

आज सर्व बच्चों के रक्षक और शिक्षक बापदादा अपने सभी ब्राह्मण बच्चों के फाउण्डेशन को देख रहे थे। ये तो सभी जानते हो कि वर्तमान श्रेष्ठ जीवन का फाउण्डेशन निश्चय है। जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है उतना ही आदि से अब

तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होती है। हर समय चलन और चेहरे से उनकी झलक अनुभव होती है क्योंकि ब्राह्मण जीवन में सिर्फ जानना नहीं है कि 'मैं ये हूँ और बाप ये है', लेकिन जानने का अर्थ है जो जानते हैं वो मानना और चलना।

बापदादा देख रहे थे कि जो भी बच्चे अपने को ब्राह्मण कहलाते हैं वो सभी ये फ़लक से कहते हैं कि हम निश्चयबुद्धि हैं। तो बापदादा सभी निश्चयबुद्धि बच्चों से पूछते हैं, जब आप सभी कहते हो कि हम निश्चयबुद्धि विजयी हैं तो कभी विजय, कभी हार क्यों होती है? जब कभी-कभी थोड़ी हलचल होती है तो विजयी सदा हो कि बीच-बीच में घुटका और झुटका होता है? निश्चय का फाउण्डेशन चारों ओर से मजबूत है या चारों ओर के बजाय कभी एक और कभी दो ओर ढीले हो जाते हैं? कोई भी चीज को मजबूत किया जाता है तो चारों ओर से टाइट किया जाता है ना। अगर एक साइड भी थोड़ा-सा हलचल वाला हो तो हिलेगा ना! तो चारों प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चय। ये चार ही तरफ के निश्चय को जानना नहीं लेकिन मानकर चलना। अगर जानते हैं लेकिन चलते नहीं हैं तो विजय डगमग होती है। जिस समय विजय हलचल में आती है, तो चेक करना कि चारों तरफ से कौन-सा तरफ हलचल में है? बापदादा देखते हैं कि कई बच्चों को बाप में पूरा निश्चय है, इसमें पास हैं लेकिन अपने आपमें जो निश्चय चाहिए उसमें अन्तर पड़ जाता है। जानते भी हैं, कहते भी हैं कि मैं ये हूँ, मैं ये हूँ, लेकिन जो जानते हैं, मानते हैं वो स्वरूप में, चलन में, कर्म में हो - इसमें ही अन्तर पड़ जाता है। एक तरफ सोचते हैं कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ, दूसरे तरफ छोटी-सी परिस्थिति पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते हैं तो मास्टर सर्वशक्तिमान् लेकिन ये परिस्थिति बहुत बड़ी है, ये बात ही ऐसी है! तो क्या ये निश्चय है कि सिर्फ जानना है लेकिन मानकर चलना नहीं? कहते वा सोचते हैं कि मैं विश्व कल्याणकारी हूँ लेकिन विश्व को तो छोड़ो, स्व कल्याण में भी कमजोर होते हैं। अगर उस समय उन्हें कहो कि क्या स्वयं को परिवर्तन कर स्व कल्याणकारी नहीं बन सकते? तो जवाब देते हैं कि हैं तो विश्व कल्याणकारी लेकिन स्व कल्याण बहुत मुश्किल है! ये बात बदलना मुश्किल है! तो विश्व कल्याणकारी कहेंगे या कमजोर? तो स्व में भी परिस्थिति प्रमाण, समय प्रमाण, सम्बन्ध-सम्पर्क प्रमाण निश्चय स्वरूप में आये, ऐसे निश्चय बुद्धि की विजय हुई ही पड़ी है। जैसे सभी को ये पक्का निश्चय है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, इसके लिए कोई दुनिया के वैज्ञानिक भी आपको हिलाने की कोशिश करें कि आत्मा नहीं शरीर हो, तो मानेंगे नहीं और ही उसको मनायेंगे। तो जैसे ये पक्का है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ और कौन-सी आत्मा हूँ, ये भी पक्का है, ऐसे निश्चयबुद्धि की विजय भी इतनी निश्चित है। हार असम्भव है और विजय निश्चित है। और ये भी निश्चित है कि बातें भी अन्त तक आनी हैं। लेकिन उसमें विजयी बनने के लिए एक ही समय पर चारों ही तरफ का निश्चय पक्का चाहिये। तीन में निश्चय है और एक में नहीं है तो विजय निश्चित नहीं है लेकिन मेहनत से विजय होगी। निश्चित विजय वाले को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

कई बार कई कहते हैं बापदादा तो बहुत अच्छा, वो तो पक्का है कि बाप है और हम बच्चे हैं, हमारा बाप से ही सम्बन्ध है लेकिन दैवी परिवार में खिटखिट होती है, उसमें निश्चय डगमग हो जाता है इसीलिये परिवार को छोड़ देते हैं, हल्का कर देते हैं। तो एक साइड ढीला हो गया ना। बिना परिवार के माला में कैसे आयेंगे? माला कब बनती है? जब दाना दाने से मिलता है और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं। अगर अलग-अलग धागे में अलग-अलग दाना हो तो उसको माला नहीं कहेंगे। तो परिवार है माला। अगर परिवार को छोड़कर तीन निश्चय पक्के हैं तो भी विजय निश्चित नहीं है। चलो परिवार की खिटखिट से किनारा कर लो, बाप का सहारा हो, परिवार का किनारा हो, तो चलेगा? काम तो बाप से है या भाइयों से है? बाप से काम है, वर्सा बाप से मिलना है, भाई-बहनों से क्या मिलेगा? लेकिन ब्राह्मण जीवन में यही न्यारापन है कि धर्म और राज्य दोनों की स्थापना होती है, सिर्फ धर्म की नहीं। और धर्म पितायें सिर्फ धर्म की स्थापना करते हैं, बाप की विशेषता है धर्म और राज्य की स्थापना करना। तो राज्य में एक राजा क्या करेगा? बहुत अच्छा तख्त भी हो, ताज भी हो, क्या करेगा? राजधानी भी चाहिये ना? तो राजधानी अर्थात् ब्राह्मण परिवार सो राज परिवार। इसलिए ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चयबुद्धि, तब राज्य-भाग्य में भी सदा राज्य अधिकारी होंगे। तो ऐसे नहीं समझना - कोई बात नहीं, परिवार से नहीं बनती है, बाप से तो बनती है! ड्रामा अगर भूल जाता है तो बाप तो याद रहता ही है! लेकिन कोई भी कमजोरी एक ही समय पर होती है, स्व स्थिति अर्थात् स्व-निश्चय भी अगर कमजोर होता है तो विजय निश्चित के बजाय हलचल में आ जाती है। तो बापदादा निश्चय के फाउण्डेशन को चेक कर रहे थे। क्या देखा?

सदा चार ही प्रकार का निश्चय एक समय पर साथ नहीं रहता, कभी रहता कभी हिलता इसलिये सदा विजयी का अनुभव नहीं कर पाते हैं। फिर सोचते हैं - होना तो ये चाहिये लेकिन पता नहीं क्यों नहीं हुआ? किया तो बहुत मेहनत, सोचा तो बहुत अच्छा.... लेकिन सोचना और होना इसमें अन्तर पड़ जाता है। इसका अर्थ ही है कि निश्चय के चारों तरफ मजबूत नहीं हैं। और हंसी की बात तो ये है कि ड्रामा भी कह रहे हैं, तो ड्रामा, है तो ड्रामा.... लेकिन अच्छी तरह से हिल भी रहे हैं। कभी संकल्प में हिलते, कभी बोल तक भी हिल जाते, कभी कर्म तक भी आ जाते। उस समय क्या लगता होगा, दृश्य सामने लाओ, ड्रामा-ड्रामा भी कह रहे हैं और हिलडुल भी रहे हैं! लेकिन निश्चयबुद्धि की निशानी है निश्चित विजयी। अगर विधि ठीक है तो सिद्धि प्राप्त न हो, ये हो नहीं सकता। तो जब भी कोई भी कार्य में विजय प्राप्त नहीं होती है तो समझ लो कि निश्चय की कमी है। चारों ओर चेक करो, एक ओर नहीं।

और बात, निश्चयबुद्धि की निशानी जैसे निश्चित विजय है वैसे निश्चिन्त होंगे। कोई भी व्यर्थ चिन्तन आ ही नहीं सकता। सिवाए शुभ चिन्तन के व्यर्थ का नाम-निशान नहीं होगा। ऐसे नहीं, व्यर्थ आया, भगाया। निश्चयबुद्धि के आगे व्यर्थ आ नहीं सकता। क्योंकि क्यों, क्या, और कैसे - ये व्यर्थ होता है। जब ड्रामा के राज़ को जानते हैं, आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हैं तो जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हैं वो छोटी-सी बात के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जान सकते! न जानने के कारण क्यों, क्या, कैसे, ऐसे-ये व्यर्थ संकल्प चलते हैं। अगर ड्रामा में अटल निश्चय है, नॉलेजफुल भी हैं, पॉवरफुल भी हैं तो व्यर्थ संकल्प हिलाने की हिम्मत भी नहीं रख सकते। परन्तु जब हिलते हैं तो सोचते हैं पता नहीं क्या हो गया! तो बापदादा हंसते हैं कि ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जान लिया, अपने 84 जन्म को जान लिया और एक बात को नहीं जानते! बड़े होशियार हो! होशियारी दिखाते हो ना समय प्रति समय! कल्प वृक्ष के सभी पत्तों को जानते हो कि नहीं? सभी वृक्ष के फाउण्डेशन में बैठे हो या 7-8 बैठे हैं? तो जड़ में बैठे हुए वृक्ष को जानते हो? पत्ते-पत्ते को जानते हो और ये पता नहीं कैसे? तो निश्चय की निशानियाँ निश्चिन्त स्थिति, इसका अनुभव करो। होगा, नहीं होगा, क्या होगा, कर तो रहे हैं, देखें क्या होता है - इसको निश्चिन्त नहीं कहेंगे। और फिर बाप के आगे ही फरियाद करते हैं - आप मददगार हो ना, आप रक्षक हो ना, आप ये हो ना, आप ये हो ना....। फरियाद करना अर्थात् अधिकार गँवाना। अधिकारी फरियाद नहीं करेंगे - ये कर लो ना, ये हो जाये ना। तो निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चिन्त। तो ये प्रैक्टिकल निशानियाँ अपने आपमें चेक करो। ऐसे अलबेले नहीं रह जाना - हम तो हैं ही निश्चयबुद्धि। कौन-सा निश्चय कमजोर है वो चेक करो और चेंज करो। सिर्फ चेक नहीं करना। बापदादा ने कहा था ना चेकर के साथ मेकर भी हो। सिर्फ चेकर नहीं। चेक करने का अर्थ ही है सेकण्ड में चेंज होना। लेकिन चेक करो और चेंज नहीं करो तो बहुत काल से स्वयं में दिलशिकस्त के संस्कार पक्के होते जायेंगे और जो बहुतकाल के संस्कार हैं वही अन्त में अवश्य सामना करते रहेंगे। कोई सोचे अन्त में तो मैं सिवाए बाप के और कुछ नहीं सोचूँगा। लेकिन हो नहीं सकता। बहुतकाल का अभ्यास चाहिये। नहीं तो एक सेकण्ड सोचेंगे - शिवबाबा शिवबाबा शिवबाबा.... और दूसरे सेकण्ड माया कहेगी - नहीं, तुम्हारे में शक्ति नहीं है, तुम हो ही कमजोर, तो युद्ध चलती रहेगी। यदि निश्चिन्त नहीं होंगे तो ब्राह्मण जीवन के अन्तकाल का जो लक्ष्य वर्णन करते हो वो सहज कैसे होगा और अगर अन्त तक ये व्यर्थ संकल्प होंगे तो वही भूतों के, यमदूतों के रूप में आयेंगे। और कोई यमदूत नहीं आते हैं, ये व्यर्थ संकल्प अपनी कमजोरियाँ, यही यमदूत के रूप में आते हैं। यमदूत क्या करते हैं? डराते हैं। और दूसरों के लिये कहेंगे विमान में जायेंगे अर्थात् उड़ती कला से पार हो जायेंगे। कोई विमान आदि नहीं हैं लेकिन उड़ती कला का अनुभव है। इसलिये पहले से ही चेक करके चेंज करो। कब तक करेंगे? बापदादा को खुश तो कर देते हैं - करेंगे, प्रतिज्ञा भी लिख देते हैं लेकिन वो कागज़ तक रहती हैं या जीवन तक?

सबके पास स्नेह का स्टॉक है ना? माताओं के पास भी है, कुमारियों के पास भी है, पाण्डवों के पास भी है। सागर है या थोड़ा है? तो कभी क्रोध तो नही करते होंगे ना? जब स्नेह का सागर हैं तो क्रोध कहाँ से आया? किसके संस्कारों को जानकर सेटिस्फाय करते हो ना। चाहे वो रांग है लेकिन आप तो नॉलेजफुल हो ना, आप तो जानते हो ना कि ये क्या है लेकिन उस समय क्या कहते हैं - इसने ऐसे किया ना, इसीलिये हमने भी किया। रांग से रांग हो गया तो क्या कमाल की? उसने रांग किया और आपने उसका रेसपॉन्ड भी रांग ही दिया। कई कहते हैं ना क्रोध एक बारी करते हैं तो कुछ नहीं होता, बार-बार करता रहता है! तो जानते हो कि जिसका स्वभाव ही क्रोध का है तो वो क्रोध नहीं करेगा तो क्या करेगा? उसका काम है क्रोध करना और आपका काम है स्नेह देना या क्रोध करना? वो 10 बारी करे तो आप एक बारी तो जवाब देंगे ना? नहीं देंगे तो वो 20 बारी

करेगा, फिर क्या करेंगे? तो इतनी सहनशक्ति है या उसने 10 किया, आपने आधा किया कोई हर्जा नहीं? उसने झूठ बोला, आपने क्रोध किया, तो क्या ठीक हुआ? फिर बड़े बहादुरी से कहते हैं - झूठ बोला ना, इसीलिये क्रोध आ गया। लेकिन झूठ बोलना तो अच्छा नहीं लगा और क्रोध करना अच्छा है! तो स्नेह के सागर के मास्टर स्नेह के सागर। मास्टर स्नेह के सागर के नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव नहीं आ सकता। यदि थोड़ा-थोड़ा जोश आ गया तो क्या उसको स्नेह का सागर कहेंगे कि लोटा है? चाहे कुछ भी हो जाये, सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करेंगे। बेपरवाह बादशाह हो। जो परवाह थी वो पा लिया। अभी इन व्यर्थ बातों से बेपरवाह बादशाह। चेकिंग की परवाह करो, चेंज होने की परवाह करो, लेकिन व्यर्थ में बेपरवाह। कर सकते हो कि बच्चा, पोत्रा, धोत्रा, धोत्री.... थोड़ा-सा क्रोध करेगा, थोड़ा-सा नीचे-ऊपर करेगा, तो स्नेह के बजाय और भावना भी आ जायेगी? दफ्तर में जायेंगे, बिजनेस में जायेंगे, नौकर ऐसा मिल जायेगा, वायुमण्डल ऐसा मिल जायेगा.... लेकिन व्यर्थ से बेपरवाह बादशाह। समर्थ में बेपरवाह नहीं होना। कई उल्टा भी उठा लेते हैं, जहाँ मर्यादा होगी वहाँ कहेंगे बापदादा ने कहा ना कि बेपरवाह बादशाह बन जाओ। लेकिन मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं। आपका टाइटल है मर्यादा पुरूषोत्तम। ये मर्यादायें ही ब्राह्मण जीवन के कदम हैं। अगर कदम पर कदम नहीं रखा तो मंजिल कैसे मिलेगी? ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो। तो ये मर्यादायें ही कदम हैं। अगर इस कदम में थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हो तो मंजिल से दूर हो जाते हो और फिर मेहनत करनी पड़ती है। और बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती, कहते हैं सहज योगी और करते हैं मेहनत। तो अच्छा लगता है क्या? अच्छा।

एवररेडी का अर्थ ही है ऑर्डर हुआ और चल पड़ा। इतना मेरेपन से मुक्त हो? सबसे बड़ा मेरापन सुनाया ना कि देहभान के साथ देह-अभिमान के सोने-चांदी के धागे बहुत हैं। इसलिये सूक्ष्म बुद्धि से, महीन बुद्धि से चेक करो कि कोई भी अल्पकाल का नशा ये धागा बन करके रोकने के निमित्त तो नहीं बनेगा? मोटी बुद्धि से नहीं सोचना कि मेरा कुछ नहीं है, कुछ नहीं है। फालो करने में सदा ब्रह्मा बाप को फालो करो। सर्व प्रति गुणग्राहक बनना अलग चीज़ है लेकिन फालो फादर। कई हैं जो भाई-बहनों को फालो करने लगते हैं लेकिन वो फालो किसको करते हैं? वो फालो ब्रह्मा बाप को करते हैं और आप फिर उनको करते! डायरेक्ट क्यों नहीं करते? सभी ब्रह्मा कुमार हो ना? कि फलाने भाई कुमार, फलानी बहन कुमार? यह तो नहीं? फालो फादर गाया हुआ है या फालो ब्रदर्स-सिस्टर? विशेषता देखो, लेकिन फालो फादर। रिगार्ड रखो लेकिन गाइड एक बाप है। कोई भाई-बहन गाइड नहीं बन सकता। गाइड एक है। गॉड गाइड है और साकार एग्ज़ाम्पल ब्रह्मा बाप है। बस। तो फालो फादर करते हो कि सोचते हो कि ब्रह्मा को तो देखा ही नहीं, जाना ही नहीं, तो कैसे फालो करें? जानते नहीं हो, देखा नहीं है? टीचर्स को देखा, भाई-बहनों को देखा, बाप को देखा ही नहीं - ऐसे तो नहीं सोचते? कोई भी निमित्त हैं लेकिन निमित्त हैं लेकिन निमित्त बनाया किसने? अपने आप ही तो निमित्त नहीं बने ना? बाप ने बनाया। तो फिर बाप याद आयेगा ना?

(09.01.1995)

सदा यह याद रखो कि मैं ब्राह्मण आत्मा राज्य सत्ता और धर्म सत्ता की अधिकारी आत्मा हूँ

जब स्वयं बाप अधिकार दे रहा है, देने वाला दे रहा है और लेने वाले जो हैं उनको क्या करना चाहिये? लेना सहज है या देना सहज है? लेने में तो कोई मुश्किल नहीं है ना? देने मे सोचा जाता है—दें, नहीं दें, थोड़ा दें, ज्यादा दें. . . . लेकिन लेने में तो सब कहेंगे—जितना मिले उतना ले लें। तो लेने में नम्बरवन हो या नम्बर टू हो? इसमें तो नम्बर दो कोई नहीं बनता और जब देना पड़ता है तो. . . . देने में भी नम्बरवन हो कि सोचना पड़ता है, हिम्मत रखनी पड़ती है! वास्तव में देखो कि देते क्या हो? ब्राह्मण जीवन में देना है या लेना है? अगर देने वाली चीज से लेने वाली चीज श्रेष्ठ है तो लेना हुआ या देना हुआ? देना पड़ेगा, देना है—ये सोचते हो तो भारी होते हो। लेना है, तो सदा खुश रहेंगे, हिम्मत में रहेंगे। देने में सोचते हो देना मुश्किल है लेकिन पहले लेते हो फिर देते तो कुछ भी नहीं हो। आपके पास कुछ है जो बाप को देंगे? दी तो अच्छी चीज़ जाती है या खराब चीज? तो क्या अच्छा है आपके पास—तन अच्छा है? मन अच्छा है? धन अच्छा है? बेकार है। दवाइयों के धक्के से शरीर चला रहे हो। तो धक्के वाली गाड़ी अच्छी होती है क्या! तो ब्राह्मण जीवन में लेना ही लेना है। और बाप तो मुस्कराते हैं कि बच्चे बाप से भी चतुर हैं। पहले लेते हैं फिर देने का सोचते हैं। होशियार हो ना! अच्छा है, बच्चे होशियार होते हैं तो बाप को अच्छा लगता

है लेकिन चलते-चलते यदि डल हो जाते हैं तो अच्छा नहीं लगता है। कभी-कभी बच्चों की शक्ल (फेस) ऐसे लगती है कि पता नहीं क्या हो गया! जैसे शरीर में चलते-चलते खून कम हो जाता है तो कमजोर हो जाते हैं ना, फेस से भी कमजोरी नज़र आती है। तो यहाँ भी खुशी की, शक्तियों की कमी हो जाती है ना तो चेहरा ऐसा हो जाता है जैसे. . . . , सब जानते हैं, सभी अनुभवी हैं। एक तरफ कहते हो कि खुशियों की खान मिली है और वो भी अविनाशी फिर कम कैसे हो जाती है? तो बाप के पास आपके सारे दिन के मन के मूड और मूड प्रमाण जो फेस बदलता है वो सारे दिन के चित्र वहाँ होते हैं। आप तो चित्रों का म्युज़ियम बनाते हो ना, बाप के पास आपके चित्रों का म्युज़ियम होता है। तो सदा यह याद रखो कि मैं ब्राह्मण आत्मा राज्य सत्ता और धर्म सत्ता की अधिकारी आत्मा हूँ। यह स्मृति का निश्चय है तो नशा है, निश्चय कम तो नशा भी कम। तो चेक करो—ये सत्तायें सदा साथ रहती हैं वा कभी खो जाती हैं, कभी आ जाती हैं?

(07.03.1995)

संकल्प किया-मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी

संकल्प का खजाना बहुत शक्तिशाली है। संकल्प द्वारा सेकण्ड से भी कम समय में परमधाम तक पहुँच सकते हो। संकल्प शक्ति एक ऑटोमेटिक रॉकेट से भी तीव्र गति वाला रॉकेट है। जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। चाहे बैठे हो, चाहे कोई कर्म कर रहे हो लेकिन संकल्प के खजाने से वा शक्ति से जिस आत्मा के पास पहुँचना चाहो उसके समीप अपने को अनुभव कर सकते हो। जिस स्थान पर पहुँचना चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। जिस स्थिति को अपनाना चाहो, चाहे श्रेष्ठ हो, खुशी की हो, चाहे व्यर्थ हो, कमजोरी की हो, सेकण्ड के संकल्प से अपना सकते हो। संकल्प किया-मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी और संकल्प किया मैं तो कमजोर आत्मा हूँ, मेरे में कोई शक्ति नहीं है, तो सेकण्ड के संकल्प से खुशी गायब हो जायेगी। परेशानी के चिन्ह स्थिति में अनुभव होंगे। लेकिन दोनों स्थिति का आधार संकल्प है। याद में भी बैठते हो तो संकल्प के आधार से ही स्थिति बनाते हो। मैं बिन्दु हूँ, मैं फरिश्ता हूँ... यह स्थिति संकल्प से ही बनी। तो संकल्प कितना शक्तिशाली है!

(25.03.1995)

आप निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा पालनहार परम आत्मा है

आज बेहद का बाप बेहद में सभी बच्चों को देख रहे हैं। बेहद का बाप है और आप सभी भी बेहद के मालिक सो बालक हो। बापदादा सभी स्नेही सहयोगी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं और बच्चे बाप को देखकर हर्षित हो रहे हैं। बाप को ज्यादा खुशी है वा बच्चों को ज्यादा खुशी है-क्या कहेंगे? दोनों को! इसको कहा जाता है परमात्म मिलन मेला। मेले तो बहुत होते ही हैं लेकिन परमात्म मिलन मेला एक ही संगमयुग पर होता है। सारे कल्प में नहीं हो सकता है। अब हो रहा है और होगा। आप सबको भी मेला अच्छा लग रहा है ना! बापदादा तो बच्चों के भाग्य को देख हर्षित होते हैं और दिल में गीत गाते हैं-वाह बच्चे वाह! जो भाग्य स्वप्न में भी न था, संकल्प में भी नहीं था लेकिन अब साकार में श्रेष्ठ भाग्य अनुभव कर रहे हैं। हर एक के मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर चमक रही है। सभी चमकते हुए सितारे हो ना? अपना ये श्रेष्ठ भाग्य स्मृति में रहता है ना! क्यों श्रेष्ठ भाग्य है? क्योंकि भाग्य विधाता द्वारा आप भाग्यवान आत्माओं का दिव्य ब्राह्मण जन्म हुआ है। बाप को भी भाग्य विधाता कहते हैं और ब्रह्मा को भी भाग्य विधाता कहते हैं। और आप सबका जन्म बापदादा द्वारा हुआ है। तो जिसका बाप स्वयं भाग्य विधाता है उसका भाग्य कितना श्रेष्ठ होगा! परमात्म मिलन मना रहे हो ना! (डबल फॉरेनर्स से) ये भी मना रहे हैं! बेहद के मेले में अगर डबल विदेशी नहीं होते तो बेहद का नहीं कहा जाता। तो आप लोगों का भी विशेष पार्ट है, जो बाप और सर्व बच्चे देख-देख हर्षित होते हैं। भाग्य विधाता द्वारा जन्म होना-ये सबसे नम्बरवन भाग्य है। साथ-साथ सारे कल्प में किसी भी जन्म में एक ही परमात्मा बाप भी बने, शिक्षक भी बने, सतगुरु भी बने और सर्व सम्बन्ध भी निभाये-ऐसा सतयुग से कलियुग तक किसको भाग्य मिला है? और अभी आपको मिला है! अभी आप निश्चय और नशे से कहते हो कि हमारा पालनहार परम आत्मा है। दुनिया वाले कहने मात्र कहते हैं कि परमात्मा ही पाल रहा है लेकिन आप प्रैक्टिकल अनुभव से कहते हो कि परमात्मा बाप है

और बाप ही पालनहार है, पालना कर रहे हैं! नशा है ना या थोड़ा-थोड़ा भूल जाते हो? चलते-चलते अपने श्रेष्ठ भाग्य को साधारण समझ लेते हो, है श्रेष्ठ लेकिन समझ साधारण लेते हो। इसलिए जो नशा और खुशी की झलक सदा होनी चाहिये, वह नहीं रहती। वैसे एक सेकण्ड भी भूल नहीं सकते लेकिन कॉमन समझ लेते हो कि बाप मिल गया, हमारा हो गया, हम भी बाप के हो गये....... जब हमारा है तो नशा (फ़खुर) होना चाहिये ना? लेकिन कभी ऊंचा तो कभी मध्यम, कभी साधारण हो जाता है। सोचो, हमारा बाप परम आत्मा है! और फिर शिक्षक डायरेक्ट परम आत्मा है! क्या शिक्षा दी? आपको क्या बना दिया? त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ। ऐसी कोई पढ़ाई पढ़ता है! अभी तक ये डिग्री सुनी है? जज बैरिस्टर, डॉक्टर, इंजीनियर ये तो सब डिग्रीज़ देखी हैं लेकिन त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री, नॉलेजफुल....ऐसी डिग्री देखी है? द्वापर से कलियुग तक किसको मिली है? आपको मिली थी? आपने भी तो 63 जन्म लिये हैं। तो न किसको मिली है, न मिलनी है। ऐसा शिक्षक हमारा है। साइंस वाले साइंस की कितनी भी योजना करें तो भी त्रिलोक तक नहीं पहुँच सकते। तीनों लोकों का नॉलेज प्राप्त हो नहीं सकता। और आपमें तो 5 वर्ष का बच्चा भी तीन लोकों की नॉलेज देता है! वो भी फ़लक से कहेगा-हाँ, सूक्ष्म वतन है, मूल वतन है। तो परम आत्मा शिक्षक भी है। श्रेष्ठ शिक्षा से ये डिग्री तो प्राप्त कराई लेकिन दुनिया में सबसे बड़े ते बड़ा पद राज्य पद होता है। तो पढ़ाई से पद भी मिलता है ना! तो आपको राजा बनाया है? अभी राजा हो या बनना है? हो राजा और बैठे पट में हो! पक्का मकान भी नहीं, टेन्ट में बैठे हो! तो देखो श्रेष्ठ में श्रेष्ठ पद राज-पद है। अभी भी स्वराज्य अधिकारी हो और भविष्य में भी विश्व राज्य अधिकारी बनना ही है। ये पक्का है ना? किसको राज्य करना है? आप राज्य करेंगे कि आपके ऊपर कोई राजा राज्य करेगा? नहीं। ये सब इतने राजा बन जायेंगे! इतने सब राज्य करेंगे! प्रजा भी तैयार की है या अपने ऊपर ही राज्य करेंगे? तो अपना भाग्य देखो-परम आत्मा मेरा शिक्षक है, राज्य पद देने वाला। और फिर सतगुरु बन..... गुरु क्या करते हैं? मन्त्र देते हैं ना। तो सतगुरु ने क्या मन्त्र दिया? मनमनाभव। सतगुरु द्वारा महामन्त्र भी मिला और सर्व वरदान भी मिले। कितने वरदान मिले हैं? वरदानों की लिस्ट देखो कितनी लम्बी है! रोज़ वरदान मिलता है ना! कितने समय से मिल रहे हैं! इतने वरदान कोई भी फालोअर को कोई गुरु दे ही नहीं सकते। ऐसा सतगुरु जो रोज़ वरदान दे, ऐसा देखा? अभी नशा है ना! (हाँ जी) बहुत अच्छा। सदा रखना। ऐसे नहीं, यहाँ से बस में जाओ तो नशा उतरना शुरु हो जाये। सदा बढ़ता रहे।

(31.03.1995)

‘यथार्थ निश्चय के फाउण्डेशन द्वारा सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करो’

आज बापदादा देश-विदेश चारों ओर के नये-नये बच्चों को देख रहे थे। चाहे मधुबन में साकार रूप में आये हैं, चाहे आकार रूप में अपने-अपने सेवा-स्थान में आये हुए हैं, तो नयों-नयों को देख बापदादा सभी के निश्चय को देख रहे थे। क्योंकि निश्चय इस ब्राह्मण जीवन के सम्पन्नता का फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन मज़बूत है तो सहज और तीव्र गति से सम्पूर्णता तक पहुँचना निश्चित है। तो बापदादा देख रहे थे कि निश्चय भी भिन्न-भिन्न प्रकार का है। जो यथार्थ निश्चय है कि मैं परमात्मा बाप का बन गया, स्वयं को भी आत्म-स्वरूप में जानना, मानना, चलना और बाप को भी जो है वैसे जानना - ये है यथार्थ निश्चय।

दूसरा निश्चय है - योग द्वारा थोड़े समय के लिए अशान्ति से शान्ति का अनुभव करते हैं और स्थान का शक्तिशाली शान्त वायुमण्डल आकर्षित करता है वा ब्राह्मण परिवार, ब्राह्मण आत्माओं का आत्मिक प्यार और पवित्रता की जीवन का प्रभाव पड़ता है, कम्पनी अच्छी लगती है, दुनिया के वायुमण्डल के कान्ट्रास्ट में ये संग अच्छा लगता है, ज्ञान भी अच्छा, परिवार भी अच्छा, वायुमण्डल भी अच्छा ..... तो वो अच्छा लगना, उस फाउण्डेशन के आधार पर चलते रहते हैं। ये है दूसरा नम्बर। पहला नम्बर सुनाया ‘यथार्थ निश्चय’ और दूसरा नम्बर ‘अच्छा लगता है’ और तीसरा नम्बर - दुनिया के सम्बन्धियों के दु:खमय वातावरण से बचकर जितना समय भी सेवाकेन्द्र पर आते हैं उतना समय दु:ख से किनारा होकर शान्ति का अनुभव करते हैं। ज्ञान की गुह्यता में नहीं जायेंगे लेकिन शान्ति की प्राप्ति के कारण कभी आते हैं और कभी नहीं भी आते हैं। लेकिन यथार्थ निश्चय बुद्धि विजयी होते हैं। और देखा जाता है कि जब शुरु-शुरु में आते हैं तो अशान्ति से तंग होते हैं, शान्ति के इच्छुक होते हैं। तो जैसे प्यासे को एक बूंद भी अगर पानी की मिल जाये तो वो बहुत बड़ी बात अनुभव करता है। तो अप्राप्ति से प्राप्ति होती है, परिवार में, ज्ञान में, योग में, वायुमण्डल में अन्तर दिखाई देता है। तो पहला समय बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से चलते हैं, बहुत

नशा रहता है, खुशी भी होती है। लेकिन अगर पहले नम्बर के यथार्थ निश्चय का फाउण्डेशन पक्का नहीं है, दूसरे या तीसरे नम्बर का निश्चय है तो धीरे-धीरे जो शुरु की खुशी, शुरू का जोश है, उसमें फर्क आ जाता है।

इस सीज़न में नये-नये बहुत आये हैं और चांस भी मिला है, यह तो बहुत अच्छा है। बापदादा को भी नये-नये बच्चों को देख खुशी होती है कि ये फिर से अपने परिवार में पहुँच गये। लेकिन ये चेक करो कि निश्चय का फाउण्डेशन पक्का है? हमारा निश्चय नम्बरवन है वा नम्बर टू है? अगर नम्बरवन निश्चय है तो चलते-चलते मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है, तो समझो नम्बरवन फाउण्डेशन कच्चा है। क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है और पवित्रता स्वधर्म है। तो जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता। कई बच्चे कहते हैं कि पहले तो बहुत अच्छे आते थे, अभी पता नहीं क्या हो गया? तो क्या हो जाता है कि बाप जो है, जैसा है, वैसे अनुभव में नहीं लाते। अगर पूछेंगे कि बाप साथ है? तो हाथ सब उठायेंगे। हाथ उठाना तो बहुत सहज है। लेकिन बाप साथ है तो बाप की पहली-पहली जो महिमा करते हो कि वो सर्वशक्तिमान् है - ये मानते हो या सिर्फ जानते हो? तो जब सर्वशक्तिमान् बाप साथ है तो सर्वशक्तिमान् के आगे अपवित्रता आ सकती है? नहीं आ सकती। लेकिन आती तो है! तो आती फिर कहाँ से है? कोई और जगह है? चोर लोग जो होते हैं वो अपना स्पेशल गेट बना लेते हैं। चोर गेट होता है। तो आपके पास भी छिपा हुआ चोर गेट तो नहीं है? चेक करो। नहीं तो माया आई कहाँ से? ऊपर से आ गई? अगर ऊपर से भी आ गई तो ऊपर ही खत्म हो जानी चाहिये। कोई छिपे हुए गेट से आती है जो आपको पता नहीं पड़ता है तो चेक करो कि माया ने कोई चोर गेट तो नहीं बनाकर रखा है? और गेट बनाती भी कैसे है, मालूम है? आपके जो विशेष स्वभाव या संस्कार कमज़ोर होंगे तो वहीं माया अपना गेट बना देती है। क्योंकि जब कोई भी स्वभाव या संस्कार कमज़ोर है तो आप कितना भी गेट बन्द करो, लेकिन कमज़ोर गेट है, तो माया तो जानीजाननहार है, उसको पता पड़ जाता है कि ये गेट कमज़ोर है, इससे रास्ता मिल सकता है और मिलता भी है। चलते-चलते अपवित्रता के संकल्प भी आते हैं, बोल भी होता, कर्म भी हो जाता है। तो गेट खुला हुआ है ना, तभी तो माया आई। फिर साथ कैसे हुआ? कहने में तो कहते हो कि सर्वशक्तिमान् साथ है तो ये कमज़ोरी फिर कहाँ से आई? कमज़ोरी रह सकती है? नहीं ना? तो क्यों रह जाती है? चाहे पवित्रता में कोई भी विकार हो, मानो लोभ है, लोभ सिर्फ खाने-पीने का नहीं होता। कई समझते हैं हमारे में पहनने, खाने या रहने का ऐसा तो कोई आकर्षण नहीं है, जो मिलता है, जो बनता है, उसमें चलते हैं। लेकिन जैसे आगे बढ़ते हैं तो माया लोभ भी रॉयल और सूक्ष्म रूप में लाती है। वो रॉयल लोभ क्या है? चाहे स्टूडेण्ट हो, चाहे टीचर हो, माया दोनों में रॉयल लोभ लाने का फुल पुरुषार्थ करती है। मानो स्टूडेण्ट है, बहुत अच्छा निश्चयबुद्धि, सेवाधारी है, सबमें अच्छा है लेकिन जब आगे बढ़ते हैं तो ये रॉयल लोभ आता है कि मैं इतना कुछ करता हूँ, सब रूप (तरह) से मददगार हूँ, तन से, मन से, धन से और जिस समय चाहिये उस समय सेवा में हाज़िर हो जाता हूँ फिर भी मेरा नाम कभी भी टीचर वर्णन नहीं करती कि ये जिज्ञासु बहुत अच्छा है। अगर मानों ये भी नहीं आवे तो फिर दूसरा रूप क्या होता है? अच्छा, नाम ले भी लिया तो नाम सुनते-सुनते-मैं ही हूँ, मैं ही करता हूँ, मैं ही कर सकता हूँ, वो अभिमान के रूप में आ जायेगा। या बहुत काम करके आये और किसी ने आपको पूछा भी नहीं, एक गिलास पानी भी नहीं पिलाया, देखा ही नहीं, अपने आराम में या अपने काम में बिज़ी रहे, तो ये भी आता है कि करो भी और पूछे भी कोई नहीं। तो करना ही क्या है, करना या ना करना एक ही बात है। पूछने वाला तो कोई है नहीं, इससे आराम से घर में बैठो, जब होगा तब सेवा करेंगे। तो ये भिन्न-भिन्न प्रकार का विकारों का रॉयल रूप आता है। और एक भी विकार आ गया ना, मानो लोभ नहीं आया लेकिन अभिमान आ गया या अपने मानने तक का, हमारी मान्यता हो - उसका भान आ गया तो जहाँ एक विकार होता है वहाँ उनके चार साथी छिपे हुए रूप में होते हैं। और एक को आपने चांस दे दिया तो वो छिपे हुए जो हैं वो भी समय प्रमाण अपना चांस लेते रहते हैं। फिर कहते हैं कि पहले जैसा नशा अभी नहीं है, पहले बहुत अच्छा था, पहले अवस्था बड़ी अच्छी थी, अभी पता नहीं क्या हो गया है। माया चोर गेट से आ गई - ये है पता, ये नहीं कहो पता नहीं।

और टीचर को भी आता है। टीचर को क्या चाहिये? सेन्टर अच्छा हो, कपड़े भले कैसे भी हो लेकिन सेन्टर थोड़ा रहने लायक तो अच्छा हो। और जो साथी हो वो अच्छे हो, स्टूडेण्ट अच्छे हो, बाबा की भण्डारी अच्छी हो। अगर अच्छा स्टूडेन्ट चेंज हो जाये तो दिल थोड़ा धड़कती है। फिर समझते हैं कि क्या करें, ये मददगार था ना, अभी वो चला गया। मददगार जिज्ञासु था वा बाप है? तो उस समय कौन दिखाई देता है? जिज्ञासु या बाप? तो ये रॉयल माया फाउण्डेशन को हिलाने की कोशिश

करती है। अगर आपको निश्चय है-सर्वशक्तिमान साथ है तो बाप किसी न किसी को निमित्त बना ही देता है। कई फिर सोचते हैं हमें कम से कम एक बार आबू की कान्फ्रेन्स में या किसी बड़ी कान्फ्रेन्स में चांस मिलना चाहिए, चलो और नहीं, योग शिविर तो करा लें, ये भी तो चांस होना चाहिये ना, चलो भाषण नहीं करे, स्टेज पर तो आवें, आखिर विनाश हो जायेगा, क्या विनाश तक भी हमारा नम्बर नहीं आयेगा, नम्बर तो आना चाहिये ना! लेकिन पहले भी बापदादा ने सुनाया कि अगर योग्य हैं, चांस मिलता है तो खुशी से करो लेकिन ये संकल्प करना कि हमें चांस मिलना चाहिए...... यह भी मांगना है। चाहिये-चाहिये ये है रॉयल मांगना। ये होना चाहिये..... ये हमें पहचानते नहीं हैं, दादी-दीदियाँ भी सभी को पहचानती नहीं हैं, जो आगे आते हैं उसको आगे कर लेते हैं-तो ये संकल्प आना यह भी एक सूक्ष्म मांगना है। लेकिन बापदादा ने सुना दिया है कि मानों आप स्टेज़ पर आ गई या आपकी कोई भी विशेषता के कारण, योग नहीं भी है, अवस्था इतनी अच्छी नहीं है लेकिन बोल में, कैचिंग पॉवर में विशेषता है तो चांस मिल जाता है, क्योंकि किसी की वाणी में मिठास होता है, स्पष्टता होती है और कैचिंग पावर होती है तो यहाँ के वहाँ के मिसाल वगैरह कैच करके सुनाते हैं इसीलिए उन्हों का नाम भी हो जाता है। कौन चाहिये? फलानी चाहिये। कौन आवे? फलानी आवे, चाहे योग में कच्ची भी हो.... तो इस पर नम्बर फाइनल नहीं होने हैं। जो फाइनल नम्बर मिलेंगे वो ये नहीं होगा कि इसने कितने भाषण किये या इसने कितने स्टूडेण्ट वा सेन्टर बनाये हैं, लेकिन योग्य कितनों को बनाया है? सेन्टर बनाना बड़ी बात नहीं है लेकिन योग्य कितनी आत्माओं को बनाया? नाम हो गया-30 सेन्टर की इंचार्ज है और 30 में से 15 हिल रहे हैं, 15 ठीक हैं तो फायदा हुआ या सिर्फ नाम हुआ? सिर्फ नाम होता है कि फलानी के 30 सेवाकेन्द्र हैं। लेकिन नम्बर इससे नहीं मिलेगा। फाइनल नम्बर जितनों को सुख दिया, जितना स्वयं शक्तिशाली रहे, उसी प्रमाण मिलेंगे। इसीलिये ये भी चाहिये-चाहिये खत्म कर दो। नहीं तो योग नहीं लगेगा। रोज़ यही देखते रहेंगे कि फलानी जगह प्रोग्राम हुआ मेरे को फिर भी नहीं बुलाया, अभी परसों यहाँ हुआ, कल वहाँ हुआ, आज यहाँ हुआ! तो योग लगेगा या गिनती होती रहेगी?

तो मुख्य बात - जो यथार्थ निश्चय है उसको पक्का करो। कहने में तो कह देते हो मैं आत्मा हूँ और बाप सर्वशक्तिमान् है लेकिन प्रैक्टिकल में, कर्म में आना चाहिये। बाप सर्वशक्तिमान् है लेकिन मेरे को माया हिला रही है तो कौन मानेगा आपका बाप सर्वशक्तिमान् है! क्योंकि उससे ऊपर तो कोई है नहीं। तो बापदादा आज निश्चय के फाउण्डेशन को देख रहे हैं। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन इस निश्चय के फाउण्डेशन को प्रैक्टिकल में लाओ और समय पर यूज़ करो। समय बीत जाता है फिर बाप के आगे पश्चाताप् के रूप में आते हो-क्या करें, बाबा हो गया, आप तो रहमदिल हो, रहम कर दो......तो ये क्या हुआ? ये भी रॉयल पश्चाताप् है। साथ है तो किसी की हिम्मत नहीं है, निश्चयबुद्धि का अर्थ ही है विजयी। अगर कोई हिसाब-किताब आता भी है तो मन को नहीं हिलाओ। स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो। चलो आया और फट से उसको दूर से ही खत्म कर दो। अभी योद्धे नहीं बनो। कई अभी निरन्तर योगी नहीं हैं। कुछ समय योगी हैं और कुछ समय युद्ध करने वाले योद्धे हैं। लेकिन अपने को कहलाते क्या हो? योद्धे कि योगी? कहलाते तो सहजयोगी हो। तो नये जो भी आये हैं उनको बापदादा फिर से भाग्य प्राप्त करने की मुबारक देते हैं। लेकिन मुबारक के साथ ये चेक भी करना कि फाउण्डेशन नम्बरवन है या नम्बर दो का है?

कई कहते हैं ज्ञान-योग बहुत अच्छा लगता है, अच्छा है वो तो ठीक है लेकिन कर्म में लाते हो? ज्ञान माना आत्मा, परमात्मा, ड्रामा....यह कहना नहीं। ज्ञान का अर्थ है समझ। समझदार जैसा समय होता है वैसे समझदारी से सदा सफल होता है। कभी भी देखो जीवन में दुख आते हैं तो क्या सोचते हो? पता नहीं, मुझे यह क्यों नहीं समझ में आया - यहीं कहेंगे। तो समझदार हो? ज्ञानी हो? बोलो हाँ या ना? (हाँ जी) हाँ तो बहुत अच्छी बोलते हैं। समझदार की निशानी है कभी धोखा नहीं खाना - ये है ज्ञानी की निशानी, और योगी की निशानी है - सदा क्लीन और क्लियर बुद्धि। क्लीन भी हो और क्लियर भी हो। योगी कभी नहीं कहेगा-पता नहीं, पता नहीं। उनकी बुद्धि सदा ही क्लियर है। और धारणा स्वरूप की निशानी है सदा स्वयं भी डबल लाइट। कितनी भी जिम्मेवारी हो लेकिन धारणामूर्त, सदा डबल लाइट। चाहे मेला हो, चाहे झमेला हो-दोनों में डबल लाइट। और सेवाधारी की निशानी है-सदा निमित्त और निर्माण भाव। तो ये सभी अपने में चेक करो। कहने में तो सभी कहते हो ना कि चारों ही सब्जेक्ट के गॉडली स्टूडेण्ट हैं। तो निशानी दिखाई देनी चाहिये।

तो नये-नये क्या करेंगे? अपने निश्चय को और पक्का करना। नहीं तो फिर क्या होता है दो साल चलेंगे, तीन साल चलेंगे फिर वापस पुरानी दुनिया में चले जायेंगे। और फिर जो वापस जाते हैं वो उस दुनिया में भी सेट नहीं हो सकते हैं। न इस दुनिया के रहते, न उस दुनिया के। इसलिए अपना फाउण्डेशन बहुत पक्का करो। अनुभव करो- सर्वशक्तिमान् बाप साथ है। बस एक

बात भी अनुभव किया तो सबमें पास हो जायेंगे। रिवाज़ी प्राइम मिनिस्टर है, मिनिस्टर है उसके साथ का भी नशा रहता है। ये तो सर्वशक्तिमान् है!

(04.12.1995)

हम पूर्वज हैं – उसी निश्चय और नशे में रहो

आज बापदादा चारों ओर की आत्माओं को आप सभी के साथ देख रहे हैं। चारों ओर के बच्चे आकार रूप से बापदादा के सामने हैं। डबल सभा, साकारी और आकारी दोनों कितनी बड़ी सभा है। बापदादा दोनों सभा के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। क्योंकि बापदादा हर बच्चे को विशेष दो रूपों से देख रहे हैं। एक – हर एक बच्चा इस सर्व मनुष्यात्माओं के पूर्वज, सारे वृक्ष का फाउण्डेशन हैं। क्योंकि जड़ से सारा वृक्ष निकलता है और दूसरे रूप में पूर्वज बड़े को भी कहते हैं। तो सृष्टि के आदि में आप आत्माओं का ही पार्ट है। इसलिए बड़े ते बड़े हो, इस कारण सर्व आत्माओं के पूर्वज हो। साथ-साथ ऊंचे ते ऊंचे बाप की पहली रचना आप ब्राह्मण आत्मायें हो। तो जैसे ऊंचे ते ऊंचा भगवन है वैसे बड़े ते बड़े पूर्वज आप हो। तो इतने सारे पूर्वज बच्चों को देख बाप हर्षित होते हैं। आप भी हर्षित होते हो कि हम पूर्वज हैं – उसी निश्चय और नशे में रहते हो?

(13.12.1995)

आप छोड़ो तो छूटेगा

अभी जब वर्ष पांच हज़ार वर्ष के लिये विदाई लेता है तो आप कम से कम ये छोटा सा ब्राह्मण जन्म एक ही जन्म है, ज्यादा नहीं है, एक ही है और उसमें भी कल का भरोसा नहीं तो वो पांच हज़ार की विदाई लेता है तो आप कम से कम एक जन्म के लिए तो विदाई दो। दे सकते हो? हाँ जी तो करते हो। लेकिन जिस समय वो वापस आती है तो सोचते हो – बड़ा मुश्किल लगता है, छूटता ही नहीं है, क्या करें! छोड़ो तो छूटें। वो नहीं छूटेगा, आप छोड़ो तो छूटेगा। क्योंकि आपने उनसे प्यार बहुत कर लिया है तो वो नहीं छोड़ेगा, आपको छोड़ना पड़ेगा। तो पुराने वर्ष को इस विधि से दृढ़ संकल्प और सम्पूर्ण निश्चय, इस ट्रे में ये आठ ही बातें सजा कर उसको दे दो तो फिर वापस नहीं आयेंगी, निश्चय को हिलाओ नहीं। निश्चय हिल जाता है – क्या हुआ, हो जायेगा, अभी दो हज़ार वर्ष पूरे हुए नहीं, दो हज़ार तक ठीक हो जायेगा.... ये है निश्चय में अलबेलापन। बापदादा को भी बहुत अच्छी-अच्छी बातें कहते हैं–बाबा आप फिक्र नहीं करो, दो हज़ार में पूरा हो जायेगा। अभी थोड़ा-थोड़ा....। लेकिन दो हज़ार की डेट तो बाप ने दी नहीं है, तो ऐसे न हो कि आप दो हज़ार का इन्तज़ार करते रहो और नई दुनिया का इन्तज़ाम पहले से हो जाये। इसीलिये अलबेले मत बनना। रिवाइज़ करो, बार-बार रिवाइज़ करो। क्यों भूल जाते हो? जब कोई काम शुरु करते हो ना तो बहुत अच्छा सोचते हो – मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, ये भी आत्मा है, आत्मा शरीर से ये काम करा रही है, शुरू ऐसे करते हो। लेकिन काम करते-करते आत्मा मर्ज हो जाती है। आप जो काम करते हो, उसमें हाथ तो चलता ही है लेकिन मन-बुद्धि सहित अपने को बिज़ी कर देते हो। भल बॉडी कान्सेस कम होते हो लेकिन एक्शन कॉन्सेस ज्यादा हो जाते हो। फिर कहते हो बाबा मेरे से कुछ गलती नहीं हुई, मैंने किसको कुछ नहीं कहा, लेकिन बापदादा कहते हैं कि मानो आप बॉडी कान्सेस नहीं हो, एक्शन कान्सेस हो और उसी समय कुछ हो जाये तो रिज़ल्ट क्या होगी? सोल कान्सेस जितना तो नहीं मिलेगा। तो इसकी विधि है बार-बार रिवाइज़ करो, बार-बार चेक करो। जब काम पूरा होता है फिर आप सोचते हो, लेकिन नहीं, जब तक नेचरल सोल कान्सेस हो जाओ तब तक ये सहज विधि है बार-बार रिवाइज़ करना। रिवाइज़ करेंगे तो जो पीछे सोचना पड़ता है वो नहीं होगा।

(31.12.1995)

मदद उसको मिलती है जो हिम्मत रखते हैं

सारी मुरली भूल जाये लेकिन दो शब्द याद रखो और प्रैक्टिकल में करते चलो। वो दो शब्द, जानते भी हो, कोई नई बात नहीं है, एक है शुभ चिन्तन, निगेटिव को भी पॉजेटिव करो, इसको कहते हैं शुभ चिन्तन। निगेटिव पॉजेटिव हो सकता है और

बदल सकते हो सिर्फ चेक करो कि कर्म करते भी शुभ चिन्तन चला? और दूसरा सभी के प्रति शुभ चिन्तक तो शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक दोनों का सम्बन्ध है। अगर शुभ चिन्तन नहीं है तो शुभ चिन्तक भी नहीं बन सकते। इसलिए इन दो बातों का अटेन्शन रखना। समझा? क्या करेंगे? यहीं नहीं भूल जाना। क्योंकि अभी देखा गया है कि बहुत ऐसी समस्यायें हैं, लोग हैं जो आपके वाणी से नहीं समझते लेकिन शुभ चिन्तक बन शुभ वायब्रेशन दो तो बदल जाते हैं। और एक बात से मुक्त भी होना है। इस ब्राह्मण जीवन में मुक्त होने वाले हो ना, मुक्त होने की 9 बातें बता दी, अगर इन नौ बातों से मुक्त हो गये तो नौ रत्न बन सकते हैं। तो आज बापदादा एक बात की स्मृति दिला रहे हैं - कभी भी कोई भी शारीरिक बीमारी हो, मन का तूफान हो, तन में हलचल हो, प्रवृत्ति में हलचल हो, सेवा में भी हलचल होती है तो किसी भी प्रकार के हलचल में दिलशिकस्त कभी नहीं होना। बड़ी दिल वाले बनो। बाप की दिल कितनी है, छोटी है क्या! बाप बड़ी दिल वाले हैं और बच्चे छोटी दिल कर देते हैं, बीमार हो गये तो रोना शुरु कर देंगे। दर्द हो गया, दर्द हो गया। तो दिलशिकस्त होना दवाई है? बीमारी चली जायेगी कि बढ़ेगी? जब हिसाब-किताब आ गया, दर्द आ गया तो हिसाब-किताब आ गया ना, लेकिन दिलशिकस्त से बीमारी को बढ़ा देते हो। इसलिए हिम्मत वाले बनो तो बाप भी मददगार बनेंगे। ऐसे नहीं, रो रहे हैं-हाय क्या करूँ, क्या करूँ और फिर सोचो कि बाबा की तो मदद है ही नहीं। मदद उसको मिलती है जो हिम्मत रखते हैं। पहले बच्चे की हिम्मत फिर बाप की मदद है। तो हिम्मत तो हार ली और सोचने लगते हो कि बाप की मदद तो मिली नहीं, बाबा भी टाइम पर तो करता ही नहीं है! तो आधे अक्षर याद नहीं करो, बाबा मददगार है लेकिन किसका? तो आधा भूल जाते हो और आधा याद करते हो कि बाबा भी पता नहीं महारथियों को ही करता है, हमको तो करता ही नहीं है, हमको तो देता ही नहीं है। पहले आप, महारथी पीछे। लेकिन दिलशिकस्त नहीं बनो और मन में अगर कोई उलझन आ भी जाती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति चाहिये और निर्णय शक्ति तब आ सकती है जब आपका मन बाप के तरफ होगा। अगर अपने उलझन में होंगे तो हाँ-ना, हाँ-ना, इसी उलझन में रह जायेंगे। इसलिए मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो। और धन भी नीचे-ऊपर होता है, जब करोड़पतियों का ही नीचे-ऊपर होता है तो आप लोग उसके आगे क्या हो। वो तो होना ही है। लेकिन आप लोगों को निश्चय पक्का है कि जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। दो-दो सब्जी नहीं खिलायेगा, दाल-रोटी खिलायेगा। लेकिन ऐसे नहीं करना कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राजी है। और परिवार में भी खिटखिट तो होनी है। जब आप लोग कहते हो कि अति के बाद अन्त होना है, कहते हो! अति में जा रहा है और जाना है तो परिवार में खिटखिट न हो, ये नहीं होना है, होना है! लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गड़बड़ होगी। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं। ये मेरापन-मेरा नाम खराब होगा, मेरी ग्लानि होगी, मेरा बच्चा और मुझे...., मेरी सास मेरे को ऐसे करती है.... ये मेरापन आता है ना तो सब बातें आती हैं। मेरा जहाँ भी आया वहाँ बुद्धि का फेरा हो जाता है, बदल जाते हैं। अगर बुद्धि कहाँ भी उलझन में बदलती है तो समझ लो ये मेरापन है, उसको चेक करो और जितना सुलझाने की कोशिश करेंगे उतना उलझेगा। इसलिए सभी बातों में क्या नहीं बनना है? दिलशिकस्त नहीं बनना है। क्या नहीं बनेंगे? (दिलशिकस्त) सिर्फ कहना नहीं, करना है। भगवान के बच्चे हैं ये तो पक्का वायदा है ना, इसको तो माया भी नहीं हिला सकती। जब ये पक्का वायदा है, निश्चय है तो भगवान के बच्चे भी दिलशिकस्त हो जायें, तो बड़ी दिल रखने वाले कौन होंगे? और कोई होंगे? आप ही हो ना! तो क्या करेंगे? अभी समर्थ बनो और सन शोज़ फादर का पाठ पक्का करो। कच्चा नहीं करो, पक्का करो।

(18.01.1996)

श्रीमत को मानना यह भी एक सफलता है

सन्तुष्ट हैं? हाँ या ना? कुछ भी सेवा करो चाहे जिज्ञासू कोर्स वाले आवे या नहीं आवे लेकिन स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट रहो। निश्चय रखो कि अगर मैं सन्तुष्ट हूँ तो आज नहीं तो कल यह मैसेज काम करेगा, करना ही है। इसमें थोड़ा सा उदास नहीं बनो। खर्चा तो किया.... प्रोग्राम भी किया.... लेकिन आया कोई नहीं। स्टूडेन्ट नहीं बढ़े, कोई हर्जा नहीं आपने तो किया ना। आपके हिसाब-किताब में जमा हो गया और उन्हों को भी सन्देश मिल गया। तो टाइम पर सभी को आना ही है, इसलिए करते जाओ।

खर्चा बहुत हुआ, उसको नहीं सोचो। अगर स्वयं सन्तुष्ट हो तो खर्चा सफल हुआ। घबराओ नहीं, पता नहीं क्या हुआ! कई बच्चे ऐसे कहते हैं मेरा योग ठीक नहीं था, तभी यह हुआ। किससे योग था? और कोई है क्या जिससे योग था? योग है और सदा रहेगा। बाकी कोई सीजन का फल है, कोई हर समय का फल है। तो अगर आया नहीं तो सीजन का फल है, सीजन आयेगी। दिलशिकस्त नहीं बनो। क्योंकि श्रीमत को तो माना ना। श्रीमत प्रमाण कार्य किया। इसीलिए श्रीमत को मानना यह भी एक सफलता है। बढ़ते जाओ, करते जाओ। और ही पश्चाताप करके आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कहा हमने नहीं माना। यहाँ ही आप देवियां बनेंगी। आपके पांव पर पड़ेंगे, तभी तो भक्ति में भी पांव पड़ेंगे ना। तो वह टाइम भी आना है जो सब आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कितना अच्छा हमारा कल्याण किया।

(27.02.1996)

सक्सेसफुल क्यों नहीं होते, उसका कारण क्या है?

कभी-कभी सक्सेसफुल क्यों नहीं होते, उसका कारण क्या है? जब अपना जन्म सिद्ध अधिकार है, तो अधिकार प्राप्त होने में, अनुभव होने में कमी क्यों? कारण क्या? बापदादा ने देखा है - मैजॉरिटी अपने कमजोर संकल्प पहले ही इमर्ज करते हैं, पता नहीं होगा या नहीं! तो यह अपना ही कमजोर संकल्प प्रसन्नचित्त नहीं लेकिन प्रश्नचित्त बनाता है। होगा, नहीं होगा? क्या होगा? पता नहीं..... यह संकल्प दीवार बन जाती है और सफ़लता उस दीवार के अन्दर छिप जाती है। निश्चयबुद्धि विजयी - यह आपका स्लोगन है ना! जब यह स्लोगन अभी का है, भविष्य का नहीं है, वर्तमान का है तो सदा प्रसन्नचित्त रहना चाहिए या प्रसन्नाचित्त? तो माया अपने ही कमजोर संकल्प की जाल बिछा लेती है और अपने ही जाल में फँस जाते हो। विजयी हैं ही - इससे इस कमजोर जाल को समाप्त करो। फँसो नहीं, लेकिन समाप्त करो। समाप्त करने की शक्ति है? धीरे-धीरे नहीं करो, फट से सेकण्ड में इस जाल को बढ़ने नहीं दो। अगर एक बार भी इस जाल में फँस गये ना तो निकलना बहुत मुश्किल है। विजय मेरा बर्थराइट है, सफ़लता मेरा बर्थराइट है। यह बर्थराइट, परमात्म बर्थराइट है, इसको कोई छीन नहीं सकता - ऐसा निश्चयबुद्धि, सदा प्रसन्नचित्त सहज और स्वतः रहेगा। मेहनत करने की भी ज़रूरत नहीं।

(22.03.1996)

हर समय यह चेक करो कि हिम्मत के पांव मजबूत हैं?

क्या करना है? अनुभवी मूर्त। कई बच्चे रूहरिहान में बहुत ही मीठी-मीठी रूहरिहान करते, कहते हैं - क्या करें बाबा, इतना तो हो गया है, बाकी इतना आप कर लो। राज्य हम करेंगे लेकिन सम्पूर्ण आप बना दो। ऐसे होगा? बाप मददगार जरूर है और अन्त तक रहेंगे, यह गैरन्टी है लेकिन किसके मददगार? जो पहले हिम्मत का पांव आगे करते हैं, फिर बाप मदद का दूसरा पांव उठाने में सम्पूर्ण मदद करते हैं। हिम्मत का पांव उठाओ नहीं और सिर्फ कहो बाबा आप कर लो, बाबा आप कर लो। तो बापदादा भी कहेगा देखेंगे, पहले पांव तो रखो। एक पांव भी नहीं रखेंगे तो कैसे होगा! इसलिए इस वर्ष में हर समय यह चेक करो कि हिम्मत के पांव मजबूत हैं? बाप को कहने के पहले यह चेक करो। हिम्मत का पांव बढ़ाया और मदद नहीं मिले, यह असम्भव है। सिर्फ थोड़ा सा हिम्मत का पांव बढ़ाओ, इसीलिए गाया हुआ है पहला शब्द क्या आता है? हिम्मते बच्चे मददे बाप, इसको उल्टा नहीं करो - मददे बाप और फिर हिम्मत बच्चों की। बाप तो मुस्कराते रहते हैं, वाह मेरे लाडले बच्चे वाह! निश्चय से हिम्मत का पांव जरा भी आगे करेंगे तो बाप पदमगुणा मदद के लिए हर एक बच्चे के लिए हर समय तैयार है।

(31.12.1996)

दृढ़ता का ठप्पा लगाते रहना

बापदादा खुश हो रहे थे कि कई बच्चों ने पत्र और चिटकी लिखी है कि हम 108 में आयेंगे, बहुत चिटकियां आई हैं। बापदादा ने सोचा जब इतने 108 में आयेंगे, तो 108 की माला पांच लड़ियों की बनानी पड़ेगी। तो 5-6-7-8 लड़ियों की माला बनायें ना? जिन्होंने संकल्प किया है, लक्ष्य रखा है बहुत अच्छा है। लेकिन सिर्फ इस संकल्प को बीच-बीच में दृढ़ करते रहना।

ढीला नहीं करना। ऐसे तो नहीं कहेंगे माया आ गई - अब पता नहीं आयेंगे या नहीं! पता नहीं, पता नहीं...नहीं करना। पता कर लिया, आना ही है। दृढ़ता का ठप्पा लगाते रहना। हाँ मुझे आना ही है, कुछ भी हो जाए, मेरा निश्चय अटल है, अखण्ड है। ऐसा अटल-अखण्ड निश्चय है? तो माया को हिलाने के लिए भेजें? नहीं? डरते हो? माया आपसे डरती है और आप माया से डरते हो? माया अपने दरवाजे देखती है, यहाँ खुला हुआ है, यहाँ खुला हुआ है। ढूंढती रहती है। आप घबराते क्यों हो? माया कुछ नहीं है। कुछ नहीं कहो तो कुछ नहीं हो जायेगी। आ नहीं सकती, आ नहीं सकती, तो आ नहीं सकती। क्या करें....? तो माया का दरवाजा खोला, आह्वान किया। तो अच्छी बात है कि बहुत बच्चों ने 108 में आने की प्रामिस किया है। किया है ना? जिन्होंने कहा है कि हम 108 में आयेंगे - वह लम्बा हाथ उठाओ। अच्छी तरह से ड्रिल करो। बहुत अच्छा, मुबारक हो। यह नहीं सोचो कि 108 में कितने आयेंगे, हम कहाँ आयेंगे - यह नहीं सोचो। पहले गिनती करने लग जाते हैं - दादी आयेंगी, दीदी आयेंगी, फिर दादे भी आयेंगे, एडवांस पार्टी वाले भी आयेंगे। हमारा नम्बर आयेगा या नहीं, पता नहीं! बापदादा ने कहा कि बापदादा 8-10 लड़ों की माला बना देंगे, इसलिए आप यह चिंता नहीं करो। औरों को नहीं देखो, आपको नम्बर मिल ही जाना है, यह बाप की गैरन्टी है। आप किनारा नहीं करना। माला के बीच में धागा खाली नहीं करना। एक दाना बीच से टूट जाए, निकल जाए तो माला अच्छी नहीं लगेगी। सिर्फ यह नहीं करना, बाकी बाबा की गैरन्टी है आप जरूर आयेंगे।

(06.03.1997)

ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार कौन से हैं?

ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार कौन से हैं? क्रोध या सहनशक्ति? कौन सा है? सहनशक्ति, शान्ति की शक्ति यह है ना! तो अवगुणों को तो सहज ही संस्कार बना दिया, कूट-कूट कर अन्दर डाल दिया है जो न चाहते भी निकलता रहता है। ऐसे हर गुण को अन्दर कूट-कूट कर संस्कार बनाओ। मेरा निज़ी संस्कार कौन सा है? यह सदा याद रखो। वह तो रावण की जायदाद संस्कार बना दिया। पराये माल को अपना बना लिया। अब बाप के खजाने को अपना बनाओ। रावण की चीज़ को सम्भाल कर रखा है और बाप की चीज़ को गुम कर देते हो, क्यों? रावण से प्यार है! रावण अच्छा लगता है या बाप अच्छा लगता है? कहेंगे तो सभी बाप अच्छा लगता है, यही मन से कह रहे हैं ना? लेकिन जो अच्छा लगता है उसकी बात निश्चय की स्याही से दिल में समा जाती है। जब कोई रावण के संस्कार के वश होते हैं और फिर भी कहते रहते हैं - बाबा आपसे मेरा बहुत प्यार है, बहुत प्यार है। बाप पूछते हैं कितना प्यार है? तो कहते हैं आकाश से भी ज्यादा। बाप सुनकरके खुश भी होते हैं कि कितने भोले बच्चे हैं। फिर भी बाप कहते हैं कि बाप का सभी बच्चों से वायदा है - कि दिल से अगर एक बार भी 'मेरा बाबा' बोल दिया, फिर भले बीच-बीच में भूल जाते हो लेकिन एक बार भी दिल से बोला 'मेरा बाबा', तो बाप भी कहते हैं जो भी हो, जैसे भी हो मेरे ही हो। ले तो जाना ही है। सिर्फ बाप चाहते हैं कि बराती बनकर नहीं चलना, सज़नी बनकर चलना। सुनकर के तो सभी बहुत खुश हो रहे हैं। अपने ऊपर हंसी भी आ रही है।

(03.04.1997)

अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो, नहीं तो धोखा खा लेंगे।

आज से हर एक अपने में देखे - दूसरे का नहीं देखना। दूसरे की यह बातें देखने के लिए मन की आंख बंद करना। यह आंखें तो बंद कर नहीं सकते ना, लेकिन मन की आंख बन्द करना - दूसरा करता है या तीसरा करता है, मुझे नहीं देखना है। बाप इतना भी फोर्स देकर कहते हैं कि अगर कोई विरला महारथी भी कोई ऐसी कमजोरी करे तो भी देखने के लिए और सुनने के लिए मन को अन्तर्मुखी बनाना। हंसी की बात सुनायें - बापदादा आज थोड़ा स्पष्ट सुना रहे हैं, बुरा तो नहीं लगता है। अच्छा-एक और भी स्पष्ट बात सुनाते हैं। बापदादा ने देखा है कि मैजारिटी समय प्रति समय, सदा नहीं कभी-कभी महारथियों की विशेषता को कम देखते और कमजोरी को बहुत गहराई से देखते हैं और फालो करते हैं। एक दो से वर्णन भी करते हैं कि क्या है, सबको देख लिया है। महारथी भी करते हैं, हम तो हैं ही पीछे। अभी महारथी जब बदलेंगे ना तो हम बदल जायेंगे। लेकिन महारथियों की तपस्या, महारथियों के बहुतकाल का पुरूषार्थ उन्हों को एडीशन मार्क्स दिलाकर भी पास विद आनर कर लेती

है। आप इसी इन्तजार में रहेंगे कि महारथी बदलेंगे तो हम बदलेंगे तो धोखा खा लेंगे इसलिए मन को अन्तर्मुखी बनाओ। समझा। यह भी बापदादा बहुत सुनते हैं, देख लिया... देख लिया। हमारी भी तो आंखे हैं ना, हमारे भी तो कान हैं ना, हम भी बहुत सुनते हैं। लेकिन महारथियों से इस बात में रीस नहीं करना। अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो, नहीं तो धोखा खा लेंगे। बाप को तरस पड़ता है क्योंकि महारथियों का फाउन्डेशन निश्चय, अटूट-अचल है, उसकी दुआयें एक्स्ट्रा महारथियों को मिलती हैं। इसलिए कभी भी मन की आंख को इस बात के लिए नहीं खोलना। बंद रखो। सुनने के बजाए मन को अन्तर्मुखी रखो।

(03.04.1997)

घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं, निश्चयबुद्धि बनो

जो बच्चों ने संकल्प किया है, वह प्रैक्टिकल में करने वालों को बाप-दादा की एक्स्ट्रा मदद भी मिलेगी। सिर्फ दृढ़ रहना। बीच-बीच में ड्रामा पेपर लेगा लेकिन संकल्प में दृढ़ रहना, संकल्प रूपी पांव हिले नहीं, अचल रहे तो बापदादा द्वारा एक्स्ट्रा मदद की अनुभूति होगी। सिर्फ लेने की शक्ति चाहिए। एक बल, एक भरोसा.. कुछ भी हो जाए, बनना ही है। यह संकल्प रूपी पांव मजबूत रखना। तो बातें आयेंगी भी लेकिन ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे प्लेन में बादल नीचे रह जाते हैं और स्वयं बादलों के ऊपर रहते हैं। बादल एक मनोरंजन का दृश्य बन जाता है। ऐसे कितने भी काले बादलों जैसी बातें हों, जिसमें कुछ समस्या का हल या समाधान उस समय दिखाई न भी दे लेकिन यह दृढ़ निश्चय हो कि यह बादल आये हैं जाने के लिए। यह बादल बिखरने वाले ही हैं, रहने वाले नहीं हैं। ऐसे उड़ती कला की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो कितने भी गहरे काले बादल बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हुए ही पड़े हैं। घबराओ नहीं, यह कैसे होगा! अच्छा होगा, क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना समय समीप आ रहा है उतना नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे। यहाँ ही सब चुक्तू होना है। कई बच्चे कहते हैं कि दिन-प्रतिदिन और ही ऐसी बातें बढ़ती क्यों हैं? जिन बच्चों को धर्मराजपुरी में क्रास नहीं करना है, उन्हों के संगम के इस अन्तिम समय में स्वभाव-संस्कार के सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी में नहीं जाना है। आपके सामने यमदूत नहीं आयेंगे। यह बातें ही यमदूत हैं, जो यहाँ ही खत्म होनी हैं इसीलिए बीमारी बाहर निकलकर खत्म होने की निशानी है। ऐसे नहीं सोचो कि यह तो दिखाई नहीं देता है कि समय समीप है और ही व्यर्थ संकल्प बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। कई बच्चों की विशेषता है कि बाहर से घबराना दिखाई नहीं देता है लेकिन अन्दर मन घबराता है। बाहर से कहेंगे नहीं-नहीं, कुछ नहीं। यह तो होता ही है लेकिन अन्दर उसका सेक होगा। तो बापदादा पहले से ही सुना देता है कि घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं। अपने शस्त्र छोड़ नहीं दो। जो घबराता है ना तो जो भी हाथ में चीज़ होती है वह गिर जाती है। तो जब यह मन में भी घबराते हैं ना तो शस्त्र व शक्तियां जो हैं वह गिर जाती हैं, मर्ज हो जाती हैं। इसीलिए घबराओ नहीं, पहले से ही पता है। त्रिकालदर्शी बनो, माया से निर्भय बनो। संबंध में तो स्नेह और निर्माण। कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो। निर्माण बन उसको आगे रख आगे बढ़ाओ। जिसको कहा जाता है कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। यह कारण, यह कारण, यह कारण... कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनाओ।

(14.12.1997)

मनाने के पहले फिक्र तो नहीं हो गया? बेफिक्र बादशाह हैं। जब ब्रह्मा बाप ने कुछ नहीं सोचा, तो फालो फादर। बच्चों ने सोचा क्या होगा, कैसे होगा, सेन्टर चलेंगे नहीं चलेंगे, मुरली कहाँ से आयेगी.... कितने क्वेश्चन सोचे, ब्रह्मा बाप ने सोचा? सेकण्ड में व्यक्त से अव्यक्त हो गये। लेकिन और अच्छे ते अच्छा होना ही है, यह निश्चय रहा। और हो रहा है ना?

(18.01.1998)

आजकल बापदादा के पास सभी बच्चों का एक ही स्नेह का संकल्प बार-बार आता है कि अब बाप समान जल्दी से जल्दी बनना ही है। बाप भी कहते हैं हे मीठे बच्चे बनना ही है। हर एक को यह दृढ़ निश्चय है और भी अन्डरलाइन कर दो कि हम नहीं बनेंगे तो और कौन बनेगा। हम ही थे, हम ही हैं और हम ही हर कल्प में बनते रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना?

(24.02.1998)

कल्प पहले भी बने हैं और अब भी बनना ही है

आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चों को चारों तरफ देख रहे हैं। चाहे साकार में सम्मुख हैं, चाहे दूर बैठे दिल से समीप हैं - चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित होते रहते हैं। हर एक बच्चा ऐसा होलीएस्ट बनता है जो सारे कल्प में और कोई भी ऐसा महान पवित्र आत्मा न बना है, न बन सकते हैं। समय प्रति समय धर्म आत्मायें, महान आत्मायें, पवित्र रहे हैं लेकिन उन्हों की पवित्रता और आपकी पवित्रता में अन्तर है। इस समय आप पवित्र बनते हो, इसी पवित्रता की प्राप्ति वा प्रालब्ध भविष्य अनेक जन्म तक तन-मन-धन, सम्बन्ध, सम्पर्क और साथ में आत्मा भी पवित्र है। शरीर भी पवित्र हो और आत्मा भी पवित्र हो — ऐसी पवित्रता आप आत्मायें प्राप्त करती हो। मन-वचन-कर्म तीनों ही पवित्र बनने से ऐसी प्रालब्ध प्राप्त होती है। तो ऐसे होलीएस्ट आत्मायें हो। अपने को ऐसे श्रेष्ठ होलीएस्ट आत्मायें समझते हो? अभी बने हैं वा बन रहे हैं? बनना सहज है या थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? लेकिन कल्प पहले भी बने हैं और अब भी बनना ही है। पक्का या थोड़ा-थोड़ा चलता है? नहीं। स्वप्न मात्र भी अपवित्रता समाप्त होनी ही है, इतना निश्चय है ना कि आज बन रहे हैं और कल बन ही जायेंगे। तो होलीएस्ट भी हैं और हाइएस्ट भी हैं।

(13.03.1998)

ब्राह्मणों की जन्मपत्री में है - 'सफलता जन्म सिद्ध अधिकार है'

आज नव युग रचता बापदादा अपने अति स्नेही, सदा सहयोगी और अति समीप बच्चों को नव युग, नव जीवन और नव वर्ष की मुबारक देने आये हैं। चारों ओर के बच्चे अति स्नेह से बापदादा को दिल में सम्मुख रख मुबारक ले रहे हैं। बापदादा बच्चों के नव वर्ष के उमंग-उत्साह को देख हर्षित हो रहे हैं। मैजारिटी बच्चे चाहे दूर बैठे हैं, चाहे समीप बैठे हैं सभी के मन में यही उमंग-उत्साह है कि इस वर्ष में नवीनता करके ही दिखायेंगे। चाहे स्व के परिवर्तन में, चाहे सेवा की सफलता में, चाहे हर आत्मा को शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने में उमंग भी अच्छा है, उत्साह भी बहुत अच्छा है। साथ-साथ हिम्मत भी यथा शक्ति है। बापदादा ऐसे हिम्मत वाले बच्चों को एक संकल्प के पीछे पदमगुणा मदद अवश्य देते हैं। इसलिए हिम्मत से सदा आगे बढ़ते चलो। कभी भी स्व प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति हिम्मत को कम नहीं करना क्योंकि यह नव युग है ही हिम्मत रखने से उड़ने का युग, वरदानी युग, पुरुषोत्तम युग, डायरेक्ट विधाता द्वारा सर्व शक्तियां वर्से में सहज प्राप्त होने का युग, इसलिए इस युग के महत्व को सदा स्मृति में रखो। कोई भी कार्य आरम्भ करते हो चाहे स्व -पुरुषार्थ, चाहे विश्व सेवा, सदा हिम्मत और बापदादा की मदद द्वारा निश्चय है ही कि स्व-पुरुषार्थ में वा सेवा में सफलता हुई पड़ी है। होना ही है। असम्भव, सम्भव होना ही है क्योंकि यह युग सफलता का युग है। असम्भव, सम्भव होने का युग है। इसलिए होगा या नहीं होगा, कैसे होगा, इसका क्वेश्चन इस युग में आप ब्राह्मण आत्माओं के लिए है ही नहीं। ब्राह्मणों की जन्मपत्री में है - 'सफलता उसका जन्म सिद्ध अधिकार है'। अधिकारी आत्माओं को यह सोचने की आवश्यकता नहीं है, वर्सा मिलना ही है।

तो नये वर्ष में यह विशेष स्मृति इमर्ज करो कि सब तरफ से सफलता मुझ श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा का अधिकार है ही। इस निश्चय से, रूहानी नशे से उड़ते चलो। (अभिमानी नशा नहीं, रूहानी नशा) निश्चय बुद्धि सदा हर कार्य में विजयी है ही है। ऐसे निश्चय बुद्धि ब्राह्मण आत्मा के मस्तक पर विजय के तकदीर की लकीर सदा है ही है। विजय का तिलक सदा ही मस्तक पर चमक रहा है। इसलिए इस वर्ष को सदा विजयी वर्ष अनुभव करते चलो। ऐसा निश्चय और नशा है? डबल विदेशियों को है? डबल विदेशी होशियार हैं। (सबने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। तिलक नज़र आ रहा है। और भारतवासी तो हैं ही भाग्यवान, क्यों? भारत की धरनी ही भाग्यवान है। इसलिए चाहे विदेशी, चाहे भारतवासी दोनों ही भाग्य विधाता के बच्चे हैं इसलिए हर

ब्राह्मण बच्चा विजयी है। सिर्फ हिम्मत को इमर्ज करो। हिम्मत समाई हुई है क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो- ऐसे हो ना? (सभी हाथ हिला रहे हैं) हाथ तो बहुत अच्छा हिलाते हैं। अभी मन से भी सदा हिम्मत का हाथ हिलाते रहना। बापदादा को खुशी है, नाज़ है कि मेरा एक-एक बच्चा अनेक बार का विजयी है। एक बार नहीं, अनेक बार की विजयी आत्मायें हो। तो कभी यह नहीं सोचना, पता नहीं क्या होगा? होगा शब्द नहीं लाना। विजय है और सदा रहेगी। सब पक्के हैं? बहुत अच्छा। अभी फिर वहाँ जाकर ऐसा कमजोर समाचार नहीं लिखना कि दादियां, बाबा माया आ गई, ऐसे नहीं लिखना। मायाजीत हैं। हम नहीं होंगे तो और कौन होगा, यह रूहानी नशा इमर्ज करो। और-और कार्य में मन और बुद्धि बिजी हो जाती है ना तो नशा मर्ज हो जाता है। लेकिन बीच-बीच में चेक करो कि कर्म करते हुए भी यह विजयी-पन का रूहानी नशा है? निश्चय होगा तो नशा जरूर होगा। निश्चय की निशानी नशा है और नशा है तो अवश्य निश्चय है। दोनों का सम्बन्ध है। इसलिए अभी 99 में अपना नशा सदा इमर्ज रखना, तो अभुल हो जायेंगे। न भूल होगी, न मेहनत होगी। बापदादा ने पहले भी कहा है कि जब बापदादा बच्चों को मेहनत करते हुए देखते हैं, युद्ध करते हुए देखते हैं तो बच्चों की मेहनत करना बाप को अच्छा नहीं लगता है। इसलिए इस नव वर्ष को कैसे मनायेंगे? मुक्ति वर्ष मनाया। निगेटिव, वेस्ट को समाप्त किया तो यह वर्ष ऑटोमेटिक मेहनत मुक्त वर्ष हो जायेगा। सब मौज में रहने वाले, मेहनत करने वाले नहीं। मौज अच्छी लगती है या मेहनत अच्छी लगती है? मौज अच्छी लगती है ना? तो यह वर्ष मन में, संकल्प में भी मेहनत मुक्त हो।

(31.12.1998)

दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा

अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पॉवरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति। तो आज के दिन का बाप समान बनने का पाठ पक्का करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा।

(18.01.1999)

रूहानी नशा - मैं कौन! यह नशा इमर्ज रूप में होगा तो हर सेकण्ड जमा होता जायेगा

ब्राह्मण अर्थात् अलौकिक। ब्राह्मण जीवन का महत्व बहुत बड़ा है। प्राप्तियां बहुत बड़ी हैं। स्वमान बहुत बड़ा है और संगम के समय पर बाप का बनना, यह बड़े-से-बड़ा पदमगुणा भाग्य है। इसलिए बापदादा कहते हैं कि हर खजाने का महत्व रखो। जैसे दूसरों को भाषण में संगमयुग की कितनी महिमा सुनाते हो। अगर आपको कोई टापिक देवें कि संगमयुग की महिमा करो तो कितना समय कर सकते हो? एक घण्टा कर सकते हो? तो जैसे दूसरों को महत्व सुनाते हो, महत्व जानते बहुत अच्छा हो। बापदादा ऐसे नहीं कहेगा कि जानते नहीं हैं। जब सुना सकते हैं तो जानते हैं तब तो सुनाते हैं। सिर्फ है क्या कि मर्ज हो जाता है। इमर्ज रूप में स्मृति रहे - वह कभी कम हो जाता है, कभी ज्यादा। तो अपना ईश्वरीय नशा इमर्ज रखो। हाँ मैं तो हो गई, हो गया... नहीं। प्रैक्टिकल में हूँ... यह इमर्ज रूप में हो। निश्चय है लेकिन निश्चय की निशानी है - 'रूहानी नशा'। तो सारा समय नशा रहे। रूहानी नशा - मैं कौन! यह नशा इमर्ज रूप में होगा तो हर सेकण्ड जमा होता जायेगा।

(30.11.1999)

बापदादा का बच्चों में निश्चय

बापदादा को आप सबमें निश्चय है कि आप सभी बच्चे प्यार का रिटर्न अव्यक्त ब्रह्मा बाप समान अवश्य बनेंगे। बनेंगे ना! बापदादा छोड़ेगा नहीं! प्यार है ना! जिससे प्यार होता है उसका साथ नहीं छोड़ा जाता है। तो ब्रह्मा बाबा का आपमें बहुत प्यार है। इन्तजार करता रहता है, कब मेरे बच्चे आयें! तो समान तो बनेंगे ना!

(31.12.1999)

निश्चय और नशा - चहरे और चलन से दिखाई दे

बापदादा ने देखा है कि स्मृति में ज्ञान भी रहता है, नशा भी रहता है, निश्चय भी रहता है, लेकिन अभी एड़ीशन चाहिए - चलन और चेहरे से दिखाई दे। बुद्धि में याद सब रहता है, स्मृति में भी आता है लेकिन अब स्वरूप में आवे। जब साधारण रूप में भी अगर कोई बड़े आक्यूपेशन वाला है या कोई साहूकार का बच्चा एज्यूकेटेड़ है तो उसकी चलन से दिखाई पड़ता है कि यह कुछ है। उनका कुछ न कुछ न्यारापन दिखाई देता है। तो इतना बड़ा भाग्य वर्सा भी है, पढाई और पद भी है। स्वराज्य तो अभी भी है ना! प्राप्तियां भी सब हैं, लेकिन चलन और चेहरे से भाग्य का सितारा मस्तक में चमकता हुआ दिखाई दे, वह अभी एड़ीशन चाहिए। अभी लोगों को आप श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं द्वारा यह अनुभव होना है, चाहिए नहीं, होना है कि यह हमारे इस्ट देव हैं, इस्ट देवियां हैं। यह हमारे हैं। जैसे ब्रह्मा बाप में देखा - साधारण तन में होते भी आदि के समय भी ब्रह्मा बाप में क्या दिखाई देता था, कृष्ण दिखाई देता था ना! देता था ना। तो जैसे आदि में ब्रह्मा बाप द्वारा, आदि वालों को अनुभव है ना! अनुभव है और लास्ट में क्या दिखाई देता था? अव्यक्त रूप दिखाई देता था ना! चलन में, चेहरे में दिखाई दिया ना! दिखाई दिया? अभी बापदादा विशेष निमित्त बच्चों को यह होम वर्क दे रहा है कि अभी ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त रूप दिखाई दे। चलन और चेहरे से कम से कम 108 माला के दाने तो दिखाई देवें। बापदादा नाम नहीं चाहते हैं, नाम नहीं बताते हैं - 108 कौन हैं लेकिन उनकी चलन और चेहरा स्वत: ही प्रत्यक्ष हो। यह होम वर्क बापदादा निमित्त बच्चों को विशेष दे रहा है। सुना, पहली लाइन वाले सब बैठे हैं। सुना? हो सकता है? अच्छा कितना समय चाहिए? ऐसे नहीं समझना कि जो पीछें आये हैं, टाइम की बात नहीं है, कोई समझे हमको तो थोड़ा वर्ष ही हुआ है। कोई भी लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट जा सकता है, यह भी बापदादा की चैलेन्ज है, कर सकते हो। कोई भी कर सकते हो। लास्ट वाला भी हो सकता है। सिर्फ लक्ष्य पक्का रखो - करना ही है, होना ही है।

(30.11.2004)

ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है, सिर्फ रिपीट करना है

प्रतिज्ञा और दृढ़ता, दृढ़ता से प्रतिज्ञा करो - सुख देना है और सुख लेना है। दुआ देनी है, लेनी है। है प्रतिज्ञा, हिम्मत है? जिसमें हिम्मत है आज से दृढ़ता का संकल्प लेते हैं दुआ लेंगे, दुआ देंगे, वह हाथ उठाओ। पक्का? पक्का? कच्चा नहीं होना। कच्चे बनेंगे ना - तो कच्चे फल को चिड़िया बहुत खाती है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। सभी के पास चाबी है? है चाबी? चाबी कायम है, माया चोरी तो नहीं कर लेती? उसको भी चाबी से प्यार है। सदैव संकल्प करते हुए यह संकल्प इमर्ज करो, मर्ज नहीं, इमर्ज। इमर्ज करो मुझे करना ही है। बनना ही है। होना ही है। हुआ ही पड़ा है। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, विजयन्ती। ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है। सिर्फ रिपीट करना है। बना बनाया ड्रामा है। बना हुआ है, रिपीट कर बनाना है। मुश्किल है? कभी-कभी मुश्किल हो जाता है! मुश्किल क्यों होता है? अपने आप ही सहज को मुश्किल कर देते हो। छोटी सी गलती कर लेते हो - पता है कौन सी गलती करते हो? बापदादा को उस समय बच्चों पर बहुत रहम क्या कहें, प्यार आता है। क्या प्यार आता है? एक तरफ तो कहते कि बाप हमारे कम्बाइन्ड़ है, है कम्बाइन्ड़? कम्बाइन्ड़ है? साथ नहीं कम्बाइन्ड़।

(25.03.2005)

किससे भी मिलते हो, तो सदा आत्मा को देख करके बात करो

सेवा कितनी भी करते हो लेकिन जमा का खाता हुआ या नहीं हुआ, उसकी निशानी या उसकी गोल्डन चाबी है - निमित्त भाव और निर्मान भाव, निर्मल वाणी। तीनों हैं? तीनों में से एक भी कम है, तो सेवा कितनी भी करो जमा का खाता नहीं होता। बहुत थोड़ा, नाम मात्र। तो बापदादा ने यह भी चेक किया तो सेवा तो बहुत करते लेकिन जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना नहीं उसका कारण, कारण तो समझते हो ना! एक तो तीन विशेषतायें, निमित्त भाव, मैं पन का भाव मिक्स हो जाता है। मैं-पन आया, जमा नहीं हुआ। कितनी भी मेहनत करो, रात दिन भागदौड़, दिमाग चलाओ लेकिन निमित्त भाव, निर्मान स्वभाव, निर्मल वाणी, यह तीन नहीं है तो जमा नहीं। बहुत में बहुत 5 परसेन्ट जमा होता है। तो यह भी चेक करना तो जमा हुआ? बापदादा बहुत सहज रास्ता बताते हैं, किसी से भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक पहले

अपने शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति को चेक करो और किससे भी मिलते हो, तो सदा आत्मा को देख करके बात करो, आत्मा से बात करते हैं, कोई अलौकिक परिवार से बात करते हो, खुशी होनी चाहिए यह कल्प पहले वाली, हर कल्प भाग्य बनाने वाली कोटों में कोई आत्मा है। उस भाव से देखो। चाहे प्यादा हो, लेकिन है तो कोटों में कोई। मेरा बाबा तो कहता है। चाहे क्रोधी भी हो, स्वभाव अच्छा नहीं हो, लेकिन आप अपना स्वभाव श्रेष्ठ रखो। आप श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखो, श्रेष्ठ आत्मा के स्वरूप में देखो। तभी कार्य अच्छा होगा, जमा होगा। तो होमवर्क बहुत मिला है इस वर्ष का। सभी पूछते हैं ना क्या करें, क्या करें, क्या करें। बहुत होम वर्क मिला है। फिर बापदादा नम्बरवन सब होम वर्क में पास उसको सौगात देंगे। चाहे हजार भी हों तो भी देंगे, तैयार करायेंगे सौगात। करेंगी ना? लेकिन सर्टीफिकेट लेंगे, ऐसे नहीं आप कहेंगे बाबा मान जायेगा, नहीं। साथियों से सर्टीफिकेट भी लेंगे। पहले मन का सर्टीफिकेट फिर ब्राह्मण परिवार के साथियों का सर्टीफिकेट और तीसरा है बाप का सर्टीफिकेट। तो लेंगे ना सर्टीफिकेट। हिम्मत है ना! जो समझते हैं हम सर्टीफिकेट लेकर ही छोड़ेंगे, दृढ़ निश्चय है।

(31.12.2005)

मैं बालक सो मालिक हूँ, इस स्मृति में सदा रहो

बापदादा हर बच्चे को डबल मालिकपन के निश्चय और नशे में देखने चाहते हैं। डबल मालिकपन क्या है? एक तो बाप के खजानों के मालिक और दूसरा स्वराज्य के मालिक। दोनों ही मालिकपन क्योंकि सभी बालक भी हो और मालिक भी हो। लेकिन बापदादा ने देखा बालक तो सभी हैं ही क्योंकि सभी कहते हैं मेरा बाबा। तो मेरा बाबा अर्थात् बालक हैं ही। लेकिन बालक के साथ दोनों प्रकार के मालिक। तो मालिकपन में नम्बरवार हो जाते हैं। मैं बालक सो मालिक भी हूँ। वर्से का खजाना प्राप्त है इसलिए बालकपन का निश्चय और नशा रहता है लेकिन मालिकपन का प्रैक्टिकल में निश्चय का नशा उसमें नम्बरवार हो जाते हैं। स्वराज्य अधिकारी मालिक, इसमें विशेष विघ्न डालता है मन। मन के मालिक बन कभी भी मन के परवश नहीं हो। कहते हैं स्वराज्य अधिकारी हैं, तो स्वराज्य अधिकारी अर्थात् राजा हैं, जैसे ब्रह्मा बाप ने हर रोज़ चेकिंग कर मन के मालिक बन विश्व के मालिक का अधिकार प्राप्त कर लिया। ऐसे यह मन बुद्धि राजा के हिसाब से तो मन्त्री हैं, यह व्यर्थ संकल्प भी मन में उत्पन्न होते हैं, तो मन व्यर्थ संकल्प के वश कर देता है। अगर आर्डर से नहीं चलाते तो मन चंचल बनने के कारण परवश कर लेता है। तो चेक करो। वैसे भी मन को घोड़ा कहते हैं, क्योंकि चंचल है ना! और आपके पास श्रीमत का लगाम है। अगर श्रीमत का लगाम थोड़ा भी ढीला होता है तो मन चंचल बन जाता है। क्यों लगाम ढीला होता? क्योंकि कहाँ न कहाँ साइडसीन में देखने लग जाते हैं। और लगाम ढीला होता तो मन को चांस मिलता है। तो मैं बालक सो मालिक हूँ, इस स्मृति में सदा रहो। चेक करो खजाने का भी मालिक तो स्वराज्य का भी मालिक, डबल मालिक हूँ? अगर मालिकपन कम होता है तो कमजोर संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। और संस्कार को क्या कहते हो? मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी नेचर ऐसी है, लेकिन क्या यह मेरा है? कहने में तो ऐसे ही कहते हो, मेरा संस्कार। यह मेरा है? राइट है कहना मेरा संस्कार? राइट है? मेरा है? कि रावण की जायदाद है? कमजोर संस्कार रावण की जायदाद है, उसको मेरा कैसे कह सकते हैं। मेरा संस्कार कौन सा है? जो बाप का संस्कार वह मेरा संस्कार। तो बाप का संस्कार कौन सा है? विश्व कल्याण। शुभ भावना, शुभ कामना। तो कोई भी कमजोर संस्कार को मेरा संस्कार कहना ही रांग है। और मेरा संस्कार अगर मानो दिल में बिठाया है, अशुद्ध चीज़ बिठा दी है दिल में। मेरी चीज़ से तो प्यार होता है ना! तो मेरा समझने से अपने दिल में जगह दे दी है। इसीलिए कई बार बच्चों को युद्ध बहुत करनी पड़ती है क्योंकि अशुभ और शुभ दोनों को दिल में बिठा दिया है तो दोनों क्या करेंगे? युद्ध ही तो करेंगे! जब यह संकल्प में आता है, वाणी में भी आता है, मेरा संस्कार। तो चेक करो यह अशुभ संस्कार मेरा संस्कार नहीं है। तो संस्कार परिवर्तन करना पड़े।

(02.03.2006)

दृढ़ता वाला निश्चयबुद्धि, निश्चिंत और निश्चित अनुभव करेगा

आज अखुट अविनाशी खजानों के मालिक बापदादा अपने चारों ओर के सम्पन्न बच्चों के जमा का खाता देख रहे हैं। तीन प्रकार के खाते देख रहे हैं - एक है अपने पुरुषार्थ द्वारा श्रेष्ठ प्रालब्ध जमा का खाता। दूसरा है सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, यह सन्तुष्टता द्वारा दुवाओं का खाता। तीसरा है मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा बेहद के निःस्वार्थ सेवा द्वारा पुण्य का खाता। आप सभी भी अपने इन तीनों खातों को चेक करते ही हो। यह तीनों खाते जमा कितने हैं, हैं वा नहीं हैं उसकी निशानी हैं - सदा सर्व प्रति, स्वयं प्रति सन्तुष्टता स्वरूप, सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना और सदा अपने को खुशनमः, खुशनसीब स्थिति में अनुभव करना। तो चेक करो दोनों खाते की निशानियां स्वयं में अनुभव होती हैं? इन सर्व खजानों को जमा करने की चाबी है - निमित्त भाव, निर्माण भाव, निःस्वार्थ भाव। चेक करते जाओ और चाबी का नम्बर पता है! चाबी का नम्बर है - तीन बिन्दी। थ्री डॉट। एक आत्मा बिन्दी, दूसरा बाप बिन्दी, तीसरा - ड्रामा का फुल स्टाप बिन्दी, चाबी तो है ना आप सभी के पास? खजाने को खेलकर देखते रहते हो ना! इन सभी खजानों के वृद्धि की विधि है - दृढ़ता। दृढ़ता होगी तो किसी भी कार्य में यह संकल्प नहीं चलेगा कि होगा या नहीं होगा। दृढ़ता की स्थिति है - हुआ ही पड़ा है, बना ही पड़ा है। बनेगा, जमा होगा, नहीं होगा, नहीं। करते तो हैं, होना तो चाहिए, तो तो भी नहीं। दृढ़ता वाला निश्चयबुद्धि, निश्चिंत और निश्चित अनुभव करेगा।

(30.11.2006)

चाहे कैसा भी कड़ा संस्कार हो, हिम्मत कभी नहीं हारो। कारण? सर्वशक्तिवान बाप मददगार है

बापदादा को भी खुशी है कि सभी स्नेह के विमान द्वारा, सभी के पास विमान है ना! है विमान? बापदादा ने हर ब्राह्मण को जन्मते ही गिफ्ट दी मन के विमान की। तो मन का विमान है सभी के पास? अच्छा हाथ उठा रहे हैं। ठीक हैं? प्ट्रोल ठीक है? पंख ठीक है? स्टार्ट करने का आधार ठीक है? चेक करते हो? ऐसा विमान जो तीनों लोकों में सेकण्ड में जा सकता है। अगर हिम्मत ओर उमंग-उत्साह के दोनों पंख यथार्थ हैं तो एक सेकण्ड में स्टार्ट हो सकता है। स्टार्ट करने की चाबी क्या है? मेरा बाबा। हिम्मत कभी नहीं छोड़नी है। क्यों? बापदादा का वायदा है, वरदान है, एक कदम हिम्मत का आपका और हजार कदम मदद बाप की। चाहे कैसा भी कड़ा संस्कार हो, हिम्मत कभी नहीं हारो। कारण? सर्वशक्तिवान बाप मददगार है और कम्बाइण्ड है, सदा हाज़िर है। आप हिम्मत से सर्वशक्तिवान कम्बाइण्ड बाप के ऊपर अधिकार रखो और दृढ़ रहो, होना ही है, बाप मेरा है, मैं बाप की हूँ, यह हिम्मत नहीं भूलो। तो क्या होगा? जो कैसे करूं, यह संकल्प उठता है वह कैसे शब्द बदल ऐसे हो जायेगा। कैसे करूं, क्या करूं, नहीं। ऐसे हुआ ही पड़ा है। सोचते हो, करते तो हैं, होगा, होना तो चाहिए, बाप मदद तो देगा...। हुआ ही पड़ा है, बाप बंधा हुआ है, दृढ़ निश्चयबुद्धि वाले को मदद देने के लिए। सिर्फ रूप थोड़ा चेंज कर देते हो, हक रखते हो बाप के ऊपर, लेकिन रूप चेंज कर देते हो। बाबा आप मदद तो करेंगे ना! आप तो बंधे हुए हो ना! तो ना लगा देते हो। निश्चयबुद्धि, निश्चित विजय हुई पड़ी है क्योंकि बापदादा ने हर बच्चे को जन्मते ही विजय का तिलक मस्तक में लगाया है। दृढ़ता को अपने तीव्र पुरुषार्थ की चाबी बनाओ। प्लैन बहुत अच्छे बनाते हो। बापदादा जब रूहरिहान सनते हैं, रूहरिहान बहुत हिम्मत की करते हो, प्लैन भी बड़े पावरफुल बनाते हो लेकिन प्लैन को जब प्रैक्टिकल में करते हो तो प्लेन बुद्धि होके नहीं करते हो। उसमें थोड़ा सा करते तो हैं, होना तो चाहिए... यह स्वयं में निश्चय के साथ संकल्प नहीं, लेकिन वेस्ट संकल्प मिक्स कर देते हो।

अभी समय के प्रमाण प्लेन बुद्धि बन संकल्प को साकार रूप में लाओ। ज़रा भी कमजोर संकल्प इमर्ज नहीं करो। स्मृति रखो कि अभी एक बार नहीं कर रहे हैं, अनेक बार किया हुआ सिर्फ रिपीट कर रहे हैं। याद करो कितनी बार कल्प-कल्प विजयी बने हैं! अनेक बार के विजयी हैं, विजय अनेक कल्प का जन्म सिद्ध अधिकार है। इस अधिकार से निश्चयबुद्धि बन दृढ़ता की चाबी लगाओ, विजय आप ब्राह्मण आत्माओं के बिना कहाँ जायेगी! आप ब्राह्मणों का विजय जन्म सिद्ध अधिकार है, गले की माला है। है ना नशा? नशा है? होगा, नहीं होगा, नहीं। हुआ ही पड़ा है। इतने निश्चयबुद्धि बन हर कार्य करो, विजय निश्चित है ही। ऐसे निश्चयबुद्धि आत्मायें, है ही, यह नहीं बापदादा कहते हैं या नहीं, है ही। यही नशा रखो। थे, हैं और होंगे। तो

ऐसे होली हो ना! होलीएस्ट तो हो। तो बापदादा के ज्ञान के गुलाल की होली तो खेल ली, अभी और क्या खेलेंगे?

(03.03.2007)

बापदादा को निश्चय है कि आप ही अनेक कल्प बाप समान बने हैं और अभी भी आप ही बनने वाले हो

दूसरे को नहीं देखना, बापदादा को देखना, अपनी बड़ी दादी को देखना। कितनी न्यारी और प्यारी स्टेज है। बापदादा कहते हैं अगर किसको मैं और हद का मेरापन से न्यारा देखना हो तो अपने बापदादा के दिलतख्तनशीन दादी को देखो। सारी लाइफ में हद का मेरापन, हद का मैं-पन से न्यारी रही है, उसकी रिजल्ट बीमारी कितनी भी है लेकिन दुःख दर्द की भासना से न्यारी है। एक ही शब्द पक्का है, कोई भी पूछता दादी कुछ दर्द है, दादी कुछ हो रहा है? क्या उत्तर मिलता? कुछ नहीं। क्योंकि निःस्वार्थ और दिल बड़ी, सर्व को समाने वाली, सर्व की प्यारी, इसकी प्रैक्टिकल निशानी देख रहे हैं। तो जब ब्रह्मा बाप की बात कहते हैं, तो कहते हैं उसमें तो बाप था ना, लेकिन दादी तो आपके साथ प्रभू पालना में रही, पढ़ाई में रही, सेवा में साथी रही, तो जब एक बन सकता है, निःस्वार्थ स्थिति में तो क्या आप सभी नहीं बन सकते? बन सकते हैं ना! बापदादा को निश्चय है कि आप ही बनने वाले हैं। कितने बार बने हैं? याद है? अनेक कल्प बाप समान बने हैं और अभी भी आप ही बनने वाले हो। इसी उमंग से, उत्साह से उड़ते चलो। बाप को आपमें निश्चय है तो आप भी अपने में सदा निश्चयबुद्धि, बनना ही है ऐसा निश्चयबुद्धि बन उड़ते चलो। जब बाप से प्यार है, प्यार में 100 परसेन्ट से भी ज्यादा है, ऐसे कहते हो। यह ठीक है? जो भी सभी बैठे हैं वा जो भी अपने-अपने स्थान पर सुन रहे हैं, देख रहे हैं वह सभी प्यार की सबजेक्ट में अपने को 100 परसेन्ट समझते हैं? वह हाथ उठाओ। 100 परसेन्ट? (सभी ने हाथ उठाया) अच्छा। पीछे वाले लम्बे हाथ उठाओ, हिलाओ। इसमें तो सभी ने हाथ उठाया। तो प्यार की निशानी है समान बनना। जिससे प्यार होता है उस जैसा बोलना, उस जैसा चलना, उस जैसा सम्बन्ध-सम्पर्क निभाना, यह है प्यार की निशानी।

(31.03.2007)

दृढ़ता का फल है सफलता

बापदादा ने तो दूसरी भी सहज युक्ति बताई है, वह क्या? दुआ दो और दुआ लो। अच्छा, योग शक्तिशाली नहीं लगता, धारणायें थोड़ी कम होती हैं, भाषण करने की हिम्मत नहीं होती है, लेकिन दुआ दो और दुआ लो, एक ही बात करो और सब छोड़ो, एक बात करो, दुआ लेनी है दुआ देनी है। कुछ भी हो जाए, कोई कुछ भी दे लेकिन मुझे दुआ देनी है, लेनी है। एक बात तो पक्की करो, इसमें सब आ जायेगा। अगर दुआ देंगे और दुआ लेंगे तो क्या इसमें शक्तियां और गुण नहीं आयेंगे? आटोमेटिकली आ जायेंगे ना! एक ही लक्ष्य रखो, करके देखो, एक दिन अभ्यास करके देखो, फिर सात दिन करके देखो, चलो और बातें बुद्धि में नहीं आती, एक तो आयेगी। कुछ भी हो जाए लेकिन दुआ देनी और लेनी है। यह तो कर सकते हैं या नहीं? कर सकते हैं? अच्छा, तो जब भी जाओ ना तो यह ट्रायल करना। इसमें सब योगयुक्त आपेही हो जायेंगे। क्योंकि वेस्ट कर्म करेंगे नहीं तो योगयुक्त हो ही गये ना। लेकिन लक्ष्य रखो दुआ देना है, दुआ लेनी है। कोई कुछ भी देवे, बददुआ भी मिलेगी, क्रोध की बातें भी आयेंगी क्योंकि वायदा करेंगे ना, तो माया भी सुन रही हैं, कि यह वायदा करेंगे, वह भी अपना काम तो करेगी ना। मायाजीत बन जायेंगे फिर नहीं करेंगी, अभी तो मायाजीत बन रहे हैं ना, तो वह अपना काम करेगी लेकिन मुझे दुआ देनी है और दुआ लेनी है। हो सकता है? हो सकता है? माया आयेगी, आप कहेंगे बाबा मेरे को पहले तो कभी नहीं आता था, अभी आ गया, यह होगा, लेकिन दृढ़ निश्चय वाले की निश्चित विजय है। दृढ़ता का फल है सफलता। सफलता न होने का कारण है दृढ़ता की कमी। तो दृढ़ता की सफलता प्राप्त करनी ही है।

(15.10.2007)

'अपने श्रेष्ठ स्वमान के फखुर में रह असम्भव को सम्भव करते बेफिक्र बादशाह बनो'

आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ स्वमानधारी विशेष बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चे का स्वमान इतना विशेष है जो विश्व में कोई भी आत्मा का नहीं है। आप सभी विश्व की आत्माओं के पूर्वज भी हो और पूज्य भी हो। सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त हो। सारे विश्व के पूर्वज पहली रचना हो। बापदादा हर एक बच्चे की विशेषता को देख खुश होते हैं। चाहे छोटा बच्चा है, चाहे बुजुर्ग मातायें हैं, चाहे प्रवृत्ति वाले हैं। हर एक की अलग-अलग विशेषतायें हैं। आजकल कितने भी बड़े ते बड़े साइंसदान हैं, दुनिया के हिसाब से विशेष हैं लेकिन प्रकृतिजीत तो बनें, चन्द्रमां तक भी पहुंच गये लेकिन इतनी छोटी सी ज्योति स्वरूप आत्मा को नहीं पहचान सकते। और यहाँ छोटा सा बच्चा भी मैं आत्मा हूँ, ज्योति बिन्दु को जानता है। फलक से कहता है मैं आत्मा हूँ। कितने भी बड़े महात्मायें हैं और ब्राह्मण मातायें हैं, मातायें फलक से कहती हमने परमात्मा को पा लिया। पा लिया है ना! और महात्मायें क्या कहते? परमात्मा को पाना बहुत मुश्किल है। प्रवृत्ति वाले चैलेन्ज करते हैं कि हम सब प्रवृत्ति में रहते, साथ रहते पवित्र रहते हैं क्योंकि हमारे बीच में बाप है। इसलिए दोनों साथ रहते भी सहज पवित्र रह सकते हैं क्योंकि पवित्रता हमारा स्वधर्म है। पर धर्म मुश्किल होता है, स्व धर्म सहज होता है। और लोग क्या कहते? आग और कपूस साथ में रह नहीं सकते। बड़ा मुश्किल है और आप सब क्या कहते? बहुत सहज है। आप सबका शुरू शुरू का एक गीत था - कितने भी से , स्वामी हैं लेकिन एक अल्फ को नहीं जाना है। छोटी सी बिन्दी आत्मा को नहीं जाना लेकिन आप सभी बच्चों ने जान लिया, पा लिया। इतने निश्चय और फखुर से बोलते हो, असम्भव सम्भव है। बापदादा भी हर एक बच्चे को विजयी रत्न देख हर्षित होते हैं क्योंकि हिम्मते बच्चे मददे बाप है। इसलिए दुनिया के लिए जो असम्भव बातें हैं वह आपके लिए सहज और सम्भव हो गई हैं। फखुर रहता है कि हम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हैं। इस नशे के कारण, निश्चय के कारण परमात्म बच्चे होने के कारण माया से भी बचे हुए हो। बच्चा बनना अर्थात् सहज बच जाना। तो बच्चे हो और सब विघ्नों से, समस्याओं से बचे हुए हो।

(31.10.2007)

यह नशा रखो हम ही बने हैं, हम ही हैं और हम ही बार-बार बनते रहेंगे

पहला नम्बर लेना है। तो पहला निमित्त बनना है। दूसरे को निमित्त क्यों बनाते हो। अपने को निमित्त बनाओ ना। ब्रह्मा बाप ने क्या कहा? हर बात में खुद निमित्त बनके निमित्त बनाया। हे अर्जुन बन पार्ट बजाया। मुझे निमित्त बनना है। मुझे करना है। दूसरा करेगा, मुझे देखके और करेंगे। और को देख मैं करूंगा नहीं। मुझे देख और करेंगे। यह ब्रह्मा बाप का पहला पाठ है। तो सुना क्या करना है? सफलता मूर्त, सफल सफलता मूर्त, अखण्ड दानी, माया को आने की हिम्मत ही नहीं बनेंगी। जब अखण्ड महादानी बन जायेंगे, निरन्तर सेवाधारी रहेंगे, बिजी रहेंगे, मन बुद्धि सेवाधारी रहेगा तो माया कहाँ आयेगी। तो अभी इस वर्ष क्या बनना है? सबका एक आवाज निकले दिल से, यह बापदादा चाहता है, वह क्या? नो प्राब्लम, कम्पलीट। प्राब्लम नहीं लेकिन कम्पलीट बनना ही है। दृढ़ निश्चयबुद्धि, विजयमाला के नजदीक मणका बनना ही है। ठीक है ना! बनना है ना!

देखो, निश्चय का प्रत्यक्ष प्रमाण है रूहानी नशा। अगर रूहानी नशा नहीं तो निश्चय भी नहीं है। फुल निश्चय नहीं है, थोड़ा बहुत है। तो नशा रखो क्या बड़ी बात है! कितने कल्प आप ही बाप समान बने हैं, याद है? अनगिनत बार बने हो। तो यह नशा रखो हम ही बने हैं, हम ही हैं और हम ही बार-बार बनते रहेंगे। यह नशा सदा ही कर्म में दिखाई दे। संकल्प में नहीं, बोल में नहीं, लेकिन कर्म में, कर्म का अर्थ है चलन में, चेहरे में दिखाई दे। तो होमवर्क मिल गया। मिला ना? अब देखेंगे नम्बरवार में आते हो या नम्बरवन में आते हो।

(31.12.2007)

निश्चयबुद्धि, निश्चिंत रहते हैं

बापदादा सभी बच्चों को आज के स्नेह के दिन, स्मृति के दिन, समर्थी के दिन की विशेष दिल की दुआयें और दिल की बधाईयां दे रहे हैं। आज का विशेष दिन स्नेह का होने कारण मैजारिटी स्नेह में खोये हुए हैं। ऐसे ही पुरुषार्थ में सदा स्नेह में खोये

हुए रहो। लवलीन रहो तो सहज साधन है स्नेह, दिल का स्नेह। बाप के परिचय की स्मृति सहित स्नेह। बाप के प्राप्तियों के स्नेह सम्पन्न स्नेह। स्नेह बहुत सहज साधन है क्योंकि स्नेही आत्मा मेहनत से बच जाती है। स्नेह में लीन होने के कारण, स्नेह में खोये हुए होने के कारण किसी भी प्रकार की मेहनत मनोरंजन के रूप में अनुभव होगी। स्नेही स्वत: ही देह के भान, देह के सम्बन्ध का ध्यान, देह की दुनिया के ध्यान से ऊपर स्नेह में स्वत: ही लीन रहती। दिल का स्नेह बाप के समीप का, साथ का, समानता का अनुभव कराता है। स्नेही सदा अपने को बाप की दुआओं के पात्र समझते हैं। स्नेह असम्भव को भी सहज सम्भव कर देता है। सदा अपने मस्तक पर माथे पर बाप के सहयोग का, स्नेह का हाथ अनुभव करते हैं। निश्चयबुद्धि, निश्चिंत रहते हैं। आप सभी आदि स्थापना के बच्चों को आदि के समय का अनुभव है, अभी भी सेवा के आदि निमित्त बच्चों को अनुभव है कि आदि में सभी बच्चों को बाप मिला, उस स्मृति से स्नेह का नशा कितना था! नॉलेज तो पीछे मिलती लेकिन पहला-पहला नशा स्नेह में खोये हुए हैं। बाप स्नेह का सागर है तो मैजारिटी बच्चे आदि से स्नेह के सागर में खोये हुए हैं, पुरुषार्थ की रफ्तार में बहुत अच्छे स्पीड से चले हैं। लेकिन कोई बच्चे स्नेह के सागर में खो जाते हैं, कोई सिर्फ डुबकी लगाके बाहर आ जाते हैं। इसीलिए जितना खोये हुए बच्चों को मेहनत कम लगती उतनी उन्हों को नहीं। कभी मेहनत, कभी मुहब्बत, दोनों में रहते हैं। लेकिन जो स्नेह में लवलीन रहते हैं वह सदा अपने को छत्रछाया के अन्दर रहने का अनुभव करते हैं। दिल के स्नेही बच्चे मेहनत को भी मुहब्बत में बदल लेते हैं। उन्हों के आगे पहाड़ जैसी समस्या भी पहाड़ नहीं लेकिन रूई समान अनुभव होती है। पत्थर भी पानी समान अनुभव होता है। तो जैसे आज विशेष स्नेह के वायुमण्डल में रहे तो अनुभव किया मेहनत है या मनोरंजन हुआ!

(18.01.2008)

निश्चय है कि यह ईश्वरीय खजाने इस जन्म में तो क्या लेकिन अनेक जन्म साथ हैं, साथ रहेंगे

बापदादा ने क्या क्या खजाने दिये हैं वह कहने से ही सबके सामने आ गये हैं। सबके सामने खजानों की लिस्ट इमर्ज हो गई है ना! क्योंकि बापदादा ने पहले भी बताया है कि खजाने तो मिले लेकिन जमा करने की विधि क्या है? जो जितना निमित्त और निर्मान बनता है उतना ही खजाने जमा होते हैं। तो चेक करो - निमित्त और निर्मान बनने की विधि से हमारे खाते में कितने खजाने जमा हुए हैं। जितने खजाने जमा होंगे, भरपूर होगा उनके चलन और चेहरे से भरपूर आत्मा का रूहानी नशा स्वत: ही दिखाई देता है। उसके चेहरे पर सदा रूहानी नशा वा फखुर चमकता है और जितना ही रूहानी फखुर होगा उतना ही बेफिक्र बादशाह होगा। रूहानी फखुर अर्थात् रूहानी नशा बेफिक्र बादशाह की निशानी है। तो अपने को चेक करो कि मेरे चलन और चेहरे पर बेफिक्र बादशाह का निश्चय और नशा है? दर्पण तो सबको मिली हुई है ना! तो दिल के दर्पण में अपना चेहरा चेक करो। किसी भी प्रकार का फिक्र तो नहीं है। क्या होगा! कैसे होगा! यह तो नहीं होगा! कोई भी संकल्प रह तो नहीं गया है? बेफिक्र बादशाह का संकल्प यही होगा जो हो रहा है वह बहुत अच्छा और जो होने वाला है वह और ही अच्छे ते अच्छा होगा। इसको कहा जाता है फखुर, रूहानी फखुर अर्थात् स्वमानधारी आत्मा। विनाशी धन वाले जितना कमाते उतना समय प्रमाण फिकर में रहते। आपको अपने ईश्वरीय खजानों के लिए फिकर है? बेफिक्र हो ना! क्योंकि जो खजानों के मालिक और परमात्म बालक हैं वह सदा ही स्वप्न में भी बेफिक्र बादशाह हैं क्योंकि उसको निश्चय है कि यह ईश्वरीय खजाने इस जन्म में तो क्या लेकिन अनेक जन्म साथ हैं, साथ रहेंगे। इसीलिए वह निश्चयबुद्धि निश्चिंत हैं।

(18.03.2008)

हर चेहरे पर सर्व प्राप्तियों की मुस्कुराहट हो, हर चलन में निश्चय का नशा हो

बापदादा वर्तमान समय आप एक-एक बच्चे को अभी किस रूप में देखने चाहते हैं? क्योंकि समय की रफ्तार अचानक के खेल दिखा रही है इसलिए बापदादा हर बच्चे को बाप समान देखने चाहते हैं। हर बच्चे की सूरत में बाप की मूर्त प्रत्यक्ष हो। हर बच्चे के नयनों में रूहानियत का नशा हो। हर चेहरे पर सर्व प्राप्तियों की मुस्कुराहट हो, हर चलन में निश्चय का नशा हो। सभी आने वाले निश्चय बुद्धि हैं ना! निश्चयबुद्धि हैं, हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो। लेकिन निश्चय बुद्धि की नशानी क्या गाई जाती है? निश्चयबुद्धि के पीछे क्या कहा जाता है? निश्चयबुद्धि क्या? विजयी। निश्चयबुद्धि की निशानी विजयी। तो सदा

निश्चयबुद्धि की निशानी क्या हुई? सदा विजयी वा कभी-कभी विजयी? सदा विजयी होगा ना! तो अभी समय प्रमाण निश्चयबुद्धि का प्रत्यक्ष प्रमाण सदा विजयी आत्मा, कोशिश शब्द नहीं, चाहता तो हूँ, कोशिश तो करता हूँ, होना तो चाहिए, उसके मुख से सदा विजय का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाई दे।

(15.11.2008)

मैं बदलूंगा, और भी बदलेगा, अवश्य बदलेगा - इस निश्चय और शुभ भावना से चलो

अभी चेक करना - अपने राज्य के संस्कार अभी से धारण करने ही हैं। गे गे नहीं करना, एक गे गे, दूसरा तो तो कहते हो..यह शब्द ब्राह्मण डिक्शनरी से निकाल दो। चलो, कोई की भी कोई कमजोरी देखते भी हो, पुरुषार्थी तो सब हैं, नहीं तो ब्राह्मण जीवन से चले जाते, पुरुषार्थी हैं तब तो ब्राह्मण जीवन में चल रहे हैं ना, मानो कई ऐसे कहते हैं मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ लेकिन दूसरे करते हैं ना तो वह सामने विघ्न बन जाता है। यह नहीं करे ना, यह बदले ना, लेकिन बाप ने पहले से ही स्लोगन दिया है, हमको बदलके उनको बदलाना है। मुझे बदलना है। वह बदले तो मैं बदलूं नहीं। सुनाया भाव और भावना को चेंज करो। भाव आत्मा का, और भावना, शुभ भावना। आप करके देखो, थक नहीं जाओ। शुभ भावना बहुत रखके देखी, बदलता नहीं है, बदलना ही नहीं है। आप ब्राह्मणों के मुख से यह शब्द बोलना, बदलना नहीं है तो क्या यह वरदान हुआ। ब्राह्मण क्या वरदान देते हैं। जो सहारा दे सको, सहारा दो शुभ भावना का, नहीं तो किनारा करो। दिल में नहीं रखो। शुभ भावना की दुआ दो, और शब्द नहीं दो। एक यह करते हैं, दूसरा, दूसरा शब्द बतायें क्या कहते हैं? क्योंकि आज बापदादा ने अच्छी तरह से चेंकिग की, दूसरा क्या करते हैं? यह तो चलता ही है, यह भी तो करता है ना, तो मैंने किया तो क्या हुआ। वह कुएं में गिर रहा है और आप भी गिरके देख रहे हो क्या यह समझदारी है! अभी एक बात 18 जनवरी तक बापदादा पुरुषार्थ के लिए होमवर्क दे रहा है - करेंगे? करेंगे, हाथ उठाओ। कुछ भी हो जाए, बदलना पड़े, समाना पड़े, किनारा करना पड़े, लेकिन बदलेंगे। हाथ उठाया। पक्का? कि कहेंगे मैंने बहुत कोशिश की, नहीं हुआ, यह जवाब नहीं देना क्योंकि अभी अचानक के खेल बहुत होने हैं। और बापदादा चाहता है एक बच्चा भी पीछे नहीं रह जाए, साथ चले। इसलिए एक तो अगर कोई नहीं बदलता है, शुभ भावना रखी और कोई नहीं बदलता है तो आप अपने को बदलो, उसने यह कहा, उसने यह किया इसीलिए मुझे भी करना पड़ा, यह नहीं। करते सिखाने के भाव से हो, लेकिन देखते कमी को हो। इसीलिए भाव और भावना आत्मिक भाव, शुभ भावना। और यह शब्द यह तो होता ही रहता है, यह तो करते ही हैं ना, चल ही रहा है ना तो मैंने किया तो क्या हुआ... तो क्या बाप जब चलेंगे तो आप कहेंगे यह भी रह रहे हैं ना, मैं भी रह जाता हूँ, इसमें क्या है। तो सी फादर, और भाव और भावना दोनों का परिवर्तन। जब 5 तत्वों के प्रति आप शुभ भावना रखते हो और ब्राह्मण परिवार के प्रति शुभ भावना नहीं रख सकते, यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है, यह शब्द समाप्त करो। मुझे बदलके दिखाना है। मैं बदलूंगा, और भी बदलेगा, अवश्य बदलेगा। इस निश्चय और शुभ भावना से चलो फिर देखो जल्दी जल्दी अपना राज्य आ जायेगा। तो यह 18 तारीख को दो बातें सदा के लिए धारण कर ली, यह बापदादा नहीं कहता है कि लिखकर सिर्फ भेजो, प्रतिज्ञा करने की फाइल लिखत वाले बापदादा के पास बहुत फाइल पड़े हैं वतन में। प्रतिज्ञा नहीं, दृढ़ता का संकल्प के रूप में यह दो बातें धारण करनी है। ठीक है टीचर्स? करनी है ना।

(15.12.2008)

ब्रह्मा बाप ने स्वयं स्वमान की सीट और दृढ़ निश्चय के शस्त्रों द्वारा आपोजीशन को समाप्त किया

यही स्लोगन याद रखना बाप समान करना ही है, बनना ही है। मुश्किल तो नहीं है ना? जैसे बाप ने किया वैसे करना है। कॉपी करना तो सहज है ना, सोचने की जरूरत ही नहीं है। और निश्चित है कि आप सभी को जैसे बाप, ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना तो निश्चित है फरिश्ता सो देवता बनना ही है। तो आपको भी फरिश्ता सो देवता बनना ही है। कई बच्चे कहते हैं कि चलते-चलते आपोजीशन बहुत होती है, तो आपोजीशन के कारण पोजीशन से नीचे आ जाते हैं। लेकिन याद करो बाप समान बनना है तो स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाप ने कितने आपोजीशन को पोजीशन में परिवर्तन किया? हर बात नई, चैलेन्ज थी। अभी तो बहुत

जमाना बदल गया है लेकिन अकेला ब्रह्मा बाप कितना स्वमान की सीट पर बठै पोजीशन द्वारा आपोजीशन का सामना किया। जहाँ पोजीशन है वहाँ आपोजीशन कुछ नहीं कर सकती। पहले क्या कहते थे? धमाल कर रहे हैं और अभी क्या कहते हैं? कमाल कर रहे हैं। इतना फर्क हो गया। कारण क्या? ब्रह्मा बाप ने स्वयं स्वमान की सीट और दृढ़ निश्चय के शस्त्रों द्वारा आपोजीशन को समाप्त किया। तो आप इस वर्ष में क्या करेंगे? समान बनना है ना, तो सदा अगर आपोजीशन होती भी है तो स्वमान की सीट पर बैठ जाओ तो आपोजीशन, पोजीशन में बदल जाये। है हिम्मत? ब्रह्मा बाप समान बनना ही है, उसमें तो हाथ उठाया, लेकन इतनी हिम्मत है? पहले स्व के परिवर्तन का, फिर है अनेक सम्बन्ध-सम्पर्क वाली आत्मायें और फिर विश्व की आत्मायें। इन सबको अपने मन्सा शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, दृढ़ संकल्प द्वारा परिवर्तन करना।

(31.12.2008)

दृढ़ता ही सफलता की चावी है और सफलता बाप के समान बनने का सहज साधन है

सदा दृढ़ता सफलता की चाबी को सम्भाल के रखना क्योंकि यह चाबी माया को भी बहुत प्यारी है। इसलिए दिल की डिब्बी में इस चाबी को सम्भाल के रखना। दृढ़ता ही सफलता की चाबी है और सफलता बाप के समान बनने का सहज साधन है। सदा निश्चय और निश्चित भावी है, स्वराज्य अधिकारी और विश्व राज्य अधिकारी यह दोनों निश्चित है। ऐसे नशे में फखुर में सदा उड़ते रहो। इस वर्ष की जैसे आज विदाई और बधाई मनायेंगे ना, ऐसे रोज़ अपने अन्दर की कमजोरियों को विदाई दो और बापदादा से विशेष बधाईयाँ लो। यह संगमयुग विदाई और बधाई का है। तो संगमयुग का हर दिन बधाईयों के पात्र बनते जाओ। बापदादा को हर बच्चा दिल का दुलारा है। चाहे नम्बरवार है, नम्बरवन नहीं है लेकिन नम्बरवार है तो भी बापदादा का हर कल्प का सिकीलधा बच्चा है इसलिए अपने सिकीलधे बनने के भाग्य को सदा याद रखो। छोटी सी बात है, सिर्फ कोई भी मुश्किल आवे दिल से ऑर्डर करो मेरा बाबा, बाप अवश्य बंधा हुआ है लेकिन दिल में और बातें नहीं रखना, मेरा बाबा भी कहो और दिल में कमजोरी भी हो तो बाप सहयोग नहीं देगा। दिल साफ मुराद हाँसिल। किचड़े वाली दिल में बाप नहीं आता। और स्नेह से याद करो। सिर्फ ज्ञान के आधार से याद नहीं करो, सुनाया था ज्ञान है बीज और स्नेह है पानी। सिर्फ ज्ञान से जाना लेकिन दिल के प्यार का अनुभव नहीं किया, प्यार से बाप को याद नहीं किया तो प्रैक्टिकल फल नहीं निकलता अर्थात् अनुभव नहीं होता। अनुभवी स्वरूप है फल लेकिन पानी नहीं देते तो सूखा गन्ना हो जाता। भले कोर्स कराओ, भाषण करके आओ और इनाम भी लेके आओ, दिन में चार चार भाषण करो लेकिन दिल का स्नेह नहीं क्योंकि बाप से दिल के स्नेह की निशानी है हर ब्राह्मण परिवार से भी स्नेह। स्नेह नहीं तो माया के विघ्न ज्यादा आते हैं क्योंकि पानी डाला ही नहीं तो फल कैसे मिलेगा। कई बच्चे कहते हैं ज्ञान तो समझ गये हैं, बाबा से सर्व संबंध भी हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। अनुभव है फल, सूखा ज्ञानी नहीं बनो, स्नेही, बाप का स्नेही, परिवार का स्नेही स्वतः बन जाता है क्योंकि बाप समान है ना। तो बाप का लास्ट बच्चे से भी दिल का प्यार है। हर एक को स्नेह की वृत्ति से देखते। तो सिर्फ ज्ञानी नहीं बनो, भाषण वाले नहीं, भासना स्वरूप बनो। अपने आप से पूछो बाप से दिल का स्नेह है? कि जिस समय आवश्यकता है उस समय का स्नेह है! वह हो गये ज्ञानी भक्त। तो इस वर्ष क्या करेंगे? स्नेह का वायुमण्डल, एक एक को देखके चाहे कमजोर है, लेकिन पुरुषार्थी तो है ना! परिवार का तो है ना। गिरे हुए को गिराओ नहीं, उमंग-उत्साह बढ़ाओ। स्नेह का वायुमण्डल बनाओ।

(31.12.2008)

बाप, स्व, ड्रामा और परिवार चारों में निश्चयबुद्धि वन विजयी वनना है

आज अमृतवेले चारों ओर के बच्चों में एक बात जो ज्ञान का फाउण्डेशन है वह देखा। फाउण्डेशन है निश्चय। कहा हुआ भी है निश्चयबुद्धि विजयी। तो आप सबका निश्चय देखा, सभी का नम्बरवार बाप में तो निश्चय है ही, उसकी निशानी सभी बाप को पहचान बाप के बने हैं और यहाँ भी आये हैं, बाप से मिलने के लिए। बाप में हर एक बच्चे का अटूट निश्चय है लेकिन बाप के साथ और भी निश्चय पक्का होना चाहिए वह है स्व में निश्चय। साथ में ड्रामा में निश्चय और परिवार में निश्चय। इन चार प्रकार के निश्चय में पक्के होना अर्थात् निश्चयबुद्धि विजयन्ती बनना। तो चेक करो कि इन चार निश्चय में पक्के हैं? बाप में तो सभी कहते

हैं मेरा बाबा और मैं बाप की। बाप के ऊपर मेरा कहके पूरा बाप का अधिकार प्राप्त कर लिया। सदा बाप के द्वारा अधिकारी बन सर्व खजानों के अधिकारी बन गये। साथ में स्व में भी निश्चय जरूरी है क्यों? अगर स्व में निश्चय नहीं है तो दिलशिकस्त बन जाते हैं। स्व में निश्चय यही है कि मैं बाप द्वारा स्वमानधारी हूँ, स्वराज्य अधिकारी हूँ। स्वयं बाप ने मुझे कितने स्वमान दिये हैं। एक एक स्वमान को स्मृति में लाओ तो कितना नशा चढ़ता है! आजकल किसी को भी कोई टाइटल मिलता है तो वह भी अपना भाग्य समझते हैं। लेकिन आप बच्चों को एक-एक स्वमान किसने दिया! स्वयं बापदादा ने हर बच्चे को स्वमानधारी बनाया है। एक-एक स्वमान को याद करते खुशी में उड़ते हो। तो स्व में भी इतना सदा निश्चय का नशा रहे कि मैं बाप द्वारा स्वराज्य अधिकारी, स्वमान अधिकारी कोटो में कोई आत्मा हूँ। जैसे बाप में निश्चय है तो साथ में स्व में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि अगर स्व में निश्चय है तो जहाँ निश्चय है वहाँ हर कर्म में निश्चयबुद्धि अर्थात् स्वमानधारी विजयी है। निश्चय का अर्थ ही है सफलता। ऐसे नहीं कि हमारा तो बाप में निश्चय है, बाप में है वह तो बहुत अच्छा लेकिन साथ में बाप के स्व का नशा भी आवश्यक है मैं कौन! एक-एक स्वमान को याद करो तो निश्चय और नशा आपके चलन और चेहरे से दिखाई देगा। दे रहा है और दिखाई देता रहेगा। साथ में तीसरी बात तो ड्रामा में भी निश्चय बहुत जरूरी है क्योंकि ड्रामा में समस्यायें भी आती हैं और सफलता भी होती है। अगर ड्रामा में पक्का निश्चय है तो ड्रामा के निश्चय से जो निश्चयबुद्धि है वह समस्या को समाधान स्वरूप में बदल देता है क्योंकि निश्चय अर्थात् विजय। तो किसके ऊपर विजयी बनता? परिवर्तन करने में, एक सेकण्ड में समस्या परिवर्तन हो समाधान रूप बन जाती है। हलचल में नहीं आयेंगे, अचल रहेंगे क्योंकि ड्रामा के ज्ञान से अडोल अचल बन जाते हैं। यह निश्चय रहता है कि मैं ही कल्प पहले भी समाधान स्वरूप अर्थात् सफल आत्मा बना था, बनी हँू और कल्प के बाद भी मैं ही बनूंगी। तो यह नशा ड्रामा का निश्चय पक्का कराता। फखुर रहता है, नशा रहता है मैं थी, मैं ही हूँ और मैं ही बनेंगी इसलिए इस पुरुषार्थी जीवन में ड्रामा का निश्चय भी आवश्यक है और साथ में चौथा है परिवार का निश्चय क्योंकि बाप ने आते ही परिवार को पैदा किया। तो जैसे बाप में निश्चय है वैसे परिवार में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि परिवार किसका है? और इतना बड़ा परिवार और किसका हो सकता है! तो परिवार में भी निश्चय अति आवश्यक है क्योंकि इतना बड़ा परिवार विश्व में किसका है? आप जितना परिवार चेक करो विश्व में, किसका है? परिवार की रीति से किसी भी डिवाइन फादर का भी नहीं है वहाँ फॉलोअर हैं, यहाँ परिवार है। परिवार के साथ ही सेवा में, सम्बन्ध में रहते हो। ऐसे नहीं कि हमारा तो बाप स े ही कनेक्शन है, परिवार से नहीं हुआ तो क्या हुआ। परिवार का निश्चय तो आपका 21 जन्म चलना है। जानते हो ना! परिवार के साथ ही सम्बन्ध में आने से मालूम होता है कि मैं इतने बड़े परिवार में सभी से निश्चयबुद्धि हो चल रहे हैं, परिवार में चलने के लिए यह अटेन्शन देना पड़ता है कि परिवार में हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और होंगे। आपका यादगार माला है, माला में देखो कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर क्योंकि परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार हैं। तो इतने बड़े परिवार में चलते संस्कारों को समझ एक दो में एक परिवार, एक बाप एक राज्य, तो एक होके चलना है। परिवार में जैसे बड़ा परिवार है, ऐसे ही एक दो में बड़ी दिल, हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की स्थिति में स्थित हो चलना है क्योंकि परिवार के बीच ही संस्कार स्वभाव आता है। लेकिन कोई समझे परिवार से क्या है, बाबा से तो है। लेकिन यहाँ धर्म और राज्य दोनों की स्थापना है, सिर्फ धर्म नहीं है, दूसरे जो भी धर्म पिता आये हैं उनका सिर्फ धर्म है, राज्य नहीं है, यहाँ तो आप सबको राज्य भी करना है। तो राज्य में परिवार की आवश्यकता होती है और 21 जन्म भिन्न-भिन्न रूप से परिवार के साथ ही रहना है, परिवार को छोड़ कहाँ जा नहीं सकते। तो चेक करो ऐसे नहीं समझना कि बाप जाने मैं जानूं। बाप से ही कार्य है लेकिन अगर इन चार निश्चय में से एक भी निश्चय कम है तो हलचल में आ जायेंगे। सेवा के साथी, बाप तो सकाश देने वाले हैं लेकिन साथी कौन? साकार का साथ तो परविार का है तो बाप ने देखा है कि तीन निश्चय में मैजारिटी ठीक चल रहे हैं लेकिन परिवार के साथ में निभाना, संस्कार मिलाना, एक-एक को कल्याण की भावना से देखना और चलना, इसमें कई बच्चे यथाशक्ति बन जाते हैं। लेकिन बाप ने देखा कि जो परिवार के निश्चय में नॉलेजफुल होके सदा बाप समान साक्षीपन की स्थिति में साथ में आते हैं, रहते हैं वही नम्बरवन या नम्बरवन डिवीजन में आते हैं। तो चेक करो भाव स्वभाव परिवार में होता है, तो छोटी-छोटी गलतियाँ भी होती है, विघ्न भी आते हैं वह परिवार के सम्बन्ध में ही आती है। तो सबसे आवश्यक इस परिवार के सम्बन्ध में पास होना है। अगर परिवार में चलने में तोड़ निभाने में कोई भी कमी होती है तो वह विघ्न छोटा हो या बड़ा हो लेकिन तंग करता है। यह क्यों, यह कैसे, परिवार के कनेक्शन में

आता है। तो क्यों के बजाए, क्यों नहीं करना है, लेकिन हमें मिलकर चलना है, परिवार की प्रीत निभानी है क्योंकि यह बाप का परिवार है, भगवान का परिवार है। रिवाजी परिवार नहीं है। नशा रहना चाहिए कि वाह बाबा, वाह ड्रामा, वाह मैं और वाह परिवार! ठीक है? चेक करते हो? चार ही में पास हो? एक में भी कम नहीं चेक करो। अभी-अभी चेक करो क्योंकि विजयी बनने का साधन ही यह है। परिवार के बीच संस्कार निकलते हैं और वह संस्कार मिलाना खुद भी परिवर्तन करना और परिवार को भी इतनी ऊंची दृष्टि से देखना। बापदादा ने पहले भी कहा है कि बापदादा लास्ट बच्चे को भी अति भाग्यवान समझते हैं क्यों? भगवान को पहचाना, साधारण रूप में बाप को पहचाना, जो इतने बड़े-बड़े महात्मायें भी पहचान नहीं सके, लेकिन बापदादा का लास्ट बच्चा भी मेरा बाबा कहता है। दिल से मेरा बाबा कहते हैं। तो बापदादा जैसे लास्ट बच्चे की भी विशेषता देख, जैसे बच्चों को लाड प्यार, यादप्यार देते हैं वैसे लास्ट वालों को भी देते हैं। तो चेक करो कि तीन में ठीक हो या चारों में ठीक हो या दो में ठीक हो या एक में ठीक हो? चेक किया? किया चेक? जो समझते हैं कि मैं चार ही मैं, चार ही निश्चय में बाप, आप, ड्रामा और परिवार, चार ही निश्चय में ठीक हूँ वह हाथ उठाओ। ठीक हैं? अच्छा ठीक हैं। पेपर लें? हाँ उ ाओ। अच्छा परिवार में पास हो? परिवार के सम्बन्ध में आना, क्योंकि परिवार को छाडे ़तो कहाँ जायेंगे नहीं, रहना ही है, निभाना ही है। तो इसमें पास हो? कभी ऐसे आता है कि यह नहीं होता तो अच्छा होता, यह क्यों करते हैं, यह क्यों होता है, यह संकल्प आता है... एकदम परिवार का नशा, चार ही निश्चय वाला कभी भी ऐसे वैसे संकल्प में भी नहीं करेगा। संकल्प में आये कि ऐसे क्यों होता है, लेकिन मुझे वह क्यों वा क्या हिलावे नहीं, मूड नहीं बदली करे। इसको कहते हैं चार ही में पास। हाथ तो उ ाया, बापदादा को खुश किया है परन्तु बापदादा को यह जो परिवार की बात है उसमें कभी कभी-बातें सुननी पड़ती हैं, देखनी पड़ती हैं। एकदम बड़ी दिल हो, सबको शुभ भावना, शुभ कामना से ठीक करना है, क्योंकि परिवार ही एक है। एकमत होके चलना है। सिर्फ चलना नहीं है, चलाना भी है इसलिए बापदादा इस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि परिवार में जो किसी भी हलचल में पास हो जाते हैं, व्यर्थ नहीं चलता है, उन्हें दूसरों को ऐसा बनाना है। अभी तो आप अपने-अपने सेन्टर पर कितने रहते हो, चलो ज्यादा में ज्यादा 25-50, इतने होते नहीं है लेकिन मानों बड़े स्थान है, उसमें भी 50-60 अच्छा ज्यादा में ज्यादा 100 भी समझो, इतने है नहीं लेकिन समझ लो, तो बापदादा ने सभी सेन्टर्स के बच्चों को लास्ट को भी अपना प्यारा कहके चलाया और प्यार की निशानी है रोज़ बापदादा यादप्यार क्या देता? मीठे मीठे, जानता है खट्टे भी हैं लेकिन मीठे खट्टे कभी यादप्यार में कहा है? उन्हों को भी लाडले कहता है, न सिर्फ कहता है लेकिन मेरा बच्चा है, मेरे भाव से चलाता है क्योंकि ड्रामा में, माला में सब एक नम्बर नहीं हैं, यह रिजल्ट है। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हैं, होना है, नहीं तो सब राजा बन जायें, प्रजा कौन बनेगा! राज्य किस पर करेंगे? अच्छी प्रजा भी तो चाहिए, रॉयल प्रजा, राजधानी है ना। ऐसे हर एक अपने को चेक करे, परिवार में किसी भी बात में संस्कार खराब है, लेकिन मेरा संस्कार क्या? अगर खराब को देख मेरा संस्कार भी खराब हो गया, तो मैं भी तो खराब हो गया। खराब अच्छे को भी बदल लेता है। बाप ने स्थापना के समय 350-400 को इकट्ठा सम्भाला है, इतना तो अभी किसी का इकट्ठा रहने वाला परिवार नहीं है। चलो, डयुटी अलग अलग है लेकिन वह डयुटी है और परिवार में डयुटी है। रिवाजी परिवार, रिवाजी डयुटी, रिवाजी रीति से दिनचर्या बिताना, यह नहीं है, न्यारा और प्यारा परिवार है। इसमें डिस्टर्ब होना, फिर बहाना तो यह देते कि इसने किया तब यह हुआ, लेकिन बाप के आगे भी क्या ऑपोजीशन नहीं हुई! भागन्ती भी हुए ना! यह आपोजीशन नहीं है! लेकिन बाप ने फिर भी कहा, कोई भागन्ती भी हो गये तो भी टोली भेजो, उनको बुलाने की कोशिश करो, सर्विस करो, याद दिलाओ। ऐसे चार ही निश्चय में पास होना है वा तीन में, दो में? नम्बरवन होना है।

(15.12.2009)

हिम्मत कभी भी नहीं हारना

थक नहीं जाना। हुआ नहीं, निश्चयबुद्धि होके करो, करना ही है। हाथ उठाना अर्थात् बाप को दे दिया। दिया ना! हिम्मत कभी भी नहीं हारना। अगर थोड़ा भी कम हुआ तो आगे के लिए हिम्मत रखके छोड़ नहीं देना। बढ़ते रहना। बापदादा कम्बाइन्ड है, कहते हो ना, साथ है नहीं कहते हो, कम्बाइन्ड है। तो ऐसे समय पर अगर कुछ भी हो तो बापदादा कम्बाइन्ड है उसको सामने लाके फिर अर्पण कर दो। लेकिन बापदादा चाहता है कि सभी बच्चे नम्बरवन हो, दी हुई चीज़ अमानत हो गई। हाथ उठाया

अर्थात् दिया तो अभी आपका नहीं हुआ। अमानत है। तो अगर संकल्प में भी आये तो समझना अमानत में ख्यानत, यह बुरा माना जाता है। दी हुई चीज़ कभी वापिस नहीं ली जाती क्योंकि मेरी नहीं।

(11.02.2010)

ज्ञान का फाउण्डेशन है निश्चय

यह ब्राह्मण परिवार श्रेष्ठ परिवार है। परिवार की बहुत महिमा है। यह ईश्वरीय परिवार बार-बार नहीं मिलता। कल्प में एक ही बार यह ईश्वरीय परिवार मिला है, इतना बड़ा परिवार सारे कल्प में कभी नहीं मिलता। परिवार की भी विशेषता को जानना और परिवार में चलना, एक महान सबजेक्ट है। पहले भी सुनाया था कि इस ज्ञान का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय में चार बातें हैं। बाप, दादा साथ में है ही और नॉलेज में, ड्रामा में, परिवार में सभी में निश्चय है। तो निश्चय बुद्धि हो, सहज पुरुषार्थी बन जाते हो। जैसे बापदादा में निश्चय है ऐसे परिवार में भी निश्चय आवश्यक है। जैसे देखो जब आप कोई भी बात की पैकिंग करते हो तो क्या करते हो? चार ही तरफ टाइट करते हो ना, एक तरफ भी अगर टाइट नहीं किया तो हलचल होती है। ऐसे ही बाप, नॉलेज, नॉलेज में भी विशेष ड्रामा और परिवार। अगर चार ही बातें मजबूत नहीं हैं तो विघ्न आते हैं। विघ्नों को पार करने में अटेन्शन देना पड़ता है। इसलिए परिवार की पहचान, परिवार से प्यार, एक दो को समझना, यह बहुत आवश्यक है।

(31.03.2010)

निश्चय का नशा आपके चेहरे और चलन से दिखाई दे

आज चारों ओर के परमात्म तख्तनशीन, भ्रकुटी तख्तनशीन और विश्व के तख्तनशीन बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। यह परमात्म दिलतख्त सिर्फ आप ब्राह्मणों के लिए ही है। भ्रकुटी का तख्त तो सबके पास है लेकिन परमात्म तख्त सिर्फ ब्राह्मण आत्माओं के ही भाग्य में है। यह परमात्म तख्त विश्व का तख्त दिलाता है। तो तीनों तख्त के अधिकारी आत्मायें आप ब्राह्मण ही हो। यह परमात्म तख्त कितना श्रेष्ठ है और कोई युग में परमात्म तख्त प्राप्त नहीं होता। यह परमात्म तख्त गाया भी जाता है, परमात्म तख्त के अधिकारी भक्ति मार्ग में भी माला के मणकों के रूप में गाये और पूजे जाते हैं। कोटों में कोई के रूप में गाये जाते हैं। बड़ी भावना से एक-एक मणके को कितनी ऊंची दृष्टि से देखते रहते हैं। तो आप सबको फखुर है ना! है फखुर? कि हमारे सिवाए कोई भी इस तख्त का अनुभव नहीं कर सकते हैं। लेकिन आप सबका ब्राह्मणों का जन्म सिद्ध अधिकार है। आपके लिए यह तख्त गले का हार है। तो इतना नशा भगवान के दिलतख्त के अधिकारी, यह नशा और खुशी सबको सदा स्मृति में रहती है? हम कौन हैं! इसका निश्चय और नशा रहता है?

बापदादा तो ऐसे तीन तख्त के अधिकारी बच्चों को देख खुश होते हैं वाह मेरे श्रेष्ठ अधिकारी बच्चे वाह! बच्चे कहते वाह बाबा वाह! और बाप कहते वाह बच्चे वाह! स्वयं बाप भी ऐसे बच्चों की महिमा गाते हैं। तो नशा है हम कौन हैं? जितना निश्चय होगा उतना ही नशा होगा। और निश्चय का नशा आपके चेहरे और चलन से दिखाई दे रहा है। जिसको निश्चय है उसको नशा जरूर होता है। बापदादा भी अभी हर बच्चे द्वारा चेहरे और चलन से आत्माओं को अनुभव कराने चाहते, वाणी द्वारा तो अनुभव करने लगे हैं, अभी अनुभव करने का कार्य शुरू हो गया है। पहले सुनते थे, सोचते थे अभी आप ब्राह्मण आत्माओं की स्थिति का प्रभाव अनुभव करने लगे हैं। तो अपने आपको चेक करो कि मैं सारे दिन में कितना समय परमात्म दिलतख्त पर रहता हूँ? क्योंकि यह दिलतख्त विश्व का राज्य प्राप्त कराने का आधार है। क्योंकि इस दिलतख्त के आधार से जितना समय आप दिलतख्त के अधिकारी रहते हो उतना ज्यादा समय भविष्य में राज्य घराने में अधिकारी बनते हो।

(24.10.2010)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501

राजस्थान, भारत

मोबाईलः +919414003497, +919414082607

फैक्स : 02974-238951

ई-मेल : bksparc@gmail.com,

sparc@bkivv.org